आई.एस. पिल्लई

चेम्मीन

चिरस्थायी क्लासिक

अनीता नायर

द्वारा अनुवादित

Table of Contents

□□□□□□ □□□
□□□□□□□□□
□□□ □□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□

भाग दो
ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह
सत्रह
अठारह
उन्नीस
बीस
पी. एस . इनसाइट्स इंटरव्यू और भी बहुत कुछ…
मेरी चेम्मीन की कहानी
अनुवादक का नोट
चेम्मीन जिसने मुझे सौभाग्य और दुख दोनों दिए
चेम्मीन के रूपांतरण पर : मिथक को मेलोड्रामा के रूप में प्रस्तुत करना टी. एस . पिल्लई की रचनाओं की सूची
शब्दकोष
लेखक और अनुवादक के बारे में
कॉपीराइट

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

HARPER PERENNIAL

□□□□□□□□□

□□□□
□□□□□□ □□□
□□□ □□
□□
□□
□□□
□□□
□□□□
□□
□□□
□□
□□
□□
□□□ □□
□□□□□□
□□□□
□□□□
□□□□
□□□□□□
□□□□
□□□□□
□□□□□

उन्नीस
बीस
पी.एस. इनसाइट्स इंटरव्यू और भी बहुत कुछ…
मेरी चेम्मीन की कहानी
अनुवादक का नोट
चेम्मीन जिसने मुझे सौभाग्य और दुख दोनों दिए
चेम्मीन के रूपांतरण पर: मिथक को मेलोड्रामा के रूप में प्रस्तुत करना
टी.एस. पिल्लई की रचनाओं की सूची
शब्दकोष
लेखक और अनुवादक के बारे में
कॉपीराइट

□□□ □□

एक

मेरे पिताजी नाव और जाल खरीदने की बात करते हैं।
‘करुथम्मा, तुम कितनी भाग्यशाली लड़की हो!’
करुथम्मा को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। चुप्पी तोड़ने के लिए ही उसने अचानक कहा, "लेकिन हमारे पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं। क्या आप हमें कुछ पैसे दे सकते हैं?"
‘लेकिन मेरे पास पैसे कहां से आएंगे?’ परीकुट्टी ने उसके सामने अपनी हथेलियां फैला दीं।
करुथम्मा हंस पड़ीं। 'तो फिर तुम खुद को 'लिटिल बॉस' कहकर क्यों इतराती फिरती हो?'
‘करुथम्मा, तुम मुझे लिटिल बॉस क्यों कहती हो?’
तो मैं आपको क्या कहकर बुलाऊं?
‘आपको मुझे परीकुट्टी कहकर बुलाना होगा।’
करुथम्मा ने 'परी' कहा... और फिर वह ज़ोर से हँस पड़ी।
उसने ज़िद की कि वह उसका पूरा नाम ले। करुथम्मा की हंसी रुक गई। अचानक गंभीर होकर उसने सिर हिलाया। 'नहीं।' फिर उसने कहा, 'मैं नहीं ले सकती।' ‘अच्छा, मैं तुम्हें करुथम्मा भी नहीं बुलाऊँगी!’
‘तो फिर आप मुझे क्या कहेंगे?’
मैं तुम्हें 'बड़ी मम्मा मछुआरा' कहकर पुकारूंगा।
करुथम्मा खिलखिलाकर हंस पड़ी। परीकुट्टी भी हंस पड़ी। लंबी-लंबी हंसी! आखिर वे किस बात पर हंस रहे थे? कौन जाने! लेकिन उस हंसी में असीम आनंद छिपा था!
'अच्छा, जब तुम अपनी नाव और जाल खरीद लोगे, तो क्या बड़ी मछुआरा अपने पिता से कहेगी कि वह हमें तुम्हारा पकड़ा हुआ माल बेच दे?'
करुथम्मा ने उत्तर दिया, 'यदि आप हमें अच्छी कीमत देंगे, तो निश्चित रूप से हम खरीद लेंगे।'
और भी हंसी!
इस बातचीत में इतना मज़ेदार क्या था? क्या इसमें कोई चुटकुला छिपा था? क्या लोग यूं ही ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगते हैं?

इतनी हंसी सुनकर करुथम्मा की आंखों में आंसू आ गए। उसका सीना फूल गया। 'ओह, मुझे इस तरह मत हंसाओ, मेरे बॉस!'
मुझे भी हंसाने की कोशिश मत करो, परीकुट्टी ने पलटवार किया।
‘अरे! आप तो बड़े ही… बड़े ही… आप तो एकदम बॉस हैं!’
वे फिर से हँसे, मानो उन्होंने एक-दूसरे को गुदगुदी की हो। गुदगुदी के नियम में यह सर्वविदित है कि हँसी धीरे-धीरे गंभीरता में बदल जाती है और अंत में आँसुओं में विलीन हो जाती है। और इसी तरह करुथम्मा का चेहरा लाल हो गया। उसकी मुस्कान गायब हो गई। उसके मन में शिकायत का भाव जागा। वह क्रोधित हो उठी। नहीं, वास्तव में यह आक्रोश था। 'मुझे इस तरह मत देखो!'
उसने अनजाने में ही अपराध कर दिया था। परीकुट्टी ने कहा, 'लेकिन तुमने ही तो मुझे हंसाया था, करुथम्मा।'
‘ओह! मैं क्या कहूँ, मेरे मालिक?’ पश्चाताप से भरी करुणा ने अपने हाथों से अपनी छाती पर हाथ रखा और उनकी ओर पीठ कर ली। अचानक उसे यह सोचकर शर्म आ गई कि उसने केवल एक पतला सा मुंडू पहना हुआ है।
तभी किसी ने घर से करुथम्मा को पुकारा। चक्की, जो पूरब में मछली बेचने गई थी, घर लौट आई थी। करुथम्मा तुरंत भाग गई।
परीकुट्टी को बेचैनी महसूस हुई। उसे चिंता थी कि वह नाराज हो गई होगी। करुथम्मा को भी ऐसा लगा जैसे उसने अपनी फटकार से उसे चोट पहुँचाई हो। उसे ज़रूर दुख हुआ होगा, वह चिंतित थी।
और फिर भी, उसने पहले कभी इस तरह हँसा था क्या? न कभी पहले और न कभी किसी के साथ। यह बहुत ही असाधारण था। उस हँसी ने उसकी साँसें रोक दी थीं, मानो उसके फेफड़े फट जाएँगे... और अजीब बात यह थी कि करुथम्मा को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वह नग्न हो। वह चाहती थी कि वह गायब हो जाए। उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं जाना था। तो क्या मन की उस विचित्र अवस्था में, बेचैन और परेशान, करुथम्मा को अपने भीतर कुछ गहरा महसूस हुआ?
उसके स्तन ऊपर-नीचे हो रहे थे। मानो पल-पल बढ़ते जा रहे हों। उसकी भटकती निगाहें उसके स्तनों पर टिक गईं, जहाँ एक धड़कन धड़क रही थी। क्या इसी तरह उसकी हंसी फूट पड़ी थी? ...और उसने केवल एक पारदर्शी मुंडू पहना हुआ था। जिसके नीचे वह नग्न थी।
क्या उसकी निगाहों ने उसे आहत किया था? परीकुट्टी व्याकुल हो उठी। क्या यही वजह थी कि वह चली गई? क्या करुथम्मा कभी वापस आएगी?

न रहे। वह घर में ही पैसे जमा कर रहा था, इस उम्मीद में कि एक दिन वह नाव और जाल खरीदेगा। पंचमी को घर के अंदर ही रहना पड़ा था। यही उसका बदला था। ऐसी खबर सुनकर कोई भी मां विचलित क्यों नहीं होगी?
चक्की ने करुथम्मा से पूछा, 'यह मैं क्या सुन रही हूँ?'
करुथम्मा के पास इसका कोई जवाब नहीं था।
‘लड़की, तुम क्या सोच रही थी?’
और अब करुथम्मा को बोलना ही पड़ा। उसके पास कोई विकल्प नहीं था। इसलिए उसने लड़खड़ाते हुए स्पष्टीकरण देने की कोशिश की। 'मैं बस बाहर निकली थी... समुद्र तट पर टहल रही थी...'
और समुद्र तट पर?
‘लिटिल बॉस नाव में बैठा था।’
तो इसमें हंसी की क्या बात है?
करुथम्मा ने समझाने की कोशिश की, 'मैं तो बस उससे नाव और जाल खरीदने के लिए ज़रूरी पैसे मांग रही थी।'
तो आपको पैसे मांगने के लिए किसने कहा था?
करुथम्मा अपनी बात पर अड़ी रही। 'मैंने तुम्हें और अच्छा को उस दिन बात करते सुना था। तुम कह रही थी कि तुम लिटिल बॉस से पैसे मांगने जा रही हो।' यह कोई वैध स्पष्टीकरण नहीं था। वह केवल अपने किए को सही ठहराने की कोशिश कर रही थी।
चक्की ने करुथम्मा को सिर से पाँव तक जाँचा।
चक्की भी कभी उस उम्र की थी। या शायद चक्की को वो समय याद था जब वो करुथम्मा की उम्र की थी? तब भी उस समुद्र तट पर कई झोपड़ियाँ थीं, और उन झोपड़ियों में छोटे-छोटे मालिक रहते थे। और किनारे पर खड़ी नावों की छाया में, वे छोटे-छोटे मालिक भी चक्की को गुदगुदी करके खूब हँसाते थे। कौन जाने?
लेकिन यह निश्चित था कि चक्की समुद्र तट पर जन्मी और पली-बढ़ी एक मछुआरा महिला थी। और वह समुद्री विद्या की एक लंबी परंपरा की उत्तराधिकारी थी। लकड़ी के एक साधारण तख्ते पर सवार होकर, पहला मछुआरा लहरों और धाराओं को चीरते हुए क्षितिज से परे एक बिंदु तक पहुंचा था। किनारे पर उसकी वफादार पत्नी पश्चिम की ओर मुंह करके खड़ी उसका इंतजार कर रही थी। तभी एक तूफान उठा और समुद्र में हलचल मच गई। व्हेल मछलियां मुंह खोले इकट्ठा हो गईं।

शार्क मछलियां अपनी पूंछों से पानी को उग्र रूप से हिलाने लगीं। पानी के तेज बहाव ने नाव को एक भंवर में खींच लिया। लेकिन वह चमत्कारिक रूप से इन सभी खतरों से बच गया। इतना ही नहीं, वह एक विशाल मछली लेकर किनारे पर लौटा। तो वह उस भयंकर तूफान से कैसे बच निकला? व्हेल उसे निगल क्यों नहीं गई? शार्क की पूंछ के वार से इतनी बुरी तरह टकराने के बावजूद उसकी नाव चकनाचूर क्यों नहीं हुई? भंवर थम गया; नाव आगे बढ़ गई... यह सब कैसे हुआ? सिर्फ इसलिए कि एक पवित्र पत्नी समुद्र किनारे खड़ी होकर प्रार्थना कर रही थी और अपने पति के सुरक्षित लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। और यही समुद्र किनारे की महिलाओं के लिए आशा का स्रोत था। यही आस्था का वह अंश था जिसे चक्की ने अपने दैनिक जीवन में समाहित कर लिया और उसे अपना बना लिया।
या शायद, जब चक्की का सीना भी प्रजनन क्षमता से भर गया था, तब किसी छोटे मालिक ने उस पर अपनी निगाहें टिकाई होंगी। और उस दिन, चक्की की माँ ने भी उसे समुद्र की परंपराओं के बारे में बताया होगा; समुद्र अपनी महिलाओं से क्या अपेक्षाएँ रखता है, इसके बारे में बताया होगा।
चक्की, जिसे इस बात की परवाह नहीं थी कि करुथम्मा दोषी थी या नहीं, ने कहा, 'मेरी बेटी अब छोटी बच्ची नहीं रही। तुम अब एक मछुआरा हो।'
करुथम्मा ने अपने कानों में पारीकुट्टी की चिढ़ाने की गूंज सुनी: बड़ी माँ मछुआरे वाली।
चक्की ने आगे कहा, “इस विशाल सागर में बहुत कुछ ऐसा है जिससे डर लगता है, मेरी बेटी, मेरी मगाले। यही सब तय करता है कि समुद्र में जाने वाला पुरुष लौटेगा या नहीं। और हम स्त्रियाँ केवल यही कर सकती हैं कि उन्हें अपने सच्चे मन और शरीर से सुरक्षित रखें। अन्यथा, वे और उनकी नावें लहरों में समा जाएँगी। समुद्र में जाने वाले पुरुष का जीवन तट पर खड़ी उसकी स्त्री के हाथों में होता है।”
करुथम्मा ने यह चेतावनी भरी नसीहत पहली बार नहीं सुनी थी। जब भी कुछ मछुआरिनें एक साथ मिलतीं, तो उन्हें यही सुनने को मिलता था।
फिर भी, परीकुट्टी के साथ हँसी-मज़ाक करने में क्या बुराई थी? उसे अभी तक समुद्र में जाने वाले किसी पुरुष की जान की ज़िम्मेदारी नहीं सौंपी गई थी। और अगर ऐसी जान उसके हाथों में होती, तो वह उसे संजोकर रखती। वह जानती थी कि उसकी देखभाल कैसे करनी है। एक मछुआरे होने के नाते, उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं थी।

चक्की बोलती रही, “क्या तुम जानती हो कि समुद्र कभी-कभी क्यों रोता है? समुद्र जानता है कि अगर समुद्र माता क्रोधित हो गईं तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा। लेकिन अगर वह प्रसन्न हों तो वह तुम्हें सब कुछ देंगी, मेरी बच्ची। समुद्र में सोना है, मेरी बेटी, सोना!”
चक्की ने तब अपनी बेटी को एक महान सत्य समझाया। ‘मेरी बेटी, सद्गुण सबसे महत्वपूर्ण है। शरीर और मन की पवित्रता! एक मछुआरे का धन उसकी मछुआरिन के सद्गुण में निहित होता है।’
कुछ ऐसे छोटे-मोटे धंधेबाज़ होंगे जो हमारी परंपराओं का ज़रा भी सम्मान नहीं करेंगे और हमारे समुद्र तट को अपवित्र करेंगे। दक्षिण से कुछ आवारा औरतें आती हैं जो झींगे छीलती हैं और मछलियाँ सुखाने में मदद करती हैं। वे हमारे समुद्र तट को गंदा करती हैं। उन्हें समुद्र तट की मर्यादा का क्या ज्ञान? वे समुद्र की संतान नहीं हैं। लेकिन उनके कर्मों का खामियाजा हमें भुगतना पड़ता है।
'इस तट पर किनारे पर खड़ी नावों और झाड़ियों से सावधान रहें।'
चक्की ने गंभीर चेहरे के साथ अपनी बेटी को चेतावनी देते हुए कहा, 'खुद को देखो! पूरी तरह से स्तन और नितंब ही स्तन हैं। छोटे-मोटे आवारा और ऐसे ही निकम्मे मर्द तुम्हारे स्तन और नितंबों को देखते ही रह जाएंगे।' करुथम्मा कांप उठी। किनारे पर खड़ी नाव की छाया में, ठीक यही हुआ था। और उस पल उसके मन में जो आक्रोश था – वह तो जन्मजात ही हो सकता था। जब कोई पुरुष स्तनों और नितंबों को घूरता है, तो यह समुद्र की संतान के प्रति अनादर है। 'मगाले, तुम्हें इस तट के बंजर होने या यहाँ के लोगों के मुँह कीचड़ से भर जाने का कारण नहीं बनना चाहिए!'
करुथम्मा अब डर गई। चक्की ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, मानो उसे पता हो कि उसकी बातों का दिल को छू गया है। ‘वह हम में से नहीं है। एक मुसलमान है। और शायद उसे इस बात का एहसास भी नहीं है।’ उस रात करुथम्मा सो नहीं पाई। उसे पंचमी पर गुस्सा नहीं था जिसने उसका राज़ खोल दिया था। उसे कोई नाराज़गी भी नहीं थी। भला कैसे हो सकती थी? क्या यह इसलिए था क्योंकि उसे अपराधबोध हो रहा था? उस समुदाय की सदियों पुरानी नैतिक संहिता उस पर भी लागू होती थी। और शायद इसीलिए वह भटकने से डरती थी। जब तक उसके मन में डर था, वह पंचमी पर गुस्सा कैसे कर सकती थी?

तभी समुद्र तट से एक गीत की मधुर धुनें आईं, जो करुथम्मा के कानों में गूंज उठीं और उसका पीछा करते हुए उसके पैरों तले जमीन को तक हिला दिया।
करुथम्मा ने सुना।
गायक परीकुट्टी था। वह संगीतकार नहीं था। लेकिन वह नाव में बैठकर गा रहा था। भला वह उसे कैसे बता पाता कि वह वहाँ है?
और उसने सुन लिया।
उसे वहीं चोट लगी जहां लगनी चाहिए थी।
करुथम्मा बेचैन हो गई। क्या वह चुपके से निकल जाए? लेकिन वह फिर से उसके स्तनों और नितंबों को घूरेगा... उसे किनारे पर खड़ी नाव की छाया में जाना होगा। और वह जगह खतरनाक प्रलोभनों से भरी थी... और वह एक मुसलमान था।
ये समुद्र में जाने वाले लोगों का समूह था। करुथम्मा को तब डर लगा। अगर उसे थोड़ी देर और ये आवाज़ सुननी पड़ती, तो उसका मन उसके पास जाने को करता। उसकी निगाहों की तीखी चमक से उसे एक अजीब सा आनंद मिला था, जब उसने उसके सीने को देखा था। आख़िरकार, क्या स्तन मांस के ही नहीं बने होते? करुथम्मा पेट के बल लेट गई और अपने स्तनों को दबा लिया। उसने अपनी उंगलियाँ कानों में डाल लीं। फिर भी, गाना उसके कानों तक पहुँच ही गया। करुथम्मा रोने लगी।
वह जानती थी कि उसके दिल के कमरे का कमज़ोर दरवाज़ा आसानी से खोला जा सकता है। या फिर उसे ज़बरदस्ती तोड़कर भी खोला जा सकता है।
लेकिन उसके बाद ऐसी दीवारें थीं जिन्हें भेदना असंभव था। समुद्र के वंशजों के प्राचीन और पवित्र नैतिक नियमों से बनी एक मजबूत और अटूट दीवार। उसमें न दरवाजे थे, न खिड़कियां। वह यहीं रहती थी।
लेकिन जब किसी इंसान की पुकार आए तो वो दीवारें भी ढह सकती हैं। क्या ऐसी दीवारें पहले नहीं गिरी थीं?
परीकुट्टी का गीत सुनसान समुद्रतट पर गूंज उठा। इसका मकसद किसी मछुआरे को चुपके से दरवाजा खोलकर बाहर आने के लिए उकसाना नहीं था। इसमें न तो कोई लय थी, न ही कोई ताल। गायक की आवाज़ भी सुरीली नहीं थी। फिर भी, इसमें एक अलग ही जान थी। क्योंकि इसमें परीकुट्टी की यह तड़प गूंज रही थी कि वह उसे यह बताना चाहता है कि वह वहाँ है, ताकि वह उससे माफी मांग सके।
ऐसा लग रहा था मानो वह प्रायश्चित करने की अपनी आवश्यकता से पूरी तरह ग्रस्त हो।

परीकुट्टी गाते रहे। उनकी आवाज लड़खड़ा गई।
करुथम्मा ने अपनी उंगलियां कानों से हटाईं। उसने बगल वाले कमरे में अपने माता-पिता को बात करते सुना। नहीं, वे आपस में झगड़ रहे थे। करुथम्मा ने ध्यान से सुना। वे उसके बारे में बात कर रहे थे।
चेम्बनकुंजु ने कहा, 'मुझे यह सब पता है, महिला। आपको मुझे बताने की जरूरत नहीं है। मैं भी एक पिता हूँ!'
चक्की ने फटकार लगाते हुए कहा, 'आप पिता हैं, है ना? मुझे खुशी है कि आपको यह याद है! आपकी बेटी गुमराह हो जाएगी।'
‘जाओ, जाओ, औरत! इससे पहले कि ऐसा हो, मैं उसकी शादी करवा दूंगा।’
और आप इसका प्रबंध कैसे करेंगे? बिना पैसे के उससे शादी कौन करेगा?
‘मेरी बात सुनो,’ चेम्बनकुंजु ने अपने जीवन की योजनाएँ उसके सामने रखीं। करुथम्मा इसे सौवीं बार सुन रही थी।
क्रोध और दुःख दोनों भावों से भरी चक्की ने कहा, 'ऐसे में तो तुम्हारे पास सिर्फ तुम्हारी नाव और जाल ही बचेंगे।'
चेम्बनकुंजू ने दृढ़ता से जवाब दिया, 'चाहे कुछ भी हो जाए, मैंने जो पैसे बचाकर रखे हैं, उनमें से एक सिक्का भी मैं हाथ नहीं लगाऊंगा। इसलिए इसके बारे में सोचना भी मत!'
चक्की ने गुस्से में कहा, 'एक मुस्लिम आदमी तुम्हारी बेटी को बहला-फुसलाकर अपने जाल में फंसा लेगा। यही होने वाला है।'
चेम्बांकुंजू कुछ नहीं बोला। क्या उसे उसके शब्दों की गंभीरता समझ नहीं आई?
थोड़ी देर बाद उसने कहा, 'मैं किसी को ढूंढ लूंगा।'
‘बिना कोई नकद भुगतान किए?’
उसने इसकी पुष्टि करते हुए धीमी सी आवाज निकाली।
चक्की ने पूछा, 'तो फिर वह या तो मंदबुद्धि होगा या फिर मूक-बधिर!'
‘जब तुम देखोगी तब देखना, औरत। रुकोगी क्या?’
चक्की को यकीन नहीं हुआ और उसने कहा, 'तुम अपनी बेटी को समुद्र में क्यों नहीं डुबो देते?'
छोटी बच्ची ने नाक से आवाज़ निकाली।
चक्की ने अचानक पूछा, 'बताओ, तुम ये नाव और जाल किसके लिए खरीद रहे हो?'

चेम्बनकुंजू चुप था। नाव और जाल उसके जीवन का लक्ष्य थे। उसने कभी खुद से यह नहीं पूछा था कि यह किसके लिए है।
चक्की ने एक सुझाव दिया, 'हम उस वेल्लामानलिल वेलायुधन पर विचार क्यों नहीं करते?'
नहीं, वह ठीक नहीं रहेगा।
‘क्यों नहीं? उसे क्या हुआ है?’
वह एक मछुआरा है। बस एक साधारण मछुआरा।
'अगर मछुआरा नहीं, तो आप अपनी बेटी के लिए किसे ढूंढने की योजना बना रहे हैं?'
इसका कोई जवाब नहीं था।
करुथम्मा के कानों में 'एक मुस्लिम आदमी तुम्हारी बेटी को बहकाएगा' की आवाज गूंज रही थी।
शायद उसके पिता इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाए थे। उसका दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो फट जाएगा। क्या उस मुसलमान ने उसे पहले ही बहका नहीं लिया था?
दूर से परीकुट्टी गाना गाती रही।

दो

अगले दिन करुथम्मा घर से बाहर नहीं निकलीं। उस दिन परीकुट्टी की मछली पकड़ने वाली झोपड़ियों में काफी चहल-पहल थी। पूरब से कई महिलाएं मदद करने आई थीं। ताड़ के पत्तों की बुनी हुई चटाइयों पर सूखी मछलियों के ढेर लगे थे।
उन नीरस पलों में, एक दबी हुई सोच बिजली की तरह उसके मन में कौंध गई: क्या परीकुट्टी उन महिलाओं के स्तनों और नितंबों को भी घूरता होगा?
दोपहर होते ही समुद्र में गई नावें वापस लौटने लगीं। चक्की ने अपनी टोकरी ली और समुद्र तट की ओर चल पड़ी। लौटते समय चक्की ने दबी हुई आवाज़ में कहा, 'बेटी, अम्माची ने जो कहा था, उसे मत भूलना।'
करुथम्मा जानती थी कि उसे क्या नहीं भूलना चाहिए था।
कुछ देर बाद चेम्बंकुंजू आ गया। करुथम्मा ने उसे दोपहर का भोजन परोसा। उसके स्वभाव के विपरीत, उसने करुथम्मा को ध्यान से देखा। वह उसे हर दिन देखता था। तो उस दिन उसकी उस नज़र का क्या महत्व था? क्या उसके पिता को उसकी गलती का पता चल गया था? करुथम्मा चिंतित हो गई। अगर ऐसा होता, तो क्या उसकी उस नज़र में निंदा का भाव नहीं होता? लेकिन ऐसा नहीं था।
चक्की ने कल रात उसे याद दिलाया था कि घर में उनकी एक बालिग बेटी है। जब से उसे याद है, वह नाव और जाल खरीदने के लिए संघर्ष कर रहा था। और अब यह: एक बालिग बेटी! चक्की ने कहा था कि कोई नाकाबिल आदमी उसके साथ गलत काम करेगा। इसीलिए उसने बेटी का जायज़ा लिया था।
आज तक चेम्बनकुंजु एक दिहाड़ी मजदूर था। वह दूसरों की नावों में काम करके अपना हिस्सा कमाता था। पहले वह चप्पू चलाने वाले के रूप में काम करता था। अब वह पतवार चलाने वाला था। नाव का मालिक बनना ही उसके जीवन का उद्देश्य था, इसलिए उसने अपनी कमाई को बचाकर रखा था। उसने वर्षों में काफी धन जमा कर लिया था। फिर भी वह नाव और जाल खरीदने के लिए पर्याप्त नहीं था।
लड़की बालिग हो चुकी थी। ऐसी उम्र जिसमें गलतियाँ हो सकती हैं। चक्की सही थी। उसकी चिंता जायज़ थी। क्या उसे नाव और जाल खरीदने चाहिए या अपनी बेटी की शादी कर देनी चाहिए? यही उसकी दुविधा थी। चेम्बनकुंजू ने भी उसे चेतावनी देते हुए कहा, 'बेटी, तुम्हें अपना ख्याल रखना होगा!'
तो अब उसके पिता ने भी उसे सलाह दी थी।

करुथम्मा ने कोई जवाब नहीं दिया। न ही चेम्बनकुंजू को उससे जवाब की उम्मीद थी।
शाम को, अपने मजदूरों को छुट्टी देने के बाद, परीकुट्टी नाव पर बैठा था।
शायद उसे उम्मीद थी कि करुथम्मा उसी रास्ते से आएगी, जैसे वह कल आई थी।
चेम्बनकुंजु परीकुट्टी की ओर चल पड़ा। करुथम्मा काफी देर तक उनकी बातचीत देखती रही। वे किस बारे में बात कर रहे होंगे? उसने सोचा। शायद उसके पिता कर्ज मांग रहे हों।
उस रात पति-पत्नी काफी देर तक दबी आवाज़ में बातें करते रहे। करुथम्मा चाहती थी कि उसे पता चल जाए कि वे किस बारे में बात कर रहे थे।
उस रात भी परीकुट्टी ने गाना गाया। करुथम्मा अपनी झोपड़ी में लेटी हुई उसे सुनती रही। एक बार उसने परीकुट्टी से बस एक ही बात कही, 'मेरे मालिक, आपको मेरी छातियों को इस तरह घूरना नहीं चाहिए...'
अब उसे उसे एक और बात बतानी थी। उसे गाना नहीं गाना चाहिए!
दो दिन पहले तक वह तितली की तरह बेफिक्र होकर इधर-उधर उड़ती रहती थी। दो दिनों में कितना कुछ बदल गया! अब उसके पास सोच में डूबने के कारण थे। इसलिए उसने खुद को समझने की कोशिश शुरू की। और इसी के साथ उसे जीवन की गंभीरता का एहसास होने लगा। उसे खुद का ख्याल रखना होगा। हर कदम सोच-समझकर उठाना होगा। वरना क्या वह कभी पहले की तरह बेफिक्र होकर उछल-कूद कर पाएगी?
एक आदमी ने उसके स्तनों को देखा। और बस पल भर में वह एक स्त्री बन गई। अगली रात उसे परीकुट्टी का गीत सुनाई नहीं दिया। उस रात भी चाँदनी ने समुद्र तट को अपनी चाँदी जैसी रोशनी से नहला दिया। समुद्र का रहस्यमय गीत नारियल के पत्तों से होते हुए पूर्व दिशा की ओर बह निकला।
परीकुट्टी का गीत। जब वह गीत उसके कानों में नहीं गूंजा, तो करुथम्मा को बहुत बेचैनी हुई। क्या वह फिर से नहीं गाएगा?
रात के खाने के बाद चेम्बनकुंजू बाहर चली गई। चक्की जागती रही। वह सो क्यों नहीं रही थी? करुथम्मा ने अपनी माँ से पूछा।
चक्की ने उसे सोने के लिए कहा।
और इस तरह करुथम्मा को हल्की नींद आ गई।
अचानक वह चौंककर जाग उठी। कोई पूछ रहा था, 'क्या करुथम्मा जाग गई हैं?'
यह एक जानी-पहचानी आवाज़ थी। एक ऐसी आवाज़ जिसे वह केवल उसमें मौजूद हल्की सी कंपन के कारण पहचान पाई। यह परीकुट्टी की आवाज़ थी।

चक्की ने कहा, 'वह सो रही है।'
करुथम्मा ने अपनी माँ की आवाज़ में शर्मिंदगी महसूस की। करुथम्मा को पसीना आ गया। वह उठी और अस्थायी दरवाजे की एक पट्टी से झाँका। चेम्बनकुंजू और परीकुट्टी कुछ भारी सामान अंदर ला रहे थे। एक-दो नहीं, बल्कि ताड़ के पत्तों से भरी सात टोकरियाँ। सूखी मछलियाँ।
करुथम्मा को ऐसा लगा जैसे किसी ने मुट्ठी से उसके अंदरूनी अंगों को जकड़ लिया हो। उसने देखा कि परीकुट्टी, चेम्बनकुंजू और चक्की आंगन में फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे।
अगले दिन करुथम्मा ने चक्की से टोकरियों के बारे में पूछा। चक्की ने उसकी आँखों में देखे बिना लापरवाही से कहा, "छोटे मालिक ने इसे यहाँ रखा था।" करुथम्मा इसे ऐसे ही नहीं रहने देना चाहती थी। 'क्यों? क्या वह इसे अपनी झोपड़ी में नहीं रख सकता?'
अगर यह यहाँ है तो आपको क्या समस्या है?
थोड़ी देर बाद चक्की ने गुस्से से कहा, 'आखिर वो तुम्हारा है क्या? अपना ध्यान रखना, लड़की!'
करुथम्मा के मन में बहुत कुछ कहने और पूछने की इच्छा थी। वह उसके लिए कोई मायने नहीं रखता था। लेकिन उन्होंने जो किया था, वह फिर भी चोरी ही थी। क्या वे उसके ऋणी नहीं बन रहे थे? उसके पिता ने कहा था, 'बेटी, तुम्हें अपना ख्याल खुद रखना चाहिए।' अगर वे खुद को उसके कर्ज में डुबो रहे थे, तो वह अपना ख्याल कैसे रख सकती थी? लेकिन करुथम्मा कुछ नहीं बोली।
अगले दिन सूखी मछली बिक गई। और उसके अगले दिन, समुद्र ने अपनी भरपूर मछलियाँ जालों में फेंक दीं। मछलियों को किनारे पर लाकर चेम्बनकुंजु फिर से नाव में सवार होकर निकल गया। चक्की मछली बेचने के लिए पूरब की ओर चली गई। पंचमी भी घर पर नहीं थी। करुथम्मा बिल्कुल अकेली थी।
इसके बाद परीकुट्टी वहां आया।
करुथम्मा भागकर झोपड़ी के अंदर दुबक गया। वह आंगन में चुपचाप खड़ा रहा।
प्रतीक्षा करता रहा।
उसके चेहरे पर एक अजीब सी घबराहट थी। उसका मुंह सूख गया था। उसने जोर से कहा, 'मैंने नाव और जाल के लिए पैसे दे दिए हैं!'
कोई जवाब नहीं मिला।
तो उसने आगे कहा, 'अब क्या आप हमें अपनी मछली बेचेंगे?'

‘अगर आप हमें अच्छी कीमत देंगे, तो हम आपको मछली दे देंगे’ यही जवाब होना चाहिए था। करुथम्मा ने एक बार यही कहा था। लेकिन अब कोई शब्द नहीं बोला गया। नावों की छाया में हुई उस बातचीत के बाद ही उसे बेकाबू हंसी आ गई थी। परीकुट्टी को शायद उस घटना के दोहराव की उम्मीद थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
सन्नाटा छा गया।
परीकुट्टी ने पूछा, 'करुथम्मा, तुम मुझसे बात क्यों नहीं कर रही हो? क्या तुम मुझसे नाराज़ हो?'
उसे लगा कि उसने उसके भीतर से सिसकने की आवाज सुनी।
‘क्या तुम रो रही हो, करुथम्मा?’
इसके बाद परीकुट्टी ने कहा, 'अगर आपको मेरा यहां आना पसंद नहीं आया, तो मैं चला जाऊंगा...'
इसका भी कोई जवाब नहीं मिला। और इसलिए सूखे, दर्द भरे गले से परीकुट्टी ने मुश्किल से ये शब्द कहे, 'क्या मैं जाऊं, करुथम्मा?'
ऐसा लगा मानो वह सवाल अचानक उसके दिल पर आ गिरा हो। और फिर भी करुथम्मा बस इतना ही कह सकी, 'मेरे मालिक, आप मुसलमान हैं!'
परीकुट्टी को इसकी प्रासंगिकता समझ नहीं आई। 'तो क्या?'
इसका कोई जवाब नहीं था। तो क्या हुआ अगर वह मुसलमान था?
और फिर करुथम्मा ने भी खुद से यही सवाल पूछा।
अचानक उसने गुस्से से कहा, 'मालिक, जाओ और अपनी झोपड़ी में काम करने वाली महिलाओं के स्तन और नितंबों को घूरो!'
परीकुट्टी को एहसास हुआ कि वह उस पर बुरी नज़र रखने का आरोप लगा रही थी। उसे ज़रूर लगता होगा कि उसने अपने यहाँ काम करने वाली सभी महिलाओं को बहकाया होगा। वह उसके सामने अपनी बेगुनाही कैसे साबित करता? काश उसे पता होता। उसने किसी भी महिला को उस नज़र से नहीं देखा था जिस नज़र से उसने उसे देखा था।
उसने पूरी ईमानदारी से विनती की, 'मैं अल्लाह की कसम खाता हूँ, मैंने ऐसा कभी नहीं किया!'
यह ठीक वही था जो वह सुनना चाहती थी। अच्छाई की पुष्टि। उसे कोई शक नहीं था। लेकिन सिर्फ दूसरी महिलाओं को न देखना ही उसकी अपेक्षा नहीं थी।
वह चाहती थी कि उसे पता हो कि वह उससे अपनी अपेक्षाएँ कैसे व्यक्त करे। इसके लिए उसे समुद्र की उन परंपराओं के बारे में बताना होगा जो उसे बांधे

रखती थीं; उन नियमों के बारे में जो उसके जीवन को नियंत्रित करते थे। उसे नहीं पता था कि कैसे बताए; न ही उसमें हिम्मत थी।
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा। मानो उस सन्नाटे को भांपते हुए और यह जानते हुए कि वह सन्नाटा और भी गहराता जाएगा, करुथम्मा ने कहा, 'मेरी मां जल्द ही यहां आ जाएंगी।'
'तो क्या हुआ?'
वह भय से कांप उठी। 'यह गलत है! यह पाप है!'
‘करुथम्मा, तुम घर के अंदर हो और मैं बाहर हूँ। तो फिर समस्या क्या है?’ क्या उसे यह बात भी उसे समझानी चाहिए? लेकिन कैसे? अगर वह समझाना शुरू करे तो कहने को बहुत कुछ होगा!
पारीकुट्टी ने पूछा, 'करुथम्मा, क्या तुम मुझे पसंद करती हो?'
उसने अचानक जवाब दिया, 'हां, मैं करती हूं!'
उसके प्रति उसकी चाहत ने ही उसे यह पूछने पर मजबूर किया, 'तो फिर, करुथम्मा, तुम बाहर क्यों नहीं निकल रही हो?'
नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा!
'सुनो, मैं तुम्हें हंसाऊंगा नहीं। मैं बस तुम्हें देखना चाहता हूं... और फिर चला जाऊंगा।'
वह बेबस होकर रो पड़ी, 'नहीं, नहीं... तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?'
कुछ देर बाद परीकुट्टी ने कहा, 'ठीक है, मैं जा रहा हूँ...'
मानो उसी के जवाब में, झोपड़ी के अंदर से एक आवाज़ आई। 'मैं तुम्हें हमेशा पसंद करूंगा...'
किसी से विवाह का वचन देने के लिए और क्या कहा जा सकता है?
परीकुट्टी चली गई। और तभी करुथम्मा को एहसास हुआ कि उसने वो सब कुछ नहीं कहा जो वह कहना चाहती थी। उसने बस उस बात को कह दिया था जिसे कहा नहीं जा सकता था।
उस रात उसने चेम्बनकुंजू और चक्की को मिट्टी के तेल के दीपक की रोशनी में बैठकर पैसे गिनते देखा। हालाँकि, ऐसा लग रहा था कि यह पर्याप्त नहीं था। लेकिन चेम्बनकुंजू को एक तरह की राहत महसूस हो रही थी।
उन्होंने कहा, 'भगवान का शुक्र है कि हम ओसेप या उन जैसे किसी भी क्रूर गिरोह के साथ शामिल हुए बिना इतनी संपत्ति जमा करने में कामयाब रहे!'

चक्की को भी राहत मिली। ज़रा सोचिए, अगर उन्होंने उन साहूकारों से कर्ज़ लिया होता जो भोले-भाले मछुआरों को ठगने के लिए नकदी लेकर घूमते रहते थे, तो उनकी क्या हालत होती।
ऐसे में न तो नाव होगी, न जाल; और न ही सौदे में लगा पैसा।
कुछ ही समय पहले ओसेप और गोविंदन ने उन्हें पैसे उधार देने की पेशकश की थी। लेकिन चेम्बनकुंजू ने इसे ठुकरा दिया था। वह जानता था कि अगर वह उनके साथ शामिल हो जाता, तो वह उनके चिरस्थायी कर्ज में फंस जाएगा। और जल्द ही, वे उसकी नाव और जाल छीनकर उसे अपना बना लेंगे। इस तट पर हमेशा से ऐसा ही होता आया था।
लेकिन उसके पास जो पैसा था, वह पर्याप्त नहीं था। तो अब क्या किया जाए? चेम्बांकुंजू ने कहा, 'छोटा बॉस हमें बाकी भी दे दे। क्या?'
अपने जीवन में पहली बार करुथम्मा को अपने माता-पिता के प्रति घृणा का अनुभव हुआ।
वह अपनी मां से और भी ज्यादा नफरत करने लगी क्योंकि उसकी मां विरोध भी नहीं कर रही थी।
अगले कुछ दिनों में परीकुट्टी की झोपड़ी में काफी चहल-पहल रही। मछलियाँ सुखाकर टोकरियों में रखी जा रही थीं। करुथम्मा इस हलचल का कारण जानती थी।
कुछ ही दिनों में करुथम्मा को दुनियादारी का ज्ञान हो गया।
अपने जीवन में बेहतर बदलाव की उम्मीद से उत्साहित होकर चक्की ने करुथम्मा से कहा, 'मगले, हम भी नाव और जाल खरीदने जा रहे हैं!'
करुथम्मा कुछ नहीं बोली। वह अपनी माँ की खुशी में शामिल नहीं हो पा रही थी। उसमें एक बदलाव आ गया था।
चक्की ने मन ही मन कहा, 'समुद्र माता ने हम पर कृपा की है।'
करुथम्मा के भीतर दबा हुआ क्रोध फूट पड़ा। 'अगर तुम लोगों को धोखा दोगे तो क्या समुद्र माता क्रोधित नहीं होंगी?'
चक्की ने करुथम्मा के चेहरे को गौर से देखा। करुथम्मा ने जरा भी पलक नहीं झपकाई। और उसे अपनी माँ से और भी बहुत कुछ पूछना था।
‘अम्माची, उस भोले-भाले आदमी को नाव और जाल खरीदने के लिए धोखा क्यों दे रही हो? यह तो ज़ुल्म है…’
‘तुम क्या कह रहे हो? धोखा?’
करुथम्मा ने साहसपूर्वक अपनी जगह पर डटी रही। 'हाँ।'

'कौन?'
करुथम्मा ने सन्नाटे में जवाब दिया।
चक्की ने कहा, 'अगर हम ओसेप से पैसे उधार लें, तो वह जल्द ही नाव और जाल बना लेगा।'
'बात सिर्फ इतनी ही नहीं है, अम्माची। अगर आप ओसेप से पैसे उधार लेती हैं, तो आपको उसे और उस पर लगने वाला ब्याज भी चुकाना होगा।'
क्या हमें इसे वापस नहीं चुकाना होगा?
‘यह… यह, क्या तुम सचमुच इसे चुकाने का इरादा रखते हो?’ उसने चक्की के चेहरे पर यह सवाल उछालते हुए पूछा।
चक्की ने अपने किए का बचाव करने की कोशिश की। उसने कहा कि परीकुट्टी से खरीदी गई सूखी मछली महज़ एक व्यापारिक सौदा था। चक्की ने तर्क दिया कि चेम्बनकुंजू ने तो बस पूछा था। उसने ज़िद नहीं की। उसने झूठ नहीं बोला और न ही धोखा दिया। वे पैसे लौटा देंगे; यह तो निश्चित था।
करुथम्मा ने पूछा, 'अगर आपकी मंशा इतनी नेक थी, तो आधी रात को सूखी मछली क्यों लाई? दिन में क्यों नहीं लाई?'
‘देखो, समुद्र रो रहा है,’ उसने अचानक कहा।
ऐसा लग रहा था मानो वह कहना चाह रही हो कि उसके माता-पिता के धोखे ने समुद्र को भी रुला दिया हो। चक्की गुस्से से भड़क उठी। 'तुम क्या कह रही हो? कि तुम्हारे पिता ने पैसे चुराए?'
करुथम्मा ने कुछ नहीं कहा।
मां को मिली शक्ति का लाभ उठाते हुए चक्की ने पूछा, 'वह मुस्लिम लड़का तुम्हारे लिए कौन है? तुम्हें उसकी इतनी परवाह क्यों है?'
उसके मुंह से शब्द नहीं निकले। परीकुट्टी उसके लिए कुछ भी मायने नहीं रखता था। भला वह ऐसा क्यों कहे? चुप रहना ही साहस का काम था। क्या परीकुट्टी उसके लिए कोई मायने नहीं रखता था? करुथम्मा को तब एहसास हुआ कि वह तो उसका सब कुछ था।
चक्की ने अपना सवाल दोहराया और फिर पूछा, 'क्या यह लड़की समुद्र तट और मछुआरों पर विपत्ति लाएगी?'
करुथम्मा ने निर्भीक होकर विरोध किया, 'मैं कोई नियम नहीं तोडूंगी।'
तो फिर आप उसकी भलाई को लेकर इतने चिंतित क्यों हैं?

‘तुम उसे बर्बाद कर दोगे। उसे अपनी मछली पकड़ने की झोपड़ी तोड़कर जाना पड़ेगा।’
चक्की ने करुथम्मा पर गालियों की बौछार कर दी। करुथम्मा वहीं खड़ी सुनती रही। उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। चक्की तो बस बड़बड़ा रही थी। जब गालियाँ अश्लीलता की ओर बढ़ने लगीं, तो करुथम्मा ने अपनी माँ से धीरे से पूछा, 'क्या आपको लगता है कि उसने मेरे पिता पर भरोसा करके पैसे दिए?'
'और क्यों?'
अचानक चक्की को याद आया कि करुथम्मा ने परीकुट्टी से पैसे मांगे थे। शायद इसीलिए करुथम्मा के मन में इतने सारे सवाल थे।
चक्की ने पूछा, 'या फिर, आपको लगता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि आपने उससे ऐसा करने के लिए कहा था?'
हाँ। इसीलिए। बस इसीलिए – लेकिन करुथम्मा यह कह नहीं सकीं। हालाँकि उन्हें पता था कि परीकुट्टी उनसे प्यार करता है।
करुथम्मा ने कहा, 'मुझसे बातें मत कहलवाओ, अम्माची!'
‘क्या?’ चक्की रुकी और फिर बोली, ‘क्यों, क्या मैंने उससे पैसे लेने के लिए छेड़छाड़ की? इसमें तुम्हें क्या बात करनी है?’
करुथम्मा फूट-फूटकर रोने लगीं। उन्होंने कहा, “अम्माची, आपने उससे पैसे क्यों लिए? आपने ही तो मुझे सही राह दिखाई थी और अब आपने हमें उसके कर्ज में डाल दिया है…” करुथम्मा का गला भर आया।
चक्की को करुथम्मा का मतलब समझ आ गया। वह सही थी। कुछ देर के लिए चक्की परेशान हो गई। क्या उन्होंने खुद को खतरे में डाल दिया था?
चक्की ने पूछा, 'क्या हुआ, बच्ची?'
करुथम्मा रोने लगी।
‘क्या वह यहाँ आया था, बच्चे?’
करुथम्मा ने बोला बड़ा झूठ, 'नहीं!'
‘तो फिर बात क्या है, बच्चे?’
अगर वो यहाँ आ गया तो मैं क्या करूँगा?
चक्की ने उस लेन-देन में अपनी बेगुनाही साबित करने की जल्दी की। उसने इसके परिणामों पर विचार नहीं किया था। उसने तो बस परीकुट्टी से एक मदद मांगी थी; और उसने मान ली थी। उनका इरादा उधार लिया हुआ पैसा लौटाने का था।

करुथम्मा का इस पर संदेह करना सही था। एक बात तो निश्चित थी। लिटिल बॉस एक नेक इंसान था। हालांकि, वह अभी जवान था।
चक्की अचानक परेशान हो गई। उसने सोचा, शायद उन्हें वो पैसा नहीं लेना चाहिए था। लेकिन चेम्बनकुंजू को ये सब समझ नहीं आएगा।
चक्की ने एक बार फिर करुथम्मा की शादी को लेकर चेम्बनकुंजू को परेशान करना शुरू कर दिया। 'तुम्हें उस वेलायुधन से बात करनी ही होगी। सबसे पहले तो यही करना है। उसके बाद हम नाव और जाल खरीदने के बारे में सोच सकते हैं।'
लेकिन चेम्बांकुंजू सहमत नहीं हुआ। उसने अपना मन बना लिया था।
वह सब कुछ कैसे बता सकती थी? हताश और क्रोधित चक्की ने कहा, 'इतने वर्षों तक मैंने टोकरी में मछली बेचकर गाँव-देहात में घूम-घूम कर आपकी नाव और जाल खरीदने में मदद की। अब मुझसे ऐसी उम्मीद मत रखना...'
चेम्बांकुंजू ने उसे चुनौती भरी नजरों से देखा।
‘यह कैसी बेतुकी बातें हैं?’ उसने पूछा।
चक्की चिड़चिड़ी हो गई। 'मेरा मतलब बिल्कुल यही था।'
'क्या?'
मुझे अपनी बेटी का ख्याल रखना होगा।
'और उसका अर्थ यह निकलता है?'
‘वह एक वयस्क लड़की है – जिसके स्तन और नितंब हैं। मैं उसे यहाँ घर पर अकेला छोड़कर पूरे दिन के लिए बाहर नहीं जा सकता।’
चक्की ने मन बना लिया था। और इसलिए उसने आगे कहा, 'या फिर, उसकी शादी करवा दो!'
चेम्बनकुंजू चुप रहा, मानो वह चक्की की बात समझ गया हो। अगर चक्की मछली बेचने के लिए पूरब नहीं जाता, तो यह बहुत बड़ा नुकसान होगा। उसने पूछा, 'क्या कुछ गड़बड़ है?'
‘अभी तो कुछ नहीं। लेकिन अगर कुछ हो गया तो?’
उन्हें सावधान रहना था। लेकिन चेम्बनकुंजू को अपनी बेटी पर पूरा भरोसा था। करुथम्मा एक समझदार लड़की थी; वह जल्दबाजी में फैसले नहीं लेती थी। अगर उसे अकेला भी छोड़ दिया जाता, तो भी वह बहकावे में नहीं आती...
चक्की ने पूछा, 'क्या आपने क्षणिक चूक के बारे में सुना है?'
चेम्बांकुंजू ने कुछ नहीं कहा।

अगले दिन चक्की मछली बेचने के लिए पूरब की ओर नहीं गई। और न ही चेम्बनकुंजू ने उसे मजबूर किया।
उस रात वे सूखी मछलियों की और टोकरियाँ लाने की योजना बना रहे थे। लेकिन उस रात चक्की ने भी विरोध किया। 'हमें इसकी ज़रूरत नहीं है।'
चेम्बांकुंजू ने पूछा, 'क्यों नहीं?'
‘तुम उस लड़के को धोखा क्यों दे रही हो?’
‘किसने कहा कि मैं उसे धोखा दे रहा हूँ?’
‘और क्या? क्या आप वाकई पैसे लौटाने का इरादा रखते हैं?’
चेम्बनकुंजू ने जोर देकर कहा कि वह ऐसा करेगा।
करुथम्मा ने सोचा कि उसे परीकुट्टी को बताना ही होगा कि उसे उसका पैसा वापस नहीं मिलेगा। उसने उससे छुपकर मिलने का मौका तलाशा। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।
उस रात परीकुट्टी कई टोकरियाँ सूखी मछलियों से लदी हुई फिर से आया। और चेम्बनकुंजू ने बिना किसी झिझक के उससे वह सब ले लिया। उसने पैसे लौटाने का समय भी नहीं बताया।
उस समय करुथम्मा को लगा कि वह अपने पिता का सामना करने की हिम्मत भी कर सकती है। हालाँकि, वह चक्की को ही इसके लिए ज़िम्मेदार मानती थी। करुथम्मा जानती थी कि यह एक ऐसा बोझ होगा जो उसे जीवन भर के लिए जकड़ कर रखेगा।

तीन

चेम्बांकुंजू के पास अब पर्याप्त धन था। इसलिए वह नाव और जाल की तलाश में निकल पड़ा।
यह खबर समुद्रतट पर गूंज उठी। अफवाह फैल गई कि उसे सोने की एक ईंट मिली है।
एक दिन, लोगों ने बताया, उसे किनारे पर बहकर आई एक काली चट्टान का टुकड़ा मिला। जब उसने उसे उठाया, तो वह सोने की ईंट निकली।
कुछ लोगों का दावा था कि उसने मितव्ययिता के बल पर यह धन जमा किया था। हालाँकि, यह बात कुछ हद तक तर्कसंगत नहीं लगती थी। वे सभी उसकी तरह ही नौकर थे। रोज़मर्रा के खर्चों को पूरा करने के बाद बचत के लिए कुछ भी नहीं बचता था। तो फिर उसने अतिरिक्त धन कहाँ से बचाया होगा?
अचाकुंजु, चेम्बांकुंजु का हमउम्र था। उसका घर चेम्बांकुंजु के घर से सटा हुआ था। दरअसल, उत्तर दिशा में। वे बचपन के दोस्त थे। इसलिए, जल्द ही सभी लोग अचाकुंजु से सवाल करने लगे: चेम्बांकुंजु अपने साथ कितना पैसा ले गया? नाव खरीदने के बाद वह किसे काम पर रखेगा? उसे पैसा कहाँ से मिला? ऐसे ही जिज्ञासा भरे सवाल पूछे जाने लगे।
अचाकुंजु को कुछ भी पता नहीं था। लेकिन उसने ऐसा दिखाया मानो उसे हर बात पता हो। चेम्बनकुंजु अचानक एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया था। तो क्या उसके सबसे अच्छे दोस्त को भी उस प्रतिष्ठा का हिस्सा नहीं मिलना चाहिए? और इसलिए अचाकुंजु ने यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से सवालों के जवाब दिए। इस प्रकार, अचाकुंजु भी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया।
कोचुवेलु ने उनसे एक सवाल पूछा, 'मैंने सुना है कि अचकुंजु चेट्टन की इसमें हिस्सेदारी है...'
एक सवाल जिसने अचाकुंजु को व्याकुल कर दिया। हालांकि, वह किसी के सामने अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं करना चाहता था। 'शायद। या शायद नहीं!'
यह सवाल अचकुंजु के दिखावटी महत्व को कम करने के लिए पूछा गया था। अचकुंजु का जवाब सुनकर सब लोग खिलखिलाकर हंस पड़े। अचकुंजु का चेहरा पीला पड़ गया। ‘तुम क्यों हंस रहे हो?’ किसी ने ताना मारा। ‘क्या अचकुंजु चेट्टन खुद नाव और जाल नहीं खरीद सकता? उसे सिर्फ आंशिक मालिक होने की क्या जरूरत है?’ शर्मिंदा होकर अचाकुंजु ने पलटकर कहा, 'अगर हर कोई नाव और जाल खरीदने लगे, तो उन्हें चलाने वाला कौन होगा?'

कोचुवेलु ने अपनी हंसी दबाते हुए कहा, 'हां, इसीलिए अचकुंजु चेट्टन नाव और जाल नहीं खरीद रहा है...'
तभी अचाकुंजु को एहसास हुआ कि उसके दोस्त उसका मजाक उड़ा रहे हैं। इसके बाद, जब भी कोई उससे चेम्बांकुंजु की नाव के बारे में बात करता, तो वह उसे नज़रअंदाज़ कर देता। जल्द ही लोगों को उसका यह नज़रअंदाज़ करना हास्यास्पद लगने लगा और वे उससे बेमतलब के सवाल पूछकर उसे चिढ़ाने लगे। एक दिन मछली पकड़ने का काम बहुत कम हुआ। अचकुंजु को तीन रुपये मिले। चाय की दुकान चलाने वाले अहमद कुट्टी का उस पर कुछ कर्ज़ था। यह पुराना कर्ज़ था। उस दिन अहमद कुट्टी ने अचकुंजु पर झपट्टा मारा और उससे पैसे छीन लिए। इस तरह अचकुंजु खाली हाथ घर लौटा। इसी बीच, नल्लापेन्नू, जिसके पास रात का खाना बनाने का कोई सामान नहीं था, अचकुंजु के पैसे लेकर घर लौटने का इंतज़ार कर रही थी। मछुआरे और उसकी पत्नी के बीच ज़बरदस्त झगड़ा हुआ। पत्नी ने उस पर अपनी कमाई शराब, चाय या तंबाकू पर उड़ाने का आरोप लगाया। उसने अचकुंजु की बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया।
उसने अपना मुंह खोला और उसके चेहरे पर अपनी सांस छोड़ी ताकि उसे पता चले कि उसने दिन भर की कमाई शराब में नहीं उड़ाई थी। लेकिन फिर भी वह उस पर विश्वास नहीं कर रही थी।
नल्लापेन्नू ने कहा, 'तुम सारा पैसा शराब पर उड़ा देते हो... इसीलिए तुम्हारी कमाई के बिना हम एक दिन भी नहीं गुजार सकते।'
‘क्या मैंने आज शराब पी थी? मुझ पर आरोप लगाने की हिम्मत मत करना!’
‘शायद तुमने आज शराब नहीं पी होगी? लेकिन क्या तुम पैसे वाले दिनों में यही नहीं करती?’ यह उस महिला का विलाप था जिसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उस रात खाने का इंतजाम कैसे करेगी।
लेकिन अचाकुंजु ने उसे संक्षिप्त स्वर में फटकारा, 'अहंकारी होने की हिम्मत मत करना!'
क्या मैं घमंडी हो रहा हूँ? तुम्हारा दोस्त नाव और जाल खरीद रहा है और हमारे पास आज रात के खाने के लिए भी पर्याप्त पैसे नहीं हैं। क्या मैं घमंडी हो रहा हूँ?
अचाकुंजू का जवाब: उसकी पीठ पर दो कोड़े।

ये कैसी भयानक बदकिस्मती थी? किनारे पर हर कोई उसका मज़ाक उड़ा रहा था और उसे चिढ़ा रहा था क्योंकि चेम्बनकुंजू नाव और जाल खरीद रहा था। और उसे घर पर भी चैन नहीं मिलने वाला था।
'अगर कोई नाव और जाल खरीद रहा है, तो आप इसका दोष मुझ पर क्यों डाल रहे हैं? मुझे इसके लिए भुगतान करने के लिए क्यों मजबूर किया जा रहा है?' चेम्बनकुंजू ने खुद को भूखा रखकर पैसा जमा किया था। न तो अचाकुंजू और न ही वहां मौजूद कोई और ऐसा कर सकता था।
अपनी झोपड़ी के उत्तरी छोर से चक्की और करुथम्मा झगड़े की बातें छुपकर सुन रही थीं।
चक्की ने पुकार कर कहा, 'अचकुनजु चेट्टा, क्या हम कभी उन दिनों में आपके घर भीख मांगने आए थे जब हम खुद को भूखा रख रहे थे?'
अचाकुंजु चक्की की ओर मुड़ा। 'ऐसा मत करो... तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई... मैं चेम्बनकुंजु को बचपन से जानता हूँ।'
लेकिन चक्की रुकने को तैयार नहीं थी। 'तुम्हें क्या पता? अगर आज शाम तुम्हारी झोपड़ी में आग नहीं जली, तो ये तुम्हारी पत्नी की गलती है।'
जब बातचीत का रुख उसकी ओर मुड़ा, तो नल्लापेन्नू भड़क उठी। उसने कहा, 'इस मछुआरे के बारे में ऐसी बातें कहने की हिम्मत मत करना...'
‘हा… और मछुआरा क्या करेगा?’
अचाकुंजु ने चक्की से पूछा, 'मुझे बताओ हमारी गलती क्या है?'
'डाह करना!'
‘किससे? तुम्हारे मछुआरे से?’ अचाकुंजु ने खांसते हुए और थूक का एक बड़ा सा टुकड़ा थूकते हुए अपनी घृणा प्रकट की। ‘कौन सा आदमी उस नीच, निकम्मे आदमी से ईर्ष्या करेगा?’
चक्की गुस्से से आग बबूला हो गई। 'क्या तुम्हें लगता है कि तुम जो चाहो बोलकर बच निकलोगे?'
अचाकुंजु ने पलटवार करते हुए कहा, 'तुम क्या करोगे?'
'मै क्या करू?'
‘यह सारा घमंड सिर्फ इसलिए कि तुम्हारे पास अचानक कुछ पैसे आ गए!’
बहस को उग्र रूप लेते देख करुथम्मा घबरा गई। उसने चक्की का मुंह बंद करने के लिए अपनी हथेली उसकी मां के मुंह पर रख दी। लेकिन अचकुंजू के न रुकने पर

चक्की का गुस्सा भी बढ़ता चला गया। अंत में करुथम्मा अपनी मां को घसीटकर वहां से ले गई।
जब उसका गुस्सा शांत हुआ, तो अचकुंजु सोचने लगा। उसके घर में उस रात खाना न बनने से ज़्यादा उसे झगड़ा परेशान कर रहा था। महिलाओं का आपस में झगड़ा करना आम बात थी। लेकिन उसका कभी भी चेम्बनकुंजु या चक्की से झगड़ा नहीं हुआ था। और अब हो गया था। अचकुंजु को नींद नहीं आ रही थी।
अगली सुबह, समुद्र में जाने से पहले, उसने नाव मालिक से दो रुपये उधार लिए और अपनी पत्नी को दे दिए। और उसी दोपहर उसने नल्लापेन्नू को अपनी दिनभर की सारी कमाई सौंप दी। फिर उसने घोषणा की कि वह भविष्य के लिए एक मिसाल कायम कर रहा है।
‘सुनो, नल्लापेन्नू, मैं अपनी सारी कमाई तुम्हें दे दूंगा। इसे संभाल कर रखना। चलो देखते हैं कि क्या हम भी कुछ पैसे बचा सकते हैं।’
नल्लापेन्नू इस घटनाक्रम से बेहद प्रसन्न हुई। उसने कहा, 'भले ही हम नाव और जाल न खरीदें, कम से कम भूखे तो नहीं सोएंगे।'
‘कौन कहता है कि हमारे पास अपनी नाव और जाल नहीं होंगे? इतना लापरवाह मत बनो। ऐसा हो भी सकता है, तुम्हें पता है।’
यह सच है। नल्लापेन्नू ने आशा की एक लहर के साथ सोचा। उसने कहा, 'देखो हमारे पड़ोसियों का क्या हाल हो गया है... वे भी कभी हमारी तरह थे... अब तो वे हमसे बात भी नहीं करते!'
अचाकुंजु को यह बात पसंद नहीं आई। उन्होंने कहा, 'दूसरों के बारे में बात क्यों करें? हमें बस अपने काम से मतलब रखना चाहिए।'
नहीं... मैंने बस यूं ही इसका जिक्र किया था। लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि चक्की बहुत ही घमंडी हो गई है। अब वह ऐसी ही है।
अचाकुंजु ने उसे फटकारते हुए कहा, 'अपनी जुबान बंद रखो, औरत।'
मैं एक शब्द भी नहीं कह रहा हूँ।
‘यही सबसे अच्छा है। देखते हैं हम अपने जीवन में क्या कर सकते हैं।’ नल्लापेन्नू को बस एक ही शिकायत थी। 'काश आपने इसके बारे में पहले सोचा होता।'
अचाकुंजू ने हल्की सी आह भरी। वह सही कह रही थी। लेकिन खुद को तसल्ली देने के लिए उसने कहा, 'औरत, एक मछुआरे को कुछ भी जमा करने की क्या ज़रूरत है? उसकी सारी दौलत पश्चिम में है; उसका पूरा इलाका ही विशाल है। और क्या तुम

जानती हो कि पूर्वजों ने क्या कहा था - नाव और जाल तो किनारे पर रहने वालों के लिए होते हैं। इन सब बातों को छोड़ो! अगर एक मछुआरा ठान ले, तो उसे नाव और जाल रखने से कौन रोक सकता है?'
'यह सब ठीक है... लेकिन क्या आप यह नहीं देख सकते कि आपका एक साथी अब नाव और जालों का मालिक है।'
अचाकुंजु ने कहा, “चेम्बांकुंजु बड़ा होशियार आदमी है। सचमुच बहुत होशियार! वह तो बस अपनी नाव खरीदने के बारे में सोच रहा था।” अचाकुंजु ने फिर से गुर्राते हुए मानो अपनी बात की पुष्टि की। “देखते हैं!”
और इस प्रकार एक निर्णय लिया गया।
शाम को उसे जालों की मरम्मत के लिए नाव बनाने के कारखाने जाना पड़ा। उस दिन जालों में बने बड़े-बड़े छेदों से कई मछलियाँ निकल गई थीं। जब तक अचाकुंजु वहाँ पहुँचा, तब तक दूसरे मछुआरे भी इकट्ठा हो चुके थे और अपना काम शुरू कर चुके थे। बातचीत एक बार फिर चेम्बांकुंजु की ओर मुड़ गई।
अचाकुंजु ने पूछा, 'क्या तुम्हारे पास करने के लिए और कुछ नहीं है? क्यों गपशप कर रहे हो? बोलो, बोलो, बात खत्म करो और बेचारे को उसके बाद आराम करने दो...'
अयांकुंजु ने पूछा, 'तुम इतने परेशान क्यों हो?'
अचाकुंजु ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, 'क्यों? क्या मैंने कुछ गलत कहा?' रमन मूपन ने न्यायाधीश जैसा भाव धारण कर लिया। 'क्यों? क्या हमें चेम्बनकुंजू पर चर्चा करने का अधिकार नहीं है?'
आपको क्या अधिकार है?
रमन मूपन अचंभित रह गया। 'वाह, अचकुंजू! अगर कोई लड़का ऐसा कहता तो मैं उसे नज़रअंदाज़ कर देता। लेकिन तुम... तुम तो एक अनुभवी मछुआरे हो।'
अचाकुंजू को इसका मतलब समझ नहीं आया। उसका मतलब सिर्फ इतना था कि उन्हें गपशप नहीं करनी चाहिए। और क्या एक समझदार आदमी से यही उम्मीद नहीं की जाती? क्या यह अच्छी बात नहीं है?
अचाकुंजु ने पूछा, 'मूपान... तुम्हारा क्या मतलब है?'
रमन मूपन ने रस्सी नीचे रख दी और अचकुंजू के चेहरे पर एक सवाल उछाल दिया। 'अचकुंजू, क्या तुम तट के नियमों को नहीं जानते?'
अचाकुंजु को यह बात अच्छी तरह पता थी। फिर भी…

रमन मूपन ने आगे पूछा, 'क्या आपको लगता है कि चेम्बनकुंजू ने उन आदेशों का पालन किया है?'
अचाकुंजु को समझ नहीं आ रहा था कि यह सब किस ओर ले जा रहा है।
रमन मूपन ने विस्तार से बताया, 'क्या आपने हमारे देश में ऐसा कुछ सुना है? न केवल अतीत में, बल्कि हाल के समय में भी... क्या कभी ऐसा हुआ है कि कोई वयस्क लड़की अविवाहित रह गई हो?'
अयांकुंजु ने बीच में विराम भरते हुए कहा, 'अतीत में, तटों का एक रक्षक हुआ करता था।'
रमन मूपन ने आगे कहा, 'सुनो, जब घर में शादी के लायक लड़की हो, तो भला कौन सा आदमी नाव और जाल खरीदेगा?'
प्राचीन काल में, तट रक्षक इसकी अनुमति नहीं देता था। ये ऐसे नियम थे जिनका उल्लंघन नहीं किया जा सकता था। और तट का रक्षक मछुआरा यह सुनिश्चित करता था कि नियमों का पालन हो। क्योंकि इन नियमों का एक उद्देश्य था। ये नियम मछुआरों के कल्याण के लिए ही बनाए गए थे।
अयांकुंजु ने पूछा, 'तो कानून क्या कहता है? लड़की की शादी किस उम्र में होनी चाहिए?'
रमन मूपन एक पुराने खिलाड़ी थे। इसलिए उन्होंने कहा, 'दस साल!' वेल्लामनलिल वेलायुधन ने पूछा, 'और अगर लड़की दस साल की होने के बाद भी अविवाहित रहती है तो क्या होता है?'
इस अलंकारिक प्रश्न में उद्दंडता की झलक थी। यह तट के नियमों पर सवाल उठाने का प्रयास था।
रमन मूपन ने इस पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए कहा: 'अगर उसकी शादी नहीं हुई तो क्या होगा? ऐसा हो ही नहीं सकता। ऐसा होना तय ही नहीं है।' वेलायुधन ने अपने मन की बात कहने की अनुमति दी। 'किनारे के अन्य मछुआरे क्या कर सकते हैं?'
‘इस परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाएगा। वे अब इस तट पर नहीं रह सकेंगे।’
एक अन्य युवक पुन्यान ने टिप्पणी की, 'लेकिन वह सब तो अतीत की बात थी...' अयांकुंजु का जवाब तीखा था, 'नहीं, नहीं, यह बात आज भी सही है। क्या आप इसे आजमाना चाहते हैं? हम आपको दिखाएंगे... हम आपको दिखाएंगे कि कैसे हम उस बड़े आदमी चेम्बनकुंजु को इधर-उधर दौड़ाते हैं।'

रमन मूपन ने मौन सहमति जताते हुए कहा, “फिर उन्होंने एक और फरमान जारी किया। ‘क्या हर किसी के पास नाव और जाल होना अनिवार्य है, अयांकुंजु?’” अयांकुंजु ने जवाब दिया, 'नहीं, बिलकुल नहीं!'
रमन मूपन ने अब इस निर्देश को और विस्तार से समझाया।
समुद्र के बच्चे अनगिनत धन-संपत्ति के वारिस हैं। उनकी हथेलियाँ हमेशा भरी रहती हैं। इसलिए उनमें से प्रत्येक के लिए अपनी नाव और जाल खरीदना बिल्कुल संभव है। यदि किनारे पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के पास अपनी नाव और जाल हो, तो समुद्र में कौन जाएगा?
उसने पूछा, 'अगर हममें से कोई यहाँ तट पर नाव और जाल खरीदना चाहे, तो क्या आपको नहीं लगता कि यह संभव है?'
यह सच था!
अयांकुंजु ने अब गंभीरता से भरा एक सवाल उठाया। 'ऐसे में, ऐसा क्यों है कि हर किसी के पास अपनी नाव और जाल नहीं होते?'
इसका भी एक कारण है। समुद्र के वंशज पाँच प्रकार के होते हैं: आर्यन, वलक्करन, मुक्कवन, मरक्कन और एक पाँचवीं जाति जिसका कोई विशेष नाम नहीं है। और फिर पूर्व में पुरुषों के कुछ उप-समूह हैं जो नौकाओं का संचालन करते हैं।
केवल वलक्करन को ही नौकाएँ और जाल रखने की अनुमति है। वास्तव में, पूर्व में तट का रक्षक, तट स्वामी, केवल वलक्करन को ही नौकाएँ और जाल खरीदने की अनुमति देता है। और वह भी अपने विवेक के आधार पर।
वेलायुधन ने पूछा, 'तो चेम्बंकुंजु अंकल किस प्रकार के हैं?'
पुन्यान मुस्कुराया।
रमन मूपन ने कहा, 'मुक्कावन!'
पुण्यन ने ताना मारते हुए कहा, 'अब तो वह चेम्बनकुंजू की जाति भी जानना चाहता है!'
अचकुंजु ने पूछा, 'ऐसा क्यों है, पुण्यन?'
उन्होंने उसे शादी का प्रस्ताव दिया। उस लड़की से शादी करने का।
‘यह अच्छी बात है,’ अचाकुंजु ने कहा। ‘वह एक अच्छी लड़की है।’
लेकिन अयांकुंजु को यह बात पसंद नहीं आई। उन्होंने कहा, 'अचाकुंजु, तुम्हारे लिए चेम्बांकुंजु की हर चीज अच्छी है।'

फिर अयांकुंजु ने वेलायुधन को सलाह देते हुए कहा, 'तुम्हें उस कंजूस से कुछ नहीं मिलेगा। यह याद रखना... और जहाँ तक उस लड़की की बात है, वह वैसी नहीं है जैसा तुम सोचते हो।'
अब अचाकुंजु को गुस्सा आ गया। 'तुम क्या कह रहे हो? तुम उस लड़की के विवाह प्रस्ताव को कैसे ठुकरा सकते हो? क्या एक मछुआरे का यही व्यवहार होता है?' अयांकुंजु ने उत्तर दिया, 'मैं तो बस सच बोल रहा हूँ।'
आंडी, जो तब तक चुप थी, अब बोलने लगी और बातचीत का रुख दूसरी ओर मोड़ दिया। 'अगर कोई अधिकृत व्यक्ति नाव और जाल खरीद ले तो क्या होगा? क्या ऐसा पहले कभी हुआ है?'
'हां। लेकिन उसे नाव और जाल होने के फायदों का आनंद ज्यादा देर तक नहीं मिला!'
फिर अयांकुंजु यह जानना चाहता था कि उनके समुदाय में वलक्करन जाति के लोग कौन-कौन हैं।
रमन मूपन ने कहा, 'चेरथला पल्लीकुनाथ वलक्करन प्रकार के हैं; अलापुझा पारुथिकावलक्करन, और यहां रमनकुंजु का परिवार, कुन्नले आदि...'
पुन्यान जानना चाहता था, 'नाव और जाल खरीदने से पहले तट के स्वामी को क्या- क्या भेंट चढ़ानी चाहिए?'
‘सात शग तंबाकू और पंद्रह रुपये। और वलक्करन को भी यह करना होगा।’
इसके बाद बातचीत तट रक्षक और उसके अधिकार क्षेत्र की ओर मुड़ गई। 'तट रक्षक के पास बहुत अधिक शक्ति होती है।'
उस सत्ता के विरुद्ध विद्रोह की भावना जगाते हुए वेलायुधन ने पूछा, 'कोई व्यक्ति अपने पैसों से नाव और जाल खरीद रहा है। तो फिर तट स्वामी को भेंट क्यों देनी चाहिए?'
पुन्यान ने इस पर झल्लाकर कहा, 'देखो तो सही! यह तो अभी से चेम्बांकुंजू के दामाद की तरह व्यवहार करने लगा है!'
अयांकुंजु ने भी अपनी बात रखी। और फिर कुछ और भी कहा, 'ठीक है, जब आप अपनी नाव और जाल यहाँ लाएँ तो आप और आपके होने वाले ससुर तट के प्रमुख का विरोध क्यों नहीं करते? तब आपको खुद पता चल जाएगा कि क्या होता है...'
यह एक चुनौती थी। क्योंकि तट रक्षक की अनुमति के बिना चेम्बांकुंजू अपनी नाव और जाल समुद्र में नहीं उतार सकता था। अयांकुंजू ने कहा कि ऐसा होना नामुमकिन था।

यह एक चुनौती थी जिसे वेलायुधन स्वीकार करना चाहता था। लेकिन उसे ऐसा करने का अधिकार क्या था? फिर भी, वेलायुधन ने विरोध किया। 'तुम ईर्ष्यालु हो।' ‘एक मछुआरा, ईर्ष्यालु?’
'बिल्कुल!'
अचकुंजु ने देखा कि बात झगड़े की ओर बढ़ रही है, इसलिए उन्होंने हस्तक्षेप किया। उन्होंने वेलायुधन को सलाह दी, 'बेटे, चुप रहो।'
कुछ देर तक कोई नहीं बोला।
और जब किनारे पर गपशप और बहसें तेज़ हो रही थीं, चक्की ख्यालों में खोई बैठी थी। कुछ ही दिनों में वह एक नाव मालिक की पत्नी बन जाएगी। उसका जीवन भर का सपना सच होने वाला था। और इसके लिए उन्होंने कितनी मेहनत की थी - उसके मछुआरे पति और उसने! यह सिर्फ इसलिए संभव था क्योंकि वह आसपास की सभी महिलाओं से बेहतर थी। और एक बार जब उनके पास नाव और जाल आ जाएंगे, तो यह भी संभव है कि वे करुथम्मा के लिए भी एक बेहतर साथी ढूंढ लेंगे।
मां ने बेटी से कहा, ‘बेटी! तुम्हारे पिता के बड़े-बड़े सपने हैं। इस साल जो बड़ी मछली पकड़ी है, उससे वो जमीन और हमारा अपना घर खरीदेंगे। और फिर तुम्हारी शादी करवा देंगे।’
करुथम्मा ने कोई जवाब नहीं दिया। चक्की मन ही मन बुदबुदाती रही, ‘समुद्र माता ने हमें आशीर्वाद दिया है। हम पर कोई कर्ज नहीं है। और अगर बड़ी मछली पकड़ने का मौका नहीं मिला, तो भी कोई हमसे कुछ नहीं मांगेगा…’ लेकिन चक्की के अपनी बात पूरी करने से पहले ही करुथम्मा ने पूछा, ‘क्या तुम दावा कर रही हो कि हम पर कोई कर्ज नहीं है, अम्माची?’
तब चक्की को समझ आया कि करुथम्मा पारीकुट्टी पर बकाया कर्ज की बात कर रही थी।
चक्की बेचैन हो गई। उसने इधर-उधर खोजबीन की और जवाब ढूंढ लिया। 'नहीं, आपको इसे कर्ज नहीं मानना चाहिए।'
करुथम्मा ने थोड़े रूखेपन से पूछा, 'नहीं, आपको ऐसा नहीं लगता?'
बात यहीं खत्म नहीं होती। अगर हम भुगतान नहीं करेंगे तो वह नाव और जाल जब्त नहीं करेगा।
'ऐसा इसलिए है क्योंकि छोटा बॉस एक भोला-भाला इंसान है।'
चक्की ने गुस्से का नाटक करते हुए पूछा, 'ये क्या है? जब तुम उस छोटे बॉस की बात करते हो, तो तुम्हारे शब्दों में मिठास क्यों टपकती है?'

करुथम्मा कुछ नहीं बोली। न ही वह अपनी माँ के सवालों के सामने घबराई। चक्की ने उससे सवाल करना जारी रखा। 'अगर तुम बेदाग रहोगी, तो तुम्हें एक अच्छा, तंदुरुस्त नौजवान मिल जाएगा... अपना भाग्य तय करना तुम्हारे हाथ में है!'
करुथम्मा अविचलित थीं। और उन्होंने अपने भीतर एक विशेष साहस का संचार होते हुए महसूस किया। उन्होंने पूछा, 'क्या मैं ही वह हूं जो कलंकित हूं?' जैसे कि उसने करुथम्मा का जवाब सुना ही न हो, चक्की ने पूछा, 'तुम्हारे लिए छोटी बॉस कौन है?'
करुथम्मा ने यह नहीं कहा कि वह उसके लिए कुछ भी नहीं था। लेकिन उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने कौन सा अपराध किया था?
चक्की भी जानती थी कि वह निर्दोष है। और उसने कोई गुनाह नहीं किया है। वह आज भी वही लड़की है जो पहले थी।
परीकुट्टी से पैसे उधार लेना गलत था। क्या करुथम्मा का उनसे कर्ज वापस माँगना अपराध था? फिर भी... फिर भी, उसके मन में परीकुट्टी के लिए एक खास तरह की कोमलता थी। और वह इस बात से परेशान थी कि उसे इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा। उन्हें तो बहुत पहले ही उसकी शादी करवा देनी चाहिए थी।
चेम्बनकुंजू को शायद इस बात का एहसास नहीं था।
चक्की ने आगे कहा, ‘प्यारी, तुम्हारे लिए ही पापा इतनी मेहनत कर रहे हैं। मेरी प्यारी, क्या तुम ही वह वजह बनोगी जिसके कारण हम यह सब खो देंगे…’ करुथम्मा ने कुछ नहीं कहा।
चक्की ने पूछा, 'क्या अम्माची आपसे कुछ पूछ सकती हैं? आपको सच बोलना ही होगा? क्या आपको वह मुस्लिम लड़का पसंद है?'
करुथम्मा, जिसे 'ना' कहना चाहिए था, कुछ नहीं बोली। उसकी उस खामोशी ने उसकी माँ को भयभीत कर दिया।
चक्की को लगा जैसे उसका मन का सुकून भंग हो गया हो। वह विलाप करते हुए बोली, 'हे मेरी सागर माता, उस दुष्ट ने मेरी बेटी को बहकाया है!'
करुथम्मा ने अपनी हथेली से चक्की का मुंह बंद कर दिया। 'ये क्या बकवास है, अम्माची?'
चक्की ने अपनी बेटी की ओर विनती भरी नजरों से देखा और गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'मेरी बेटी, हमें धोखा मत देना!'

फिर भी करुथम्मा यह नहीं कहती थी कि उस मुस्लिम लड़के के लिए उसके मन में कोई भावना नहीं थी।
उस शाम अचकुंजु चेम्बनकुंजु के घर आया। उसने चक्की को समुद्र तट पर हुई सारी बातचीत बताई। उसने कहा, “समुद्र तट के लोग गड़बड़ी फैलाने की योजना बना रहे हैं। अयांकुंजु और रमन मूपन मुख्य उपद्रवी हैं। जब चेम्बनकुंजु घर आए, तो सबसे पहले उसे इस समस्या का समाधान ढूंढना होगा। चेम्बनकुंजु और मैं बचपन के दोस्त हैं। मैं उसके बारे में दूसरों की बातों से सहमत नहीं हो सकता। और न ही मैं उनका साथ दूंगा।”
और इस तरह चक्की की नव-प्राप्त नाजुक शांति एक बार फिर नष्ट हो गई।
चक्की जानती थी कि किनारे का उनके खिलाफ हो जाना क्या होता है। उन्होंने ऐसा कौन सा अपराध किया था जिसके लिए उन्हें यह सब सहना पड़ रहा था? क्या उन्होंने अपनी बेटी की शादी अभी तक नहीं की थी?

चार

अयांकुंजु, रमन मूपन और बुजुर्ग पीढ़ी के दो अन्य लोग तट प्रमुख से मिलने गए, उन्होंने पूरे मछुआरे समुदाय के हितों का प्रतिनिधित्व करने का दायित्व स्वयं पर लिया। वे अपने साथ सम्मान के प्रतीक के रूप में भेंट लेकर गए। आखिरकार, वे बुरी खबर लेकर आए थे। उनके द्वारा लाई गई खबर पूरे तट और मछुआरों को बर्बाद कर देगी। उनकी शोक याचिका और मुख्य शिकायत यह थी: चेम्बंकुंजु की एक वयस्क बेटी है। उसने अभी तक उसकी शादी नहीं की है। वह इस तट पर मौज-मस्ती करती है।
तट के स्वामी ने उनकी बातें ध्यान से सुनीं। उन्होंने वादा किया कि वे इस मामले की जांच करेंगे।
हालांकि, अयांकुंजु के मन में कहीं न कहीं एक विचार खटक रहा था। उनकी शिकायत को वह महत्व नहीं दिया गया जिसके वह हकदार थी। तटरक्षक बल के अधिकारी ने इसे उचित गंभीरता नहीं दी थी।
शोर मास्टर के बोलने के बाद भी याचिकाकर्ता इंतजार करते रहे। उन्होंने पूछा, 'आप लोग यहां क्यों खड़े हैं?'
अयांकुंजु को एक और आरोप लगाना था। 'जबकि वह लड़की हमारे तटों को बर्बाद करने पर तुली हुई है, चेम्बनकुंजु नाव और जाल खरीदने चला गया है।'
यह खबर शोर मास्टर के लिए बिल्कुल नई थी। 'लेकिन चेम्बनकुंजू को यह पैसा कहाँ से मिला?'
बुजुर्ग पुरुषों के पास इसका कोई जवाब नहीं था।
अयांकुंजु ने बड़ी विनम्रता से संदेह व्यक्त करते हुए कहा, 'आखिरकार वह एक मछुआरा है। तो क्या उसने नाव और जाल खरीदने के लिए अनुमति ली है?'
नहीं! नहीं! उसने ऐसा नहीं किया!
‘तो फिर हम, तटवर्ती निवासी, क्या करें?’
तट के प्रमुख ने कुछ देर सोचा और फिर कहा, 'ऐसा लगता है कि वह सोचता है कि समय बदल गया है।'
अयांकुंजु ने धीमी आवाज़ में 'हाँ' कहा।
तट के प्रमुख ने आदेश जारी किया, 'उसे अपनी नाव लाने दो। हालांकि, मुझे पहले सूचित किए बिना कोई भी उसमें काम करने नहीं जाएगा।'

‘जी हां, बिल्कुल, ऐसा ही होगा,’ अयांकुंजु ने कहा। ‘लेकिन कुछ उद्दंड नौजवान भी हैं। मैं उनके बारे में कुछ नहीं कह सकता!’ अयांकुंजु वेलायुधन के बारे में सोच रहा था।
शोर मास्टर ने इसे महत्वहीन समझा। वह अच्छी तरह जानता था कि कोई भी सार्वजनिक रूप से उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं करेगा। अभी तो नहीं। मैं इसका ख्याल रखूंगा। बाकी मछुआरों को बता दो कि उसे नाव खरीदने की मेरी अनुमति नहीं है।
विजयी रमन मूपन और अयांकुंजु लौट आए। वे घर-घर जाकर तट स्वामी का फरमान सुनाने लगे। हालांकि, अयांकुंजु को पूरा यकीन था कि वेलायुधन अकेले इस फरमान का पालन नहीं करेगा। आखिर एक पिल्ले के काटने से कितना दर्द हो सकता है? उसे इसका कड़ा सबक तो भुगतना ही पड़ेगा।
चक्की को घटना की जानकारी मिल गई।
उसने सुना था कि तट प्रमुख के क्रोध ने किस प्रकार लोगों के जीवन को तबाह कर दिया था। ऐसे परिवारों के बारे में सुना था जिन्हें तट छोड़कर भागना पड़ा था और जिन्हें यह तसल्ली भी नहीं थी कि वे दूर-दराज के अन्य तटों पर मछुआरे बन सकते हैं। बुरी अफवाहें हर जगह फैल जाती थीं। तब उनके पास एकमात्र उपाय यही बचता था कि वे अपना धर्म बदल लें।
इन दिनों ऐसे फरमानों की शक्ति नहीं रह गई थी। क्या समय नहीं बदल गया था? फिर भी, अगर तट प्रमुख चाहता, तो उनकी नाव पर काम करने वाला कोई नहीं होता। जन्म या मृत्यु के समय कोई भी उनके घर में प्रवेश नहीं करता। इस तरह का बहिष्कार आज भी हो सकता है।
उन्हें नाव और जाल खरीदने के लिए निकलने से पहले भेंट चढ़ानी चाहिए थी और अनुमति लेनी चाहिए थी।
लेकिन फिर भी, उन्होंने कौन सा अपराध किया था?
तट के किनारे शोर मास्टर के प्रतिबंध की खबर फैल गई थी। महिलाओं ने बताया कि उन्हें एक वयस्क लड़की की शादी न कराने के लिए दंडित किया जा रहा था। और करुथम्मा चाहती थी कि काश वह पैदा ही न हुई होती। वह अपने माता-पिता के लिए इतनी परेशानियों और दुखों का कारण थी। वह वयस्क होना नहीं चाहती थी, अपने स्तनों को विकसित होते देखना नहीं चाहती थी। उसने समुद्र तट को अपवित्र नहीं किया था। वह जैसी थी वैसी रहकर क्या नुकसान कर रही थी?

हालांकि, ये सारे तर्क, चाहे कितने भी तर्कसंगत क्यों न हों, किसी काम के नहीं थे।
मां और बेटी दोनों ही बड़ी उत्सुकता से चेम्बांकुंजू के आने का इंतजार कर रही थीं।
कालीकुंजू के घर पर कुछ महिलाएं थीं। चक्की उनकी गपशप छुपकर सुन रही थी।
एक महिला ने बताया कि करुथम्मा और परीकुट्टी का संबंध है। उसने उन्हें किनारे पर खड़ी नाव की छाया में खड़े होकर बातें करते और हंसते देखा था।
इसीलिए वे करुथम्मा की शादी नहीं करवा रहे थे।
क्या कोई माँ अपने बच्चे के बारे में ऐसी निंदा सुन सकती है? चक्की अपनी बेटी की रक्षा के लिए शेरनी की तरह फुर्ती से अपने छिपने की जगह से बाहर निकली। और इस तरह वहाँ जमा महिलाओं की ज़ुबानें बेकाबू हो गईं।
उन्होंने दावा किया कि चक्की ने भी जवानी में तट को बर्बाद कर दिया था। ऐसे में चक्की ने पूछा, "कालीकुंजू के बच्चों में से एक का पिता कौन था? क्या वह उन्हीं मुस्लिम व्यापारियों में से एक नहीं था? वही जो सूखी मछली बेचता था और घर-घर जाकर खरीदने के लिए अग्रिम राशि लेता था।" तब ऐसा लगा कि वहाँ एकत्रित सभी महिलाओं की अपनी-अपनी गुप्त कहानियाँ थीं।
यह एक लड़ाई थी – एक तरफ चक्की और दूसरी तरफ बाकी महिलाएं एकजुट होकर उसके खिलाफ खड़ी थीं। लेकिन चक्की ने बहादुरी से मुकाबला किया।
करुथम्मा बाड़ के पास खड़ी होकर सुन रही थी। आरोपों से वह स्तब्ध थी। क्या उसकी माँ भी जवानी में प्रेम में पड़ी थी? क्या इन महिलाओं ने तटों को अपवित्र किया है? क्या इन सभी परंपराओं में कोई पवित्रता नहीं है? क्या यह सब महज़ बातें हैं?
इन महिलाओं और उनके घिनौने अतीत के बावजूद पश्चिमी सागर शांत और विशाल था। आज भी नावें समुद्र में जाती थीं। बारिश होती थी और मछलियाँ अंडे देती थीं। मछुआरे जीवन यापन करते थे और फलते-फूलते थे। तो उन पुराने आदेशों का क्या अर्थ था?
जैसे-जैसे झगड़ा बढ़ता गया, वे फिर से करुथम्मा के बारे में बात करने लगे। करुथम्मा ने अनसुना कर दिया। सब बकवास है! वह परीकुट्टी की रखैल थी! केवल उसी जैसा बलवान मुसलमान ही करुथम्मा जैसी कामुक औरत को काबू में रख सकता था। वे उसकी शादी सिर्फ इसलिए नहीं कर रहे थे क्योंकि उन्हें उसकी आमदनी

खोने का डर था। ऐसी गपशप का सिर्फ एक ही मतलब हो सकता था: औरतों ने उसकी माँ पर जो आरोप लगाए थे और उसकी माँ ने उन्हें जो जवाब दिया था, सब झूठ था। चक्की की जुबान से निकल रही गालियों को रोकने में असमर्थ, कलिकुनजु ने घोषणा की, 'बस! हो गया! अब देखो आगे क्या होता है! शोर मास्टर ने तुम्हारे साथ क्या करना है, यह तय कर लिया है!'
चक्की टस से मस नहीं हुई। वह युद्ध के लिए तैयार थी। वास्तव में, लड़ने की आवश्यकता और भी बढ़ गई। हर चीज से लड़ने की आवश्यकता।
‘निर्णय लेने के लिए क्या है? तट प्रमुख क्या करने वाला है?’
उस समय, करुथापेन्नू ने कहा, 'शोर मास्टर उन बदमाशों से निपटना जानता है जिन्हें परंपराओं का कोई सम्मान नहीं है!'
चक्की ने दृढ़ता से अपना बचाव करते हुए कहा, 'वह हमारा क्या बिगाड़ सकता है? जरूरत पड़ने पर हम मुसलमान बन जाएंगे या किसी दूसरे धर्म में परिवर्तित हो जाएंगे... तब तटरक्षक क्या करेगा?'
एक अन्य महिला ने कहा, 'कहिए, कहिए, क्या आप कहेंगी? कि आपने अपनी बेटी की शादी उस मुस्लिम पुरुष से तय की है।'
एक अन्य महिला ने कहा, 'शायद मां और बेटी यही चाहती थीं!'
चक्की ने पूछा, 'तो इसमें गलत क्या है?'
करुथम्मा ने एक ऐसी अनुभूति का अनुभव किया जो उसने पहले कभी नहीं की थी। क्या यह दर्द था? उसे यकीन नहीं था। क्या यह एक बड़ी राहत थी? उसे इसका भी यकीन नहीं था।
करुथम्मा ने उदास स्वर में उसे पुकारा। शायद उसकी जुबान लड़खड़ाने लगी थी, इसलिए चक्की अपनी बेटी की ओर मुड़ी और उसके पास गई।
लेकिन चक्की अपनी झोपड़ी में पहुँचने के बाद भी खुद से बुदबुदाती रही। करुथम्मा अपनी माँ से अनगिनत सवाल पूछना चाहती थी। लेकिन उसमें हिम्मत नहीं थी। उसे बस अपनी माँ की यही बात बार-बार सुनाई दे रही थी: ज़रूरत पड़ने पर हम इस्लाम धर्म अपना लेंगे। उसकी नसें फड़कने लगीं। भावनाओं का एक असहनीय उबाल। क्या यह स्वाभाविक नहीं था? उसका दिल मानो किसी के वश में हो गया था।
अराजकता और खतरे उनके जीवन का अभिन्न अंग थे, इसलिए उनकी विरासत ने उन्हें एक ऐसे किले में कैद कर रखा था जहाँ पारंपरिक नियम और कानून उनके हर सांस

को नियंत्रित करते थे। और अब कोई ऐसा था जो उस किले से बाहर निकलने का रास्ता दिखा रहा था। बस एक निर्णय की जरूरत थी। और सब कुछ ठीक हो जाता। मुसलमान बन जाओ। फिर क्या होगा? उसने खुद को एक दुपट्टा और भारी मुंडू पहने, कानों में छेद करवाकर सोने के गहने पहने और सिर पर दुपट्टा बांधे हुए देखा। अगर वह इस तरह तैयार होकर परीकुट्टी के पास जाती, तो वह बहुत खुश होता! और फिर वह जितना चाहे उसके सीने को निहार सकता था। उसके नितंबों को देख सकता था। भले ही वह इसे पूरी तरह से न समझ पाए, लेकिन शायद यही उनके जीवन की उलझनों से निकलने का एकमात्र रास्ता था। उसे मछुआरे की पत्नी बनकर नहीं रहना पड़ेगा। अगर परीकुट्टी उस समय वहाँ आता, तो वह कहती, 'हम इस्लाम धर्म अपना रहे हैं।'
और परीकुट्टी खुशी से उछल पड़ता।
लेकिन क्या उसकी माँ ने ये बात सचमुच गंभीरता से कही थी? शायद उसने गुस्से में आकर अचानक ही ये बात कह दी थी। और वह अपनी माँ से ये पूछने से डर रही थी कि क्या उसने सच में ऐसा कहा था।
अगर वह ऐसा करती, तो उसकी माँ मान लेती कि वह चाहती है कि यह सच हो।
और इस प्रकार करुथम्मा अपने पीड़ादायक विचारों में ही सिमटी हुई जीवन व्यतीत करती रही।
शोर मास्टर के कुछ प्रतिनिधि वहां पहुंचे। लेकिन चेम्बांकुंजू अभी तक वापस नहीं आया था।
कुछ दिनों बाद, चेम्बांकुंजू की नई खरीदी हुई नाव किनारे पर आकर रुकी। और उसमें जाल लगे हुए थे।
यह नाव पहले पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन की थी, जो एक मछुआरा था। अब यह नई तो नहीं थी, लेकिन एक समय यह बेहद मशहूर नाव हुआ करती थी। चेरथला समुद्र तट पर जब मछली पकड़ने का मौसम आता था, तब यहाँ के लोग भी इसे अपनी पूरी शान में देख पाते थे।
तो क्या हुआ अगर वह थोड़ी पुरानी थी। कंदनकोरन के जालसाज़ ने नाव को कैसे छोड़ दिया? वह ज़रूर बहुत तंगहाली में होगा। और सब जानते थे कि वह जितना मशहूर था, उतना ही खर्चीला भी था।
वे सभी नाव को देखने आए। लेकिन उनमें से किसी ने कुछ नहीं कहा। यह स्पष्ट था कि उन सभी के मन में एक ही विचार था - चेम्बांकुंजू भाग्यशाली था कि उसे यह शानदार नाव मिली।

अचकुंजु ने एक समूह से कहा, 'ऐसा लगता है मानो पल्लिकुन्नथ की समृद्धि चेम्बनकुंजु के साथ नाव में ही चली गई हो।'
अयंकुंजु ने इसे हल्के में खारिज करते हुए कहा, 'बकवास! कुडुम्मकरन की समृद्धि एक मामूली मछुआरे से कैसे जुड़ सकती है? क्या तुमने पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन को नाव के पास खड़े नहीं देखा? उसका सुनहरा रंग और निकला हुआ तोंद। क्या तुमने उसके पहनावे को देखा है? सफेद मुंडू और कंधे पर काली धारीदार कपड़ा। तो तुम इन दोनों की तुलना कैसे कर सकते हो?'
रमन मूपन ने अपनी ओर से एक रोचक तथ्य जोड़ा। “ऐसे में, वह दुबली-पतली काली चक्की जल्द ही कंदनकोरन की पत्नी जैसी दिखने लगेगी! क्या आपने उसे देखा है?”
अयांकुंजु ने कहा, 'आह... उसे देखे बिना आह भरे बिना रहा ही नहीं जा सकता! वह कितनी खूबसूरत है...'
जब चेम्बनकुंजु घर लौटा, तो उसका सिर फट गया। वह बड़े उत्साह से उनके तट पर पहुँचा था। उसे यह खास नाव मिलना बहुत सौभाग्य की बात थी। और वह पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन के महल में गया था, वहाँ भोजन किया था – इन सब बातों के बारे में वह अपनी पत्नी को बताने के लिए बेताब था। और फिर कंदनकोरन की पत्नी भी थी…
वह ये सब बातें सबको बताने के लिए घर आया था, और अब ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसे कुचल दिया हो। वह इतना उदास कभी नहीं हुआ था। एक समय था जब उसके पास बस एक सपना था। अब, जैसे-जैसे वह सपना हकीकत में बदल रहा था, वैसे-वैसे वह बिखर रहा था।
और उसका गुनाह क्या था? कि नाव और जाल खरीदने के लिए निकलने से पहले वह तट के प्रमुख से मिलने नहीं गया था। ठीक है। वह यह समझ सकता था। आखिर उसने एक प्राचीन नियम तोड़ा ही था। लेकिन उसने नाव और जाल के लिए बड़ी मुश्किल से पैसे जुटाए थे। और इस काम के लिए पच्चीस रुपये अलग रखना भी उसके पास पर्याप्त नहीं था। उसे कैसे पता चलता कि इसे इतना बड़ा गुनाह माना जाएगा? चेम्बनकुंजु ने अपनी पत्नी से बेबसी से पूछा, 'हमने क्या गलत किया? हमने किसी को कैसे दुख पहुंचाया?'
चक्की ने कहा, 'क्या हमें कुछ करना पड़ेगा? यह तो बस ईर्ष्या है!'
‘यह सच है। लेकिन… अगर हमारे पास लगभग पच्चीस रुपये अतिरिक्त होते, तो यह सब ठीक हो जाता। और हम वह पैसा कहाँ से लाएँगे? हमें नाव में सामान भरने के

लिए और पैसे कमाने होंगे। अभी तो हमारे पास सिर्फ एक मछली पकड़ने का जाल है।’
चेम्बांकुंजु ने अपनी परेशानियों की एक लंबी सूची बताई। भला वह ये बातें किससे कहता? और भला उसकी बात कौन सुनता?
उसे सांत्वना देने के बजाय, चक्की ने उस पर चिल्लाते हुए कहा, 'तुम्हें यह अभिशाप हमारे सिर पर क्यों लाना पड़ा?'
चेम्बनकुंजु चुप रहे। वे भी इस बोझ से दबे हुए महसूस कर रहे होंगे। उनका सब कुछ खत्म हो चुका था। और पूरा समुदाय उनके खिलाफ था।
चक्की ने आगे कहा, 'अगर हमने उस लड़की की शादी हमारे पास मौजूद पैसों से कर दी होती, तो क्या हमें इतनी सजा मिलती?'
लेकिन चेम्बांकुंजू अब भी चुप था। अगर आपकी इच्छाएं बड़ी हों, तो आपको शांति शायद ही कभी मिलती है। क्या इसका मतलब यह है कि जो कुछ आपके पास है, उसी से संतुष्ट रहना चाहिए?
यह उत्सव का दिन होना चाहिए था। वह दिन जब उनके जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हुई थी। लेकिन उस दिन घर में मातम छाया हुआ था।
देर रात चेम्बनकुंजु ने अपनी पत्नी से कहा, 'अगर हमारे पास पैंतीस रुपये होते, तो हम सब कुछ सुलझा सकते थे!'
चक्की ने पूछा, यह कैसे संभव है?
और इस तरह उसने अपनी पूरी योजना उसे बता दी।
‘कल सुबह मैं तटरक्षक बल के अधिकारी से मिलूंगा। तब ये सारी समस्या हल हो जाएगी।’
‘सार्डिन जाल और सहायक जालों के बारे में क्या?’
‘ऐसा भी होगा!’
चक्की ने पहले ही उसकी जमा पूंजी लूट ली थी। उसने बांस के टुकड़े में छिपाकर जमीन में गाड़कर जो पैसे रखे थे, वे उसे दे दिए थे। अब चक्की ने इसका दोष चेम्बनकुंजू पर डाल दिया।
‘क्या आप हमारी हालत देख रहे हैं? काश हमने कुछ पैसे सोने में निवेश कर दिए होते। कम से कम हम उसे बेच तो सकते थे। लेकिन आपने तब मेरी विनती को ठुकरा दिया था!’
चेम्बंकुंजु सहमत हुए। 'एक रास्ता है, चक्की।'
'और यह था कि?'

‘वह…’ चेम्बनकुंजु अपने विचार को व्यक्त करने में हिचकिचा रहा था।
चक्की ने फिर से पूछा कि वह क्या चीज है।
चेम्बनकुंजू ने कहा, 'खैर, अगर हम उस लड़के से एक बार फिर संपर्क करें, तो कुछ न कुछ जरूर होगा।'
चक्की ने जल्दी से चेम्बनकुंजू का मुंह बंद कर दिया। उसे पक्का पता नहीं था कि करुथम्मा सो रही है या जाग रही है।
चेम्बनकुंजु ने अपनी पत्नी की हथेली अपने मुंह से हटाई और पूछा, 'क्यों? क्या हुआ?'
‘धीरे बोलो।’
'ओह क्यों?'
चेम्बनकुंजू को बहुत कुछ पता नहीं था। शायद वो सब कुछ जो किसी पिता को कभी पता नहीं होना चाहिए। लेकिन शब्द तो बोले जाने ही थे।
चेम्बनकुंजु ने फिर पूछा। तब चक्की ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'करुथम्मा कहती हैं कि यह ठीक नहीं है। अगर उन्हें पता चला तो वह झगड़ा शुरू कर देंगी।'
'इसके अलावा हम और क्या कर सकते हैं?'
मैं भी यही सोच रहा हूँ!
थोड़ी देर बाद चेम्बनकुंजू ने पूछा, 'क्या वह वहाँ है?'
'होना चाहिए!'
मुझे लगता है मैं जाकर जाँच करूँगा।
चक्की कुछ नहीं बोली। चेम्बनकुंजू ने दरवाजा खोला और बाहर निकल गया। करुथम्मा सो रही थी। उसे कुछ भी पता नहीं था कि क्या हो रहा है। काफी देर बाद चेम्बनकुंजु लौटा। उसका चेहरा साफ हो गया था। यह स्पष्ट था कि उसने अपना लक्ष्य पूरा कर लिया था!
‘वह बहुत ही सीधा-सादा लड़का है। वैसे, अच्छा लड़का है! उसके पास तीस रुपये थे और उसने सारे मुझे दे दिए।’
चक्की को राहत तो मिली, लेकिन साथ ही साथ बेचैनी भी महसूस हुई। दागी पैसा! चक्की को मन ही मन करुथम्मा की आवाज़ सुनाई दी।
हाँ। जब भी वे पैसे मांगते थे, वह हमेशा उन्हें पैसे क्यों दे देता था? क्या यह सवाल भी मायने रखता था? सिर्फ़ करुथम्मा की वजह से। और क्यों?

अगली सुबह, चेम्बनकुंजू तट प्रमुख से मिलने गया। पहले तो तट प्रमुख का रवैया आक्रामक था, लेकिन बाद में वह शांत हो गया। हालांकि, वह इस बात पर अड़ा रहा कि लड़की की शादी जल्द से जल्द कर दी जाए। उसने यह भी मांग की कि उसकी कमाई का हिस्सा उसे प्रतिदिन भेजा जाए।
अब चेम्बनकुंजु की बारी थी। उन्होंने उस ईर्ष्या के शोर के खिलाफ अपना विरोध जताया जिसे उन्हें सहना पड़ रहा था।
शोर मास्टर ने समाधान निकालने का वादा किया। और इस तरह, कम से कम फिलहाल के लिए, समस्याएँ कुछ हद तक हल हो गईं।
लेकिन नाव को उसके सभी सामानों के साथ पानी में उतारने के लिए उसे पाँच सौ रुपये की ज़रूरत थी। वो भी हो जाएगा।
लेकिन कैसे? चक्की जानना चाहती थी।
चेम्बनकुंजू ने कहा, 'परीकुट्टी इसे हमें दे देगा।'
चक्की अचंभित रह गई। करुथम्मा की जानकारी के बिना, वहाँ एक और युद्ध हो गया।
पति होने के नाते उसे प्राप्त अधिकार का प्रयोग करते हुए, चेम्बनकुंजु ने आदेश दिया, 'तुम्हें उससे पूछना होगा।'
'मैं नहीं कर सकता…'
‘ऐसे में तो नाव समुद्र में नहीं जाएगी।’
'अच्छा।'
लेकिन चक्की में अपनी बात पर अड़े रहने की हिम्मत नहीं थी। और चेम्बनकुंजू टस से मस नहीं हुआ। चक्की को लगा मानो वह अब कुछ कर ही नहीं पाएगा।
और चेम्बांकुंजु को ठीक यही उम्मीद थी कि ऐसा ही होगा।
चक्की ने पूछा, 'बताओ, क्या तुम सारा पैसा लौटा दोगे?'
'बिल्कुल,' चेम्बनकुंजू ने कहा। और उसने दावा किया कि वह उसे ब्याज भी देगा।
इस बार चक्की ने परीकुट्टी से संपर्क किया। आधी रात को सूखी मछली बेचकर चेम्बनकुंजू की नाव के लिए सामान खरीदा गया।
सब कुछ तैयार था। अब बस काम पर रखे जाने वाले लोगों की भर्ती बाकी थी।
तट प्रमुख ने बुजुर्ग मछुआरों के विरोध को शांत किया और व्यवस्था की।
आखिरकार, यह एक मामूली बाधा ही थी।

नाव देखते ही सब उसमें काम करने के लिए बेताब हो गए। अचाकुंजू को लगा था कि चेम्बांकुंजू उससे सलाह लेकर उसे नाव में काम करने के लिए बुलाएगा। दरअसल, इस बात पर उनके घर में दोनों के बीच बहस भी हुई थी। अचाकुंजू तो तट प्रमुख के आदेशों का विरोध करने के लिए भी तैयार था। आखिर वे बचपन के दोस्त थे।
लेकिन चेम्बांकुंजू ने उससे कुछ बार मुलाकात होने के बावजूद उससे बात नहीं की थी।
चेम्बंकुंजु ने बारह लोगों को चुना। अचकुंजू उनमें से एक नहीं था।
नाव को समुद्र में उतारने से एक दिन पहले एक छोटा सा अनुष्ठान होना था।
उन्हें एक भोज का आयोजन करना था। चेम्बनकुंजु ने व्यापारी हसन कुट्टी से भोज का सामान खरीदने की व्यवस्था की। उनके मेहमानों की सूची में कक्काझथ और पुन्नप्रा में रहने वाले कुछ रिश्तेदार शामिल थे। चेम्बनकुंजु ने करुथम्मा को समारोह में उन्हें आमंत्रित करने के लिए भेजा।
करुथम्मा विचारों में डूबी हुई किनारे-किनारे चल रही थी।
क्या आप अपनी मछली हमें बेचेंगे?
उस सौम्य प्रश्न ने करुथम्मा को अचानक रोक दिया। परीकुट्टी उसके सामने खड़ा था। कैसे? कहाँ? वह अचानक यहाँ से कैसे प्रकट हो गया?
करुथम्मा कुछ नहीं बोली। उसने वह बात भी नहीं कही जो वह पहले कह चुकी थी - अगर आप हमें अच्छी कीमत देंगे, तो हम खरीद लेंगे।
वह अब वह करुथम्मा नहीं रही थी।
परीकुट्टी ने सिर झुकाए खड़ी इस नई करुथम्मा से पूछा, 'क्या तुम मुझसे नाराज हो, करुथम्मा?'
वह कुछ नहीं बोली। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका दिल फट जाएगा।
अगर आप नहीं चाहते तो मैं और नहीं बोलूंगा।
सच तो यह है कि उसके पास कहने को बहुत कुछ था। पूछने को बहुत कुछ था। वास्तव में, वह यह भी पूछना चाहती थी - क्या मुझे इस्लाम धर्म अपना लेना चाहिए?
वह किनारे पर खड़ी एक नाव की छाया में चुपचाप खड़ी थी। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी निगाहें उसके सुडौल, उभरे हुए स्तनों पर टिकी हैं। लेकिन वह कुछ कह भी नहीं सकी – मुझे इस तरह मत घूरिए, मेरे मालिक।
उसने उसकी ओर चेहरा उठाकर कहा, 'मुझे जाना होगा, मेरे बॉस।'
उसे जाने के लिए उसकी सहमति की आवश्यकता थी। वह यूं ही नहीं जा सकती थी।

अचानक, डरी हुई करुथम्मा ने कहा, 'कोई हमें देख लेगा!'
वह चलती रही। कुछ ही कदम चली थी कि उसने उसे पुकारते हुए सुना, 'करुथम्मा!' उस कॉल में, उसकी आवाज़ में कुछ अजीब सा था। एक ऐसा अजीबपन जिसे उसने पहले कभी न तो जाना था और न ही सुना था।
वह ऐसे पीछे हट गई जैसे किसी मछली पकड़ने वाले कांटे में फंस गई हो। वह उसकी ओर नहीं बढ़ा। शायद वह उसके आने की उम्मीद में रुकी थी।
उनमें से किसी को भी नहीं पता था कि वे कितनी देर तक उस स्थिति में खड़े रहे। उसके मन में कौन-कौन सी भावनाएँ उमड़ रही होंगी?
समुद्र क्रोधित नहीं था; हवा भी नहीं चल रही थी। छोटी-छोटी लहरें उठीं और झाग में बदल गईं। समुद्र मुस्कुरा रहा था। क्या कभी इन किनारों पर ऐसी प्रेम कहानी घटी थी?
परीकुट्टी के मन में जो कुछ भी कहना और पूछना था, वह सब एक ही सवाल में समाहित हो गया। 'क्या तुम मुझे पसंद करती हो, करुथम्मा?'
खुद को रोक न पाने के कारण, करुथम्मा ने कहा, 'हाँ!'
और अधिक जानने की इतनी लालसा। 'क्या तुम सिर्फ मुझे ही पसंद करते हो?'
और परीकुट्टी को लगभग तुरंत ही अपना जवाब मिल गया।
'केवल आप।'
उसकी अपनी आवाज़ बिजली की कड़क की तरह कांप उठी। शायद तभी उसे अपने किए का एहसास हुआ। अपनी गलती का। उसके शब्द उसके सामने आ गए, मानो निंदा से भरे हुए हों। उसने परीकुट्टी के चेहरे की ओर देखा। उनकी आँखें मिलीं। जो कुछ कहना था, कह दिया गया। उनके विचार और इच्छाएँ एक-दूसरे के सामने प्रकट हो गईं।
वह आगे बढ़ती रही।

पाँच

अगले दिन तड़के, लगभग सभी लोग तट पर इकट्ठा हो गए। चेम्बनकुंजू की नाव समुद्र में उतारी जा रही थी। चूंकि एक नई नाव थी, इसलिए बाकी सभी नावों को भी उसी समय समुद्र में उतारना पड़ा। चक्की, करुथम्मा और पंचमी भी किनारे पर थीं। परीकुट्टी भी वहीं खड़ी थी, लेकिन थोड़ी दूरी पर। पंचमी ने करुथम्मा को परीकुट्टी की ओर इशारा किया। बदले में करुथम्मा ने पंचमी को चुटकी काट ली।
रमन मूपन ने देर से आने वालों को बुलाने के लिए ज़ोर से आवाज़ लगाई। अयांकुंजु ने उन्हें फटकारा। 'जब उन्हें पता है कि नई नाव है तो वे देर कैसे कर सकते हैं?'
चेम्बनकुंजू के नाविक तैयार थे। उनमें से एक ने परीकुट्टी का गीत गाना शुरू किया। यह गीत शोक से भरा हुआ था।
पूरब में नारियल के पेड़ों के ऊपर से चाँद झाँक रहा था और देख रहा था कि चेम्बनकुंजू की नाव को पानी में उतारा जा रहा है। समुद्र की देवी प्रसन्न थीं। लोग नावों के चारों ओर जमा हो गए। सबसे पहले समुद्र में उतारी जाने वाली नाव चेम्बनकुंजू की होगी।
अयांकुंजु ने अपने खुले मुंह पर हथेली हिलाते हुए कई तरह की ध्वनियाँ निकालीं। बाकी सभी ने भी उसी शुभ स्वर में पुकार लगाई। समुद्र तट उस पुकार से गूंज उठा।
Raman Moopan said, ‘Take the oar, Chembankunju.’
चेम्बनकुंजु ने चप्पू उठाया और प्रार्थना के प्रतीक के रूप में उसे अपने सिर पर रख लिया। फिर उसने अपने सभी कुलदेवों से प्रार्थना की और उनका आशीर्वाद और समर्थन मांगा।
वे सब मिलकर नाव को धक्का देने लगे। नाव रेत पर फिसलती हुई पानी को चीरती हुई आगे बढ़ी और देखते ही देखते समुद्र पर तैरने लगी।
चक्की और करुथम्मा प्रार्थना करते हुए खड़ी थीं, उनके हाथ कली की तरह जुड़े हुए थे। जब उन्होंने आंखें खोलीं, तो नाव लहरों के ऊपर उठ रही थी और गर्त में डूबकर पश्चिमी क्षितिज की ओर बढ़ रही थी। यह एक संकेत था जिसे समझना आवश्यक था।

रमन मूपन और अयांकुंजु किनारे पर खड़े होकर शगुन देख रहे थे। रमन मूपन ने पूछा, 'अयांकुंजु, तुम क्या सोचते हो?'
अयांकुंजु ने एक सवाल के साथ जवाब दिया। 'क्या आपको नहीं लगता कि कील पश्चिम की ओर झुकी हुई है?'
'हां। ढलान दक्षिण की ओर है।'
चक्की उत्सुकता से उनकी ओर बढ़ी। वह उनकी भविष्यवाणी जानना चाहती थी। उसने पूछा, 'अयंकुंजु चेट्टा, आपको क्या लगता है? क्या सब ठीक होगा?'
एक बुद्धिमान व्यक्ति की गंभीरता के साथ, अयांकुंजु ने कहा, 'यह अच्छी बात है, स्त्री। अब तुम्हें कभी कठिन समय का सामना नहीं करना पड़ेगा!'
चक्की ने एक बार फिर प्रार्थना की मुद्रा में अपने हाथ जोड़े और सर्वशक्तिमान समुद्र माता से प्रार्थना की।
नाव समुद्र के मध्य की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। वह ऐसे दौड़ रही थी मानो उसे पता हो कि जीत निकट है।
करुथम्मा ने कहा, 'हमारी नाव में एक खास तरह की भव्यता है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता, अम्माची?'
बोलते समय उसकी निगाहें नाव पर टिकी हुई थीं, और उसने कहा, 'और देखो यह कैसे चलती है।'
अयांकुंजु ने कहा, “क्या तुम्हें इस बारे में सोचने की भी ज़रूरत है, बहन? यह अब तुम्हारी है। लेकिन क्या तुम जानती हो कि यह पहले किसकी थी? पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन इसके मालिक थे। क्या तट पर कभी ऐसी नाव रही है? कितनी सुखमयी है, लेकिन उनकी हर चीज़ ऐसी ही है। उनकी पत्नी पिघले हुए सोने की तरह चमकती है। मछुआरों में उनके जैसी स्त्री नहीं है। वह बहुत सुंदर हैं। घर की बात करें तो, वह ऐसे ही सज्जन व्यक्ति हैं। और अब यह नाव तुम्हारी है। यह तुम्हारा सौभाग्य है, बहन!”
बाकी सभी नावें भी समुद्र में चली गईं। जल्द ही किनारे पर केवल माँ और बेटियाँ ही रह गईं। और परीकुट्टी। ठंडी हवा चलने पर परीकुट्टी काँप उठी।
दूर खुले समुद्र में नावें फैल गईं। वे जाल फेंक रही थीं।
पारीकुट्टी धीरे-धीरे चक्की की ओर चली। करुथम्मा अपनी माँ के पीछे चली गई।
पंचमी पारीकुट्टी के चेहरे पर मुँह फाड़े खड़ी रही।

परीकुट्टी ने अपना वही पुराना सवाल पूछा; बस इस बार उसने माँ से पूछा। चाहे गंभीरता से पूछा हो या मज़ाक में, उसके पास पूछने के लिए बस एक ही सवाल था, 'क्या आप हमें मछली बेचेंगी?'
चक्की ने जवाब दिया, 'हम इसे और किसे बेचेंगे, बच्चे? और किसे?'
चक्की उस प्रश्न के छिपे अर्थ को नहीं समझ पाई। भला वह कैसे समझ पाती? यह महज़ एक प्रश्न नहीं था। इसमें भावनाओं का पूरा सागर समाया हुआ था। अपनी माँ के पीछे खड़ी करुथम्मा ने कहा, 'मुझे ठंड लग रही है, अम्माची।'
आज ही के दिन नाव को समुद्र में उतारा गया था। इसलिए चक्की अपने वो शब्द कहे बिना नहीं जा सकी जो उसे कहने चाहिए थे। 'बेटी, तुम्हारी वजह से ही हम इस नाव को समुद्र में उतार पाए। तुम्हारे बिना ये मुमकिन नहीं था।' परीकुट्टी ने कोई जवाब नहीं दिया।
करुथम्मा को राहत का एहसास हुआ। कम से कम उसकी माँ ने इतना तो कहा। उनके एहसान को स्वीकार किया।
चक्की ने आगे कहा, 'जब बड़ी मछलियों के पकड़े जाने का मौसम खत्म हो जाएगा, तो हम आपको पैसे वापस कर देंगे।'
नहीं, ऐसा मत करो। अगर मुझे इसे वापस नहीं चाहिए तो क्या होगा?
‘आप इसे वापस क्यों नहीं चाहेंगे? लेकिन क्यों?’
परीकुट्टी ने कहा, 'मैंने इसे तुम्हें वापस लेने के लिए नहीं दिया था...' चक्की को यह बात समझ नहीं आई। ऐसा भी नहीं था कि करुथम्मा को भी समझ आई हो। लेकिन चक्की को एक अजीब सी गर्मी महसूस हुई। चक्की के मन में संदेह पनपने लगा।
‘क्या बात है, बच्चे?’
परीकुट्टी ने दृढ़ता से कहा, 'नहीं, मुझे यह वापस नहीं चाहिए।'
कुछ देर बाद परीकुट्टी ने आगे कहा, 'करुथम्मा ने मुझसे नाव और जाल खरीदने में मदद मांगी थी। और मैंने आपको पैसे दिए थे। अब मुझे वो वापस नहीं चाहिए।'
करुथम्मा को लगा जैसे उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया हो। उसका सिर चकराने लगा।
चक्की ने रूखेपन से कहा, 'तुम करुथम्मा को पैसे क्यों दोगे? वो तुम्हारी कौन है?'

फिर उसने कठोर स्वर में कहा, 'यह संभव नहीं है। यह सही नहीं है। आपको पैसे वापस करने होंगे।'
परीकुट्टी ने चक्की के चेहरे पर मौजूद सख्ती को भांप लिया। वह कुछ नहीं बोला।
एक माँ की तरह जो अपने बच्चे को जीवन की अच्छाइयों और बुराइयों के बारे में समझा रही हो, चक्की ने आगे कहा, “बेटा, तुम मुसलमान हो और हम मछुआरे हैं। तुम बचपन के साथी थे और शायद कभी इन किनारों पर साथ खेले भी थे। लेकिन वो तो बीते दिनों की बात है। हम उसकी शादी एक अच्छे मछुआरे से करवा देंगे। और तुम्हें भी एक अच्छी मुस्लिम लड़की से ही शादी करनी चाहिए।”
कुछ देर बाद चक्की ने आगे कहा, 'तुम बच्चे हो। तुम्हें स्थिति की गंभीरता का अंदाजा नहीं है। तुम्हें हमारी प्रतिष्ठा को धूमिल नहीं करना चाहिए। अगर कोई हमें इस तरह यहाँ खड़ा देख ले, तो वे हमारी बदनामी करने लगेंगे। लोग ऐसे ही होते हैं!'
चक्की ने अपनी लड़कियों को अपने साथ चलने को कहा। फिर वह मुड़ी और बड़ी सावधानी और कोमलता से परीकुट्टी से बोली, 'मेरी बात सुनो, मेरे बेटे, तुम्हें वह पैसा वापस ले जाना होगा।'
मां चली गई। करुथम्मा और पंचमी उनके पीछे-पीछे गईं। परीकुट्टी वहीं खड़ी उन्हें जाती देखती रही।
चक्की ने जो कुछ भी कहा, वह सब सही था। और उसे इतनी दृढ़ता से बोलना पड़ा। लेकिन उन शब्दों ने करुथम्मा के दिल को छलनी कर दिया था।
कुछ दूर चलने के बाद, करुथम्मा ने पीछे मुड़कर देखा। यह जानबूझकर नहीं किया गया था; लेकिन वह पीछे देखे बिना कैसे रह सकती थी?
जब वे घर पहुंचे, तो समुद्र तट से वह गीत सुनाई देने लगा जिसने उसे झकझोर दिया था।
चक्की ने किसी से विशेष रूप से नहीं कहा, “क्या वह कभी सोता भी नहीं?” चक्की ने करुथम्मा की ओर मुड़कर कहा, 'हमें तुम्हें जितनी जल्दी हो सके इस जगह से दूर भेजना होगा...'
उसकी मां के बयान में एक आरोप था। कि वह उन पर बहुत बड़ा बोझ थी; उनके जीवन में शांति की कमी का कारण थी। अपने भीतर के दुख और क्रोध को रोक न पाने के कारण, करुथम्मा ने विरोध करते हुए कहा, 'मैंने ऐसा क्या किया?'
चक्की कुछ नहीं बोली।

भोर के उजाले में चक्की और उसके बच्चे नावों को लौटते देखने के लिए समुद्र तट पर गए। सभी नावें खुले समुद्र में थीं। समुद्र को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उन्हें अच्छी मछलियाँ मिली हों।
‘तुम्हें क्या लगता है उन्हें क्या मिला होगा? कौन सी मछली होगी?’ करुथम्मा ने अपनी माँ से पूछा।
संकेतों से तो यही लगता है कि यह मैकेरल मछली है।
करुथम्मा ने बड़े उत्साह से कहा, 'ओह, कितनी शुभ शुरुआत है!'
‘बेटी, सागर की माता हम पर मेहरबान रही है।’
जैसे कोई छोटा बच्चा अपनी माँ से अपनी इच्छा तुतलाते हुए कहता है, वैसे ही करुथम्मा ने कहा, 'अम्माची, हमें अपना शिकार छोटे मालिक को देना होगा!' चक्की ने कोई नाराजगी नहीं दिखाई। न ही उसने यह पूछा कि छोटा बॉस उसका कौन है। चक्की भी यही चाहती थी। लेकिन चक्की को खुद भी संदेह था। 'पता नहीं तुम्हारा वह लालची बाप ऐसा करेगा या नहीं!'
करुथम्मा के पास एक उपाय था। 'जब नाव पास आए, तो हमें वहां जाकर इंतजार करना चाहिए। और तुम्हें पिताजी को बताना होगा।'
चक्की इस बात पर सहमत हो गई। यह आवश्यक था। ऐसा कुछ जो करना ही था।
पंचमी किनारे पर पहरा दे रही थी ताकि नाव दिखाई देते ही वह उन्हें बुला सके। तभी एक और बाधा आ पड़ी। पड़ोस की औरतें - नल्लापेन्नू, कालीकुंजू, कुंजिपेन्नू और लक्ष्मी - वहाँ आ गईं। उन्हें एक मदद चाहिए थी। कुंजिपेन्नू जानना चाहती थी कि वे मछलियाँ बड़े-बड़े दुकानदारों को थोक में बेचेंगी या छोटे व्यापारियों को। उस किनारे पर बड़े दुकानदारों को थोक में बेचना एक स्थापित प्रथा बन चुकी थी। इसलिए पूर्व की ओर मछली बेचने जाने वाली महिलाओं को बड़े दुकानदारों से मछली के लिए गिड़गिड़ाना पड़ता था।
कुंजिपेन्नू ने कहा, 'लेकिन हमें आपको यह बताने की जरूरत नहीं है, चक्की चेदाथी, आप इसके बारे में पहले से ही जानते हैं।'
चक्की उनकी मजबूरी को समझ सकती थी। बड़े-बड़े झोपड़ी मालिकों से मछली खरीदने में कोई मुनाफा नहीं था। बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी कि उन्हें मनचाही कीमत चुकानी पड़ती थी, बल्कि उन्हें उनके दुर्व्यवहार को भी सहना पड़ता था।
चक्की ने पूछा, 'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'

नल्लापेन्नू ने एक निश्चित अधिकार के साथ कहा, 'तुम्हें अपनी नाव से पकड़ी गई मछलियाँ हम मछुआरिनों को ही बेचनी होंगी।'
चक्की को समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे। आखिर वे सब पड़ोसी थे। और उनकी बातों पर कोई विवाद नहीं हो सकता था। लेकिन वह कैसे कोई वादा कर सकती थी? उसे खुद शक था कि चेम्बनकुंजू उनकी किसी योजना पर सहमत होगा या नहीं। और परीकुट्टी ने मछली मांगी थी। लेकिन वह उन्हें ये सब कैसे बता सकती थी? कालीकुंजु ने पूछा, 'चक्की चेदाथी, तुम कुछ क्यों नहीं कहते? क्या तुम सोच रहे हो कि चेम्बनकुंजु चेत्तन मान जाएगा? चक्की चेदाथी, तुम्हें ज़िद करनी ही होगी। आख़िरकार नाव और जाल भी तुम्हारी ही कमाई से बने हैं। वही पैसा जो तुमने टोकरी में मछलियाँ ढोकर कमाया था!'
चक्की को अच्छी तरह पता था कि उनका अवलोकन सत्य पर आधारित था।
लक्ष्मी ने कहा, 'क्या तुम अब भी हमारे साथ मछली बेचने के लिए पूरब की ओर आना जारी रखोगे?'
‘तुम पूछते ही क्यों हो? भले ही हमारे पास मछली पकड़ने का बेड़ा हो, चक्की हमेशा चक्की ही रहेगी,’ चक्की ने कहा।
लक्ष्मी ने माफी मांगते हुए कहा, 'मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मैंने तो बस यही सोचा था कि हम सारी जमीन खरीदकर आपस में बांट लेंगे।'
चक्की ने अपनी बेबसी का इशारा किया। 'मुझे सच में नहीं पता कि वह आदमी मानेगा या नहीं।'
नल्लापेन्नु ने कहा, 'तुम्हें ज़िद करनी होगी। तभी यह होगा!'
कालीकुंजु ने करुथम्मा की ओर मुड़कर कहा, 'तुम्हें अपने पिता को भी बताना होगा!'
करुथम्मा ने दृढ़ता से जवाब दिया, 'नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगी!'
लेकिन पंचमी मान गई। नाव के किनारे आने पर, झोपड़ी मालिकों के दावा करने से पहले, वह अपने पिता से बात करेगी। उसकी अपनी योजना थी। नाव के किनारे आते ही, वह मछली की एक टोकरी लेना चाहती थी, उसे सुखाकर अपनी सूखी मछली का भंडार बनाना चाहती थी। इसके लिए यह ज़रूरी था कि उसके पिता पकड़ी गई मछलियों को झोपड़ी मालिकों को न बेचें।
चक्की ने असहज स्थिति से निकलने की कोशिश करते हुए कहा, 'देखने दो।' लेकिन वह जानती थी कि ऐसा नहीं होगा। उसे इस स्थिति से बहुत परेशानी होने की आशंका थी।

जैसे ही सूरज आसमान में चढ़ा, किनारा झोपड़ी मालिकों, टोकरियाँ लिए महिलाओं और बच्चों से भर गया। खुले समुद्र में समुद्री चिड़ियाएँ चक्कर लगा रही थीं। नावों में बैठे पुरुष या तो जाल खींच रहे थे या मछलियों को बाहर निकाल रहे थे। हर कोई यह अंदाज़ा लगाने की कोशिश कर रहा था कि कौन सी मछली होगी।
खादर को लगा कि ये छोटी-मोटी चीज़ें होंगी। जो भी हो, ये काफी मात्रा में मौजूद लग रही थी। अचानक, पश्चिम से दो सीगल उनकी ओर उड़ते हुए आए। एक की चोंच में मछली थी। सभी ने आसमान की ओर देखा। और एक आवाज़ आई: 'सार्डिन! ये सार्डिन हैं!'
ऐसा प्रतीत हुआ कि नावें आगे बढ़ने लगी हैं। नावें पूरब की ओर मुड़ गईं। पंचमी दौड़कर घर चली गई।
‘अब, अब, यह सार्डिन है। पकड़ सार्डिन ही है!’
करुथम्मा और चक्की उत्सुकता से बाहर दौड़ीं। और फिर उसी क्षण चक्की ने समुद्र की माता को धन्यवाद कहा।
मां और बेटी दौड़कर किनारे पर पहुंचीं। वे अपनी नाव को मछलियों से लदी हुई देखना चाहती थीं। ऊंची लहरों पर से नावें उछलती हुई किनारे पर आईं। मां और बेटी इस बात पर बहस करने लगीं कि उनकी नाव कौन सी है।
जब से उन्हें पता चला था कि मछली सार्डिन है, तब से किनारे पर काफी चहल-पहल मची हुई थी। कुंजिपेन्नू, नल्लापेन्नू, कालीकुंजू और लक्ष्मी सभी चक्की के आसपास जमा हो गए थे। पंचमी ने एक टोकरी तैयार रखी थी। जब वे वहाँ खड़े थे, तभी उन्होंने देखा कि एक नाव चिड़िया की गति से एक लहर से दूसरी लहर पर छलांग लगाती हुई आगे बढ़ रही है। वह नाव मछलियों से भरी हुई लग रही थी। पंचमी ने बिना सोचे समझे कहा, 'लगता है जहाज पर सिर्फ एक ही आदमी है!'
नाव का आगमन किसी वीर की विजय के समान था। ऊपर समुद्री पक्षी मंडरा रहे थे। पीछे अन्य नावें थीं। और ऐसा लग रहा था मानो समुद्र से उत्सव का शोर गूंज रहा हो।
और उस विजयी नाव के पिछले हिस्से पर चेम्बांकुंजू खड़ा था। वह खड़ा नहीं था। वह उछल-कूद कर रहा था और चप्पू को तेज़ी से अंदर-बाहर घुमाते हुए नाव को घर की ओर ले जा रहा था। वह पानी में नहीं, बल्कि हवा में तैर रहा था। और उसके चप्पू ने आसमान में इतनी तेज़ी से लहरें पैदा कर दीं। उसके चप्पू

चलाने की शक्ति इतनी ज़बरदस्त थी कि नाव लहरों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। उस आगमन में भव्यता का अद्भुत नज़ारा था।
कालीकुंजु ने कहा, 'उसे देखो! जिस तरह से वह आ रहा है - क्या यह अद्भुत नहीं है?'
सभी इस बात पर सहमत थे कि नाव वाकई बहुत सुंदर थी। चक्की ने विनती करते हुए कहा, 'किस्मत को मत आजमाओ, लोगों!'
नाव और करीब आ गई। चेम्बांकुंजू पूरी तरह बदल चुका था। और क्या गजब का बदलाव था!
चक्की ने कहा, 'क्या गजब की खूबसूरती है!'
समुद्र द्वारा पोषित एक व्यक्ति की गरिमा।
फिर किसी ने नाव को खींचकर किनारे पर ला दिया। नाविकों ने अपने चप्पू नीचे रख दिए, नाव से कूद गए और नाव को किनारे पर और ऊपर खींच लिया।
बच्चे नाव के चारों ओर जमा हो गए। पंचमी भी उनमें से एक थी।
चेम्बनकुंजू ने गुस्से से घूरते हुए एक ही छलांग में जहाज के पिछले हिस्से से किनारे पर छलांग लगा दी। बच्चे चीखते-चिल्लाते चारों दिशाओं में भाग गए। पंचमी वहीं डटी रही। उसे डरने की क्या ज़रूरत थी?
चेम्बनकुंजु चिल्लाया, 'मैं नहीं चाहता कि कोई मेरी नाव से एक भी मछली उठाए!' और फिर उसने पंचमी को पकड़ा और उसे दूर फेंक दिया।
लड़की चीखते हुए जमीन पर गिर पड़ी, ‘अम्माची!’
चक्की और करुथम्मा ने पीड़ा से पुकार लगाई। एक महिला ने कहा, 'निर्दयी प्राणी! यह कैसा आदमी है? एक राक्षस!'
चेम्बनकुंजु की ही तरह पंचमी का भी एक सपना था। छोटी मछलियों को चुनकर, सुखाकर जमा करना। एक दिन इससे अच्छी खासी आमदनी होगी। इसलिए बेटी होने के नाते उसने अपने पिता की नाव पर जाने का फैसला किया। लेकिन चेम्बनकुंजु को यह सब दिखाई नहीं दिया। वह घमंड और अहंकार में चूर था।
नाव में जो कुछ भी था, वह समुद्र की देन था। उसे किसी ने बोया या पाला नहीं था। इसलिए उसका एक हिस्सा - कम से कम उसके छोटे बच्चे - गरीबों और बेसहारा लोगों के लिए थे; यही समुद्र का नियम था।
‘तुम्हें क्या हुआ है? क्या तुम राक्षसी हो?’ चक्की चिल्लाई और पंचमी को अपनी बाहों में भर लिया। माँ और बेटी ने पंचमी की छाती सहलाई। उसे दर्द

नहीं, बल्कि चोट लगी थी। उसके शरीर को नहीं, बल्कि उसकी भावनाओं को ठेस पहुंची थी।
झोपड़ी के मालिक नाव के चारों ओर धक्का-मुक्की कर रहे थे। परीकुट्टी सबसे आगे था। चेम्बनकुंजू किसी को जानता हुआ प्रतीत नहीं हो रहा था।
खादर बॉस ने पूछा, 'तो चेम्बनकुंजू, बिक्री के लिए क्या है?'
कुंजिपेन्नू, लक्ष्मी और अन्य महिलाएं नाव के चारों ओर चक्कर लगा रही थीं। पंचमी, जिसने उन्हें नाव से मछली खरीदकर देने का वादा किया था, जमीन पर अचेत और बेदम पड़ी थी। और चक्की उसके पास थी।
झोपड़ी मालिक बिक्री को अंतिम रूप दे रहे थे। कुंजिपेन्नू ने दूसरों से कहा, 'चलो फिर भी उनसे पूछ लेते हैं।'
नल्लापेन्नू ने पलटकर कहा, 'उस राक्षस से कोई क्या पूछ सकता है?'
अन्य नावें करीब आने लगीं। चेम्बांकुंजू उससे पहले ही सौदा पूरा करना चाहता था।
परीकुट्टी ने पूछा, 'क्या आप मुझे मछली बेचेंगे?'
चेम्बनकुंजु ने परीकुट्टी को अनदेखा करने का नाटक किया। इसके बजाय, उसने ज़ोर से कहा, 'मुझे पूरी रकम चाहिए। क्या आपके पास नकद है? मुझे नकद चाहिए!' खादर बॉस ने चेम्बनकुंजू की हथेली में सौ-सौ रुपये के नोटों का एक बंडल थमा दिया; सौदा पूरा हो गया।
परीकुट्टी दूसरी नावों की ओर दौड़ा। लेकिन मछलियाँ पहले ही बिक चुकी थीं। जब पंचमी का रोना थम गया, तो करुथम्मा ने देखा कि परीकुट्टी उदास चेहरे के साथ चला गया। उसके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे।
करुथम्मा ने अपनी मां से कहा, 'छोटे बॉस को कोई मछली नहीं मिली!'
चक्की परीकुट्टी की ओर चली। 'क्या तुमने मछली के लिए बोली नहीं लगाई, छोटे मालिक?'
मैंने किया।
'क्या हुआ?'
परीकुट्टी कुछ नहीं बोला। उस दिन वह कोई मछली नहीं खरीद पाया था। हाल के मौसम में इतनी अच्छी मात्रा में सार्डिन मछली नहीं पकड़ी गई थी।
चक्की को अब सब कुछ समझ आ गया था। उसने चेम्बनकुंजू को किसी और में बदलते हुए देख लिया था।
उसने कहा, 'इतनी समृद्धि देखकर वह राक्षस बन गया है, लिटिल बॉस।'

मेरे पास कुछ पैसे थे और बाकी का भुगतान मैं बाद में कर देता।
क्या इसी वजह से सौदा नहीं हो पाया?
'शायद।'
परीकुट्टी चला गया। करुथम्मा उससे बात करने के लिए तड़प रही थी। लेकिन वह कैसे कर सकती थी?
उसका सवाल और उसका जवाब, दोनों सच हो गए थे। वे शब्द उसके कानों में गूंज उठे:
जब आपके पास नाव और जाल हों, तो क्या आप हमें मछली बेचेंगे?
'अगर आप हमें अच्छी कीमत देंगे, तो हम खरीद लेंगे।'
कालीकुंजू और नल्लापेन्नू बड़बड़ा रहे थे। उन्हें झोपड़ी मालिकों से मछली खरीदनी पड़ती थी। चेम्बनकुंजू ने मजदूरों को उनका हिस्सा दे दिया। जालों को धोकर सुखाने के लिए फैला दिया गया। फिर वह घर चला गया। उसके हाथ में बहुत सारा पैसा था। जीवन में एक नई चमक आ गई थी। वह एक नए रास्ते पर चल रहा था।
सुबह से ही वह कड़ी मेहनत कर रहा था। लेकिन घर जाते समय भी वह थका हुआ नहीं लग रहा था।
लेकिन घरवाले नाखुश थे। उन्होंने चक्की को मुट्ठी भर नकदी दिखाई। लेकिन चक्की ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। 'यह सारा पैसा किसके लिए है?'
‘क्या सवाल है, महिला!’
'पंचमी की छाती को देखो।'
चेम्बनकुंजु ने अभी भी सिसकती हुई पंचमी को उठाया और उसकी जांच की। उसकी छाती पर चोट के निशान थे। उसने पूछा, 'बच्ची, तुम वहां क्यों आई थी?'
चक्की ने पंचमी का उद्देश्य समझाया। अचानक चेम्बनकुंजू को अपनी बेटी के लिए अपार प्रेम का अनुभव हुआ। उसकी बेटी पैसा कमाना चाहती थी। उसे यह बात अच्छी लगी। उसने वादा किया कि वह इसके बाद उसे मछलियों से भरी एक टोकरी देगा।
चक्की ने फिर परीकुट्टी की ओर रुख किया। 'यह अक्षम्य था। उसके बिना न तो नाव होती और न ही जाल।'
चेम्बनकुंजू को समझ नहीं आ रहा था कि क्या गड़बड़ है। 'क्यों? तुम्हारा मतलब क्या है, औरत?'
‘तुमने उसे मछली क्यों नहीं बेची?’

‘तब तो मैं गुजारा कैसे करता? क्या मुझे अपने साथ आए मछुआरों को पैसे नहीं देने पड़ते?’ चेम्बनकुंजु ने आगे कहा, ‘और अगर मैं उसे मछली बेच दूं तो भी दिक्कत होगी; वह मुझसे बकाया रकम कीमत में से काट लेगा।’
क्या आप यह कह रहे हैं कि आपकी मदद करने को अब उसके खिलाफ इस्तेमाल किया जाएगा?
करुथम्मा भी क्रोधित थी। अपने कमरे से उसने चिल्लाकर कहा, 'उसकी झोपड़ी में कुछ भी नहीं बचा है।'
उस शाम अचाकुंजु के घर में झगड़ा हुआ।
पत्नी ने कहा, 'तुम हमेशा कहती थी कि वह तुम्हारा बचपन का दोस्त था। उसकी नाव में काम करने का तुम्हारा सपना कहाँ गया?'
अचाकुंजु ने पलटवार करते हुए कहा, 'और तुम? तुम चक्की के पीछे भागे थे। उसका क्या हुआ?'
अचाकुंजु ने आगे कहा, 'जब लोगों के हाथ में एक-दो सिक्के आ जाते हैं, तो वे अतीत को भूल जाते हैं।'
नल्लापेन्नु सहमत हो गया।
अचाकुंजु ने एक बार फिर अपने सपने को दोहराया। 'अच्छा, देखते हैं कि क्या मैं एक नाव और जाल भी हासिल कर सकता हूँ।'
हालांकि नल्लापेन्नू उनके संकल्प को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे।

छह

चेम्बनकुंजु एक भाग्यशाली व्यक्ति था। तट पर शायद ही कोई उसके बराबर मछली पकड़ पाता था। वास्तव में, उसकी पकड़ हमेशा दूसरों से दोगुनी होती थी। जब वह जाल फेंकता, तो वह मछलियों से भरा हुआ सतह पर आ जाता। वाकई एक चमत्कार! हर रात जब चक्की दिन भर की कमाई गिनता था, तो वह कहता था, 'हमें इस लड़की की शादी करानी होगी।'
और चेम्बांकुंजू ऐसा दिखावा करता था जैसे उसने उसकी बात सुनी ही न हो। लेकिन चक्की भी अड़ियल हो सकती थी। वह पूछती रहती, 'तुम्हारे मन में क्या चल रहा है? क्या तुम चाहते हो कि वह हमेशा यहीं रहे?'
चेम्बांकुंजु कुछ नहीं बोलेगा। शायद उन्हें पैसा कमाना उतना महत्वपूर्ण नहीं लगा जितना पैसा कमाना। जब होना होगा, तब होगा।
चेम्बनकुंजु ने नाव के लिए आवश्यक सभी सामान इकट्ठा कर लिया था। अब वह किसी भी समय समुद्र में जा सकता था। वह पूरी तरह तैयार था।
परीकुट्टी की झोपड़ी मानो बंद पड़ी थी। वहाँ कुछ भी हलचल नहीं थी। उसके पास पैसे भी नहीं थे। उसका वापा उसे खूब डांटता था। अब्दुल्ला बॉस ने बताया कि वह जानता था कि परीकुट्टी ने अपने सारे पैसे एक मछुआरे को दे दिए थे।
करुथम्मा ने बाड़ के उस पार से यह सुना। वह अपनी माँ की ओर मुड़ी और ज़िद करने लगी कि वे परीकुट्टी को उसका पैसा तुरंत लौटा दें। उसने अब्दुल्ला बॉस ने अपने बेटे से जो कहा था, वह सब अपनी माँ के मुँह पर फेंक दिया। इससे ज़्यादा शर्मनाक क्या हो सकता है? आख़िर परीकुट्टी ने अपनी सारी पूंजी एक मछुआरिन को दे दी थी, है ना?
'हम समय आने पर इसे चुका देंगे,' चेम्बनकुंजू ने हमेशा की तरह अपने अंदाज़ में जवाब दिया।
चेम्बनकुंजू का एक नया सपना था। कई नए सपने। वह दो और नावें और जाल खरीदना चाहता था। फिर एक ज़मीन का टुकड़ा जिस पर वह घर बनाएगा। और उसके हाथ में ढेर सारा पैसा।
क्या मैंने जीवन भर गुलामी नहीं की? ... अब उस पल्लिकुन्नथ की तरह मैं भी जीवन का आनंद लेना चाहता हूँ! आनंद! आनंद! भरपूर आनंद!
उसने चक्की को मोटा करने का भी फैसला कर लिया था।

चक्की ने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'जैसे कि मैं अब इस उम्र में कभी मोटी हो जाऊंगी!'
‘क्यों नहीं? बेशक, तुम भी मोटे हो जाओगे।’
चक्की ने चेम्बनकुंजू को कभी भी जीवन का आनंद लेने की इच्छा के बारे में बात करते नहीं सुना था। उसके लिए आनंद का एक बिलकुल नया आयाम हो गया था। उसने पूछा, 'बुढ़ापे में आपको किस प्रकार का सुख चाहिए? आपको ऐसे विचार कहाँ से आते हैं?'
सुनो, किसने कहा कि बुढ़ापे में भी जीवन का आनंद नहीं लिया जा सकता? उस पल्लिकुन्नथ को देखो... देखो वह जीवन का कितना आनंद लेता है।
चक्की ने उसकी ओर देखा और सोचने लगी कि क्या उसे सलाह देनी चाहिए। क्या वह गलत रास्ते पर जा रहा था?
क्या बुढ़ापे में सुख की इच्छा रखना गलत है?
चेम्बनकुंजु ने कहा, 'मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। उसकी पत्नी तुम्हारी उम्र की है। लेकिन वह हमेशा सजी-धजी रहती है... उसके बाल अच्छे से कंघी किए हुए होते हैं, माथे पर एक छोटी सी पट्टी होती है और उसके होंठ एकदम लाल होते हैं... और उसकी त्वचा सोने जैसी चमकती है। तुम्हें उन्हें देखना चाहिए। वे किसी युवा मछुआरे दंपत्ति की तरह लगते हैं।'
चक्की ने पूछा, 'तो क्या आप यही चाहते हैं? कि मैं सज-धज कर एक जवान लड़की की तरह इधर-उधर घूमूं?'
'उसमें गलत क्या है?'
मुझे बहुत शर्म आएगी।
आपको शर्म क्यों आएगी?
‘मैं नहीं कर सकती… मैं बिल्कुल नहीं कर सकती!’ चक्की ने शरमाते हुए कहा। चेम्बनकुंजु ने कंदनकोरन के जीवन में व्याप्त अनेक सुखों का वर्णन जारी रखा। उन्होंने पल्लिकुन्नथ के घर में जितना अच्छा भोजन किया था, उतना कहीं और नहीं किया था। वहाँ की करी का स्वाद अनूठा था। एक युवा जोड़े की तरह, उन्होंने अपने जीवन के हर पल का भरपूर आनंद उठाया।
क्या आप कुछ और सुनना चाहते हैं? यह काफी शर्मनाक था... एक दिन जब मैं वहां गया, तो मैंने उन्हें एक साथ पाया। एक-दूसरे को चूमते और सहलाते हुए, जैसे युवा प्रेमी हों...
‘अरे बाप रे, ये सब क्या चल रहा है... बकवास!’ चक्की ने टिप्पणी की।

चेम्बनकुंजु ने पूछा, 'इसमें क्या गलत है? मैंने तुमसे कहा था कि वे नवविवाहितों की तरह एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं।'
क्या उनके बच्चे नहीं हैं?
एक लड़का।
चेम्बनकुंजु ने चक्की का ध्यानपूर्वक आकलन किया और कहा, 'हमें तुम्हें पापीकुंजु की तरह मोटा करना होगा। और फिर हमें उस युवावस्था के आनंद का थोड़ा सा अनुभव करना होगा...'
चक्की भी दिल ही दिल में यही चाहती थी। गले लगना और चूमना। लेकिन वह कभी ये बात कहती नहीं थी। 'पहले तुम्हें खुद को संभालना होगा।'
‘जी हाँ, बिल्कुल। मुझे पहले खुद को संभालना होगा, फिर बाकी सब अपने आप हो जाएगा…’ चेम्बनकुंजू मुस्कुराया। उसकी आँखों में आने वाली खुशियों की चमक दिखाई दी।
चक्की ने बुदबुदाते हुए कहा, 'लगता है तुम उस औरत के जादू में फंस गए हो...' ‘यह सच है। कोई भी ऐसा ही सोचेगा!’
कुछ देर बाद चेम्बांकुंजू ने कहा, 'वह एक भाग्यशाली आदमी है।'
चक्की ने कहा, “उम्मीद है कि समुद्र की देवी हम पर भी कृपा करेंगी। एक बार जब हमारे पास अपनी ज़मीन और घर होगा और इतना पैसा होगा कि हम बिना काम पर जाए भी आराम से गुज़ारा कर सकें, तो हम भी एक युवा जोड़े की तरह बेफिक्र होंगे। और तब तक हम अपनी बेटियों की शादी भी कर चुके होंगे।” चेम्बांकुंजु के मन में भी यही विचार था।
'लेकिन मैं सुंदर नहीं हूं,' चक्की ने कहा।
'लेकिन जब समय आएगा, तब तुम बहुत खूबसूरत लगोगी,' चेम्बांकुंजू ने जोर देकर कहा।
‘अगर तब मेरी मौत हो जाए तो क्या होगा?’
‘बकवास! ऐसी बातें मत कहो।’
अचानक समुद्र का रंग बदल गया। एक अजीब सा घनापन छा गया। समुद्र का पानी लाल रंग से रंग गया। यह साल का वह समय था जब समुद्र की माता को अपना आशीर्वाद देना पड़ता था। अब कुछ समय बाद वह उन्हें आशीर्वाद नहीं दे पाएगी। समुद्र बंजर हो जाएगा।
कुछ दिन बीत गए। चेम्बनकुंजु खाली नहीं बैठ सकता था। क्या होगा अगर वह गहरे समुद्र में चला जाए? उसे वहाँ मछलियाँ मिल जाएँगी।

उसने अपने नाविकों को बुलाया और उनसे सलाह ली। लेकिन उनमें से किसी ने भी उसे इरादे की स्पष्ट पुष्टि नहीं दी। उस तट से बहुत कम ही लोग गहरे समुद्र में मछली पकड़ने गए थे। और इस धुंधले मौसम वाले महीने में तो कोई भी समुद्र में नहीं गया था।
चेम्बांकुंजु सख्त लहजे में बोला, 'मैं तुम्हें एक बात बता दूं। अगर तुम मेरे साथ चलने की जहमत नहीं उठा सकते, तो तुम भूखे मर जाओगे। मैं तुम्हें कोई अग्रिम राशि नहीं दे सकता।'
भुखमरी जारी रही। और जारी रही। लोगों के पास जो थोड़ा-बहुत पैसा था, वह भी खत्म हो गया। कुछ लोगों ने समुद्र में जाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें मछली का एक शल्क तक नहीं मिला।
यह वह समय था जब भूख ने सभी को परेशान कर रखा था। श्रमिकों और नाव मालिकों को भी। नाव मालिकों के पास भी खर्च करने के लिए बहुत कम पैसा था।
पूरा इलाका घोर गरीबी में डूबा हुआ था। हर जगह लोग भूख से मर रहे थे। अचाकुंजू, जिसने खुद की नाव और जाल खरीदने का फैसला किया था, सबसे बुरी तरह प्रभावित हुआ। उसे अपने बच्चों की चिंता थी।
एक दिन उनकी हालत बेहद खराब हो गई। पिछले दिन उन्होंने टोकरियों में चिपकी सूखी मछली के टुकड़े झाड़कर थोड़े से पैसों में बेच दिए थे और एक वक्त के खाने के लिए टैपिओका खरीदा था। लेकिन उस दिन उनके पास कुछ भी नहीं था। अचाकुंजू और उसकी पत्नी में झगड़ा शुरू हो गया। अचाकुंजू ने अपनी गुस्ताखी पत्नी को थप्पड़ मारा और गुस्से में वहाँ से चला गया। रोते- बिलखते बच्चों का बोझ उठाना औरत का ही काम होता है। भला वो वहाँ से कैसे जा सकती थी?
इसके बजाय, नल्लापेन्नू ने अचकुंजू को श्राप दिया। 'मैं जानता हूँ कि इस गुस्से में चले जाने का क्या मतलब है। तुम चाय की दुकान पर जाकर अपना पेट भरोगे जबकि हम...'
हालांकि, अचाकुंजू ने आरोप अनसुना करने का नाटक किया और आगे बढ़ गया। शायद वह समस्या का समाधान ढूंढने की कोशिश कर रहा था।
वह शाम तक इंतजार करती रही। आखिरकार, नल्लापेन्नू ने एक पीतल का गिलास लिया और चक्की के पास गई। वह उसे बेचना या फेरी लगाना चाहती थी, लेकिन उसे एक रुपये की सख्त जरूरत थी। चक्की ने उसे गिरवी के तौर पर स्वीकार कर लिया और उसे एक रुपया उधार दे दिया।

लक्ष्मी को जब इस बारे में पता चला, तो वह अपनी बेटी के कानों में सजे सोने के छोटे-छोटे झुमके लेकर आई। देखते ही देखते सब लोग उसके दरवाजे पर जमा हो गए और चक्की को यह सब बहुत परेशान करने लगा। उसके पास इतना पैसा नहीं था कि वह उधार दे सके। लेकिन जब उसने यह कहा तो किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया।
कालीकुंजू एक कड़ाही लेकर चक्की के पास गई। चक्की ने पिछले साल मन्नारशाला से उरुली खरीदने के लिए बड़ी मुश्किल से पैसे बचाए थे। लेकिन चक्की ने कहा, 'अगर आप सब यहाँ आएँगे तो मैं पैसे कहाँ से लाऊँगी? मैं ज़मीन से पैसे तो नहीं निकालती...'
कालीकुंजू अपने बच्चों की भूख के कारण वहां जाने को मजबूर हुई थी। और उसे इस तरह की कठोर बर्खास्तगी की उम्मीद नहीं थी।
चक्की ने आगे कहा, 'हर कोई चेम्बनकुंजू का पैसा चाहता है। लेकिन जब हमें मदद की जरूरत थी, तो कोई नहीं था... तब आप सभी हमें धोखा देने के लिए तैयार थे।'
कालीकुंजु ने पूछा, 'हमने क्या किया?'
नहीं, तुमने कुछ नहीं किया। लेकिन यहाँ पैसे नहीं हैं।
‘तुम ऐसे कैसे हो सकते हो? जैसे कि तुम मुझे जानते ही नहीं?’
मुझे अपनी सुरक्षा का भी ध्यान रखना होगा…
कालीकुंजु को गुस्सा आ गया। 'सिर्फ इसलिए कि अब तुम अमीर हो...'
‘अरे, अब तो वो बदतमीज़ हो गई है…’
जल्द ही बात बहस में बदल गई। करुथम्मा ने बीच-बचाव किया। वह डरी हुई थी। जैसे-जैसे बहस और हिंसक होती गई, उसे पता चल गया कि उसकी चर्चा होगी। करुथम्मा कलिकुनजु के चरणों में गिर पड़ी और गिड़गिड़ाने लगी। अंत में कलिकुनजु ने उसका उरुली लिया और चले गए।
करुथम्मा ने अपनी माँ की ओर मुड़कर पूछा, 'तुम्हें क्या हुआ है?'
आप मुझसे क्या करने की उम्मीद करते हैं?
'जब से हमें नाव और जाल मिले हैं, तुम दोनों बदल गए हो।'
उस शाम जब चेम्बनकुंजु अपना खाना खा रहा था, चक्की उसके पास बैठकर उसे गपशप सुना रही थी। उनके तट पर भुखमरी की कहानी। वहाँ किसी भी घर में आग नहीं जलाई गई थी।

चेम्बनकुंजू ने कहा, 'उन्हें भूखा मरने दो! उन्हें पूरी तरह बर्बाद होने दो!'
करुथम्मा हिल गई थी।
चेम्बांकुंजू ने आगे कहा, 'उन्हें जलने दो! यह हमारे लिए उपयोगी होगा...' करुथम्मा को उसके गुस्से का कारण समझ नहीं आया। लेकिन उस समय उसे अपने पिता के प्रति गहरी घृणा का अनुभव हुआ।
चक्की ने पूछा, 'यह हमारे लिए उपयोगी क्यों होगा?'
‘उन्हें भुगतने दो… जब उनके हाथ में पैसा होता है, तो वे उछल-कूद करते हैं। फिर उन्हें अलापुझा जाकर दुकानों से खरीदा हुआ खाना खाना पड़ता है। और अगर मछुआरे के पास कपड़े नहीं होते, तो वे सबसे महंगी कसावु साड़ी खरीदते हैं। वे ऐसे व्यवहार करते हैं मानो वे जमीन पर चलते ही न हों। तो अब उन्हें तारे गिनने दो…’
करुथम्मा को अभी भी अपने पिता के तीखे भाषण का कारण समझ नहीं आ रहा था। चक्की ने तब वही पुराना सिद्धांत दोहराया, 'एक मछुआरा कभी कुछ भी अलग नहीं रखता।'
उन्हें ऐसा करने मत दो! इसीलिए तो वे अब कष्ट भोग रहे हैं। बेहतर होगा कि तुम अपनी बेटी को ये सब बता दो, वरना वो भी भूख से मर जाएगी।
चक्की ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, 'अहा, आप कितने समझदार मछुआरे हैं!' ‘हां, मैं एक समझदार आदमी हूं! इसीलिए मेरे हाथों में पैसा है!’
मुझे इसके बारे में मत बताओ! उस मुस्लिम लड़के को अपनी झोपड़ी बंद करनी पड़ी। और हमारी लड़की भी बूढ़ी होती जा रही है...
करुथम्मा को गुस्से में कहना था: उसे भी तो भुगतना चाहिए, है ना, अच्छा! चक्की और चेम्बनकुंजू ने तट पर खाली पड़े उस समय का फायदा उठाया। उन्होंने लगभग मुफ्त में कई पीतल के बर्तन, सोने के आभूषण और अन्य कीमती सामान हासिल कर लिए। जब उनकी बेटी की शादी हुई, तो उन्हें उतना खर्च नहीं करना पड़ा जितना शायद करना पड़ता।
एक दिन, उन्होंने एक मजबूत पलंग खरीदा। जब उनके पति घर आए, तो चक्की ने शरमाते हुए मुस्कुराते हुए कहा, 'मैंने पलंग खरीदा!'
छोटे लड़के ने तिरछी नज़र से पूछा, 'क्यों?'
‘बिस्तर किसलिए होता है? सोने के लिए!’
‘इस पर कौन सोच-विचार करेगा?’

जब लड़की की शादी हो जाएगी, तो उसका पति और वह...
'वास्तव में?'
‘और क्या? क्या आपको लगा कि यह हम जैसे बूढ़े लोगों के लिए है?’ चेम्बनकुंजु ने मानो यह बात मान ली। फिर उसने कहा, 'लेकिन मैं एक गद्दा बनवाऊंगा। बिलकुल वैसा ही जैसा मैंने कंदनकोरन के यहाँ देखा था।'
‘ऐसे में, आपको अपने लिए एक ऐसी महिला ढूंढनी होगी जो आपके साथ सो सके…’ मैं तुम्हें उस औरत में बदल दूंगा।
चेम्बनकुंजू के मन में एक और विस्तृत योजना उभर आई थी। या शायद यह जीवन को भरपूर जीने के उनके सपने का एक और आयाम था। उन्होंने अपने लिए एक और नाव खरीदने की योजना बनाई।
उसके पास मौजूद लगभग सारा पैसा चल संपत्ति में लगा हुआ था। फिर भी, वह इसे असंभव कार्य नहीं मानता था।
एक दिन जब चेम्बनकुंजु की नींद खुली, तो उसने देखा कि रामनकुंजु वलक्करन उसके आसपास मंडरा रहे हैं। चेम्बनकुंजु ने उनका बड़े धूमधाम से स्वागत किया। रामनकुंजु तट पर मछली पकड़ने का काम करते थे। उनके पास अपनी दो नावें थीं। कुछ समय तक चेम्बनकुंजु ने रामनकुंजु की नाव में काम किया था। लेकिन उनकी सारी अचल संपत्ति एक-एक करके बेचनी पड़ी।
रामनकुंजु को पैसों की ज़रूरत थी। इस तंगी के दौर में उन्हें अपने मज़दूरों को अग्रिम भुगतान करना था। वे आम तौर पर ओसेप से उधार लेते थे। लेकिन उन पर पहले से ही ओसेप का काफ़ी कर्ज़ था। ऐसे में वे दोबारा ओसेप से कैसे संपर्क कर सकते थे?
रामनकुंजु ने कहा, “ये लोग बहुत लंबे समय से मेरे साथ हैं… और अब ये भूखे मर रहे हैं। समुद्र में कोई मछली नहीं बची है। मैं उनकी दुर्दशा को कैसे अनदेखा कर सकता हूँ?”
चेम्बांकुंजू सहमत हो गया। 'हाँ, बिल्कुल। आपको ऐसा करना ही चाहिए। खासकर आप जैसे व्यक्ति को...'
उसने पैसे उधार देने की पेशकश की। 'तो आपको कितने पैसे चाहिए होंगे?'
'एक सौ पचास काफी होंगे!'
चेम्बनकुंजु ने नकदी गिनी। रामनकुंजु ने पूछा, 'क्या आप अपने कर्मचारियों को अग्रिम भुगतान नहीं कर रहे हैं?'

चेम्बनकुंजु ने अपना सिर खुजाते हुए कहा, 'मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं तो उन्हीं की तरह एक मजदूर हूँ। क्या एक गिलहरी अपना मुँह हाथी जितना चौड़ा खोल सकती है?'
रामनकुंजु हँस पड़ा।
चेम्बांकुंजू ने एक बार फिर अपना रुख स्पष्ट किया।
रामनकुंजु के जाने के बाद, चेम्बनकुंजु चक्की के पास गया और पागलों की तरह खुशी से उसके चारों ओर उछलने-कूदने लगा। चक्की ने उसे पहले कभी इस तरह नहीं देखा था।
चक्की ने पूछा, 'यह सब क्या पागलपन है?'
‘तुम्हें क्या पता, मूर्ख! एक महीने में उसके चीनी मछली पकड़ने के जाल और नाव मेरे होंगे।’
फिर उन्होंने आगे कहा, 'अब आपको समझ में आ गया होगा कि आपके पास नकदी होना क्यों जरूरी है।'
चेम्बांकुंजू के कर्मचारियों ने अग्रिम भुगतान की मांग शुरू कर दी। उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या आप काम करने को तैयार हैं?'
उन्होंने हां कहा।
चेम्बांकुंजू ने कहा, 'तो फिर, चलिए गहरे समुद्र में मछली पकड़ने चलते हैं...'
लेकिन हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? इस बुरे समय में?
चेम्बनकुंजु ने एक नई चाल चली। उसने कहा कि वह नए कर्मचारियों को काम पर रखेगा। और वे उसके स्थायी कर्मचारी होंगे। ‘मैंने नाव और उसके सामान में अपना सारा पैसा लगा दिया है। क्या आप मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं यूं ही खाली बैठा रहूं? यह देखकर मेरा दिल टूट जाता है…’
चक्की और करुथम्मा को इस बात का पता तब चला जब एक सुबह उन्होंने चेम्बनकुंजू की नाव को पश्चिम की ओर तेजी से जाते हुए देखा। वह नाव के पिछले हिस्से में खड़ा था।
उस दिन तेरह परिवार तट पर इंतज़ार कर रहे थे। पत्नियाँ और बच्चे देवताओं से प्रार्थना कर रहे थे कि वे पुरुषों को बचा लें। बड़े-बुजुर्गों ने कहा कि समुद्री धाराएँ खतरनाक थीं। बाहरी समुद्रों में भयंकर भंवर थे।
शाम ढलते-ढलते नाव वापस नहीं लौटी थी। समुद्र तट विलाप की आवाज़ों से गूंज उठा। रात होते-होते पूरा मछुआरा गांव किनारे पर इकट्ठा हो गया। सब पश्चिम

की ओर क्षितिज को देखते हुए इंतज़ार कर रहे थे। आसमान साफ था। तारे चारों ओर बिखरे हुए थे। समुद्र शांत था। दूर कहीं किसी को एक छोटा सा धब्बा दिखाई दिया। क्या वह नाव थी?
लेकिन नाव नहीं आई।
कोचन की बूढ़ी माँ ने सीना पीटते हुए चक्की से अपने इकलौते बेटे को वापस माँग लिया। वावा की गर्भवती पत्नी ने किसी को दोष नहीं दिया। वह वहीं खड़ी रो रही थी। समुद्र तट शोक की लहरों से भर गया।
आधी रात के करीब, चारों ओर शोर मच गया: 'नाव आ रही है!'
नाव लहरों पर पक्षी की तरह तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। नाव में एक शार्क थी। उन्हें एक और मिल गई थी। लेकिन चूंकि दोनों को नाव में नहीं रखा जा सकता था, इसलिए एक शार्क के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे।
चेम्बनकुंजु ने कटी हुई शार्क को महिलाओं में बाँट दिया ताकि वे उसे पूर्व में बेच सकें। उसने कहा कि अगर वे उसे बिक्री के बाद पैसे दे दें तो काफी होगा। कलिकुनजु, लक्ष्मी, सभी को हिस्सा मिला। और इस तरह उस दिन कई घरों में चूल्हा जल उठा।
दो दिन बाद, चारा फिर से डाला गया। उस दिन भी चेम्बांकुंजू विजयी रहा। समुद्र के बंजर होने पर भी, चेम्बांकुंजू के पास धन की कोई कमी नहीं थी। बुजुर्ग अपनी असफलता पर चुप रहे। महिलाओं ने कहा, 'चेम्बांकुंजू की वजह से ही हमारा पेट भरा है।'
कुछ अन्य नाव मालिकों ने भी समुद्र में जाने का फैसला किया। उन्होंने खुद को यही दिलासा दिया कि इस भुखमरी के बाद प्रचुरता होगी। पिछले साल, अलापुझा के उत्तर में चकरा (मछलियों का अच्छा प्रवाह) हुआ था। इसलिए, पूरी संभावना थी कि इस साल इस तट पर बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाएँगी। और दुर्भाग्य से, अगर ऐसा नहीं हुआ, तो उन्हें अपने जालों से मछलियों को पकड़ने के लिए तैयार रहना होगा। इसका मतलब था कि नावों और जालों की मरम्मत और उन्हें तैयार रखना होगा। और नाव मालिकों को चिंता थी कि यह सब इस तंगहाली के दौर में ही करना होगा।
ओसेप और गोविंदन पैसों से भरे थैले लेकर समुद्र तट पर पहुँचे। हर किसी को पैसों की ज़रूरत थी और वे किसी भी शर्त पर मानने को तैयार थे। अलपुझा, कोल्लम और कोच्चि के बड़े झींगा निर्यातकों के प्रबंधकों की चापलूसी करते हुए झोपड़ी मालिकों ने समुद्र तट को उधार के पैसों से भर दिया था।

मजबूत जालों की मरम्मत की आवश्यकता थी। कई छोटे व्यापारी अलग-अलग घरों में जाकर महिलाओं को ऋण देने की पेशकश कर रहे थे। वे महिलाओं और बच्चों द्वारा इकट्ठा की गई और रखी गई सूखी मछलियों के लिए अग्रिम भुगतान कर रहे थे। इसी बीच, यह अफवाह फैल गई कि कोचुट्टी के पति ने एक युवक मुस्लिम को उसकी झोपड़ी में पाए जाने पर चाकू मार दिया था।
चेम्बनकुंजु, रामनकुंजु से बहुत मिलने-जुलने लगा। रामनकुंजु को डर था कि उसे उधार लिया हुआ पैसा वापस चुकाना पड़ेगा। लेकिन चेम्बनकुंजु ने पैसा वापस नहीं मांगा और इसके बजाय अस्थायी ऋण के रूप में छोटी-छोटी रकमें देने की पेशकश की।
बड़ी मछली पकड़ के दौरान परीकुट्टी ने व्यापार करने की कोई तैयारी नहीं की थी। उसके वापा ने उसे अपनी दुकान बंद करने को कहा था। अब्दुल्ला ने जोर देकर कहा कि परीकुट्टी मछली का व्यापार छोड़ दे और कुछ और काम करे। लेकिन परीकुट्टी ने उसकी बात नहीं मानी। परीकुट्टी ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता!'
उसने अभी तक तट छोड़ने का फैसला नहीं किया था, उसने रूखेपन से कहा। अब्दुल्लाह दंग रह गया। उसके बेटे ने उससे पहले कभी इस तरह बात नहीं की थी। अब्दुल्लाह ने पूछा, 'ऐसा क्यों?'
परीकुट्टी ने कहा, 'जब मैं छोटा था, तब आप मुझे समुद्र तट पर ले गए और मुझे मछली का व्यापारी बना दिया। मैं और किसी चीज का व्यापार नहीं कर सकता। मुझे और कुछ करना नहीं आता।'
लेकिन आपने तो मूलधन भी खो दिया; हमने इसमें जो कुछ भी निवेश किया था, वह सब!
परीकुट्टी के पास इसके लिए भी अपना तर्क था। 'लेकिन क्या तुम नहीं देखते वापा, किसी भी व्यापार में लाभ और हानि दोनों ही होते हैं! और कभी-कभी तो मूलधन भी डूब जाता है!'
और अगर और भी नुकसान हो तो क्या होगा?
परीकुट्टी के पास इसका एक ही जवाब था। 'आप मुझे विरासत में मेरा हिस्सा क्यों नहीं दे देते? इसके बाद आपको मुझे कुछ भी देने की ज़रूरत नहीं है!' लेकिन अब मेरे पास तुम्हें देने के लिए क्या बचा है? मेरे पास बस एक ज़मीन का टुकड़ा ही तो है!

अब्दुल्लाह की मुसीबतें बहुत बड़ी थीं। एक समय वह बहुत धनी था, लेकिन अब सब कुछ खो चुका था। उसकी एक बेटी थी जिसकी शादी तय हो चुकी थी। अब्दुल्लाह ने अपनी सारी परेशानी बताई, लेकिन परीकुट्टी अपना मन बदलने को तैयार नहीं था। करुथम्मा ने देखा कि परीकुट्टी की झोपड़ी में चहल-पहल नहीं थी, जैसी चहल-पहल चहल-पहल शुरू होने से पहले हुआ करती थी। वह न तो चटाई खरीद रहा था, न ही मूठ वाली टोकरियाँ। न ही बर्तन ठीक किए गए थे, और न ही चूल्हा बनाया जा रहा था। उसने अपनी माँ से कहा कि अब परीकुट्टी को उसका एहसान चुकाने का समय आ गया है। अगर उन्हें परीकुट्टी के किए गए कामों के लिए कोई कृतज्ञता महसूस होती है, तो अब उसकी मदद करने का समय है।
चक्की ने चेम्बनकुंजू को परेशान करना शुरू कर दिया। इसका कोई फायदा नहीं हुआ; बल्कि इससे वह और चिढ़ गया। तभी करुथम्मा को पक्का यकीन हो गया कि उसके पिता परीकुट्टी का पैसा कभी वापस नहीं करेंगे। तभी उसने अपने कुछ फैसले लिए।
एक दिन उसने अपनी मां से कहा, 'मेरा शरीर अब इस बोझ को और सहन नहीं कर सकता।' पहले तो उसकी मां को समझ नहीं आया। 'तुम्हारे शरीर को यह कैसा बोझ ढोना पड़ रहा है?'
करुथम्मा रोने लगी। चक्की ने उसे सांत्वना दी। लेकिन करुथम्मा अपनी बात पर अड़ी रही, 'मैं अचन को सब कुछ बताऊंगी - मुझे पता है कि तब पैसा मिल जाएगा।'
चक्की हिल गई। 'मेरी बेटी! तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए!'
चक्की को डर था कि अगर चेम्बनकुंजू को उसके किए का पता चल गया तो वह कितना क्रोधित होगा। वह इसके बारे में सोचने की भी हिम्मत नहीं कर पा रही थी। और करुथम्मा के बोलने के लहजे और शब्दों के चुनाव से उसे चिंता हो रही थी कि कहीं उसे बहुत कुछ पता ही न हो।
एकांत के क्षण में, करुथम्मा का मन भटक गया। वह परीकुट्टी से प्रेम करती थी। उसके हृदय में किसी और पुरुष के लिए कोई स्थान नहीं था। वह चाहती थी कि काश वह उसे, उनके रिश्ते को एक पल के लिए भी भूल पाती। क्योंकि वह एक मछुआरे की पत्नी के रूप में जन्मी थी। और उसे एक मछुआरे की पत्नी के रूप में ही मरना था। वह जानती थी कि यही होना चाहिए। तो क्या उसे परीकुट्टी को भूलने का अधिकार नहीं होना चाहिए?

अगर वे पैसा चुकाकर कर्ज से मुक्त हो जाते, तो उसे विश्वास था कि वह परीकुट्टी को भूल पाएगी। वह उसे अपनी वजह से उजाड़ और बर्बाद होते हुए नहीं देख सकती थी। दरअसल, उसकी यही छवि उसे सताती रहती थी।
दिन बीतते गए, लेकिन कुछ नहीं बदला। चेम्बांकुंजू ने पैसे वापस नहीं किए।

सात

मछुआरे बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। हर दिन हर घर में लोग उबले हुए टैपिओका और दलिया खाकर गुज़ारा करते थे, और सभी की निगाहें समुद्र की ओर एक ही सवाल से टिकी रहती थीं। हे सागर की माता, हम कब भरपेट भोजन कर पाएंगे? हम कब निवाले के लिए चावल के छोटे-छोटे गोले बना पाएंगे?
उन्हें खुद ही जवाब पता था: जब चकारा का मौसम आएगा! उन्हें मछली का टुकड़ा खाए हुए बहुत समय हो गया था।
जब चाय की दुकान के मालिक ने उधार देना बंद कर दिया, तो मछुआरे ने उससे कहा, 'एक दिन, जल्द ही, बड़ी मछली पकड़ने का मौका मिलेगा!'
महिलाओं ने फीके, चिथड़े-चिथड़े, जगह-जगह से पैबंद लगे कपड़े पहन रखे थे। और जब उन्होंने शिकायत की, तो उन्हें कहा गया: 'अगर बड़ी मछली पकड़ी जाए, तो मैं तुम्हें सबसे बढ़िया मलमल का कपड़ा खरीद दूँगा!'
तब सभी आवश्यकताएं और इच्छाएं पूरी हो जाएंगी।
करुथम्मा की भी एक इच्छा थी। या, यह एक ज़रूरत थी? उसने अपनी माँ को इसके बारे में बताया। मछली पकड़ने के बड़े मौसम में खूब पैसा कमाया जा सकता था। इसके अलावा, उन्हें अपनी रोज़ाना की कमाई में से एक बड़ा हिस्सा बचाकर रखना चाहिए। और उससे वे परीकुट्टी का कर्ज़ चुका सकेंगे। चक्की भी पूंजी जमा करना चाहती थी। लेकिन इसके साथ ही, वह कुछ और भी करना चाहती थी। सोना खरीदना चाहती थी।
करुथम्मा ने कहा, 'मुझे सोना या गहने नहीं चाहिए! मैं बस इतना चाहती हूं कि तुम मेरा कर्ज चुका दो।'
चक्की ने कहा, 'लेकिन क्या वह कर्ज तुम्हारे पिता की जिम्मेदारी नहीं है?' लेकिन वह इसे चुकाएगा नहीं!
चक्की मान गई। और इस तरह करुथम्मा ने अपनी योजना बनाई। पंचमी की भी एक योजना थी। वह जालों से छोटी मछलियाँ चुन लेगी। इसके अलावा, उसके पिता ने उसे हर बार पकड़ी गई मछलियों में से एक टोकरी देने का वादा किया था। परीकुट्टी ने भी कुछ फैसले लिए। अब्दुल्ला ने अपना घर और ज़मीन दो हज़ार रुपये के लिए एक साहूकार, सेतु के पास गिरवी रख दी। अगर वह उस साल बड़ी नीलामी की योजना अच्छे से बना लेता, तो वे कर्ज़ चुका पाते और अपनी बहन की शादी कर पाते। यही उसका संकल्प था।

अचाकुंजु भी इस बड़ी मछली पकड़ने से लाभ कमाना चाहता था। वह नाव मालिक बनने की उम्मीद रखता था। समुद्र का लंबे समय तक सूखा रहना अप्रत्याशित था। और उस दौरान वे भूख से पीड़ित रहे थे।
अचाकुंजू ने ओसेप से संपर्क किया। वह भी नाव और जाल खरीदना चाहता था। वह किसी भी तरह की व्यवस्था के लिए तैयार था। 'मैं भी नाव का पतवार संभालकर समुद्र में जाना चाहता हूँ। और मेरी पत्नी भी मेरे लौटने का इंतज़ार करते हुए किनारे पर आनी चाहिए।'
ओसेप ने पूछा, 'अचाकुंजू, तुम्हारे हाथ में क्या है?'
'कुछ नहीं,' अचकुंजु ने उत्तर दिया।
तो आप इसे कैसे करने की उम्मीद करते हैं?
अंत में ओसेप ने एक योजना बनाई। वह अचाकुंजू द्वारा मछली पकड़ने के दौरान कमाए गए पैसों को बचाएगा। जब सीज़न खत्म हो जाएगा, तो नाव खरीदी जा सकेगी। और ओसेप आवश्यक खर्चों में आर्थिक सहायता देगा।
लेकिन एक बात है! नाव और जाल मेरे नाम पर होंगे। अचाकुंजू, मैं तुम्हें केवल मुनाफे का हिस्सा दूंगा। नाव मालिक का हिस्सा मेरा होगा। लेकिन कप्तान का हिस्सा तुम्हें मिलेगा। तो क्या तुम मछली पकड़ने के बड़े मौसम में जो पैसा कमाओगे, वह मुझे दे दोगे? मैं उसकी रक्षा करूंगा!
अचाकुंजु मान गया। समुद्र तट पर यही रिवाज था। वह घर गया और नल्लापेन्नू को इसके बारे में बताया। उसने कहा, 'पूर्व में अपनी बिक्री से होने वाली कमाई भी मुझे देनी होगी।'
लेकिन क्यों? तुम मुझे अपना हिस्सा दो।
'अरे मूर्ख औरत, मैं हम दोनों की कमाई ओसेपाचन को देने का इरादा रखता हूँ।' नल्लापेन्नू इससे खुश नहीं थी। उसने पूछा, 'चेम्बनकुंजु चेट्टन ने अपनी नाव और जाल कैसे खरीदे? उसने तो सब कुछ चक्की को दे दिया।'
हालांकि, अंत में उन्होंने सब कुछ ओसेपाचन को सौंपने का फैसला किया। अचाकुंजु ने सबको बताया कि वह भी एक नाव और जाल खरीदने जा रहा है।
और बड़ी उम्मीदों के साथ इंतज़ार करते हुए, परती मौसम का अंत हो गया। तूफान का केंद्र टूट गया। उसके बाद उठने वाली तेज़ धाराओं ने उन्हें यह तय करने पर मजबूर कर दिया कि इस साल बड़ी मछलियाँ उनके किनारों पर ही मिलेंगी। मछुआरों की आँखों में आशा की चमक आ गई। देखते ही देखते, किनारा चहल-पहल से भर गया। वह एक छोटे शहर में बदल गया था। दोनों किनारों पर छोटी-छोटी

झोपड़ियाँ बन गईं। चाय की दुकानें, दर्जी की दुकानें, कपड़े की दुकानें, आभूषणों की दुकानें - सब कुछ वहाँ था। उस साल, वे जनरेटर का उपयोग करके बिजली भी पैदा करने वाले थे। तो बिजली की रोशनी भी होगी!
दूसरा तूफान भी आ उठा। समुद्र में उथल-पुथल मच गई। सब लोग खुशी से झूम उठे। सपने साकार होने लगे। जब उथल-पुथल भरा समुद्र शांत होगा, तब उनकी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा।
समुद्र शांत हो गया। दूर-दूर के किनारों से नावें आने लगीं। यह बारिश का मौसम था। हवाएं तेज हो गईं, घने भूरे बादल घिर आए। लेकिन समुद्र तालाब की तरह शांत था।
चेम्बनकुंजू के कर्मचारी बहुत फुर्तीले थे। उन्होंने उनके कौशल को और भी निखारा था। चेम्बनकुंजू बड़े जोश के साथ जहाज के पिछले हिस्से पर सवार होते थे। यह दृश्य हमेशा ही देखने लायक और विस्मयकारी होता था।
पहले दिन मछली पकड़ने का काम ज़्यादा नहीं हुआ। मछलियाँ अभी भी समुद्र के शांत होने का इंतज़ार कर रही थीं। फिर भी, सभी नावें समुद्र में थीं। उस दिन चेम्बांकुंजू में सबसे ज़्यादा मछलियाँ पकड़ी गईं।
अयंकुंजु का मानना था कि इसका कारण यह था कि चेम्बंकुंजु सबसे पहले रवाना हो गया था। हालांकि, रमन मूपन की राय अलग थी। 'उसने नाव के साथ-साथ पल्लिकुन्नथ का सौभाग्य भी खरीद लिया है!'
अन्य सभी नाव मालिकों ने कसम खाकर कहा कि भले ही वे अपनी पकड़ में उल्लेखनीय सुधार न कर पाएं, लेकिन कम से कम चेम्बांकुंजू की पकड़ के बराबर तो जरूर करेंगे। वास्तव में, वह उनके लिए प्रेरणास्रोत थे।
अयांकुंजु ने अपने आदमियों को उकसाया। 'मुझे तुम्हें पुकारने पर मजबूर मत करो। तुम्हें भोर होने से पहले यहाँ पहुँचना होगा। अरे, क्या तुममें ज़रा भी स्वाभिमान नहीं है?'
उनमें से हर एक के अंदर प्रतिस्पर्धा की भावना उमड़ उठी। वे चेम्बनकुंजू की पकड़ के बराबर मछली पकड़ने की कोशिश करेंगे।
रिवाज के विपरीत, लोग हमेशा की तरह जल्दी ही तट पर जमा हो गए। लेकिन उनमें से कुछ को अभी भी जगाने और आने के लिए चिल्लाकर प्रोत्साहित करना पड़ा। चाय की दुकानें भी सामान्य से पहले ही खुल गईं। उस दिन चेम्बनकुंजू की नाव देर से रवाना हुई। उसे पता नहीं था कि लेखक उससे पहले ही निकल चुका है।

नावों की आवाजाही से साफ पता चल रहा था कि आज मछली पकड़ने का अच्छा दिन था।
व्यापारी और विक्रेता किनारों पर आ गए। परीकुट्टी बेचैन था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी का इंतज़ार कर रहा हो। उसके पास थोड़े ही पैसे थे। सेतु के प्रबंधक ने पैसे लेकर आने का वादा किया था, लेकिन वह अभी तक नहीं आया था।
परीकुट्टी उसका इंतज़ार कर रहा था।
हर लिहाज से, वह दिन सौभाग्यशाली घटनाओं से भरा था। समुद्र मछलियों से भरा हुआ था और इसके अलावा दिन धूप से जगमगा रहा था। अगर झींगों को भाप में पकाया जाए, तो वे जल्दी सूख जाएँगे। उस दिन वह कुछ पैसे कमा सकेगा।
समय तेज़ी से बीत रहा था। सेतु का प्रबंधक पचूपिल्लई नहीं आया। परीकुट्टी को चिंता होने लगी कि कहीं उसे इतनी बड़ी मछली पकड़ने से लाभ न हो। नावें किनारे की ओर लौट गईं। परीकुट्टी की चिंता और बढ़ गई। बाकी लोग ज़रूरी नकदी लेकर वहीं खड़े थे। किनारा जश्न की ज़ोरदार आवाज़ों से गूंज रहा था। रेस्तरां में केले के पत्ते बिछाकर दोपहर का खाना परोसा जाने लगा। जब नावें किनारे के करीब आतीं, तो किनारे पर खड़े लोग उन्हें खींचकर रेत पर लाने के लिए दौड़ पड़ते। छोटी-छोटी झोपड़ियों में आग जलाई गई और टिन से ढके लोहे के बर्तन उन पर रखे गए। एक पल भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था। परीकुट्टी के मजदूर भी तैयार हो गए।
सबसे पहले जो नाव करीब आई, वह चेम्बनकुंजू की थी। हमेशा की तरह वह लहरों पर सवार होकर आगे बढ़ रही थी। खादर बॉस ने कहा, 'उसके खिलाफ जीतने के बारे में सोचना भी मत!'
मैदीनकुंजू सहमत हो गई।
एक बूढ़े मछुआरे ने कहा, 'वह तो कोई देवता है जो नाव के पिछले हिस्से पर सवार है!'
नाव किनारे के और करीब आ गई। झींगे। हर आकार के।
परीकुट्टी चेम्बनकुंजू की ओर झपटा। पिछली बार क्या हुआ था, यह उसे याद नहीं था। लेकिन ऐसे उत्साह में कोई भी भूल सकता है! परीकुट्टी ने विनती की, 'चेम्बनकुंजू, मुझे अपना शिकार दे दो!'
बिना किसी दया भाव के चेम्बनकुंजू ने परीकुट्टी के चेहरे की ओर देखा और पलटकर कहा, 'क्या तुम्हारे पास पैसे हैं? वरना यहाँ से चले जाओ!'
किनारे पर नाव पहुँचने पर मछुआरे का यही सामान्य व्यवहार था। लेकिन इससे पहले कि परीकुट्टी कोई जवाब सोच पाता, खादर उसके करीब आ गया। परीकुट्टी को

तब पक्का यकीन हो गया कि उसे चेम्बनकुंजू की मछलियाँ नहीं मिलेंगी। परीकुट्टी दूसरी नावों की तलाश में भागा।
हमेशा की तरह, उस दिन मछलियों की कीमत चेम्बनकुंजू ने ही तय की। उस दिन मछलियों का अच्छा-खासा जत्था था। और सबसे ज़्यादा मछलियाँ उसी ने पकड़ी थीं। परीकुट्टी ने दूसरी नाव से पकड़ी गई मछलियों का एक तिहाई हिस्सा ही खरीदा। वह इससे ज़्यादा नहीं खरीद सकता था।
खर्चों के लिए पैसे अलग रखने के बाद, चेम्बांकुंजु ने मजदूरों के बीच आमदनी बाँट दी। अचानक उनके मन में एक विचार आया। उन्होंने कहा, 'देखो, समुद्र में हमारा दिन कितना अच्छा बीता; और पानी को देखो... यह सूरज की रोशनी में चमक रहा है। कितना बढ़िया दिन है। और वेतन भी अच्छा है!'
उन लोगों को उसकी बात समझ नहीं आई।
‘अरे बेवकूफों, मेरा मतलब है कि जब हवा अनुकूल हो तभी अनाज फटकना चाहिए। पैसा कमाने का यही सही समय है। चावल खाकर पेट भरने और पीठ के बल लेटने का क्या फायदा? मैं फिर से समुद्र में जाकर मछली पकड़ने के लिए तैयार हूँ!’ पास ही खड़े अचाकुंजु ने कही जा रही बातें सुन लीं। हालांकि चेम्बांकुंजु ने उनसे बात नहीं की थी, फिर भी उन्होंने कहा, 'मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता। सिर्फ इसलिए कि आप पैसा कमा सकते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आप समुद्र को खाली कर दें।'
इसके अलावा, दिन में दो बार समुद्र में जाना सामान्य बात नहीं थी। इसकी अनुमति नहीं थी।
चेम्बांकुंजू ने कहा, 'इसके बारे में सोचो!'
तट समृद्धि से जगमगा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो झोपड़ियों के चारों ओर सोना बिखेर दिया गया हो। भाप में पकाए गए झींगे सूखने के लिए फैलाए गए थे। उस दिन अचकुंजु भोजन करने रेस्तरां नहीं गया। क्या उसने अपने आगे के जीवन के बारे में कोई निर्णय नहीं लिया था? वह घर चला गया। यही समझौता हुआ था। नल्लापेन्नू ने पूछा, 'तुम यहाँ कैसे हो? क्या तुमने दोपहर का भोजन नहीं किया?'
अचाकुंजु क्रोधित हो गया। 'तुम कभी कुछ नहीं बन पाओगे। तुम्हारे पास कभी नाव और जाल नहीं होंगे।'
अचाकुंजू मुड़ी और चली गई। हालाँकि उसे अपराधबोध हो रहा था, नल्लापेन्नू ने कहा, 'भोर में जाते समय तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?'

‘क्या हमने हाथ मिलाकर इस बात पर सहमति नहीं जताई थी?’
यह सच था। जब अचकुंजु चली गई, तो नल्लापेन्नू ने कहा, 'दोपहर के भोजन के लिए तुम्हें जो चाहिए ले लो और बाकी मुझे दे दो। मैं इसे रख लूंगा। हम इसे बाद में ओसेपाचन को दे देंगे।'
अचाकुंजु ने उस पर कई नोट और सिक्के फेंके।
दोपहर का भोजन करने के बाद चेम्बनकुंजु किनारे पर लौट आया। लेकिन उसके आदमी नहीं आए। इस तरह उस दिन और अधिक पैसा कमाने का उसका सपना चकनाचूर हो गया।
शाम को चेरियाझिकल, त्रिकुन्नपुझा और अन्य स्थानों से नावें आईं। उस रात खूब बारिश हुई। अगले दिन भोर होने के बाद ही नावें रवाना हुईं। चेम्बनकुंजु ने अपने आदमियों को नाव को पहले समुद्र में न उतारने के लिए फटकारा। उस दिन भी चेम्बनकुंजु सबसे आगे था। लेकिन एक और नाव तेज़ी से आगे बढ़ रही थी, नाविक बिना रुके पूरी ताकत से चप्पू चला रहा था। सब पूछने लगे कि यह किसकी नाव है। यह नाव त्रिकुन्नपुझा से थी। नाविक का नाम पलानी था। एक नौजवान।
चेम्बनकुंजू और पलानी की नावें एक-दूसरे के बिल्कुल बराबर खड़ी थीं। ऐसा लग रहा था मानो वे आगे निकलने के लिए एक-दूसरे से होड़ कर रही हों। दृढ़ संकल्प और लगन के साथ, दोनों नावें पूरी ताकत से चप्पू चला रही थीं; नाविक उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे। यह एक शानदार दृश्य था।
ऐसा लग रहा था मानो चेम्बांकुंजू की नाव थोड़ी पीछे हट गई हो। आज सबसे ज्यादा मछली कौन पकड़ेगा? नावों के लंगर डालने की जगह और जाल फेंकने के तरीके के आधार पर यह तय करना मुश्किल था।
किनारे की ओर लौटते समय भी नावें एक-दूसरे से होड़ लगा रही थीं। अगर पतवारें ज़रा भी नज़दीक आतीं, तो झड़प हो जाती। जब पतवारें आपस में टकरातीं, तो सब डर के मारे कांप उठते।
करुथम्मा ने पूछा, 'अम्माची, अचन इतना जिद्दी क्यों है?'
चक्की भी चिंतित थी।
मछली पकड़ने का काम खत्म हो गया। लेकिन इस पर अड़े रहने की क्या ज़रूरत थी? चेम्बांकुंजू जवान नहीं था। अगर पतवारें लड़खड़ा गईं, तो कुछ भी हो सकता था। हर पल एक युग की तरह लंबा खिंच रहा था। उफ़! नावें आखिरकार किनारे के करीब पहुँच रही थीं।

किनारे पर खूब खुशी का माहौल था। न कोई जीता, न कोई हारा। दोनों बराबर थे। दोनों नावों में पर्याप्त मछलियाँ थीं।
नावें नज़दीक आती गईं। करुथम्मा ने ध्यान से रुमाल बांधे पलानी को देखा, जो हाथ में एक बड़ा चप्पू लिए रेत पर कूद पड़ा। वह शानदार और हष्ट-पुष्ट शरीर वाला एक युवक था। चेम्बनकुंजू ने पलानी को गले लगाया और कहा, 'तुम समुद्र के राजकुमार हो, मेरे बच्चे!'
पलानी ने कुछ नहीं कहा।
उस दिन पलानी की पकड़ी गई मछली की सबसे अच्छी कीमत मिली। इस तरह चेम्बनकुंजू को मामूली नुकसान हुआ।
चेम्बनकुंजु ने पलानी से पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है, मेरे बेटे?'
वह हट्टा-कट्टा युवक शर्मीला था। चेम्बनकुंजू के सामने खड़ा वह युवक अब वह युवा देवता नहीं था जिसने इतने जोश के साथ जहाज के पिछले हिस्से पर अपना दबदबा कायम रखा था। वह अब वह युवक नहीं था जो चेम्बनकुंजू से भी बड़ा चप्पू पकड़े क्षितिज पर टकटकी लगाए खड़ा था। अब वह एक संकोची लड़का था। वह सारी गरिमा कहाँ गायब हो गई?
युवक ने कहा, 'पलानी।'
'तुम्हें अपना काम पता है, मेरे बेटे! सिर्फ मछुआरा पैदा होना ही काफी नहीं है, तुम्हें पानी में मछली पकड़ना भी आना चाहिए।'
पलानी चुप रहे।
चेम्बनकुंजू ने पूछा, 'तुम्हारे पिता का नाम क्या है?'
‘वेलू। वह मर गया!’
'और आपकी माँ?'
‘वह भी मर चुकी है!’
तो आपके पास और कौन-कौन हैं?
'किसी को भी नहीं।'
चेम्बांकुंजु ने आश्चर्य से पूछा, 'कोई नहीं?'
फ्रांस में शांति थी।
जब चेम्बनकुंजु घर लौटा, तो चक्की ने उससे पूछा, 'तुम्हें भले ही लगता हो कि तुम जवान हो, लेकिन क्या इस तरह से व्यवहार करना सही है?'
चेम्बनकुंजू ने मानो उसकी बात सुनी ही नहीं। उसके मन में एक नया बड़ा विचार आया। समुद्र में अपनी नाव के पिछले हिस्से पर सवार होकर उसे जो

विस्मृति का अनुभव होता था, उसके बारे में वह उससे बात कर सकता था। लेकिन वह उसे यह नहीं बताना चाहता था। उसे अपनी पत्नी से एक महत्वपूर्ण विषय पर बात करनी थी।
चेम्बनकुंजु ने अपनी पत्नी से दबे स्वर में कहा, 'क्या तुमने उस लड़के को देखा जो नाव के पिछले हिस्से में खड़ा था?'
मैंने किया।
‘वह एक होशियार लड़का है, है ना?’
चक्की भी उसकी ओर आकर्षित हो गई। सिर्फ़ चक्की ही नहीं, उस किनारे पर मौजूद हर कोई उस युवक के प्रति ऐसा ही महसूस करता था।
चक्की ने पूछा, 'यह क्या है?'
'अगर हम उसे हासिल कर सकें तो अच्छा होगा।'
चक्की कुछ नहीं बोली।
चेम्बांकुंजू ने आगे कहा, 'मैंने उससे पूछा। उसने कहा कि वह बिल्कुल अकेला है। इसमें कुछ गलत नहीं है। शायद यह अच्छा ही है।'
चक्की ने पूछा, 'तो फिर आपने उसे हमारे साथ घर पर खाना खाने के लिए क्यों नहीं बुलाया?'
मुझे इसका ख्याल ही नहीं आया।
दरअसल, चक्की को राहत की लहर दौड़ गई। चेम्बनकुंजू ने उनकी बेटी के लिए एक लड़का ढूंढ लिया था। इसका मतलब था कि वह पिता के रूप में अपने कर्तव्य को नहीं भूला था।
वह युवक अनमोल था। कोई न कोई उसे छीन लेगा। चेम्बनकुंजू को भी इस बात की चिंता थी। दोपहर के भोजन के बाद, चेम्बनकुंजू वापस किनारे पर चला गया।
पलानी और अन्य लोग नारियल के पेड़ के नीचे सो रहे थे। चेम्बनकुंजू उस दिन उनसे बात नहीं कर पाया।
अगले दिन भी समुद्र में प्रतियोगिता जारी रही। चेम्बनकुंजू हार गया।
पलानी ने अधिक मछलियाँ पकड़ीं।
चेम्बनकुंजू के मजदूर और भी आक्रामक हो गए। करुतकुंजू ने कहा, 'उन्हें हमारे तट पर आकर अपनी ताकत दिखाने की इजाजत न दें।'
कुंजुवावा उनकी नाव को चुनौती देना चाहता था। लेकिन इससे झगड़ा ही होता।

चेम्बनकुंजू ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'ये क्या है? क्या तुम्हें उन पुरुषों से जलन होती है जो अच्छी तरह काम करना जानते हैं? ये सब किसलिए है? अगर जीतना है तो और मेहनत करो।'
उस समय, चेम्बनकुंजू के श्रमिकों के मन में एक और विचार आया। यदि समुद्र में नहीं, तो उन्हें ज़मीन पर बाहरी लोगों का सामना करना पड़ेगा। वेलुथा ने विरोध किया, 'यदि वे आज हमारे तट पर हैं, तो कल हम उनके तट पर होंगे।' इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। कुछ तो करना ही था। वो ऐसा दौर था जब उनके हाथों में पैसों की भरमार थी। अगर मामला पुलिस केस में भी चला जाए तो कोई बात नहीं। यही उनका रवैया था। चेम्बनकुंजू इस मानसिकता से अच्छी तरह वाकिफ थे और यही उनकी पीड़ा का कारण था। सिर्फ चेम्बनकुंजू के मजदूर ही नहीं, किनारे पर मौजूद बाकी सभी लोग भी ईर्ष्या करते थे। इतना चालाक कोई कैसे हो सकता है! वे कहते थे। फिर भी, कई लोग इसके खिलाफ भी थे।
अगले कुछ दिनों में, तट पर नाविकों के बीच झड़प हो गई। दो-तीन लोगों के सिर पर चोटें आईं। उस दिन और अगले दिन, उस तट से कोई भी नाव समुद्र में नहीं गई। सभी लोग छिप गए थे। पुलिस तट पर पहुंची और कुछ लोगों को अपने साथ ले गई। तट प्रमुख ने हस्तक्षेप किया और उन्हें छुड़वा दिया।
एक-एक करके वे धन्यवाद भेंट लेकर उससे मिलने गए। फिर चंदा इकट्ठा किया गया। और इस तरह पुलिस केस को दबा दिया गया। इस सारी गड़बड़ी के कारण बड़ी मछली पकड़ने से कमाया गया सारा पैसा खर्च हो गया।
वेलायुधन अकेले तटरक्षक से मिलने नहीं गए। उन्हें पता था कि तटरक्षक ने उन्हें ही निशाना बनाया है। उस व्यक्ति ने उन्हें पुलिस के हाथों गिरफ्तार करवा दिया। वेलायुधन एक सप्ताह तक जेल में रहे। जब वे जेल से बाहर आए, तो उन्होंने कहा, 'मुझे परवाह नहीं। मैं उसके सामने नहीं झुकने वाला।'
चेम्बांकुंजू को एक सप्ताह की कमाई का नुकसान हुआ। समृद्धि के उस मौसम में यह एक बहुत बड़ा नुकसान था।
उन्होंने फिर से समुद्र में काम करना शुरू कर दिया। चक्की हर दिन चेम्बनकुंजू से पलानी को घर बुलाने के लिए कहता था। एक दिन नाव के सभी कामगारों ने छुट्टी ले ली और त्रिकुन्नपुझा चले गए। लेकिन पलानी नहीं गया। चेम्बनकुंजू ने पलानी से पूछा, 'मेरे बेटे, तुम क्यों नहीं गए?'
मुझे कहाँ जाना चाहिए?

यही सच्चाई थी। त्रिकुन्नपुझा में उन्हें किससे मिलना था? चेम्बनकुंजु ने पलानी को आमंत्रित करते हुए कहा, 'तो फिर मेरे घर दोपहर का भोजन करने क्यों नहीं आते?'
पलानी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। चेम्बनकुंजू के घर में उन्होंने कई तरह के पकवानों से भरपूर एक शानदार दावत का आयोजन किया।
पलानी किसी परिवार का बच्चा नहीं था। वह त्रिकुन्नपुझा तट का ही बच्चा था। उसे अपने पिता या माता की कोई याद नहीं थी। अगर आप उससे पूछते कि उसने कैसे अपना जीवन यापन किया, तो वह कहता कि उसने बस यही किया - ज़िंदा रहा! उसका पालन-पोषण किसने किया? किसी ने नहीं। किसी ने कभी उसके लिए कोई प्रयास नहीं किया। वह बस अपने लिए काम करता था। जब वह छोटा था, तो उसे जालों की डोरी पकड़ने के लिए समुद्र में फेंक दिया जाता था। एक ऐसा समुद्र जिसमें स्टिंगरे और डॉल्फ़िन उछल-कूद करते थे। किसी भी जीव को उसके बारे में कभी कोई चिंता नहीं हुई। जब वह बड़ा हुआ, तो उसने नावों पर काम करना शुरू किया और इस तरह पैसे कमाना शुरू किया। जब उसके पास पैसे होते, तो वह उन्हें खर्च कर देता। और जब नहीं होते, तो वह किसी तरह गुज़ारा कर लेता। क्या उसके सपने थे? शायद। किसी ने कभी नहीं चाहा कि वह खाए, उसका पेट भरा रहे। और न ही उसने कभी किसी के लिए ऐसा सोचा।
आज दोपहर पहली बार किसी ने उनके लिए खाना बनाया था। और एक महिला उनके पास खड़ी थी ताकि उन्हें खाना मिल सके और वे भरपेट खा सकें। यह एक भावुक क्षण था।
चक्की को करी में से उसकी पसंदीदा करी मिल गई। वह उसे बार-बार वही करी परोसती रही।
क्या पलानी ने कभी सोचा था कि यह सब किसलिए किया जा रहा था?
चक्की ने पूछा, 'बेटा, तुम्हारी उम्र कितनी है?'
‘आह…’ कंधे उचकाते हुए।
उसे पता नहीं था।
चक्की का उत्साह ठंडा पड़ गया। भला उसे अपनी उम्र कैसे नहीं पता थी? अब से सारे सवाल सोच-समझकर पूछने होंगे। उसकी जाति क्या थी? चाहे जो भी हो, उन्हें जानना ही था।
‘बेटा, तुम कहाँ रहते हो?’
मेरे पास एक छोटी सी झोपड़ी है।

आप अपनी कमाई के सारे पैसे का क्या करते हैं?
मैं क्या करूं? मैं इसे खर्च कर देता हूं।
चक्की ने माँ की भूमिका निभाते हुए उसे सलाह दी, “बेटा, तुम्हारा कोई नहीं है। तुम अपनी सारी कमाई कैसे खर्च करोगे? अगर कल तुम बीमार पड़ गए तो क्या करोगे?”
पलानी ने धीमी आवाज़ में 'ओह!' कहा, मानो उसने इस बारे में सोच-विचार कर लिया हो और किसी निष्कर्ष पर पहुँच गया हो।
उन्होंने कितनी आसानी से इसे खारिज कर दिया! उनका इतने लंबे समय तक जीवित रहना और टिके रहना एक चमत्कार था। तो बुढ़ापे में बीमार पड़ जाने से क्या फर्क पड़ता था?
चक्की खामोशी में डूब गई। उसके पास पूछने के लिए कुछ नहीं बचा था। वह एक सक्षम व्यक्ति था। बुरा आदमी नहीं था। वह अकेले ही अपनी जिंदगी जी रहा था, उसके सुख-दुख बाँटने वाला कोई नहीं था। इससे पहले किसी ने भी उसके जीवन के इस सफर पर गौर नहीं किया था। थोड़ी देर बाद चक्की ने एक बार फिर ममतामयी स्वर में पूछा, 'क्या इस तरह जीना काफी है?'
'क्यों नहीं?'
इसका मतलब था कि जीवन में उनका कोई लक्ष्य नहीं था। क्या यह उचित था? और फिर भी, कोई और क्या सोच सकता था? उनकी चुटीली प्रतिक्रिया, जो न लड़खड़ाती थी और न ही अटकती, यही मानने पर मजबूर करती थी। उन्होंने कभी अपने लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया था। और न ही किसी ने उनसे ऐसा चाहा था।
चक्की ने कहा, 'अच्छा, तो फिर यह काफी नहीं है!'
पलानी ने कुछ नहीं कहा।
चक्की ने आगे कहा, “बेटा, तुम अकेले हो। और तुम मेहनती हो। लेकिन यह सब बदल जाएगा। एक दिन तुम इतने तंदुरुस्त नहीं रहोगे। और एक आदमी के जीवन में कुछ न कुछ संपत्ति तो होनी ही चाहिए। तुम्हें किसी की देखभाल की ज़रूरत है। तुम्हें इसकी भी ज़रूरत है। बेटा, सोचो, कोई तुम्हारे लिए खाना बनाए, और अगर तुम्हारे पास रहने की जगह हो, एक घर हो – क्या यह बहुत अच्छी बात नहीं होगी?”
पलानी चुप रहे।
‘बेटे, तुम्हें शादी करनी होगी।’
'कुंआ!'

‘क्या मैं आपके लिए इसका फैसला कर दूं?’
पलानी ने एक और बार 'ठीक है' कहकर सहमति जताई।
चक्की ने पूछना जारी रखा, 'क्या आप यह नहीं जानना चाहते कि वह लड़की कौन होगी?'
'कौन?'
'मेरी बेटी।'
पलानी इस बात पर भी सहमत हो गया। हालाँकि प्रस्ताव इतना आगे बढ़ चुका था, चक्की को उसमें कई खामियाँ नज़र आईं। खूबियाँ बहुत कम। पलानी का न तो कोई परिवार था और न ही कोई सामाजिक संबंध। जब आप अपनी बेटी को ऐसे आदमी को सौंप दें, तो अगर वह बदमाश निकला तो आप क्या करेंगे? आप किससे मदद मांगेंगे? चेम्बनकुंजू ने कहा, 'लेकिन वह एक अच्छा आदमी है।'
अगर कोई आपसे पूछे कि आपने अपनी बेटी की शादी कहां की है, तो आप क्या कहेंगे?
वह एक घर बनाएगा।
लेकिन इन सबसे ऊपर, कोई और बात चक्की को परेशान कर रही थी।
उसकी जाति क्या है?
‘वह एक इंसान है। और समुद्र का एक कार्यकर्ता है।’
हमारे रिश्तेदार नाराज हो जाएंगे।
उन्हें रहने दो!
‘तब हम बिल्कुल अकेले रह जाएंगे।’
'इसलिए?'
चेम्बांकुंजू ने दृढ़ निश्चय के साथ अपनी बात जारी रखी। 'मैं उसे उसे सौंप दूँगा।'

आठ

बारिश लगातार बरसती रही। बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। समुद्र में झींगे खूब थे। लेकिन कोई भी नाव रवाना नहीं हो सकी। आखिर नाव तो इंसान ही चलाता है। और उमस इतनी ज़्यादा थी कि हड्डियां जम रही थीं। फिर एक सुबह सूरज निकला और आसमान साफ हो गया। नावें पानी में उतरीं। मछलियां खूब पकड़ी गईं। नावें किनारे लौट आईं और खूब व्यापार हुआ।
लेकिन एक बार फिर आसमान में काले बादल छा गए और बारिश शुरू हो गई। इतनी तेज बारिश पहले कभी नहीं हुई थी। यह पूरे दिन जारी रही।
शेडों में पूरी तरह से सूखे झींगे पड़े थे। कुछ अधसूखे भी थे। कुछ उबले हुए झींगे थे। और कुछ ताज़े झींगों के सड़े हुए ढेर थे। सभी शेड अस्त-व्यस्त थे। और एक बड़े संभावित नुकसान के स्पष्ट संकेत दे रहे थे।
मौसम के पहले भाग में पर्याप्त धूप थी। और हर दिन पकड़ी गई मछलियों का अच्छा उपयोग हुआ। बड़े व्यापारी मंडराते रहे। लेकिन उन पर दुर्भाग्य का साया आ पड़ा था।
परीकुट्टी के सामने एक और मुसीबत खड़ी हो गई। उसने जो पहली खेप बेची थी, वह तो अच्छी थी! लेकिन अगली खेप में सूखापन कम था। सेतु ने यही दावा किया था। सेतु ने कहा, 'हमें तुम्हारा कारोबार नहीं चाहिए। बस मुझे मेरा पैसा वापस दे दो और अपना सामान ले जाओ!'
सेतु उसकी हर बात नहीं मानता था। परीकुट्टी अलापुझा की हर दुकान पर गया। लेकिन कोई भी उसके झींगे नहीं खरीदना चाहता था। सब कहते थे कि गोदाम भरे पड़े हैं।
परीकुट्टी पचूपिल्लई के चरणों में गिर पड़ा और दया की भीख मांगने लगा। उसे सेतु से एक बड़ा ऋण चाहिए था और वह पचूपिल्लई को उसमें से कमीशन देने का वादा करता था। पचूपिल्लई ने पूरी कोशिश करने का आश्वासन दिया। इससे परीकुट्टी को उम्मीद हुई कि वह अपने नुकसान की भरपाई कर लेगा और उस पैसे से और मछलियाँ खरीद लेगा। लेकिन तभी तेज हवा और बारिश शुरू हो गई।
परीकुट्टी का निवेश सड़ने और बदबू आने लगा। एक दिन के भीतर, उसे रेत में दफनाने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था।
समुद्र तट पर उदासी छाई हुई थी। नावें समुद्र में जा रही थीं और बड़ी मात्रा में झींगा मछली पकड़कर ला रही थीं। वे आस-पास के घरों में झींगा बेच

पा रही थीं। कभी-कभार ट्रक भी आते थे। लेकिन बस इतना ही। वे अब अपनी मनचाही कीमतें नहीं बता पा रही थीं। उन्हें व्यापारियों द्वारा तय की गई कीमत पर ही बेचना पड़ रहा था।
रेस्तरांओं में कोई कारोबार नहीं था। कपड़ों की दुकानों में एक भी व्यक्ति नहीं आया। मूंगफली बेचने वालों को तो मूंगफली बेचने के लिए बच्चे भी नहीं मिल रहे थे।
यह सब कब बदलेगा? रोजी-रोटी कमाना भी मुश्किल था।
उस तट पर मौजूद सभी नाव मालिक सदमे में थे। खासकर रामनकुंजु। उस साल उनका कारोबार ठीक से नहीं चल पाया था। ओसेप अपने पैसे मांगने लगा। उसकी नजर रामनकुंजु के चीनी मछली पकड़ने के जालों पर थी।
एक दिन समुद्र तट पर उन दोनों के बीच तीखी बहस हो गई। चेम्बनकुंजू अपने विचारों में खोया हुआ था, जबकि रामनकुंजू ने कसम खाई थी कि वह एक सप्ताह के भीतर, चाहे कुछ भी हो जाए, ओसेप का पैसा लौटा देगा।
रामनकुंजु ने चेम्बनकंजु से पैसे मांगे। लेकिन इस बार चेम्बनकंजु पैसे देने को तैयार नहीं था। रामनकुंजु ने उसकी अनिच्छा भांप ली।
‘क्या बात है, चेम्बांकुंजू? बताओ, तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?’ शर्मिंदा होने का नाटक करते हुए चेम्बांकुंजू ने कहा, 'मैं बिना किसी ज़मानत के ऐसा कैसे कर सकता हूँ?'
‘आप जमानत के तौर पर क्या चाहते हैं?’
‘तो… मैं क्या कहूँ?’
अंत में चेम्बनकुंजू ने उसे अपने मन की बात बता दी। वह रामनकुंजू के चीनी जालों को जमानत के रूप में उधार लेना चाहता था।
और इस तरह चेम्बांकुंजू चीनी मछली पकड़ने के जाल हासिल करने में कामयाब हो गया।
उस दिन भी अचकुंजु के घर में थोड़ा झगड़ा हुआ। चेम्बनकुंजु के पास अब एक नहीं बल्कि दो नावें थीं। नल्लापेन्नू ने अचकुंजु को उकसाते हुए कहा, 'खुद को मर्द कहने का क्या मतलब है?'
‘सुनो, तुम्हें भी योगदान देना होगा। वह पैसा कहाँ है जो हमें ओसेपाचन को देना था?’
क्या आप मुझसे नग्न घूमने की उम्मीद करते हैं? या, क्या बिना बर्तनों के पानी पीना संभव है?

‘अगर यह मेरे साथ हुआ होता…’
‘तुम तो वो पैसे शराब पर खर्च कर देते!’
अचाकुंजू ने हाथ बढ़ाकर उसे दो जोरदार थप्पड़ मारे।
चक्की एक और नाव पाकर बहुत खुश थी। लेकिन परीकुट्टी का बकाया न चुका पाने से वह परेशान भी थी। और करुथम्मा उसे बार-बार इस बात की याद दिलाती रहती थी।
जिस दिन चीनी जाल और नाव को जमानत के तौर पर लाया गया, चक्की ने चेम्बनकुंजू से कहा, 'यह शर्मनाक है।'
'क्या?'
'आपने उसे आधी रात को अपना सामान हमारे पास लाने के लिए मजबूर किया और अब आप ऐसा दिखावा कर रहे हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं।'
चेम्बनकुंजू ने उसे चुप रहने के लिए फटकार लगाई।
'मुझ पर गुस्सा करने का कोई फायदा नहीं है। वह लड़का बहुत बड़ी मुसीबत में है। अगर आप अभी उसकी मदद नहीं करेंगे, तो कोई फायदा नहीं...'
'धन कहां है?'
करुथम्मा, जो यह बातचीत सुन रही थी, बोल पड़ी, 'तुम्हें वह पैसा वापस देना होगा, अच्छा!'
चेम्बांकुंजू ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'इससे तुम्हारा क्या लेना-देना है?'
उसे जवाब देने में कोई झिझक नहीं थी। और उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ था। उसने उसे यह बताने का फैसला किया कि उसने ही सबसे पहले उससे पैसे मांगे थे। और इसीलिए, भले ही उनके पास भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे, उसने उन्हें अपना सारा स्टॉक दे दिया था। इसमें एक छिपा हुआ संदेश था। वे जितने अमीर होते गए, वह उस मुस्लिम व्यक्ति की उतनी ही ऋणी होती गई।
करुथम्मा के बोलने की आशंका से चक्की का चेहरा पीला पड़ गया। यह तो विनाशकारी होगा।
चक्की ने चेम्बनकुंजू पर पलटवार किया। 'इसमें इतना हंगामा और शिकायत करने की क्या बात है? वह तो बस सच बोल रही है!'
'मैं यह जानना चाहता हूं कि इससे उसका क्या संबंध है। क्या उसने वह चीज उससे ली है? क्या वह उससे अपने पैसे मांग रहा है?'

कुछ हैरानी जताते हुए चक्की ने जवाब दिया, 'सिर्फ इसलिए कि उसने उससे नहीं पूछा, क्या वह हमें यह नहीं बता सकती कि उसे क्या परेशान कर रहा है?' चेम्बनकुंजू ने गंभीर और आलोचनात्मक लहजे में कहा, 'मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहती हूं। यह पुरुषों का मामला है। तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नहीं है। तुम्हारी शादी होने वाली है।'
वह सलाह बिल्कुल सही थी। यह एक ऐसा सबक था जिसे करुथम्मा को याद रखना था। चेम्बनकुंजु ने अब अपना गुस्सा चक्की की ओर मोड़ते हुए कहा, 'यह सब तुम्हारी गलती है। उसने यह सब तुमसे ही सीखा है।'
चक्की चुप थी।
बाद में जब माँ और बेटी अकेली थीं, तो माँ ने बेटी से पूछा, 'तुम खुद को कैसे भूल गई? तुम अपने पिता को सब कुछ बताने वाली थी, है ना? क्या तुमने पड़ोस में हो रही गपशप नहीं सुनी? अगर इनमें से कुछ भी तुम्हारे पिता के कानों तक पहुँच गया तो – हे सागर की माँ!'
वह समझ गई। फिर भी, वह खुद को रोक नहीं पाई। 'हमें वह पैसा वापस देना ही होगा।'
मैं भी यही करना चाहता हूँ।
‘अम्माची, आप यही कहती रहती हैं। लेकिन आपने अभी तक पैसे वापस नहीं किए। मैंने आपको सब कुछ बताया था कि हम क्या-क्या कर सकते हैं। लेकिन आपने उनमें से कुछ भी नहीं किया।’
कुछ देर बाद उसने आगे कहा, 'जब तक वह कर्ज चुका नहीं दिया जाता, तब तक सब कुछ इंतजार कर सकता है...' वह वाक्य के बीच में ही रुक गई।
चक्की समझ गई थी कि इसका क्या अंजाम होने वाला है।
‘आप सही कह रहे हैं। यही उचित कार्य है।’
चक्की ने पलानी से शादी करने के बारे में करुथम्मा की भावनाओं को समझने की कोशिश की। लेकिन उसने अपनी सच्ची भावनाओं को ज़ाहिर करने से इनकार कर दिया, न हाँ कहा और न ही ना। शायद शर्म की वजह से, चक्की ने मन ही मन सोचा। आख़िरकार वह एक छोटी लड़की थी। लेकिन वह करुथम्मा और परीकुट्टी के रिश्ते को लेकर भी चिंतित थी।
अगर वह करुथम्मा की सहेलियों से उसके मन की बात जानने को कहती, तो जल्द ही पूरा किनारा गपशप से गूंज उठता। और तभी करुथम्मा ने कहा, 'जब तक तुम वह कर्ज चुका नहीं देती, तब तक...'

वाह! राहत मिली! चक्की का चेहरा खिल उठा और उसके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान आ गई। उसने पूछा, 'तो मेरी बेटी, तुम इस शादी के लिए राजी हो, है ना?' करुथम्मा ने कोई जवाब नहीं दिया। चक्की उसी उत्साह के साथ बोलती रही, 'वह बहुत अच्छा लड़का है, मेरी बेटी, बहुत ही अच्छा लड़का!'
चक्की पलानी की तारीफ करती रही। उसकी तारीफ करने के लिए काफी वजहें थीं। और जैसे-जैसे करुथम्मा उसकी तारीफ सुनती गई, उसे अपने अंदर एक तरह की नाराजगी महसूस होने लगी। उसके अंदर धीरे-धीरे गुस्सा पनपने लगा। इसके अलावा, चक्की की हर बात का खंडन करने के लिए भी काफी कारण थे। पलानी की उम्र कितनी थी? क्या उसे यह जानने का हक नहीं था? उसका परिवार कौन था? और सबसे महत्वपूर्ण बात, क्या पलानी ने उसके दिल में जगह बना ली थी?
चक्की को बहुत राहत मिली। वह उसके बारे में बात करती रही। करुथम्मा की सांसें थम गईं। उसे लगा कि अगर वह चुप रही तो फट पड़ेगी। वह फूट पड़ी, 'अरे, चुप रहो, अम्माची!'
फिर उसने दांत भींचकर कुछ बुदबुदाया। चक्की को समझ नहीं आया कि उसने क्या कहा। लेकिन चक्की ने बोलना जारी रखा, 'मैं तुम्हारी शादी से पहले कर्ज चुका दूंगी।'
बेहद गुस्से और कड़वाहट के साथ करुथम्मा ने कहा, 'बेशक, तुम करोगे। तो तुमने इतने दिनों में ऐसा क्यों नहीं किया?'
मैं कड़ी निगरानी रखूंगा!
पूरी तरह से निराश होकर करुथम्मा ने कहा, 'तुम जानती हो कि ऐसा नहीं होगा! शादी होगी और बात वहीं खत्म हो जाएगी।'
चक्की ने दृढ़ता से कहा, 'इंतजार करो और देखो!'
करुथम्मा के सारे उलझे हुए विचार आपस में टकराए और एक दृढ़ संकल्प में बदल गए। 'जब तक तुम वो पैसा वापस नहीं करोगे, मैं राजी नहीं होऊंगी। वरना मैं खुदकुशी कर लूंगी... ये तो तय है!'
चक्की चिंतित हो गई। 'बकवास मत करो, मेरे बच्चे!'
करुथम्मा फूट-फूटकर रोने लगी। 'मैं और क्या कर सकती हूँ? वह बर्बाद हो चुका है। अगर हमारे पास पैसे नहीं होते तो मैं समझ सकती थी... लेकिन बात बस इतनी है कि कोई भी पैसे देने को तैयार नहीं है।'
फिर उसने चक्की पर आरोपों की झड़ी लगा दी, जो चुपचाप सुनता रहा। 'तुम भी उसे पैसे नहीं देना चाहते,' करुथम्मा ने अपनी बात समाप्त की।

चक्की ने इसका पुरजोर खंडन किया। करुथम्मा ने एक और फैसला लिया। 'मैं अब बोलूंगी।'
‘ओह मेरे प्यारे बच्चे, कृपया ऐसा मत करो!’
क्या मेरे पास कोई विकल्प है?
थोड़ी देर बाद उसने आगे कहा, 'इस भव्य शादी के बाद, मेरे नए घर जाते समय अगर वह मुझे रोककर कहे, "मुझे जो पैसे देने हैं, वह चुका दो और फिर चले जाओ", तो हम क्या करेंगे?'
चक्की ने तब तक इस बारे में सोचा ही नहीं था। उसके सामने एक भयावह तस्वीर उभर आई। चक्की ने घबराकर उससे पूछा, 'वह तुमसे पैसे क्यों मांगेगा?'
'उसने मुझे पैसे इसलिए दिए क्योंकि मैंने उससे मांगे थे।'
लेकिन वह तो सिर्फ एक मजाक था!
‘कौन कहता है?’
करुथम्मा पर हमला करने की दृष्टि ने चक्की की आँखों से हटने से इनकार कर दिया।
परीकुट्टी बेहद निराश था। और वह पूरी तरह बर्बाद होने की कगार पर था। उस नाजुक मानसिक स्थिति में, वह कुछ भी करने को तैयार था।
करुथम्मा ने आगे कहा, 'मैंने अचन को सब कुछ बताने का फैसला कर लिया है। मैं आज ही बताऊंगी। मैं क्यों नहीं बता सकती?'
‘मेरी बेटी, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए!’
'मैं करूँगा।'
अंत में, चक्की ने शादी से पहले किसी न किसी तरह कर्ज चुकाने का वादा किया। उस दिन पत्नी अपने पति को एक नई खबर सुनाने वाली थी: उनकी बेटी को उस शादी से कोई आपत्ति नहीं थी। हालांकि, एक अनकही बात हवा में गूंज रही थी। क्या उस अनकही बात को ज़ाहिर किया जा सकता था?
चेम्बनकुंजु को इस बात की खास परवाह नहीं थी कि करुथम्मा शादी के लिए राजी है या नहीं।
चक्की को अपने पति को परीकुट्टी का कर्ज चुकाने के लिए राजी करने का कोई उपाय सूझ नहीं रहा था।
मछली के दाम गिर गए थे। सिर्फ़ चेम्बनकुंजू ही नहीं, बल्कि तटवर्ती इलाकों में भी किसी को चैन नहीं मिला था। कुछ दिनों बाद हालात फिर सुधरने लगे।
कोच्चि और अलापुझा में मौजूद सभी सूखे झींगे जहाजों पर लाद दिए गए थे।

लेकिन रंगून में दाम गिर गए। व्यापारियों का दावा था कि सब कुछ आधे दाम पर बिक रहा था। और एक जहाज समुद्र में खो गया था। इसलिए सभी सौदे आधे दाम पर किए गए।
पारीकुट्टी को एक हजार रुपये का नुकसान हुआ।
करुथम्मा ने अपने भीतर एक गहरा बदलाव महसूस किया। शायद वह बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढलने के लिए बदल रही थी। वह परिपक्व हो चुकी थी। उसमें एक विशेष साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति आ गई थी। वह परीकुट्टी से बात करने का मौका ढूंढ रही थी। उसे परीकुट्टी को बहुत कुछ बताना था।
उनकी मुलाकात हुई। वह बाड़ के एक तरफ खड़ी थी और वह दूसरी तरफ। उस दिन बातचीत की शुरुआत उसी ने की। एक ऐसी बातचीत जिसमें न तो कोई तय ढांचा था और न ही हंसी-मजाक का कोई जिक्र था।
उसने पूछा, 'मालिक, आपका कारोबार घाटे में चल रहा है, है ना?'
परीकुट्टी ने बातचीत की ऐसी शुरुआत की उम्मीद नहीं की थी। उन्होंने कुछ नहीं कहा।
उसने आगे कहा, 'हम आपके पैसे लौटा देंगे, मेरे बॉस।'
परीकुट्टी ने जवाब दिया, 'लेकिन करुथम्मा, तुमने मुझसे कोई पैसा नहीं लिया।'
फिर भी, मुझे ही इसे चुकाना चाहिए।
'यह कैसे हो सकता?'
लेकिन ऐसा ही होना चाहिए, मेरे बॉस। क्योंकि आपका कर्ज चुकाने के बाद ही... करुथम्मा वाक्य पूरा नहीं कर पाई। उसका गला अटक गया। उसे कमजोरी महसूस हुई। उसकी आँखों में आँसू भर आए।
परीकुट्टी ने उसकी बात पूरी करते हुए कहा, 'तुम कर्ज चुकाकर शादी करना चाहती हो, है ना?'
परीकुट्टी ने खुद को आंसू बहाने नहीं दिए। लेकिन उसने पूछा, 'तो मेरा मानना है कि आप हमारे रिश्ते तोड़ना चाहते हैं?'
एक सवाल जो उसे किसी तीखे हथियार की तरह चुभ गया। वह इतना निर्दयी कैसे हो सकता है कि ऐसा सवाल पूछे? परीकुट्टी जानती थी कि वह बेबस है। फिर भी वह उससे जवाब की उम्मीद कर रहा था।
उसने कहा, 'नहीं, नहीं, मेरे बॉस, मैं चाहती हूं कि आप अच्छा करें...'

परीकुट्टी अब वह भोला-भाला प्रेमी नहीं रहा था। वह मुस्कुराया। एक भावहीन मुस्कान। 'मैं ठीक हूँ, करुथम्मा?'
उसे विडंबना समझ आ गई थी। वह कभी कामयाब नहीं होगा। करुथम्मा इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकी। वह चली गई। परीकुट्टी थोड़ी देर और वहीं खड़ा रहा और फिर चला गया।
उस रात चेम्बनकुंजू को एक घोषणा करनी थी। वह बहुत खुश था। उसने चक्की से फुसफुसाते हुए कहा, 'पलानी दहेज नहीं चाहती!'
चक्की को यकीन नहीं हुआ। उसने कहा, 'ऐसा हो ही नहीं सकता।'
'जी हां, बिल्कुल! वह कहता है कि वह उससे बिना दहेज के शादी करेगा!'
चक्की ने चेम्बनकुंजू को ध्यान से देखा। चेम्बनकुंजू ने कहा, 'मैं कसम खाता हूँ, यह सच है। मैं समुद्र की माता की कसम खाता हूँ!'
चक्की ने आंखों में चमक के साथ पूछा, 'सिर्फ इसलिए कि वह कहता है कि उसे दहेज नहीं चाहिए, क्या हमें उसे दहेज नहीं देना चाहिए?'
उसने उसे इसका खंडन करने की चुनौती दी।
अगर कोई कहे कि उसे पैसे नहीं चाहिए, तो क्या उसे पैसे देने की कोई बाध्यता है? इसलिए चक्की उससे जो मांग रहा था, उसे देखकर वह चकित रह गया।
चक्की ने गुस्से से पूछा, 'तुमने उस भोले-भाले लड़के को जरूर मना लिया होगा। है ना?'
चेम्बनकुंजू ने तुरंत जवाब दिया, 'मैंने उससे कुछ नहीं कहा।'
चक्की के मन में एक गंभीर सवाल था, 'लोगों को पैसे या धन की आवश्यकता क्यों होती है?'
क्या मेरे पास अपना कोई पैसा है?
‘यह दहेज हम अपने बच्चे को देते हैं।’
लेकिन अगर वह इसे नहीं चाहता तो क्या होगा?
‘तो आप यह सब किसके लिए बना रहे हैं? मैं यही जानना चाहता हूं।’
चक्की ने बहुत कुछ कहा। बुढ़ापे में आनंद लेना; गद्दा और तकिए बनाना; एक सुंदर स्त्री को घर लाना – ये सब उसके लिए काफी हो सकता था, लेकिन जीवन में और भी बहुत कुछ हासिल करना बाकी था। चेम्बनकुंजू के तानाशाही रवैये के आगे झुके बिना, चक्की ने कहा, 'मेरे बिना तुम ये सब नहीं कर पाते!'
चेम्बनकुंजु ने मुस्कुराते हुए उसे शांत करने की कोशिश की। 'लेकिन मैं चाहती हूँ कि हम दोनों इसका पूरा आनंद लें! यह गद्दा तुम्हारे लिए भी है...'

चक्की गुस्से से उछल पड़ी। उसकी आवाज़ तेज़ हो गई। चेम्बनकुंजू को चिंता होने लगी कि अगर बात झगड़े में बदल गई तो सारे राज़ पड़ोसियों को पता चल जाएँगे। इसलिए वह उठकर चला गया ताकि बहस अपने आप खत्म हो जाए।
इसके बाद करुथम्मा घटनास्थल पर पहुंचीं।
‘मुझे दहेज नहीं चाहिए, अम्माची!’
‘यह कैसे संभव है? दहेज के बिना किसी लड़की की शादी करना उचित नहीं है। क्या आपको खुद के कुछ पैसे की जरूरत नहीं है?’
कुछ देर बाद करुथम्मा ने कहा, 'लेकिन वहां मेरी कोई भाभी या सास मेरा इंतजार नहीं कर रही है! क्या आप मुझे इसी तरह के किसी ठिकाने पर नहीं भेज रहे हैं?'
चक्की को वे शब्द गले में चुभते हुए महसूस हुए। वे उसे एक ऐसे घर भेज रहे थे जहाँ उसका कोई परिवार नहीं था!
लेकिन बेटी, क्या लोग बातें नहीं करेंगे?
‘बड़ी बात!’
करुथम्मा ने आगे कहा, 'आप मुझे जैसे चाहे विदा कर सकते हैं। लेकिन कृपया छोटे मालिक का पैसा चुका दीजिए।'
कुछ देर बाद, भावुकता से रुंधे स्वर में करुथम्मा ने कहा, 'वह बर्बाद हो चुका है। मैं उसे इस हालत में यहाँ से नहीं जा सकती। और अगर मैं चली गई, तो वह मर जाएगा...'
करुथम्मा ने अपने दिल की सारी बात कह दी। कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। लेकिन चक्की समझ नहीं पाई। अगर वह कुछ भी समझ पाती, तो एक माँ होने के नाते वह अपनी बेटी से बहुत कुछ पूछती। या शायद चक्की सब कुछ समझ गई थी! एक औरत, चाहे वह माँ ही क्यों न हो, अपनी बेटी की प्रेम कहानी समझ जाएगी। और फिर इस बारे में चुप रहेगी।
‘बेटी, मैं वह कर्ज चुका दूंगा।’
लेकिन अचान इसे चुकाएगा नहीं!
चक्की ने करुथम्मा से पूछा, उसे क्या करना चाहिए? करुथम्मा ने चक्की को चेम्बनकुंजू से चोरी करने का सुझाव दिया। अगर उसे पता चल गया तो हत्या हो जाएगी। और चक्की में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह ऐसा करके बच निकले। करुथम्मा ने पूछा, 'अम्मा, क्या आप डरती हैं?'
वह थी। इसीलिए उसने पहले ऐसा नहीं किया था, जबकि वह ऐसा करना चाहती थी।

मछली पकड़ने के बड़े मौसम की शुरुआत में खूब पैसा था। उन दिनों अगर उसने कुछ चुराया भी होता, तो किसी को पता नहीं चलता। करुथम्मा ने चक्की का हौसला बढ़ाने की कोशिश की। इसके अलावा, चक्की अच्छी तरह समझती थी कि इस मामले को सुलझाना कितना ज़रूरी है। इसलिए जब चेम्बनकुंजु सुबह-सुबह समुद्र में गया, तो माँ और बेटी ने उसका बक्सा खोला और उसमें से कुछ पैसे निकाल लिए। वे पूरा दिन डरी रहीं। चेम्बनकुंजु ने दिन भर की कमाई अपने बक्से में बंद कर दी। चक्की ने अपने स्वभाव के विपरीत, दिन भर की कमाई में से उसका हिस्सा जानना चाहा। उसने कहा, 'झींगा कोई नहीं चाहता।'
लेकिन तुम्हें क्या मिला?
'आप क्यों जानना चाहते हैं?'
मां और बेटी हर दिन थोड़ी-थोड़ी रकम छिपाकर रखती थीं।
एक दिन चेम्बनकुंजु ने बड़ी सावधानी से अपने पैसे गिने। उस दिन चक्की और करुथम्मा के पेट में एक जलता हुआ अंगारा था – जो उनके शरीर को खा रहा था, दर्द दे रहा था, मानो किसी भी क्षण उन्हें निगल जाने की धमकी दे रहा हो। जब उसने अपना बक्सा बंद किया, तो उन्होंने राहत की सांस ली। उनका अपराध किसी को पता नहीं चला।
बेटी ने मां से पूछा, 'हमारे पास कितने पैसे हैं?'
इन दिनों में वे केवल सत्तर रुपये ही बचा पाए थे। उनके पास सूखी मछलियों का भी अच्छा-खासा भंडार था। उससे लगभग बीस रुपये मिल सकते थे। भले ही रकम कम थी, उन्होंने इसे परीकुट्टी को देने का फैसला किया।

नौ

शादी तय हो चुकी थी। इसके लिए ज़्यादा योजना या आयोजन की ज़रूरत नहीं थी।
पलानी के पास अपनी ओर से बोलने वाला या राय देने वाला कोई नहीं था। उसने अपने काम करने वाली नाव के मालिक से इस बारे में बात की। चेम्बनकुंजू, पलानी के साथ उसके तट के स्वामी को पान और पान के पत्ते चढ़ाने गया। चेम्बनकुंजू ने भी अपने स्वामी को पान और पान के पत्ते चढ़ाए।
अब कोई भी उसकी बेटी की शादी न कराने के लिए उसे दोष नहीं दे सकता था। वह सीधा खड़ा हुआ और अपनी पत्नी से बोला, 'देखो ये? चेम्बनकुंजू ने सब कुछ ठीक कर दिया!'
चक्की ने तीखे लहजे में जवाब दिया, 'लेकिन उस लड़के को देखो! उसके पास न घर है, न परिवार, न ही कुछ और। कमाल है!'
'चुप रहो, बुढ़िया! तुझे क्या पता? वह एक मेहनती मजदूर है। उसके तगड़े शरीर को देखो! उसके जैसा जवान कहीं नहीं है।'
चक्की इस बात को खारिज नहीं कर सकी। इसके बजाय, वह हंस पड़ी और बोली, 'तो फिर, अब हम आगे बढ़कर अच्छा समय बिता सकते हैं।'
मैं खूब मजे करने वाला हूँ। पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन की तरह आनंद उठाऊंगा। चक्की ने जवाब दिया, 'क्या तुम्हें पहले उस मुस्लिम लड़के को पैसे नहीं देने चाहिए थे?'
जैसे कि यह कोई चिढ़ पैदा करने वाला विचार हो, चेम्बनकुंजु ने कहा, 'जब भी हम करुथम्मा की शादी का जिक्र करते हैं, तो आप हमेशा इस बात को क्यों उठाते हैं?'
चक्की हिल गया। उसने अनजाने में ही सच्चाई का पता लगा लिया था।
जब भी करुथम्मा की शादी की बात होती, यह विचार बातचीत का हिस्सा बन जाता था। लेकिन चक्की ने कभी उम्मीद नहीं की थी कि चेम्बनकुंजू इस मुद्दे को उठाएगा।
चक्की ने एक बहाना बनाया, 'क्या हम युवा प्रेमियों की तरह मौज-मस्ती नहीं करने वाले हैं? मुझे लगा कि बेहतर होगा कि हम उस मामले को भी सुलझा लें!' कोई न कोई रास्ता जरूर निकलेगा। चेम्बनकुंजू भूला नहीं था। समय और परिस्थितियों के अनुसार, वह एक-एक करके अपना दायित्व पूरा करेगा। उसने

अपनी पत्नी से पूरी गंभीरता से कहा, 'सुनो, हमारे अपने कोई बेटे नहीं हैं। अगर हम उसे अपने घर में अपने बेटे की तरह ले आएं तो कैसा रहेगा?'
चक्की मुस्कुराई। 'लेकिन वह तो हमारा सबसे बड़ा बेटा है!'
जैसे चक्की को बात समझ ही नहीं आई थी, चेम्बनकुंजू ने समझाया कि पलानी अकेला है, तो क्यों न उसे अपने साथ रहने के लिए कहा जाए? अब उनके पास दो नावें हैं। अगर पलानी आ जाए तो अच्छा होगा। चेम्बनकुंजू ने चक्की को विस्तार से समझाया और उससे उसकी राय पूछी।
चक्की ने इस बारे में थोड़ा सोचा। यह एक अच्छा विचार था। इससे उनके अपने बेटे के न होने की कमी पूरी हो जाएगी। लेकिन चक्की को कुछ संदेह भी थे। लेकिन क्या वह सहमत होगा?
चेम्बांकुंजू ने कहा, 'वह ऐसा क्यों नहीं करेगा?'
चक्की ने कहा, 'क्या आपको लगता है कि कोई भी सक्षम मछुआरा अपनी मछुआरिन के परिवार पर निर्भर रहना पसंद करेगा?'
चेम्बनकुंजु ने कुछ देर सोचा और फिर जवाब दिया, 'मुझे यकीन है कि वह ऐसा करने में खुश होगा। वह भोला-भाला लड़का है, काफी सीधा-सादा लड़का है!'
‘यह सच है!’ और फिर चक्की ने आगे कहा, ‘लेकिन जब तुमने मुझसे शादी की, तो तुम मेरे घर में दो दिन भी बिताने को तैयार नहीं थे!’
‘मेरे पास मेरे पिता और माता थे!’
चक्की को यकीन नहीं था कि पलानी वहां रहना चाहेगा।
करुथम्मा को अपने पिता की योजनाओं का पता चल गया। चक्की करुथम्मा के विरोध से हैरान थी। उसने अपनी बेटी से कहा, 'अरे, तुम तो बिल्कुल ही अलग हो! जैसे ही तुम्हारी शादी तय हुई, तुम्हें अपने माता-पिता की कोई ज़रूरत ही नहीं रही, है ना? फिर तुम्हें पालने-पोसने में इतनी सारी कठिनाइयाँ सहने का क्या मतलब था? बस उस मछुआरे के तुम्हारे जीवन में आने की थोड़ी सी भी खबर से, और अचानक तुम्हें अपने माता-पिता की ज़रूरत ही नहीं रही! तुम तो बिल्कुल ही अलग हो!'
चक्की के शब्दों ने करुथम्मा के दिल को छलनी कर दिया। उसने अपनी माँ से ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी: क्या उन्हें लगा कि उनकी योजना का विरोध करने का कारण यह था कि वह अपने माता-पिता से प्यार नहीं करती थी? उसने यह भी नहीं सोचा था कि शादी के बाद अपने माता-पिता के घर में रहने से उसकी कोई बदनामी होगी। वह हमेशा अपनी माँ की बेटी रहेगी। उसकी माँ उसके

लिए कुछ भी करने को तैयार थी। वह पंचमी से अलग होने का दर्द कैसे सहन कर सकती थी? जिस दिन वह इस घर को छोड़कर जाएगी - उस पल को वह कैसे सह पाएगी? फिर भी करुथम्मा की बस यही इच्छा थी कि वह उस किनारे, उस ज़मीन से भाग जाए। भावनाओं से गला रुंध गया और वह बोली, ‘अम्माची, मेरा मतलब ऐसा नहीं था! मेरी अम्माची, कृपया इस तरह मत बोलिए। मेरे माता-पिता, आप दोनों के अलावा मेरा कौन है?’ वह चक्की के कंधों पर गिर पड़ी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसकी माँ ने उसे अपनी बाहों में भर लिया।
चक्की ने जो कुछ भी कहा था, उसका असल में कोई इरादा नहीं था। न ही उसने सोचा था कि करुथम्मा को इतना दुख होगा। करुथम्मा ऐसे रोई जैसे उसका दिल टूट जाएगा। चक्की भी रोने लगी।
करुथम्मा ने कहा, 'मैं... मैं... मैं अब इस किनारे पर नहीं रहना चाहती। या, क्या हम सब एक साथ चले जाएं?'
चक्की ने अपने बच्चे के प्रति प्रेम से भरी आवाज में पूछा, 'तुम क्या कह रहे हो, मेरे बच्चे?'
अपने दिल के दर्द को सहन न कर पाने के कारण करुथम्मा ने कहा, 'मैं... अगर मुझे इस किनारे पर रहना पड़े...'
‘क्या बात है, बेटी?’
करुथम्मा कुछ कहना चाहती थी। चक्की को लगा कि उसके कठोर शब्दों से करुथम्मा को ठेस पहुंची है। लेकिन करुथम्मा के दिल में एक और भी गहरा दुख छिपा था। पर उसने यह नहीं सोचा था कि वह इतना तीव्र होगा।
रोते हुए भी करुथम्मा ने दांत भींचते हुए कहा, 'अगर मैं यहीं जीती रही तो इस तट का विनाश निश्चित है! विनाश निश्चित है! क्या तुम मुझे सुन रहे हो?' चक्की की आँखों में आँसू भर आए। 'मेरी बेटी, तुम्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए!'
नहीं, अम्माची, मैं बस यहाँ से जाना चाहता हूँ! तभी मेरे लिए उम्मीद है। अम्माची, मैं यह बात आपसे सिवा और किसे कहूँ?
करुथम्मा के पास अपने दिल की बात कहने के लिए कोई और नहीं था। लेकिन फिर भी वह कितना कुछ बता सकती थी? क्या यह संभव था?
फिर भी चक्की अपनी बात पर अड़ी रही, 'उस मुस्लिम लड़के ने मेरे बच्चे पर जादू कर दिया है!'

करुथम्मा ने इससे इनकार किया। यह जादू-टोना नहीं था; किसी ने उस पर जादू नहीं किया था। करुथम्मा ने पूछा, 'क्या इस तट ने कभी ऐसी स्त्री देखी है?' ‘मेरी बच्ची, यह किस तरह की औरत है?’
क्या आपको नहीं पता, अम्माची?
‘हे सागर की माता! मेरा बच्चा बकवास कर रहा है!’
‘मैं पागल नहीं हूँ, अम्माची। मैं आपसे पूछ रही थी, क्या ऐसी कोई और महिलाएँ भी रही हैं?’
करुथम्मा को समझ नहीं आ रहा था कि वह अपने दिल की बात कैसे बयां करे। लेकिन वह उस औरत के बारे में जानना चाहती थी। एक मछुआरी जो दूसरे समुदाय के एक आदमी से प्यार कर बैठी; एक औरत जिसका प्यार तमाम कोशिशों के बावजूद कम होने के बजाय बढ़ता ही गया; क्या इस किनारे पर कभी ऐसी कोई औरत थी? एक औरत जिसकी हर सांस उस जोशीले प्यार से भरी हुई थी। क्या उस किनारे ने कभी ऐसा प्यार देखा था? एक मछुआरी और दूसरे धर्म के आदमी के बीच प्यार की क्या उम्मीद थी? क्या उस किनारे की रेत के कणों ने कभी उस प्रेमी का गीत सुना था और उनमें जान आ गई थी? उस प्रेमी का क्या हुआ?
क्या वह अपनी मां से इनमें से कोई भी सवाल पूछ सकती है?
शायद कभी यहाँ दो टूटे दिल वाले प्रेमी इस किनारे पर चले थे। अपने अटूट प्रेम को दिल में छुपाने के अलावा कुछ न कर पाने के कारण, क्या उस स्त्री ने किसी और पुरुष की पत्नी बनने की अनुमति दे दी थी? या शायद, क्या उसने आत्महत्या कर ली थी? या शायद, कोई और रास्ता था?
करुथम्मा ने निश्चय किया कि केवल वही इतनी अभागी हो सकती है। केवल वही ऐसे पुरुष से प्रेम कर सकती है। भले ही इस तट पर और भी प्रेम कहानियां रही हों, लेकिन ऐसा दर्द केवल वही झेल सकती है।
चक्की ने घबराकर पूछा, 'क्या कुछ हुआ है, बेटी?'
करुथम्मा अपनी मां के सवाल को समझ नहीं पाई।
चक्की ने आगे कहा, 'एक निश्चित उम्र की लड़कियां...'
करुथम्मा ने चक्की के संकेत को तथ्यात्मक रूप से खारिज कर दिया, 'अम्माची, नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूं!'
उस दावे में साहस था।
करुथम्मा की बस एक ही विनती थी। कि उसे भागने की अनुमति दी जाए। एक अनजान डर ने उसे जकड़ लिया था। एक भयानक राक्षस, जिसके जबड़े खुले हुए थे। उसे उस

काले साये से भागना ही था। और उसकी माँ ने उसे भागने में मदद करने के लिए सहमति दे दी। उसे उसकी शादी के दिन ही भेज दिया जाएगा।
करुथम्मा मोहल्ले की महिलाओं के बीच आकर्षण का केंद्र बन गईं। वे एक ऐसी रस्म निभाती थीं जो सदियों पुरानी थी। शादी तय हो जाने के बाद, मोहल्ले की महिलाओं का यह कर्तव्य होता था कि वे दुल्हन को पत्नी होने के धार्मिक रीति-रिवाजों के बारे में सिखाएं। अगर दुल्हन कोई गलती करती, तो समाज इन नेक महिलाओं को ही दोषी ठहराता।
नल्लापेन्नु ने करुथम्मा से कहा, 'बेटी, हम तुम्हें एक पुरुष सौंप रहे हैं। यह उतना आसान नहीं है जितना तुम सोच रही हो। हम किसी पुरुष को लड़की नहीं सौंप रहे हैं। बल्कि इसके विपरीत, मामला उल्टा है।'
कालीकुंजु को कुछ और कहना था, 'बेटी, हमारे लोग ऐसे समुद्र में रहते हैं जहाँ लहरें उठती और गिरती हैं!'
कुंजिपेन्नू ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, 'बेटी, महिलाओं का दिल आसानी से बहक जाता है। इसलिए तुम्हें सावधान रहना होगा!'
और इसलिए उन सभी ने उसे सलाह दी। उन सभी ने बारी-बारी से ऐसी सलाह स्वीकार की थी। और अब वे केवल इसे आगे बढ़ा रहे थे। यही उनका कर्तव्य था। उस तट से शादी करने वाली किसी महिला के दुराचार के लिए उनमें से किसी को भी कभी दोषी नहीं ठहराया गया था। यह सारी सलाह ईर्ष्या से रहित थी।
करुथम्मा ने एक-एक शब्द ध्यान से सुना। वह भावविभोर हो गई। लेकिन उसके मन में एक सवाल था, जो वह अपनी माँ से पूछना चाहती थी। 'क्या कभी ऐसा हुआ है कि इस तट पर किसी स्त्री ने किसी पुरुष से प्रेम किया हो? और पुरुष ने भी उससे प्रेम किया हो, लेकिन उसने किसी दूसरे पुरुष से विवाह कर लिया हो? क्या इस तट पर कभी ऐसा कुछ हुआ है?'
यह एक ऐसा सवाल था जो उसके मन में गूंज रहा था। फिर भी उसने पूछने की हिम्मत नहीं की: उस अभागी महिला की कहानी क्या थी?
करुथम्मा को लगा कि उसने उस शापित स्त्री की आत्मा को, जिसकी अधूरी इच्छाएँ थीं, तट की हवाओं में भटकते हुए देखा। कभी-कभी एकांत में, उसे एक अजीब भाषा में सुनाई देने वाली एक अनकही कहानी सुनाई देती थी। एक समय था जब तट पर उसके जैसी स्त्रियाँ हुआ करती थीं। ऐसी स्त्रियाँ जो शोकग्रस्त प्राणियों में परिवर्तित हो गईं, दुख भरा जीवन जीती रहीं। ये वही वियोग की कहानियाँ थीं जो हवा भी उसे सुनाती थी। समुद्र की लहरें भी यही कहती थीं।

रेत के कण भी इसे जानते थे। बात यहीं खत्म नहीं होती। इन बूढ़ी स्त्रियों की हड्डियाँ चूर-चूर होकर धूल बन चुकी थीं और अब तट की रेत का हिस्सा थीं। वे भी काँप रही होंगी।
एक दिन करुथम्मा ने नल्लापेन्नू से पूछा, 'चाची, क्या इस तट पर कभी कोई ऐसी स्त्री रही है जो भटक गई हो?'
हाँ, ऐसा हुआ करता था। बेहद अनोखी कहानियाँ। एक-दो कहानियाँ बहुत पुरानी हैं। ये कहानियाँ अपनी मर्ज़ी से नहीं भटकीं। एक पुराने समुद्री गीत में ऐसी ही एक स्त्री की कहानी है। उसके पतन से लहरें पहाड़ जितनी ऊँची उठ गईं और किनारे तक आ गईं। खतरनाक साँप झाग उगलते हुए रेत पर रेंगने लगे। गुफा जैसे मुँह वाले समुद्री राक्षस नावों का पीछा करते हुए उन्हें पूरा निगलने को तैयार थे। यह एक पुरानी कहानी थी। नल्लापेन्नू ने उस गीत की कुछ पंक्तियाँ गाईं।
वह भी प्रेम की कहानी थी। शायद कई वर्षों बाद, करुथम्मा की कहानी भी गीतों का विषय बनेगी।
नल्लापेन्नु ने कहा, 'यही तट का मार्ग है।'
करुथम्मा ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, 'क्या आज भी ऐसा ही है?'
आजकल पवित्रता के उस सख्त नियम का कोई अस्तित्व नहीं है। आजकल पुरुष भी बदल गए हैं।
लोग और रीति-रिवाज बदलते हैं। लेकिन समुद्र की पुत्री को अपनी पवित्रता की रक्षा करनी ही होगी।
छोटी बच्चियों ने उनसे पूछा, 'करुथम्मा चेची, क्या आप जा रही हैं?' करुथम्मा को उन छोटी बच्चियों को कुछ महत्वपूर्ण बातें बतानी थीं। उन्हें इन किनारों पर हवा में सूखे पत्तों की तरह नहीं भटकना चाहिए।
करुथम्मा ने सबको अलविदा कहा। उनका जन्म वहीं हुआ था; वे वहीं पली-बढ़ी थीं; और अब वे उस जगह को भी अलविदा कह रही थीं। लेकिन क्या वे उस समुद्रतट को सचमुच भूल सकती थीं?
नया किनारा कैसा होगा? उसने इस बारे में बहुत सोचा था। क्या वहाँ भी सूरज यहाँ की तरह सुनहरी रोशनी में डूबेगा? तूफ़ान में जब समुद्र उथल-पुथल मचाता है, तब भी उसकी अपनी एक अलग ही खूबसूरती होती है। उसे इस समुद्र से कभी डर नहीं लगा था। उस शापित स्त्री का गीत गाते हुए भी, इस किनारे की

हवाएँ बस प्यार से छूना जानती थीं। क्या वह किनारा भी वैसा ही होगा? क्या सच में होगा?
वहाँ के लोगों का क्या? भले ही वे स्नेही थे, लेकिन जिस तट ने उसे पाला-पोसा था, उसमें एक खास तरह की कोमलता थी। और यही वह चीज़ थी जिससे वह दूर जा रही थी।
उसने एक-एक करके उन सभी परिचित चीजों को अलविदा कहा।
चांदनी रात थी। समुद्र शांत था। चांद की एक अलग ही खूबसूरती थी। चांदनी के साथ घुलमिलकर हवा में एक मधुर गीत गूंज रहा था।
क्या परीकुट्टी गा रही थी?
लेकिन करुथम्मा के कानों में यह गीत उनके गीत की तरह गूंजा नहीं। परीकुट्टी नाम का वह व्यक्ति अब अस्तित्व में नहीं था। उसे आनंद की दुनिया में खींच लिया गया था। यह चांदनी में डूबे समुद्र तट की पुकार थी। यह उसकी अपनी चाहतों की युवा पुकार थी। उस तट का संगीत जिससे वह दूर जा रही थी। उस तट की कितनी ही मार्मिक यादें उसके मन में बसी थीं!
उस गीत की धुन उसके मन में उतर गई। करुथम्मा उठ बैठी। परीकुट्टी की छवि उसके सामने आ गई। क्या सचमुच वही उसे पुकार रहा था? उस गीत के सिवा उसके पास सांत्वना और राहत का और क्या जरिया था? सिर्फ़ उस रात ही नहीं, बल्कि वह हर रात गाता था। उसके जाने के बाद भी वह गाता रहता था। उसे परवाह नहीं थी कि कोई उसे सुनता है या नहीं।
उसकी माँ सो रही थी। उसके पिता बाहर गए हुए थे। उसे पता था कि किनारा सुनसान होगा। उसके अंदर कुछ हलचल हुई जिससे उसका मन हुआ कि वह दरवाजा खोलकर बाहर निकल जाए। गायक का दिल अभी टूटा नहीं था। लेकिन वह ऐसे गा रहा था मानो वह उसे चकनाचूर करना चाहता हो। क्योंकि यह गीत उस गिरी हुई औरत के अतीत की याद दिला रहा था जो कभी इसी किनारे पर रहती थी!
ये वो पंक्तियाँ थीं जो नल्लापेन्नु ने करुथम्मा को सुनाई थीं। उन्हें शब्द याद नहीं थे। लेकिन उस गीत का सार, उसमें निहित पीड़ा और भावनाओं की गहराई ने उनके हृदय को झकझोर दिया था।
क्या वह स्त्री भी किसी गीत के आकर्षण में मदहोश होकर तट की ओर चली गई थी? उसने भी उस रात चमकते चाँद की पुकार सुनी होगी... और इस तरह एक और स्त्री ने उसके मार्ग का अनुसरण किया।

अचानक गीत रुक गया। उसने अपने निरंतर गायन से अपनी देवी को प्रसन्न कर लिया था और उन्हें अपने सामने प्रकट होने के लिए प्रेरित किया था। एक पल के लिए उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने पूछा, 'करुथम्मा, क्या आप जा रही हैं?'
वह उससे और क्या मांग सकता था?
‘करुथम्मा के चले जाने के बाद… क्या करुथम्मा कभी मेरे बारे में सोचेगी?’ यह एक गंभीर प्रश्न था।
‘भले ही तुम मुझे याद न करो, मैं इस किनारे पर बैठकर गाऊंगा। यहां तक कि जब मैं बूढ़ा हो जाऊंगा और मेरे दांत नहीं रहेंगे, तब भी मैं गाता रहूंगा।’ करुथम्मा को उससे कुछ कहना था। 'मेरे मालिक, आपको एक अच्छी लड़की से शादी करनी चाहिए, कई बच्चे पैदा करने चाहिए, एक बड़ा व्यापारी बनना चाहिए और सुखी जीवन जीना चाहिए।'
परीकुट्टी ने कुछ नहीं कहा।
करुथम्मा ने आगे कहा, 'मेरे मालिक, आपको हमारे बचपन के दिनों को भूल जाना चाहिए। उन दिनों को जब हम इस किनारे पर खेला करते थे।'
परीकुट्टी अभी भी चुप थी। और करुथम्मा ने आगे कहा, 'यह मेरे और मेरे बॉस के लिए सबसे अच्छा होगा।'
करुथम्मा एक पल भी नहीं रुकीं। ‘जाने से पहले हम आपसे लिए पैसे लौटा देंगे। मेरे मालिक, मैं चाहती हूँ कि आपका भला हो…’ इसके बाद वह कुछ बोल नहीं सकीं। वह उन्हें बताना चाहती थीं कि वह उनके लिए प्रार्थना करेंगी। लेकिन उन्हें यकीन नहीं था कि वह ऐसा कर पाएंगी। एक मछुआरे को केवल एक ही पुरुष के कल्याण के लिए प्रार्थना करने की अनुमति थी। जिस पुरुष की जिम्मेदारी उसे सौंपी गई थी। उनकी परंपरा उन्हें किसी दूसरे पुरुष के लिए प्रार्थना करने की अनुमति नहीं देती थी। तो वह उनसे यह कैसे कह सकती थीं? लेकिन अनजाने में ही उनके मुँह से शब्द निकल पड़े।
‘मैं हर दिन आपके बारे में सोचूंगा, मेरे बॉस।’
'अरे, लेकिन क्यों? आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।'
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। लेकिन वह सन्नाटा अनकहे शब्दों से भरा हुआ था।

एक रात का पक्षी नारियल के पेड़ से उठा और चाँद के पार उड़ गया, मानो यह जताने के लिए कि उसने यह दृश्य देखा है। थोड़ी दूर रेत पर एक कुत्ता खड़ा होकर उन्हें देख रहा था। इस प्रकार दो गवाह थे।
परीकुट्टी ने पूछा, 'सब कुछ खत्म हो गया, है ना? वो खेल जो हमने खेले, वो सीपियाँ जो हमने इस किनारे से चुनीं।' उसने गहरी साँस ली और आगे कहा, 'और इस तरह हमारे जीवन का एक दौर समाप्त हो गया!'
करुथम्मा मान गई। परीकुट्टी ने कहा, 'मैं इस तट पर अकेली रहूंगी।'
उन शब्दों ने करुथम्मा के दिल को झकझोर दिया। उसने आगे कहा, 'मुझे लगा था कि करुथम्मा मुझसे अलविदा नहीं कहेगी।'
उन्होंने अचानक बोलते हुए कहा, 'लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है। अगर करुथम्मा बिना बताए चली जातीं, तो मुझे दुख होता। लेकिन मैं कभी शिकायत नहीं करूंगा। मैं अपनी करुथम्मा की आलोचना कैसे कर सकता हूं?'
करुथम्मा ने अपना चेहरा हथेली से ढक लिया और उसमें रोने लगी। परीकुट्टी ने इसे भांप लिया।
‘करुथम्मा, तुम क्यों रो रही हो? पलानी एक अच्छा आदमी है, एक सक्षम आदमी है।’
रुंधे हुए स्वर में उन्होंने कहा, 'सब ठीक हो जाएगा, करुथम्मा। तुम्हें आशीर्वाद मिलेगा।'
वह इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने कहा, 'मेरे बॉस, आपको इस तरह लाश को चाकू नहीं मारना चाहिए।'
परीकुट्टी को उसकी बात समझ नहीं आई। वह इस बात से हैरान था कि उसने कुछ ऐसा कह दिया जिससे उसे दुख पहुंचा। लेकिन उसने कहा क्या था?
गहरे दुख के साथ उसने कहा, 'लेकिन, मेरे बॉस, आप मुझे कभी पसंद नहीं करते थे।'
‘करुथम्मा, तुम ऐसा कैसे कह सकती हो?’
उसने कसम खाई कि उसकी सबसे बड़ी इच्छा उसे स्वस्थ देखना है। उसने कहा, 'मैं यहाँ बैठकर गाऊँगा। ज़ोर से गाऊँगा।'
उसने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हारा गीत सुनूंगी, भले ही मैं त्रिकुन्नपुझा के तट पर बहुत दूर क्यों न रहूं।'
मैं तब तक गाता रहूंगा जब तक मेरा गला फट न जाए और मैं मर न जाऊं।
और मैं भी दिल टूटने से मर जाऊंगी।

[illegible]
‘[illegible],’ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दस

चक्की इस समारोह को खास बनाना चाहती थी। सभी पड़ोसियों को लगता था कि यह एक भव्य और शान-शौकत भरा विवाह होगा। चेम्बनकुंजू के पास धन था और करुथम्मा सबसे बड़ी बेटी थी। इसलिए शादी एक बड़ा आयोजन होना ही था।
लेकिन चेम्बनकुंजु को ये सब मंजूर नहीं था। उन्हें करुथम्मा के लिए सोने के गहने खरीदने में पैसे खर्च करने पड़े थे। उन्होंने कहा कि उनके पास भव्य शादी पर पैसे उड़ाने के लिए पैसे नहीं बचे थे। फिर भी, खर्चों में कटौती करना उनके लिए नामुमकिन था।
चक्की और चेम्बनकुंजू के बीच इसी बात पर झगड़ा हो गया। और करुथम्मा को बीच-बचाव करके दोनों के बीच सुलह करानी पड़ी। उसे इस बात का बहुत दुख था कि वही उनके रोज़ाना के झगड़ों की वजह थी।
वो बस उस दिन को किसी तरह गुज़ारना चाहती थी। वो बहुतों के लिए मुसीबत बन चुकी थी! उससे जुड़े हर इंसान को तकलीफ हो रही थी। अब वो और किसे मुसीबत में डालेगी? आखिर वो और किसे दुख पहुँचाएगी? उसने खुद से पूछा।
उन्हें तट स्वामी को आमंत्रित करना था। तभी अनुष्ठान शुरू हो सकते थे। चेम्बनकुंजू ने तट स्वामी को पान के पत्ते, तंबाकू और कुछ नकदी भेंट की और उनकी अनुमति मांगी। तट स्वामी प्रसन्न हुए और उन्होंने शादी के लिए जल्दी आने का वादा किया।
शादी का दिन। यह कोई बहुत बड़ा आयोजन नहीं था। फिर भी, यह किसी न किसी तरह चेम्बांकुंजू की योजना और अपेक्षाओं से कहीं अधिक सफल रहा।
तटरक्षक वहाँ समय से पहले पहुँच गया। त्रिकुन्नपुझा से लगभग पंद्रह लोग आए थे। उस समूह में कोई महिला नहीं थी। पलानी के पास करुथम्मा को घर ले जाने के लिए कोई महिला रिश्तेदार नहीं थी। वहाँ जमा हुई महिलाओं ने इस बारे में अटकलें लगाना शुरू कर दिया। सभी जानती थीं कि पलानी अनाथ है। लेकिन अब तक उन्हें इस बात का सही अर्थ समझ नहीं आया था, जब पलानी पुरुषों के एक समूह के साथ आया और उसके साथ एक भी महिला नहीं थी। यह वाकई एक गंभीर कमी थी। चक्की भी इसे एक खामी मानती थी।
नल्लापेन्नू ने आवेग में आकर कहा, 'क्या ये लोग कम से कम पड़ोस की किसी महिला को अपने साथ आने के लिए नहीं कह सकते थे?'
कालीकुंजू ने भी अपनी राय देते हुए सहमति जताई।

कुंजिपेन्नू ने पूछा, 'आप किसी लड़की को पुरुषों के समूह के साथ कैसे भेज सकते हैं?'
लक्ष्मी ने कहा, 'हम और क्या कर सकते हैं?'
नल्लापेन्नू ने तीखी टिप्पणी करते हुए कहा, 'यह तो वाकई एक नई परंपरा है! दूल्हे के पक्ष में दुल्हन के साथ कई महिलाएं होनी चाहिए। यही तो रिवाज है!'
चक्की ने महिलाओं की गपशप के कुछ अंश सुने। चक्की भी उन्हीं बातों को सोच रही थी।
अब दुल्हन का मूल्य चुकाने का समय आ गया था। यह राशि तटरक्षक द्वारा तय की जानी थी। इसके बाद ही विवाह समारोह शुरू होना था। तटरक्षक ने पलानी और उसके साथियों को बुलाया। वे सभी ध्यानपूर्वक खड़े हो गए। उन्होंने कहा, 'राशि पचहत्तर रुपये तय की गई है।'
दूल्हे के पक्षकार दंग रह गए। उन्हें इतनी बड़ी रकम की उम्मीद नहीं थी। इसके अलावा, उन्हें लगा कि यह बहुत ज़्यादा है। आमतौर पर इतनी रकम तो किसी मछुआरे से ही माँगी जाती है।
कुछ देर तक कोई नहीं बोला। दूल्हे के पक्षधर ने साहसपूर्वक लेकिन अत्यंत विनम्रता से बोलना शुरू किया। 'पिताजी, मुझे असभ्य न समझें, लेकिन हम भी ऐसी जगह से आए हैं जहाँ हमारा अपना एक मार्गदर्शक होता है। आप दहेज तय कर सकते हैं और हम बिना किसी आपत्ति के उसे चुकाने के लिए बाध्य हैं, लेकिन यह...'
शोर मास्टर ने पूछा, 'मुझे बताओ... बताओ, क्या बात है?'
उस व्यक्ति का नाम अच्युतन था, उसने कहा, 'पिताजी, हमें दुल्हन का मूल्य चुकाने के लिए कहना आपका अधिकार है। लेकिन आपको पहले दूल्हे के परिवार से सलाह लेनी चाहिए थी।'
तट के अधिकारी ने अपनी गणना में गलती कर दी थी। लेकिन जब उन्हें इस गलती के बारे में बताया गया, तो वे क्रोधित हो गए। उन्होंने पूछा, 'इसमें परामर्श या चर्चा करने जैसी क्या बात है?'
अच्युथन भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। वह किसी तटवर्ती अधिकारी से पहली बार नहीं मिल रहा था। उसके तट पर भी एक प्रतिष्ठित तटवर्ती अधिकारी मौजूद था। अच्युथन ने कहा, 'बेशक, इस पर चर्चा होनी ही चाहिए!'
तो मुझे बताओ, यह क्या है?

अच्युतन ने दृढ़ता से जवाब दिया, 'क्या आप नहीं चाहते कि यह शादी हो?' अच्युथन ने अपनी हद पार कर दी थी। इस आरोप पर तटरक्षक बल के अधिकारी ने गुस्से से गुर्राया।
अच्युतन ने अपने दृष्टिकोण का बचाव किया। जब तक दूल्हे के पास कितनी धनराशि है, यह पता न चल जाए, तब तक दहेज कैसे तय किया जा सकता है? ऐसी परिस्थितियों में शादी कैसे हो सकती है? इसीलिए तो उसने ऐसा कहा था।
शोर मास्टर का लहजा तिरस्कारपूर्ण था। 'क्या तुम इतने आवारा और निकम्मे हो?'
भले ही वह उनका तट प्रमुख न हो, लेकिन वह इस तट का रक्षक था। इसलिए उन्होंने चुपचाप उसके द्वारा उन्हें नीच-भाले कहे जाने को सहन कर लिया। वे ऐसा करने के लिए बाध्य थे। वास्तव में, अगर उन्हें और भी अपमान सहना पड़ता, तो वे सहने को तैयार थे।
फिर भी, अच्युतन को इस बारे में भी कुछ कहना था।
तटरक्षक ने चेम्बनकुंजू से पूछा, 'चेम्बनकुंजू, क्या तुम अपनी बेटी की शादी एक ऐसे आवारा से कर रहे हो जिसके पास अपने खुद के पचहत्तर रुपये भी नहीं हैं?'
वहाँ जमा हुई महिलाओं ने इस बात का समर्थन किया। उनमें से हर एक ने यही सोचा था। वे सभी इस बात से परेशान थीं कि उनके तट की एक सुंदर युवती का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से किया जा रहा था जिसका न घर था और न परिवार। इसके लिए चेम्बनकुंजू ही जिम्मेदार था। और अब जब तट प्रमुख ने उससे सीधे यह सवाल पूछा, तो वे सभी प्रसन्न हुईं। कोई और ऐसा करने की हिम्मत नहीं करता। छोटा लड़का चुपचाप खड़ा रहा।
अच्युतन ने कहा, 'यह सच है। वह एक बेघर आवारा है। हममें से कोई भी उसका रिश्तेदार नहीं है। हम तो बस एक ही किनारे से आए हैं। इसीलिए हमने कहा था कि आपको दहेज के बारे में चर्चा करनी चाहिए थी।'
अच्युतन ने पलानी के बारे में बात करना शुरू किया। महिलाओं को करुथम्मा पर दया आ रही थी। वे आपस में फुसफुसा रही थीं कि उसे समुद्र में डुबो देना ही बेहतर होता।
लेकिन तट प्रमुख अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने कहा, 'यह सब ठीक है। लेकिन क्या दहेज लड़के की आर्थिक स्थिति पर आधारित है?'

अच्युथन ने यह बात स्वीकार कर ली कि ऐसा नहीं था। तट के स्वामी ने आगे कहा, 'वह एक अच्छी लड़की है। अगर तुम उसे चाहते हो, तो तुम्हें उसके लायक कीमत चुकानी होगी।'
दूल्हे के एक साथी ने कुछ बुदबुदाया। उसे न तो शोर मास्टर की बातें पसंद आईं और न ही उनके बोलने का तरीका। खुद को रोक न पाने के कारण वह बड़बड़ाने लगा।
शोर मास्टर ने उस उद्दंड व्यक्ति पर झल्लाते हुए कहा, 'तुम किस बात पर शिकायत कर रहे हो?'
उसने कुछ नहीं कहा। तटरक्षक बल के अधिकारी ने कहा, 'बोलो, तुम...'
उस आदमी ने अपने मन की बात कहने का फैसला किया। शायद वह हमेशा से इस मुद्दे को उठाना चाहता था। शायद वह शादी को रोकना चाहता था।
बुलंद आवाज में उसने चुनौती देते हुए कहा, 'कृपया हमें यह मत बताइए कि वह कितनी अच्छी लड़की है!'
'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?'
क्या इस शादी का मकसद सिर्फ उसे इस किनारे से विदा करना नहीं है? ताकि यह किनारा बर्बाद न हो जाए। हमारा किनारा मिट जाए, बस यही तो मकसद है, है ना? और इन सबके बावजूद, तुम चाहते हो कि लड़के को इतनी भारी दहेज राशि चुकानी पड़े जो आम तौर पर नहीं चुकाई जाती। वाकई कमाल है!
वे सब हिल गए थे। वह किस बात का इशारा कर रहा था?
चक्की बेहोश होकर गिर पड़ी। करुथम्मा ने अपनी माँ को बाहों में भर लिया। उसकी 'ओह मेरी अम्माची' की चीख सुनकर सब लोग दौड़ पड़े। चक्की अचेत पड़ी थी।
चेम्बनकुंजु पागलों की तरह इधर-उधर भाग रहा था। क्या उसकी पत्नी मरने वाली थी? शादी की पार्टी खत्म हो रही थी।
वहाँ जमा हुए कुछ लोगों ने उस निर्भीक व्यक्ति से पूछा कि उसका क्या मतलब था। उन्होंने उस पर मानहानि का आरोप लगाया। उनका मानना था कि उसे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था। लेकिन उस व्यक्ति ने कोई पछतावा नहीं दिखाया। बल्कि, इससे उसका आक्रामक रवैया और भी बढ़ गया।
‘सुनो, मैं इस तट पर आया हूँ। मुझे यहाँ होने वाली हर बात का पता है।’

दावत का समय हो गया था। फिर एक समस्या खड़ी हो गई। कुछ महिलाएं बिना खाए ही चली गईं। वे पलानी की जाति को लेकर संशय में थीं, इसलिए दावत में खाने से कतरा रही थीं। दूल्हे के कई साथी, जिनमें उपद्रवी पप्पू भी शामिल था, चले गए।
चेम्बनकुंजु को इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा। वह तटरक्षक के चरणों में गिर पड़ा और उनसे मदद की गुहार लगाई। चक्की पूरी तरह से लाचार थी। करुथम्मा तब तक कभी घर से बाहर नहीं निकली थी। और अब उसे अकेले ही एक अनजान जगह जाना था। और दूल्हे के दल में कोई महिला नहीं थी। इन सब बातों को देखते हुए, क्या कोई ऐसा तरीका था जिससे वे उस दिन लड़की को घर से जाने से रोक सकें? पलानी को भी न जाने दें। वह भी रात यहीं रुक सकता है। अगर करुथम्मा चली गई, तो चेम्बनकुंजु का घर बिखर जाएगा। बीमार को गले लगाने वाला भी कोई नहीं था।
चेम्बनकुंजु बौखलाया हुआ था। तट के अधिकारी ने उसकी दुर्दशा पर सहानुभूति जताते हुए कहा, 'चेम्बनकुंजु, तुम्हारी बात सही है, लेकिन अगर वे लड़की को ले जाना चाहें तो हम उन्हें कैसे रोक सकते हैं?'
चेम्बांकुंजू ने कहा, 'अगर स्वयं पिता जी जोर देंगे तो वे मान जाएंगे।' तटरक्षक ने भावहीन मुस्कान के साथ कहा, 'ये त्रिकुन्नपुझा से हैं। बड़े घमंडी लोग हैं। क्या तुमने खुद नहीं देखा, चेम्बनकुंजू?'
चेम्बांकुंजू के पास तट स्वामी के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। अगर वह चली जाती, तो वह क्या करता? अगर तट स्वामी अपनी बात पर अड़ा रहता, तो उन्हें हार माननी पड़ती।
खाना खा लिया गया और पान के पत्ते बाँट दिए गए। अच्युतन ने कहा कि अब जाने का समय हो गया है। करुथम्मा अपनी माँ के पास बैठी रही। वह लगातार रोती रही। चेम्बनकुंजु व्यस्त होने का नाटक करते हुए इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहा था। जाने का समय हो गया था। अच्युतन ने फिर से बोलना शुरू किया। जब उसने तीसरी बार कहा, तो चेम्बनकुंजु को ध्यान देना पड़ा। उसने अच्युतन से पूछा, 'क्या सच में आज ही लड़की को वापस ले जाना ज़रूरी है?'
किसी को भी ऐसे सवाल की उम्मीद नहीं थी। अच्युतन को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। हालांकि, तट के स्वामी ने जवाब का इंतजार किया।
अच्युतन ने पूछा, 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
मेरा मतलब क्या है?

'शादी के बाद दुल्हन को कैसे पीछे छोड़ा जा सकता है?'
शोर मास्टर जानता था कि उसके पास वास्तव में कोई तर्क नहीं था। लेकिन वह अपने अधिकार का पूरा इस्तेमाल कर सकता था। इसलिए उसने किया और उस घर की हालत का वर्णन किया। लेकिन वे यह बात पहले से ही जानते थे।
शोर मास्टर ने कहा, 'मैं आपसे बस इतना ही अनुरोध कर रहा हूं कि आप इस बात पर विचार करें कि क्या आप लड़की को तब तक यहां रहने दे सकते हैं जब तक उसकी मां कम से कम बैठ न सके।'
अच्युथन ने कहा, 'यह फैसला लड़के को ही करना है।'
अपनी बात को और मज़बूत करने के लिए, शोर मास्टर ने एक और मुद्दा उठाया। 'आप अब लड़की को अपने साथ ले जाने पर ज़ोर नहीं दे सकते।'
अच्युतन ने पूछा, 'ऐसा क्यों है?'
क्या यह प्रथा नहीं है कि दुल्हन को उसके नए घर तक ले जाने के लिए एक महिला का साथ होना आवश्यक है?
अच्युतन ने तीखे लहजे में जवाब दिया, 'अपनी लड़की की शादी ऐसे आदमी से क्यों कर रही हो जिसकी एक भी महिला रिश्तेदार न हो?'
शोर मास्टर ने गुस्से का नाटक किया। 'क्या तुम मुझसे बहस कर रहे हो?' अच्युतन चुप हो गया। अब फैसला दूल्हे को करना था। अच्युतन ने मन ही मन कहा, "उसे करने दो।"
शोर मास्टर को उम्मीद थी कि पलानी रियायत देने के लिए तैयार होंगे।
समय तेज़ी से बीत रहा था। कोई भी किसी बात पर सहमत नहीं था। अच्युतन ने कहा, 'देर हो रही है।' तटरक्षक ने निर्देश दिया, 'पलानी को यहीं रहने दो।' लेकिन इस पर भी किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। अब फैसला पलानी को ही करना था।
अच्युतन ने पलानी से कहा, 'देखो लड़के, तुमने क्या फैसला किया है? हमें यहाँ से जाना होगा।'
पलानी बेचैन हो गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसने सब कुछ सुन लिया था, लेकिन वह कोई फैसला नहीं कर पा रहा था। क्या यह इसलिए था क्योंकि यह उसकी समझ से परे था? जो भी हो, पलानी को यह कोई महत्वपूर्ण समस्या नहीं लग रही थी। वह टस से मस नहीं हुआ।
अच्युतन ने गुस्से में कहा, 'कुछ तो बोलो, प्लीज़? हमें इस सब से क्यों गुज़ार रहे हो?'

फिर उन्होंने पलानी पर आरोप लगाते हुए कहा, 'देखिए, हम आपकी ओर से यहां आए थे और अब ऐसा लगता है कि हमने सभी को नाराज कर दिया है।'
चेम्बनकुंजू बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी कि पलानी क्या कहेगा। पलानी सीधा-सादा आदमी था। वह इतना निर्दयी नहीं हो सकता था। वैसे भी, उसे वहाँ ले जाना तो बस एक काम था। वह तो पूरी दुनिया को अपना घर मानता था। चेम्बनकुंजू को लगा कि पलानी बाकियों को विदा करके खुद यहीं रुक जाएगा।
अच्युतन ने फिर कहा, 'कुछ तो बोलोगे?'
पलानी ने अच्युतन के चेहरे की ओर देखा। फिर सबके चेहरों की ओर। उसे कोई ऐसा चेहरा नहीं मिला जिससे वह फैसला कर सके। फिर भी, उसके मुंह से एक वाक्य निकल गया, 'मैं इस लड़की को अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। अभी।' चेम्बनकुंजू चौंक गया। यह अप्रत्याशित था। उसने पलानी से इतनी बेबाकी की उम्मीद नहीं की थी। चेम्बनकुंजू ने अपनी छाती पीटते हुए कहा, 'बेटा, उस औरत की हालत देखो और फिर फैसला करो।'
उन्हें यह भी कहना चाहिए था, 'क्या तुम भी एक औरत से पैदा नहीं हुए थे!' लेकिन चेम्बनकुंजू ने ऐसा नहीं कहा।
क्या पलानी उस विनती से प्रभावित हुआ? यह कहना मुश्किल था। उसने बस एक बार फिर अच्युतन के चेहरे की ओर देखा। लेकिन उसने कोई सलाह नहीं दी। पर पलानी को यह आभास हुआ कि अच्युतन को लगता था कि लड़की को उनके साथ जाना ही चाहिए। पलानी ने फिर दोहराया, 'मैं लड़की को अपने साथ ले जाना चाहता हूं।'
कुछ देर बाद उसका दिमाग चलने लगा। उसने अपनी बात मनवाने के कुछ कारण बताए। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसका न तो घर था और न ही परिवार। लेकिन उसने अपना घर बसाने के लिए ही शादी की थी। वह अपना जीवन शुरू करना चाहता था। इसलिए वह शादी करके अपनी पत्नी को पीछे छोड़ने की बात को स्वीकार नहीं कर सकता था। उसे बहुत कुछ करना था। और उनमें से कोई भी काम रुक नहीं सकता था।
इसलिए मुझे अपनी दुल्हन को अपने साथ ले जाना होगा।
पलानी का इतना कुछ कह पाना अपने आप में ही आश्चर्यजनक था। और यह एक दृढ़ निर्णय प्रतीत होता था। पलानी को लगा कि उनके मित्र उनके इस निर्णय से प्रसन्न हैं। लेकिन किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि इसका चेम्बनकुंजू पर क्या प्रभाव पड़ा। चेम्बनकुंजू रोया और इस तरह से विनती की कि किसी का भी हृदय पिघल जाता। 'पुत्र, यह एक पिता बोल रहा है। एक पिता जिसने अपने बच्चे का पालन-पोषण किया है। एक दिन तुम भी पिता बनोगे।'

पलानी टस से मस नहीं हुआ। शायद अगर अच्युतन और अन्य लोग सहमत हो जाते, तो वह चेम्बनकुंजू की विनती मान लेता।
तट स्वामी का हृदय पिघल गया। हर किसी का ऐसा ही हाल होता। शायद अच्युतन का भी। लेकिन उसने यह बात ज़ाहिर नहीं की। तट स्वामी नाराज़ थे। उन्होंने कहा, 'यह तो होना ही था! वह परिवार में पला-बढ़ा नहीं है। उसे पता ही नहीं कि पिता या माता का क्या अर्थ होता है। प्यार और स्नेह घर से ही सीखते हैं। समुद्र तट पर पला-बढ़ा अनाथ यह सब कैसे सीखेगा?'
कुछ देर बाद, तटरक्षक बल के अधिकारी ने चेम्बांकुंजू से कहा, 'अपनी बेटी के पति के रूप में ऐसे आवारा को चुनने के लिए तुम ही दोषी हो।'
चेम्बनकुंजू उससे सहमत नहीं था। लेकिन मन ही मन उसे अपने फैसले पर शक होने लगा था। चेम्बनकुंजू को यह एहसास नहीं था कि पलानी इतना निर्दयी हो सकता है। चेम्बनकुंजू को भी लगा कि तट स्वामी का अनुमान सही था – पलानी इतना क्रूर इसलिए था क्योंकि उसका पालन-पोषण परिवार में नहीं हुआ था। भविष्य में वह कैसा होगा? शायद शादी के दिन ही चेम्बनकुंजू को अपने चुनाव पर पछतावा होने लगा था। पलानी के दिल में प्यार नाम की कोई चीज नहीं थी। यह बात अभी से ही स्पष्ट हो गई थी।
अच्युतन, जो स्थिति को समझ चुका था, ने एक उपाय सोचा, 'पलानी, तुम्हें क्यों शाप और बदनामी झेलनी पड़ रही है? लड़की को तो तुम्हारे साथ जाना ही है। उससे पूछो कि वह क्या सोचती है। उसे फैसला करने दो!'
चेम्बनकुंजू को राहत मिली। पलानी को भी शायद ऐसा ही महसूस हुआ होगा। शोर मास्टर ने भी इस सुझाव का समर्थन किया। उन्होंने कहा, 'बिल्कुल सही। उसे फैसला करने दो। उसे बुलाओ...'
चेम्बनकुंजु ने करुथम्मा को पुकारा। वह अपनी माँ के पास बैठी थी। आँसुओं से भीगा चेहरा लिए वह द्वार पर आई। स्वयं तट स्वामी ने उससे पूछा, “बेटी, क्या तुम अपनी माँ को इस हालत में छोड़कर जाना चाहती हो? या यहीं रुकोगी? यहाँ तो तुम्हारे पिता के लिए चूल्हा जलाने वाला भी कोई नहीं है।”
वह रुका और फिर बोला, 'शादी के बाद दूल्हे के साथ जाना रिवाज है। लेकिन आपको फैसला करना होगा...'
करुथम्मा क्या कहती? उसमें फैसला करने की हिम्मत ही नहीं थी। वह इस धरती को अलविदा कह चुकी थी। भविष्य के बारे में सोचकर वह घबरा जाती थी। वह इस जगह से भागने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। वह दिन आ ही गया था। लेकिन

उसकी माँ बीमार पड़ गई थी और उसके पिता की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं था। इन सब कारणों से उसे यहीं रुकना पड़ा, लेकिन... वह फूट-फूट कर रोने लगी। वह कुछ बोल नहीं पा रही थी।
सभी उसकी प्रतिक्रिया सुनने के लिए प्रतीक्षारत थे। तट रक्षक ने कहा, 'बेचारी बच्ची! वह क्या कह सकती है? लेकिन उसे बोलना ही होगा। अब सब कुछ उसी पर निर्भर है!'
वह अपनी मां के पास गई, अपना चेहरा मां के चेहरे पर रखकर रोने लगी। चक्की भी रोई होगी। उसने अपनी मां से कुछ बुदबुदाया।
‘बेटी, तुमने क्या पूछा?’
उस समय वह कुछ बोल नहीं पाई। थोड़ी देर बाद, वह सिसकते हुए बोली, 'मैं... मैं... नहीं जा रही, अम्माची!'
चक्की अचानक बोल पड़ी, 'मेरी बेटी, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए। मेरी बेटी को जाना ही होगा। अगर तुम नहीं गई तो...'
महिला अपनी बात पूरी नहीं कर पाई। चक्की जानती थी कि अगर करुथम्मा नहीं गई तो क्या होगा। करुथम्मा को भी यही डर था। माँ को वह भयानक दृश्य अपनी आँखों के सामने दिखाई दे रहा था।
चक्की को इस हालत में रहने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। आस-पास कोई भी उसे पानी की एक बूँद देने को नहीं था। लेकिन वह अपनी बेटी को बर्बाद नहीं होने दे सकती थी। चक्की भी चाहती थी कि उसकी बेटी जल्द से जल्द यहाँ से चली जाए। उसे जाना ही होगा। उसे जाना ही होगा। 'मेरी बेटी, जाओ और उन्हें बता दो कि तुम जाना चाहती हो।'
चक्की ने करुथम्मा को उसके शरीर से अलग किया। उसने ज़िद की, फिर दांत भींचकर उसे फटकारा, 'तुम उस मुस्लिम लड़के को नहीं छोड़ सकती, है ना?' करुथम्मा ने अपने भीतर से साहस जुटाया। वह दरवाजे पर गई और बोली, 'मैं जाना चाहती हूँ।'
मां और बेटी एक बार फिर गले मिल गईं। उनके दिल टूट रहे थे।
करुथम्मा चेम्बनकुंजु के चरणों में गिर पड़ी और उन्हें पकड़ लिया। चेम्बनकुंजु ने उसे झटक कर दूर कर दिया और मुँह फेर लिया। वह काफी देर तक वहीं पड़ी रही और फिर उठी। उसकी माँ ने उसे आशीर्वाद दिया। 'मेरी बात मानो,' उसकी माँ ने सलाह दी।

पलानी चेम्बनकुंजू से विदा लेने गया। लेकिन चेम्बनकुंजू ने कुछ नहीं कहा। यह शोकग्रस्त चेम्बनकुंजू नहीं था। वह अब रो नहीं रहा था। उसका रूप बदल चुका था। उसका चेहरा लाल और सूजा हुआ था। वह क्रोध के देवता में परिवर्तित हो गया था।
पुरुषों का समूह आगे-आगे चल रहा था। वह उनके पीछे-पीछे चल रही थी। चक्की अपनी कोहनी के बल उठकर अपनी बेटी को जाते हुए देखने लगी। अचानक वह गिर पड़ी। नल्लापेन्नू ने आँखों में आँसू लिए चक्की का सिर थाम लिया।
दांत पीसते हुए चेम्बांकुंजू दहाड़ा, 'वह मेरी बेटी नहीं है!'
पंचमी ने रोते हुए कहा, 'चेची!'
नल्लापेन्नु और कलिकुन्जू चक्की के साथ रहे।
करुथम्मा अपने भविष्य की ओर बढ़ रही थी। कौन जानता था कि वह भविष्य कैसा होगा? क्या वह सचमुच खतरे और प्रलोभन से बच निकली थी?
किसी ने उसके लिए प्रार्थना नहीं की। उसने भी नहीं की। शायद परीकुट्टी ने उसके लिए प्रार्थना की हो।
और इस प्रकार करुथम्मा ने अपने परिचित तटों को छोड़ दिया।
क्या वह गीत उस तट पर फिर से गूंजेगा? कौन जानता है? लेकिन उसे सुनने वाला कोई नहीं होगा।

□□□ □□

ग्यारह

यहां का समुद्र भी अजीब लग रहा था। पानी का रंग ही अलग था। यह शांत समुद्र नहीं था। लहरों के नीचे एक उग्र धारा बह रही थी जो समुद्र को मथकर भंवर बना देती थी और खतरनाक जलप्रपात पैदा कर देती थी। रेत का रंग भी अलग था।
नई दुल्हन को देखने कई लोग आए। करुथम्मा को समझ नहीं आ रहा था कि वह अपना परिचय कैसे दे या उनके साथ कैसा व्यवहार करे। सब लोग उसे गौर से देख रहे थे। करुथम्मा सहम गई।
लेकिन वह जानती थी कि उसे उन पर अच्छा प्रभाव छोड़ना होगा। वह ऐसा कैसे कर सकती थी?
भोर होते ही पलानी समुद्र में चली गई। यह सार्डिन मछली का मौसम था। करुथम्मा एक घर की मालकिन थी। उसे बहुत सारे काम करने थे।
उस घर में बस एक बर्तन, एक खुला हुआ पैन और एक करछी थी। बस इतना ही! उसे घर बनाने के लिए कितनी सारी चीज़ें ज़रूरी थीं। कुछ चावल, मिर्च और नमक खरीदकर एक टोकरी में रख दिए गए थे। पलानी ने शादी से पहले कभी अपने घर में नहीं रहा था। और उसके जीवन में कोई ऐसा नहीं था जो उसे बता सके कि घर में क्या-क्या ज़रूरी होता है। उसे ये सब खुद ही करना होगा।
करुथम्मा ने चावल उबाले और पानी छान लिया। उन्होंने प्याज डालकर थीयल बनाई। इसके लिए उन्होंने पड़ोस में रहने वाली महिला से बर्तन उधार लिए। उन्होंने वहां जाकर उनकी चक्की का भी इस्तेमाल किया।
उत्तरी घर में रहने वाली बूढ़ी औरत ने कहा, 'हमने एक युवक को आपके हवाले किया है। अब आप इसके लिए जिम्मेदार हैं!'
नीरकुन्नथ तट पर उसने जो कुछ सुना था, वही सब यहाँ भी दोहराया गया। हर जगह हर नई दुल्हन को यही सुनने को मिलता था। या फिर, क्या ये बातें सिर्फ़ उसे ही बताई जा रही थीं? उसे लगा कि सब उसे शक की नज़रों से देख रहे हैं। क्या उन्हें उसका राज़ पता चल गया था?
वहाँ मौजूद औरतें इकट्ठा होकर नई दुल्हन के बारे में अटकलें लगाने लगीं। उनके पास इसके लिए पर्याप्त सामग्री थी। वह एक ऐसे व्यक्ति की बेटी थी जो जाल से मछली पकड़ता था और जिसके पास अपनी दो नावें थीं। भला ऐसा व्यक्ति अपनी बेटी की शादी किसी ऐसे आदमी से क्यों करवाएगा जिसका उससे कोई रिश्तेदार न हो?

एक महिला ने कहा, 'शायद पिता के पास अपनी नावें और जाल नहीं हैं!'
कोचाक्की को ऐसा नहीं लगा। उसके बच्चों के पिता बड़ी मछली पकड़ने के दौरान नीरकुन्नथ गए थे। वह उनके बारे में सब कुछ जानते थे। 'उनके पास नावें और जाल हैं; पैसा है, बहुत सारा पैसा!'
वावाकुंजु ने पूछा, 'तो फिर उन्होंने उसे इस आदमी को क्यों दे दिया?' कोचाक्की ने पूछा, 'उसे क्या हुआ है?'
कोठा को शक हुआ। 'मुझे लगता है कि लड़की के साथ कुछ गड़बड़ है!'
ऐसा लग रहा था मानो कोठा को कुछ पता हो। सब उत्सुक थे। उनका क्या मतलब था? सबने पूछा।
कोठा ने कहा, 'वह लड़की जरूर एक वेश्या होगी... उन्होंने उसे उस किनारे से जरूर हटा दिया होगा!'
बूढ़ी औरत ने अपना हाथ अपनी छाती पर रखा और डर से कांप उठी। 'तो क्या वह हमारे तट को बर्बाद करने जा रही है?'
सभी लोग कोठा से सवाल पूछने लगे। लेकिन उसने इससे ज्यादा कुछ नहीं बताया। करुथम्मा ने चावल और करी पका ली, उसका काम पूरा हो गया। फिर भी, औरतें उसके आसपास मंडराती रहीं। उसे ऐसा लगा जैसे सब उसे किसी अजनबी प्राणी की तरह समझ रहे हों।
उन सभी ने चक्की की दयनीय हालत के बारे में सुना था। क्या कोई बेटी अपनी माँ की इतनी बीमारी में उसे छोड़कर चली जाएगी? क्या एक माँ पति से ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती? इस बात ने उन्हें करुथम्मा के बारे में और भी ज़्यादा सोचने पर मजबूर कर दिया।
दोपहर तक, करुथम्मा चर्चा का विषय बन चुकी थी। हर घर में उसी की बात हो रही थी: उसे एक चरित्रहीन औरत कहा जा रहा था। एक नीच प्राणी जिससे किसी भी कीमत पर छुटकारा पाना था। ऐसे में... क्या यह एक समस्या नहीं थी?
करुथम्मा अपनी माँ के बारे में सोचने लगी। वह सोच रही थी कि उसकी माँ कैसी होगी। क्या उसने अपनी माँ को उस हालत में छोड़कर सही किया था? उसके पिता ने उसे हमेशा के लिए त्याग दिया था। उसके कानों में उसके पिता के शब्द गूँज रहे थे: 'वह मेरी बेटी नहीं है।'
करुथम्मा चेम्बंकुंजू को अच्छी तरह जानती थी। वह उसे फिर कभी अपनी बेटी के रूप में स्वीकार नहीं करेगा। करुथम्मा को लगता था कि उसका यह कदम महज़ बहादुरी का प्रदर्शन था, और कुछ नहीं। क्या कोई बेटी उसके जैसा व्यवहार कर

सकती है? नहीं, यह संभव नहीं था। उसके घर पर सब उसे कोस रहे होंगे, उसकी निंदा कर रहे होंगे। लेकिन उसकी माँ ने उसे आशीर्वाद दिया था। उसकी सहमति से ही उसने घर छोड़ा था।
उसकी माँ को कितना कुछ सहना पड़ता था। माँ होने का यही मतलब होता है। उसके पिता उसकी माँ को इस बात के लिए दोषी ठहराते थे कि उनके लिए एक कप पानी उबालने के लिए भी कोई नहीं होता था। ये सब उसकी माँ सहती थी। और वह उसके लिए और भी बहुत कुछ सहन करती थी। लेकिन उसके पिता उसे कभी माफ नहीं करते थे।
करुथम्मा अपने भविष्य के बारे में सोचने लगी। उसके माता-पिता थे। उसके पिता मेहनती थे और अपनी मेहनत से धन कमाते थे। उसके जीवन में एक निश्चित सुरक्षा थी। उसकी इच्छाएँ और ज़रूरतें, भले ही सीमित थीं, पूरी होती थीं। उसने कभी अभाव का सामना नहीं किया था। और वह उस सारी सुरक्षा को ठुकराकर यहाँ आई थी। एक नए जीवन में; एक नई दुनिया में। यह कैसा होगा?
क्या उसे खाना मिलेगा? क्या उसके पास पहनने के लिए पर्याप्त कपड़े होंगे? उसने कभी भूख का सामना नहीं किया था। आगे क्या होगा, कौन जाने? कौन यकीन कर सकता है? क्या वह खुलकर हंस पाएगी? क्या वह ठीक से सांस ले पाएगी? सब कुछ अनिश्चित और चिंताजनक था...
उसे पहले बहुत प्यार मिलता था।
जिस आदमी के साथ वह आई थी: क्या वह उससे प्यार करेगा? यह वाकई एक बड़ा सवाल था। वह उसके बारे में कुछ नहीं जानती थी।
अपनी माँ की दयनीय हालत के बावजूद, वह लगभग अमानवीय रूप से जाने पर अड़ा हुआ था। आखिर वह किस तरह का आदमी होगा? अगर उसने अपनी दुल्हन को साथ ले जाने की ज़िद न की होती, तो यह सारी परेशानी न होती। दो दिन ही काफी होते। तो वह उसका प्यार और स्नेह कैसे हासिल करती? और उन भावनाओं को कैसे कायम रखती? यह पूरी तरह संभव था कि वह फिर से उतना ही निर्दयी हो जाए। वह इस प्यार को बिना किसी बाधा के कैसे बनाए रख सकती थी?
उसके सिवा उसका कोई नहीं था। वही उसका सब कुछ था। उसकी पसंद-नापसंद ही उसके जीवन का आधार थी। और वह उसकी पसंद-नापसंद के बारे में कुछ नहीं जानती थी। करुथम्मा किसी भी कठिनाई को सहन कर सकती थी। वह बस उन अनगिनत मछुआरिनों में से एक बनना चाहती थी जो हर तरह की कठिनाइयों को सहते हुए अपना जीवन व्यतीत करती थीं। वह अपने जीवन में कुछ भी महत्वपूर्ण घटित नहीं चाहती थी।

उसने पहले परोसे गए चावल खत्म कर दिए थे। उसने उसे और चावल परोसे। हालाँकि पलानी ने कहा कि उसका पेट भर गया है, फिर भी उसने उसे एक और करछी चावल परोसे। यही तरीका था। वह यह जानती थी।
उन्होंने कहा, 'यहां चावल बहुत ज्यादा है।'
‘तो क्या हुआ? जो आप नहीं चाहते उसे आप पीछे छोड़ सकते हैं।’
थोड़ी देर बाद, उसने हिम्मत जुटाकर पूछा, 'थीयाल अच्छा नहीं था, है ना? मुझे नहीं लगता कि आप खाने से संतुष्ट थे।'
‘थीयाल बहुत स्वादिष्ट था। आपने देखा ही नहीं कि मैंने कितना चावल खाया?’ ‘क्या यह बहुत ज्यादा है? हे भगवान…’
मैं आमतौर पर इतना नहीं खाता।
नई पत्नी की शरमाती हुई मुस्कान। करुथम्मा ने कहा, 'आपको और अधिक खाना चाहिए। नहीं तो मुझे खुद आपको खिलाना पड़ेगा।'
पलानी भी मुस्कुराई। उसकी मुस्कान उत्सुकता भरी थी। उसे अपने गहरे ज़ख्मों से भरे दिल में एक तरह की तसल्ली महसूस हुई। वह एक सज्जन व्यक्ति था, जो उसकी बात सुनने को तैयार था। सबसे बढ़कर, उसकी निगाहों में एक खास चमक थी। क्या शुरुआत के लिए इतना ही काफी नहीं था?
उसने उसी थाली में थोड़े चावल लिए और खाने लगी। उसने अपने हाथ धोए। पलानी ने बीड़ी जलाई, रसोई में गया और उसके पास जाकर बैठ गया।
मुझे आपकी सेवा करने दीजिए।
वह कुछ नहीं बोली। उसने महसूस किया कि प्रेम की किरणें उसके हृदय की कली को सहला रही हैं और वह खिल रहा है।
‘इसे देखो। तुमने तो मुश्किल से कुछ खाया है।’
'मेरा पेट भरा है।'
उसने बर्तन में झाँका। 'क्या इसमें चावल बचे ही नहीं?'
‘पर्याप्त है। लेकिन मेरा पेट भरा हुआ है।’
‘यह काफी नहीं है।’ पलानी ने करुथम्मा की थाली में एक चम्मच चावल डाला। बस करो। बस करो। करुथम्मा ने इशारा किया। लेकिन उसने परोसा हुआ खाना खा लिया। करुथम्मा एक विवाहित महिला के रूप में अपना जीवन शुरू कर रही थी। प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि एक गृहिणी के रूप में।

और पलानी अब घर का मालिक भी बन चुका था। दोपहर के भोजन के बाद, जब उसने बर्तन धो लिए, तो उसने पूछा, 'आप मुझसे क्या-क्या चीजें खरीदना चाहती हैं? बताइए!'
क्या आपके पास सब कुछ खरीदने के लिए पैसे हैं?
उसने अपनी कमर पर बंधी थैली खोली और पैसे गिने। उसके पास सिर्फ चार रुपये थे। उसने उसे उस दिन कमाए और खर्च किए गए पैसों का हिसाब दिया। कमाई बहुत कम थी। उसने शादी के लिए उधार लिए गए पैसों का काफी हिस्सा चुका दिया था। बस यही पैसे बचे थे।
करुथम्मा ने पूछा, 'तो तुम्हारा हिस्सा कितना है?'
'पचास!'
हमारे तट पर तापमान साठ डिग्री है।
करुथम्मा ने आगे कहा, 'आपको अपने हिस्से की मांग इस आधार पर करनी चाहिए कि पड़ोसी देशों में स्थिति कैसी है...'
पलानी ने लापरवाही से जवाब दिया, 'यहाँ ऐसा ही होता है!'
उसने उसे बताया कि कैसे चेम्बनकुंजू ने तट पर पुरुषों को इकट्ठा किया और उनका हिस्सा बढ़ाकर साठ कर दिया।
पलानी ने कहा, 'यहां ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।'
उसने उससे फिर से उनके घर के लिए आवश्यक चीजों के बारे में पूछा। करुथम्मा ने पूछा, 'क्या आप इसे अभी खरीदने जा रहे हैं?'
'हाँ।'
करुथम्मा ने कहा, “थोड़ा आराम क्यों नहीं कर लेते? अभी बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। तुम अभी-अभी समुद्र से लौटे हो। सब लोग मुझ पर आरोप लगाएंगे कि मैंने तुम्हें बर्तन खरीदने के लिए बाहर भेजा था। थोड़ा आराम करो और फिर जाओ!”
पलानी ने मानो उसकी सलाह मान ली हो। उसने एक चटाई बिछाई और उस पर लेट गया। फिर उसने पुकारा, 'करुथम्मा!'
शायद वह भी उस कॉल का इंतजार कर रही थी। वह उसके पास गई। पलानी ने कहा, 'इधर आओ।'
वह शर्माते हुए उसके पास गई। शायद उसे अब सुरक्षित महसूस होने लगा था। वह एक अच्छी पत्नी बनने की पूरी कोशिश करेगी। उसने अपनी मजबूत बाहों से उसे

कसकर गले लगा लिया। उसकी पलकें झुक गईं, सांस गले में अटक गई, और वह लगभग बेहोश होकर उसके कंधे पर गिर पड़ी।
उसने कभी किसी पुरुष से प्रेम किया था। और कभी उसे भी किसी पुरुष ने प्रेम किया था। लेकिन उसे कभी किसी पुरुष ने स्पर्श नहीं किया था। शायद वह इसकी चाहत रखती थी। लेकिन करुथम्मा नियमों को नहीं तोड़ सकती थी। अब वह विवाहित थी। अपने अधिकार के तहत, एक पुरुष ने उसे अपने शरीर से लगा लिया। उसने आज्ञाकारी भाव से समर्पण कर दिया। भले ही उसने किसी पुरुष से प्रेम किया हो, लेकिन उस पुरुष का स्पर्श, उसके प्रति समर्पण, उस बेदम आनंद का अनुभव, सब कुछ उसे किसी और पुरुष से मिला था। अब वह उसकी थी। उसका शरीर केवल उसी के लिए था। उसने अब तक उसे उसी के लिए पवित्र रखा था। और वह उसे उसी के लिए पवित्र रखेगी।
उसे पता नहीं था कि वह कितनी देर तक उस सुस्त और लाचार अवस्था में पड़ी रही। उसकी नसों में जवानी का खून तेज़ी से दौड़ रहा था। भूख बेकाबू थी; मानो सारे बंधन टूट गए हों और एक बेरोक-टोक बाढ़ सी आ गई हो।
जब करुथम्मा को अपने आसपास की दुनिया का होश आया, तो वह शरमा गई। यह सिर्फ़ शर्म नहीं थी, बल्कि एक डर भी था। एक ऐसा डर जो उस पर हावी था। उसे डर था कि उसने ज़रूरत से ज़्यादा ही बता दिया है। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। यह एक तरह का सम्मोहन था। एक बेलगाम लालच। कोई लड़की ऐसी कैसे हो सकती है? उसका पति उसके बारे में क्या सोचेगा?
करुथम्मा को डर था कि सब कुछ गलत हो गया है। उसके सारे राज़ खुल गए थे। वह जानता था। पलानी एक अजनबी था। यह सच था कि उसने उसे अपना बना लिया था। लेकिन वह अपने पति जैसे अजनबी के साथ इतनी बेपरवाही से कैसे संबंध बना सकती थी? वह उसके बारे में क्या सोचता होगा? वह इतनी अनियंत्रित कैसे हो गई? वह बहुत ही शर्मीली महिला थी। उसे हर पल चिंता सताती थी कि जल्द ही कोई ऐसा सवाल पूछा जाएगा जो उसकी जिंदगी तबाह कर देगा। सवाल होगा, 'तो क्या तुमने कई लोगों के साथ संबंध बनाए हैं?'
वह सचमुच जवाब दे सकती थी, 'नहीं।' लेकिन क्या उसकी बात पर विश्वास किया जाएगा?
वह उस पर भरोसा कैसे कर सकती थी? अगर उसने भरोसा नहीं किया, तो यह उसके जीवन के लिए एक बहुत बड़ा आघात होगा।

सवाल पूछे जाने से पहले ही वह माफी मांगना चाहती थी। लेकिन वह क्या कहती? यही कहती कि उसे नहीं पता।
क्या सभी लड़कियां ऐसी ही होती हैं? अगर वह अजनबी भी हो, तो क्या तुम अपने पति के साथ एक बेपरवाह जंगली प्राणी बन जाओगी? उसे नहीं पता था।
वह अपने भीतर उमड़ रही इस भूख के बारे में अनिश्चित रूप से सोच रही थी। वह यह स्वीकार नहीं कर पा रही थी कि वह एक साधारण लड़की है। बहुत समय पहले, उसके तट पर कुछ ऐसी ही असाधारण महिलाएं हुआ करती थीं।
करुथम्मा में एक आवाज़ आई: तुमने एक बार किसी पुरुष से प्रेम किया था। यानी, जब तुम उस पुरुष के बारे में सोचती थी, तो तुम्हारी आत्मा में एक हलचल उठती थी, एक असीम आनंद होता था। जिसका अर्थ है कि तुम्हारे मन में उसके लिए वासना जागृत होती थी। और इसलिए जब तुम्हें एक पुरुष मिला, तो तुम इस अनियंत्रित स्त्री बन गईं। तुम पागल हो गईं। दूसरी स्त्रियाँ ऐसी नहीं होतीं।
क्या यही वह प्रेम था जिसने उसे इतना प्रभावित किया था?
जिस सवाल से करुथम्मा को डर था, वह पूछा ही नहीं गया।
पलानी बाहर जा रहा था। 'मुझे क्या खरीदना चाहिए?' पलानी ने पूछा। उन्होंने कहा, 'आपके पास जो पैसे हैं, उनसे आपको जो कुछ भी खरीदना हो, खरीद लेना चाहिए।' फिर उन्होंने विस्तार से बताया कि किन-किन चीजों की तुरंत आवश्यकता है। वह सूची भी काफी लंबी थी।
जब करुथम्मा घर पर अकेली थी, तो उसके विचार परीकुट्टी की ओर लौट गए। वह कैसा होगा? वह ज़रूर बहुत दुखी होगा। उन्होंने उसका पैसा भी वापस नहीं किया था। उसकी माँ बीमार थी। शायद वे कभी पैसा वापस न कर पाएँ। इस मामले में भी वह बर्बाद हो चुका था।
वह परीकुट्टी के ख्यालों को मिटा नहीं पा रही थी। क्या यह पाप नहीं था? एक पत्नी होकर वह किसी दूसरे पुरुष के बारे में कैसे सोच सकती थी? फिर भी, उसके भीतर कहीं न कहीं यह आवाज़ आ रही थी कि वह परीकुट्टी को कभी नहीं भूल पाएगी... कभी नहीं। यह एक ऐसा बुरा सपना था जो उसे जीवन भर सताता रहेगा! शायद उस तट पर अब भी उसका गीत गूंज रहा था। करुथम्मा बेचैन थी। उसे कब और कैसे शांति मिलेगी? शायद उसकी किस्मत में कभी शांति न मिलना लिखा था। पलानी बर्तन, कड़ाही और करछी लेकर घर आया। रास्ते में उसके दोस्तों ने उसे चिढ़ाया था। घर पहुँचते ही करुथम्मा ने उसमें कमी निकाली। बर्तन ठीक नहीं

था। उसमें बारीक दरारें थीं। और इस तरह का बर्तन तो चाहिए ही नहीं था। पत्नी अपनी कुशलता का प्रदर्शन कर रही थी। अपनी श्रेष्ठ गृहणी होने की क्षमता का। और पलानी ने इसे स्वीकार किया। उसने कहा, 'मुझे कैसे पता चलेगा कि कौन से बर्तन खरीदने हैं?'
वह हंस पड़ी। यह सब मजाक में था।
उस रात उन्हें बिल्कुल नींद नहीं आई। उन्हें एक-दूसरे से बहुत कुछ कहना था! इतनी बातें हुईं कि वे रुक ही नहीं पा रहे थे। वे जीवन से अपनी अपेक्षाओं के बारे में बात कर रहे थे। और इसी दौरान उसने पूछा, 'जब मेरी माँ बीमार पड़ी थीं, तो आपने मुझे यहाँ लाने पर इतना ज़ोर क्यों दिया?' करुथम्मा को उनसे यह सवाल पूछने में सहजता महसूस हुई। यह एक ऐसा सवाल था जो उन्हें परेशान कर रहा था। फिर भी, पलानी ने जवाब दिया, 'क्या शादी के बाद किसी पुरुष का अपनी पत्नी को उसके घर में छोड़ देना उचित है? यह ठीक नहीं है!'
उसे एहसास हुआ कि उसे घर पर अकेला छोड़ना उसके लिए अनुचित था। तब पलानी ने समझाया। उसके साथ गए लोग उसके बिना उसके चले जाने से खुश नहीं थे। किसी को भी यह पसंद नहीं था। इसलिए उसे यह बात कहनी पड़ी।
थोड़ी शर्मिंदगी के साथ पलानी ने पूछा, 'क्या आप मेरे साथ आने को तैयार हैं?'
उसने तुरंत जवाब दिया, 'हां, मैं थी।'
उस 'हां' के पीछे का कारण गुप्त ही रहा।
फिर, करुथम्मा को एक महत्वपूर्ण बात याद आई जिस पर उसे चर्चा करनी थी। अपने पिता के बारे में। 'मेरे पिता अब हमारे साथ नहीं रहेंगे। यही उनका स्वभाव है! वे मुझे अपनी बेटी के रूप में नहीं पहचानेंगे।'
शांत भाव से उसने कहा, 'ठीक है। अगर वह सोचता है कि उसकी कोई बेटी नहीं है, तो तुम्हें भी यही सोचना चाहिए कि तुम्हारा कोई पिता नहीं है।'
उसे उससे इससे बड़ी निष्ठा की शपथ नहीं मिल सकती थी। उसका मतलब था कि भले ही उसके पिता उसके साथ न हों, वह हमेशा उसके साथ रहेगा।
पलानी ने आगे कहा, 'तुम्हारा पिता एक लालची और सनकी आदमी है! और तुम्हारा तटरक्षक भी वैसा ही है। उसने हमारा अपमान किया!'
पलानी का आत्मविश्वास बढ़ा और उसे अपनी बात कहने का जरिया मिल गया। 'भले ही मेरे पास कोई न हो या कुछ भी न हो, मैं भी समुद्र का पुत्र हूँ। यही सब मेरा

धन है। मुझमें किस बात की कमी है? मैं बाकी मछुआरों जैसा ही हूँ। लेकिन मुझमें कुछ और भी है। मैं अपना काम जानता हूँ। मैं किसी भी लहर में नाव चला सकता हूँ। और किसी भी भंवर के खिंचाव से बच सकता हूँ। इसलिए मुझे इस तरह अपमानित करने की कोई ज़रूरत नहीं थी!'
करुथम्मा कुछ नहीं बोली। उसे पछतावा होने लगा कि उसने यह बात क्यों उठाई। पलानी गुस्से से भर रहा था। उसे उसके पिता की ज़रा भी परवाह नहीं थी। वह न सिर्फ़ उसके तटरक्षक का, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर अपने तटरक्षक की भी अवज्ञा कर सकता था।
उन्होंने पूछा, 'मैं खुद को क्यों नीचा दिखाऊं? इसकी कोई जरूरत नहीं है।' लेकिन करुथम्मा को अभी भी अपनी बात कहनी थी। 'मेरी माँ एक डरपोक आत्मा है!' उसने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। लेकिन उसके विचार दूसरी दिशा में मुड़ गए। 'मैं तुम्हें एक बात बता दूं। जब तक वह आदमी, तुम्हारा पिता, पहले यहां नहीं आ जाता, मैं तुम्हारे घर नहीं जाऊंगा।'
अपने पिता की तरह, उसके पति ने भी एक दृढ़ निर्णय ले लिया था। कोई भी चीज़ उसे हिला नहीं सकती थी।
करुथम्मा ने अपने विचार व्यक्त किए: अब उसके पास न तो पिता है और न ही माता। उसके पास केवल उसका पति है। उसे उससे प्यार करना ही चाहिए। वह एक जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ पत्नी बनेगी।
उसने सुना।
उसके पास उसके सिवा कोई नहीं था। वह सब कुछ सह लेती और सबकी बात मानती।
उसकी एकमात्र इच्छा थी प्यार पाना।
उसने उससे यह अपेक्षा नहीं की कि वह भी उससे प्रेम करे। शायद उसे उस प्रेम की आवश्यकता ही नहीं थी। संभवतः उसे भी ऐसा करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई।
यह एक चूक थी। एक ओर तो एक व्यक्ति प्रेम पाना चाहता था, लेकिन दूसरे ने इसकी अपेक्षा नहीं की। उसने एक अच्छी पत्नी बनने का वादा किया था, जैसा कि उससे उम्मीद की जाती थी। लेकिन अगर पलानी ने प्रेम की अपेक्षा नहीं भी की थी, तो क्या उसे यह बात कहनी नहीं चाहिए थी? पर उसने नहीं कही। क्या इसका मतलब यह था कि वह उससे प्रेम नहीं करती? अगर पलानी ने उससे प्रेम की अपेक्षा की होती, तो शायद वह बिना शर्त उसे अपना प्रेम दे देती।

और इस तरह पहली रात मामूली मतभेदों के साथ गुज़री, कोई बड़ा विवाद नहीं हुआ। लेकिन वे एक आम सहमति पर पहुँच गए थे। साथ मिलकर घर बसाने पर।
हंसते हुए करुथम्मा ने कहा, 'मेरे कोई रिश्तेदार या दोस्त नहीं हैं। मेरे पास न तो घर है और न ही परिवार।'
भोर होते ही तट पुकारों और चीखों से गूंज उठा। पलानी के जाने का समय आ गया था।
करुथम्मा ने दैनिक जीवन के कुछ नियम सीख लिए थे। शादी से पहले ही पड़ोस की महिलाओं ने उन्हें ये सब सिखाया था। उन्हीं में से एक सबक उनके मन में आया। जब वह बाहर निकला तो उसने घबराकर पूछा, 'क्या आप सीधे नाव पर जा रहे हैं?' उसे उसकी बात समझ नहीं आई।
'ओह क्यों?'
करुथम्मा को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। उसने कहा, 'लोगों को इस तरह अपने घर नहीं छोड़ने चाहिए...'
तो फिर उनके पास जाने का और क्या रास्ता है?
समुद्र में जाने वाले लोगों का स्वच्छ और पवित्र होना आवश्यक है।
वह वहीं खड़ा रह गया, कुछ समझ नहीं पा रहा था। उसने पूछा, 'आप क्या कहना चाह रहे हैं?'
शर्मिंदा होकर उसने कहा, 'जाने से पहले नहा क्यों नहीं लेते?'
उसने उसे नहाने में मदद की और फिर खुद भी नहाया।
जब पलानी नावों के पास पहुंचा, तो तट के अधिकारी ने पूछा, 'क्या तुमने स्नान किया, लड़के?'

बारह

करुथम्मा को घर पर बहुत कुछ सिखाया गया था। वह जानती थी कि घर में समृद्धि कैसे लाई जाती है। उसने अपने माता-पिता को इसके लिए कड़ी मेहनत करते देखा था। वास्तव में, उसके पिता एक आदर्श उदाहरण थे। उसने देखा था कि कैसे उन्होंने बड़े अनुशासन और फिजूलखर्ची पर लगाम लगाकर नाव और जाल खरीदने के लिए पैसे बचाए थे।
जब करुथम्मा अकेली होती थी, तो वह अपने घर के बारे में सोचती थी। उसके पास मार्गदर्शन के लिए एक आदर्श व्यक्ति था।
उसने पलानी को नहलाकर और अच्छी तरह साफ करके काम पर भेज दिया था। फिर भी, नावों के लौटने तक वह चिंता से घिरी रही। उस दिन उसने एक करी से संतुष्ट होकर दो करी बनाईं। उसे लगा कि वह उससे पहले वाले दिन से ज़्यादा करीब है। और इसलिए वह इंतज़ार करती रही।
उस दिन सार्डिन मछलियों का बहुत बड़ा जत्था पकड़ा गया था। उन्होंने हाल के दिनों में ऐसा कुछ नहीं देखा था। उसे तीस रुपये मिले। जालों को झाड़कर साफ करने के बाद जब वे बर्तन धो रहे थे, तभी अयप्पन ने समूह से पूछा, 'क्या हम हरिपाद में खाना खाने चलें?'
उनमें से किसी ने भी विरोध नहीं किया। उन सबके पास पर्याप्त धन था। समुद्र माता ने उन्हें आशीर्वाद दिया था। तो कभी-कभार मौज-मस्ती करने में क्या बुराई थी! केवल पलानी ने ही एक शब्द भी नहीं कहा।
वेलुथाकुंजु ने पूछा, 'अरे पलानी, तुम इतने चुप क्यों हो?'
आंडीकुंजु ने चिढ़ाते हुए कहा, 'तुम क्या कह रहे हो? जब उसके लिए दुल्हन चावल और करी लेकर इंतजार कर रही हो, तो वह उसके पास बैठकर वहीं खाना पसंद करेगा।'
‘इसमें क्या गलत है?’ कोचायप्पन ने पूछा। युवाओं का ऐसा महसूस करना स्वाभाविक था। उस समूह के सभी लोग विवाहित थे और उनके बच्चे थे।
वेलायुधन ने वैवाहिक जीवन की स्थिति के बारे में सामान्यीकरण करते हुए कहा, 'पहले चार दिन तो सब कुछ बहुत अच्छा होता है! फिर आपको घर में खाने को कुछ नहीं मिलेगा और अगर मिलेगा भी तो वह बेस्वाद होगा!'
जब सब लोग नहा-धो चुके थे, तब वेलुथाकुंजु ने पूछा, 'पलानी, क्या तुम आ रही हो?'

पलानी ने कहा, 'मैं हूँ!'
लेकिन उसने यह बात बिना वास्तव में जाने की इच्छा के कही।
समूह सड़क पर निकला और हरिपाद जाने वाली बस में सवार हो गया।
करुथम्मा ने काफी देर तक इंतजार किया। जब पलानी नहीं आया, तो वह उसे ढूंढने के लिए समुद्र तट पर गई। सभी नावें किनारे पर खींच ली गई थीं। समुद्र में एक भी नाव नहीं थी। समुद्र तट पर भी कोई नहीं था।
उसी क्षण, आंडी की मछुआरा पारू वहाँ आ गई। उसने हल्की-फुल्की बातें शुरू कीं, 'क्या बात है, नई दुल्हन? तुम यहाँ समुद्र को घूरती क्यों खड़ी हो?' करुथम्मा शर्माते हुए बोली, 'कुछ नहीं। मैं बस समुद्र को देख रही थी।' पारू समझ गई। ‘तुम अपने मछुआरे को ढूंढ रही हो, है ना? वे सब एक साथ हरिपाद चले गए हैं। उनके हाथों में पैसे हैं, बच्ची!’
करुथम्मा के तट पर भी लगभग यही स्थिति होती। वहाँ से भी सभी लोग अलापुझा जाते। बस यही फर्क था। लेकिन करुथम्मा ने पलानी के उस दिन जाने की उम्मीद नहीं की थी।
करुथम्मा और पारू ने कुछ देर बातें कीं। करुथम्मा परेशान थी। उसे लग रहा था कि यह सब बदलना चाहिए। अगर उनके पास उतना पैसा होता जितना पारू हरिपाद पर खर्च करता, तो घर पर ही कितना कुछ हो सकता था। यह विचार करुथम्मा के मन में खटक रहा था।
पारू ने कहा, 'खैर, जब तुम्हारा मछुआरा हरिपाद से लौटेगा, तो तुम निश्चिंत रहना कि वह नई दुल्हन के लिए एक सुंदर कपड़ा जरूर लाएगा।'
करुथम्मा ने जवाब दिया, 'लेकिन चेची, हमारे पास तो पीने के लिए बर्तन भी नहीं है। हमारे पास तो बस दो घड़े हैं!'
पारू, जो उम्र में बड़ी थी, बोली, 'दो से ज़्यादा किसके पास होते हैं? जब मछली पकड़ने का बड़ा मौसम आएगा, तब इन सब बातों के बारे में सोच लेना। और बाद में जब समुद्र में मछलियाँ कम हो जाएँगी, तो हम उन्हें बेचकर गुज़ारा कर लेंगे!'
एक कुत्ता करुथम्मा के पीछे-पीछे चल रहा था। वह अंदर घुसने का मौका ढूंढ रहा था। करुथम्मा अपनी झोपड़ी में चली गई।
वह इंतजार करती रही। जब लगभग शाम हो गई, पलानी घर लौटा। उसके हाथ में एक छोटा सा पैकेट था।

करुथम्मा सोच रही थी कि क्या उसे रूठ जाना चाहिए। यह दिखावा नहीं होगा। वह सचमुच बहुत गुस्से में थी। लेकिन उसे चिंता थी कि पलानी को यह अच्छा लगेगा या नहीं। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी। उसने पूछा, 'क्या नावें अभी- अभी आई हैं?'
पलानी व्यंग्य को नहीं समझ पाए। इसके बजाय, उन्होंने जवाब दिया, 'नहीं, लेकिन देखो...'
उसने उसे पैकेट दिया। जैसे ही उसने उसे फाड़कर खोला, उसने पूछा, 'जब आप यहाँ समुद्र में जाते हैं, तो क्या आपके जाल कपड़े से भर जाते हैं?'
वह हँसा। और वह भी हँसी।
यह एक खूबसूरत कसवु नेरियथु था, एक उत्तम वस्त्र जिसे वह अपने ऊपर ओढ़ती थी, और उस पर अलंकृत जरी की किनारी थी। करुथम्मा ने उसे खोला। यह चौड़ा और उत्तम गुणवत्ता का था! पलानी ने उसे इसकी कीमत बताई। उन्होंने ऐसे पाँच वस्त्र खरीदे थे। वेलुथकुंजु, वेलायुधन, कोचुरमन, अयप्पन और उसने, और उन्होंने एक-एक वस्त्र लिया था।
वेलायुधन का बच्चा बीमार था; उसकी पत्नी दवा के लिए कुछ पैसे उधार लेने पारू के घर गई थी, पारू ने उसे अभी-अभी बताया था। उस दिन अयप्पन के घर में भी परेशानी थी। उन सभी घरों में जहाँ नए कपड़े आए थे।
करुथम्मा ने दिल खोलकर हंसते हुए पूछा, 'जब हमारे पास पीने के लिए बर्तन या गिलास तक नहीं है, तो इस खूबसूरत नए नेरियथु का क्या फायदा?'
शायद उस हंसी की तीव्रता से अभिभूत होकर, वह एक बार फिर अंतर्निहित व्यंग्य को समझने में विफल रहा और जोर से हंस पड़ा। फिर उसने कहा, 'क्या तुम जानते हो कि मैंने यह तुम्हारे लिए क्यों खरीदा?'
उसने पूछा, 'क्यों?'
‘मन्नारशाला अयिल्यम पहनने के लिए तैयार हो जाइए। इसे अपने चारों ओर लपेटिए और मुझे देखने दीजिए।’
पलानी की भावनाएँ उसकी आँखों में झलक रही थीं जब उसने उसे देखा। उसकी उभरी हुई छातियों पर एक नज़र पड़ी। वह मुड़ी। अब उसकी नज़र उसके नितंबों पर पड़ी जो केवल एक पतले मुंडू से ढके हुए थे।
पलानी कुछ कदम आगे बढ़ीं। फिर उन्होंने कहा, 'मैं पसीने और गंदगी से लथपथ हूँ!'

अगर पीने का बर्तन न भी होता, तो क्या वह खूबसूरत नेरियथु खरीदना गलत था? यही तो उसकी इच्छा थी। अपनी पत्नी को सजे-धजे देखना। क्या जीवन का मतलब सिर्फ उद्देश्य और चीजों को हासिल करना है? क्या जीवन का मतलब सिर्फ घर के लिए सामान खरीदना और पैसा कमाना है? क्या जीवन का कोई भावनात्मक पहलू नहीं है? हाँ। है। बिल्कुल है।
करुथम्मा ने अपने जीवन में ऐसा कुछ कभी नहीं देखा था। शायद इसीलिए उसे यह सब अनावश्यक लगा होगा। फिर भी, यह सोचकर कि उसका पति उसे सजे-धजे देखना चाहता है, उसे खुशी हुई।
उसने नेरियथु खरीदने के लिए उसे डांटने के सारे विचार त्याग दिए।
उनके शरीर एक दूसरे से कसकर लिपटे हुए थे। होंठ आपस में मिले। वे एक हो गए थे। आँखें तन्मयता से झुक गईं और वे एक सम्मोहन जैसी अवस्था में चले गए।
हाथ अलग नहीं हो रहे थे। जुदाई बहुत कठिन थी।
करुथम्मा को यह लगने लगा कि कसावु नेरियथु जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।
जीवन केवल कटोरे, घड़े, नाव और जालों के बारे में ही नहीं था; यह कसावु नेरियथु की रेशमी सरसराहट के बारे में भी था।
जब वे एक ही थाली में खाना खा रहे थे, तब भी करुथम्मा की पलकें भारी थीं।
उनके चेहरे पर एक अलग ही आभा थी। उन्होंने चावल का एक गोला बनाया और उसे उनके होठों के बीच रख दिया।
‘अरे, इतनी बड़ी गेंद मेरे मुंह में नहीं समाएगी!’
शायद यह सच था। आखिरकार, यह एक ऐसी गेंद थी जिसे एक बलवान व्यक्ति की उंगलियों ने लुढ़काया था, जो प्रतिदिन समुद्र की शक्तिशाली लहरों से लड़ता था। उसने गेंद का आकार छोटा कर दिया था।
उसने एक गेंद लुढ़काई और उसके मुंह में रख दी। तब उसने कहा, 'ओह, क्या तुमने मेरे मुंह में गेंद रख दी?'
उनकी हंसी-मजाक से वे काफी देर तक हंसते रहे। करुथम्मा, जो उसे नेरियथु खरीदने के लिए डांटने आई थी, बोली, 'मुझे अब एक रेशमी ब्लाउज और एक अच्छी साड़ी चाहिए!'
जब उसका युवा जोश शांत हो गया, तो करुथम्मा धरती पर लौट आई। अपने जीवन को अनुशासित करने का उसका दृढ़ संकल्प अब अमल में लाना ही था। उसे यह जानने का पूरा अधिकार था कि उस दिन उसकी कमाई का हिस्सा कितना था। उसने उसे कैसे खर्च किया? उसे यह भी जानना ज़रूरी था।

करुथम्मा ने पूछा, 'आज तुम्हारा हिस्सा कितना था?'
‘दस से तीस के बीच कुछ।’
अब उसका क्या बचा है?
‘उस शहतीर के पीछे एक पैकेट छिपा हुआ है। उसे निकालो और गिनो!’
करुथम्मा ने पैकेट खोला और पैसे गिने। दो रुपये थे। कुल अट्ठाईस रुपये खर्च हो चुके थे। इन पैसों से कितना कुछ किया जा सकता था! लेकिन वह इस बारे में बात करने में बहुत हिचकिचा रही थी।
उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसके करीब झुक गई। उसने पूछा, 'क्या हम हमेशा इसी तरह एक झोपड़ी में, जहाँ हमारा शयनकक्ष और रसोईघर दोनों एक ही जगह पर हों, ऐसे ही रह सकते हैं?'
‘नहीं!’ पलानी ने यंत्रवत जवाब दिया।
हमें बहुत सी चीजों की जरूरत है!
करुथम्मा उस ज़रूरत की गहराई को समझ गई थी। वह दिल खोलकर हँसी। वह अनाथ, दरिद्र पलानी को संपन्न मछुआरे पलानी में बदल देगी। उसने उसे बदलने का निश्चय कर लिया था। उसने यह बात कहने की हिम्मत जुटाई। उसे पलानी के स्नेह पर भरोसा होने लगा था। लेकिन इसके लिए पलानी को उसकी कुछ बातें माननी होंगी।
किसी का भी दिल मोह लेने वाली मुस्कान के साथ उसने कहा, 'आपको अपनी सारी कमाई खर्च नहीं करनी चाहिए!'
फिर उसने अपनी दोनों हथेलियाँ उसके गालों पर रखीं और कहा, 'मैं इसकी इजाज़त नहीं दूंगी!'
तो क्या मुझे चाय पीने या चावल खाने की जरूरत नहीं है?
वह इसका समाधान कर देगी। फिर उसने उससे एक बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल पूछा, 'जब बच्चे आएंगे तो हम क्या करेंगे?'
लेकिन उसे उसकी बात समझ नहीं आई। जब बच्चे पैदा होते हैं, तो क्या किया जाता है?
वे बड़े हो जाएंगे।
मानो वह एक भोला-भाला बच्चा हो जिसे जीवन या जीने का कोई ज्ञान न हो, उसने एक अनुशासित जीवन जीने का वर्णन किया। एक नाव और जाल – क्या यही हर मछुआरे का सपना नहीं होता? उसने जोर देकर कहा कि पलानी का भी यही सपना होगा।

पलानी ने पलटवार करते हुए कहा, 'अगर इस तट के सभी मछुआरे ऐसा सोचते, तो वे सभी करोड़पति होते... तो फिर हर कोई आपकी तरह क्यों नहीं सोच रहा है?'
उसने इसका जवाब एक सवाल से दिया। 'हम उस तरह क्यों नहीं सोच सकते?'
उसने उसे बताया कि एक आम मछुआरे का जीवन के प्रति क्या नज़रिया होता है। एक मछुआरा कभी पैसे बचा नहीं सकता। जानते हो क्यों? क्योंकि वह ये पैसे अपनी जान जोखिम में डालकर कमाता है। वह ये पैसे समुद्र में तैरने वाली सैकड़ों मछलियों को धोखा देकर कमाता है, जो समझती हैं कि समुद्र उनका है। हर दिन, जब वह अनगिनत मछलियों को आँखें खुली और साँस फूलती हुई पकड़ी जाती देखता, तो उस पर कोई असर नहीं पड़ता था। लेकिन जीवन के प्रति इस तरह की निर्मम हिंसा से कमाए गए पैसे को बचाया नहीं जा सकता था; यह मुमकिन ही नहीं था। आखिर समुद्र के लोग इस तरह भूख से क्यों मर रहे थे? यह सिर्फ पलानी का जीवन को देखने का नजरिया नहीं था; यह सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही तटवर्ती लोगों की विचारधारा थी। करुथम्मा ने भी यह सब सुना था। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा था जिसने इसका विरोध किया था। उसके पिता। उन दिनों वह अपने पिता के तर्कों से सहमत नहीं थी। हालांकि, अब वह न केवल सहमत थी बल्कि उनके तर्कों की गंभीरता और महत्व को भी समझ गई थी। फिर भी, उसने अपनी बात नहीं रखी। उसमें बहस करने का साहस नहीं था।
पलानी ने एक बार फिर कहा, 'एक मछुआरे को पैसे बचाने की क्या ज़रूरत है? उसके सामने जो कुछ भी बिखरा पड़ा है, वही उसका धन है। हमारे पास ऐसा क्या है जो नहीं है? भले ही वह कुछ भी अलग न रखे, समुद्र माता उसे भरपूर आशीर्वाद देगी। यही सच्चाई है!'
उसने पलटकर जवाब दिया, 'तो फिर जब इसमें कोई चाल नहीं है तो सब लोग भूखे क्यों मरते हैं?'
इसे सहन करना होगा।
करुथम्मा अपने माता-पिता के बारे में सोचने लगी। कि उन्होंने नाव और जाल कैसे खरीदे। अचानक, मानो किसी जलते अंगारे ने उसके दिल को छू लिया हो, उसे एक तीव्र पीड़ा महसूस हुई। एक ऐसी पीड़ा जो उसकी रगों में दौड़ गई। आखिर उन्होंने नाव और जाल कैसे खरीदे? भोला-भाला परीकुट्टी बर्बाद हो गया। पलानी ने पूछा, 'क्या यह तुम्हारे माता-पिता की वजह से है?'

ऐसा लग रहा था कि उसके चेहरे पर सख्ती छा गई है। उसने आगे कहा, 'तुम्हारे लालच का स्रोत यही होगा! हर कोई जानना चाहता है कि हम तुम्हारे माता-पिता से मिलने कब जा रहे हैं!'
वहाँ मौजूद सभी महिलाओं ने उससे यही सवाल पूछा था। उसके पास भी कोई जवाब नहीं था। शादी के बाद, दुल्हन के घर आमंत्रित न किया जाना ठीक नहीं माना जाता था। लेकिन उसे संदेह था कि ऐसा कभी हो भी पाएगा या नहीं। उसने कहा, 'जब मेरी माँ मृत्युशय्या पर थीं, तब हम घर छोड़कर चले गए थे। भला कौन यहाँ आकर हमें आमंत्रित करेगा?'
थोड़ी देर बाद, वह हंसते हुए बोली, 'शादी के बाद, क्या दूल्हे के परिवार से किसी ने हमें मिलने के लिए आमंत्रित किया है? क्या यह भी एक परंपरा नहीं है?'
करुथम्मा का इरादा तो बस मज़ाक उड़ाना था। फिर भी, उसमें थोड़ी सी चुभन थी। पलानी को लगा जैसे किसी ने थप्पड़ मार दिया हो। उसे चोट लगी। उसे यह मज़ाक बिल्कुल नहीं लगा। न ही उसने इसे मज़ाक समझा। उसके चेहरे के भाव बदल गए। ‘क्या आपको पता नहीं था कि हमें आमंत्रित करने वाला कोई था ही नहीं? तो फिर उन्होंने आपको मेरे साथ क्यों भेजा?’
करुथम्मा का चेहरा पीला पड़ गया। पलानी गुस्से में थी। उसने इसकी उम्मीद नहीं की थी। वह रुकी नहीं।
लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई, है ना? यहाँ एक अनाथ था, जिसके लिए रोने या खुशी मनाने वाला कोई नहीं था। और यहाँ एक ऐसी लड़की थी जो समुद्र तट के लायक नहीं थी। तो चलो, उसका बोझ भी उस पर डाल देते हैं। अगर वह समुद्र में मर गया, तो उसके लिए शोक मनाने वाला कोई नहीं होगा। और यही हुआ।
यह एक अन्यायपूर्ण आरोप था। समुद्र तट के लिए अनुपयुक्त लड़की! वह इसे कैसे सहन कर सकती थी? फिर भी, क्या यह सच नहीं था? उसके भीतर छिपा हुआ अपराधबोध अब आकार लेने लगा था। शादी के बाद के इन शुरुआती दिनों में ही उसका पति यही कहने लगा था।
करुथम्मा ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। रोने की वजह से उसका शरीर कांप रहा था। पलानी उसे देखता रहा। कुछ देर तक बस रोने की आवाज़ ही सुनाई देती रही। क्या उसे उस पर तरस आ रहा था? तभी कहीं से एक आवाज़ उसके कान में आई: 'ये मैं नहीं कह रही। ये तो सब लोग कह रहे हैं!'

ऐसा लगा जैसे पलानी का दिल थोड़ा नरम पड़ गया हो। उन्होंने कहा, 'मैंने ऐसा नहीं कहा।'
थोड़ी देर बाद उसने कहा, 'ये सब बातें पप्पू ही कह रहा है!'
और इसलिए, शादी के बाद, उस परिवार में पहली बार आंसू बहे; और सुलह के प्रयास किए गए।
चारों ओर उदासी छाई हुई थी। एक बेचैनी जो रात भर बनी रही। सिसकियों के बीच से एक दर्द भरी पुकार निकली, 'मैं... मैं... मैं किनारे के लायक नहीं हूँ!' उसने उससे विनती की कि वह उस पर विश्वास करे। वह ऐसा व्यवहार नहीं करेगी जिससे उसका पति समुद्र में खो जाए। वह ऐसी वजह नहीं बनेगी जिससे विशाल लहरें उनकी छत पर टूट पड़ें। ज़हरीले साँप किनारे पर रेंगेंगे नहीं; अज्ञात समुद्री राक्षस अपने मुँह खोले पानी से नहीं निकलेंगे और तेज़ हवाएँ नहीं चलाएँगे; वह एक मछुआरे के रूप में जीवन व्यतीत करेगी। उसने उससे हज़ार बार पूछा कि क्या उसे उस पर भरोसा नहीं है। उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस इतना ही कर सकी कि अपना सिर उसकी चौड़ी छाती पर रख दे और अपने आँसुओं से उसकी कठोरता को पिघलाने की कोशिश करे।
पलानी ने पूछा, 'तुम मुझसे बार-बार यह क्यों पूछते रहते हो, "अगर मैं तुम पर विश्वास करूं, अगर मैं तुम पर विश्वास करूं..." मानो तुम्हें खुद पर भरोसा ही न हो?'
एक बार फिर जलते हुए कोयले ने उसे झुलसा दिया। उसे उसके गहरे राज़ के बारे में कुछ संदेह था। किसी गद्दार ने उसके दिमाग में अफवाहें भर दी थीं।
उस रात के बाद उसने कुछ नहीं कहा। चाहे उसे उसका रहस्य पता हो या न हो, क्या उसे सच बता देना बेहतर नहीं था? लेकिन अगर वह उसे सच बता देती, तो क्या वह उसे माफ़ कर देता? तो वह उसे कैसे बताती? किसी के द्वारा मनगढ़ंत कहानियाँ बनाने के बजाय, सच बताना ही सबसे अच्छा था।
यह एक दुविधा थी। कोई फैसला लेना ही था। कई बार उसने उसे बताने की कोशिश की, पर वह क्या कहती? क्या वह कहती, 'मैंने एक आदमी से प्यार किया था'? क्या किसी पति में यह सुनने की हिम्मत होती? या वह इस तरह शुरू करती: 'बचपन में मेरा एक साथी था'? यह भी संभव नहीं था। अगर वह उस याद की मिठास में खोकर यह सब बताने लगती, तो वह बहुत कुछ कह देती और यहाँ तक कि परीकुट्टी की तारीफ भी कर बैठती। और वह सोचता कि उसका स्नेह अभी भी परीकुट्टी के लिए है। यह ठीक नहीं था। क्या वह कहती, 'समुद्र तट पर एक मुसलमान ने मुझ पर जादू कर

दिया था'? नहीं, नहीं, वह ऐसा नहीं कह सकती थी! क्योंकि उसे परीकुट्टी को एक बुरा आदमी, एक नीच आदमी बताना पड़ता। करुथम्मा ऐसा भी नहीं कर सकती थी। परीकुट्टी नीच आदमी नहीं था; उसने उस पर जादू नहीं किया था, न ही उसे धोखा दिया था। उसके सामने उसकी टूटी हुई, आँसू भरी आँखों वाली छवि थी। वह उसे अँधेरे में भी देख सकती थी। उसे ऐसा लगा मानो यहाँ तक पहुँचने के लिए उसने उसकी भावनाओं को कुचल दिया हो। उसने उसे हर तरह से बर्बाद कर दिया था। अब उसे जीवन से कुछ और नहीं चाहिए था। पचहत्तर वर्ष की आयु में भी वह किनारे पर बैठकर अपना गीत गाता था। और इसी तरह वह अपनी मृत्यु तक गाता रहेगा... वह यह सब देख सकती थी। उसके होंठ बोलने के लिए आगे बढ़े। वह भूल गई कि वह कहाँ है। वह यह भी नहीं पहचान पाई कि उसका पति उसके बगल में लेटा हुआ है। उसके भीतरी आवाज़ ने कहा, 'मैं तुमसे प्यार करती हूँ!'
उसने ये बात परीकुट्टी से कही। उसके शब्दों की आवाज से परीकुट्टी हिल गई। पलानी ने पूछा, 'तुम क्या कह रहे हो? तुम किससे प्यार करते हो?'
करुथम्मा जाग उठी। क्या उसने खुद को उजागर कर दिया था? उसने कहा, 'हाँ।' उसने पूछा, 'किसे?'
उसने सरासर झूठ बोला, 'मेरा मछुआरा!'
मुर्गे ने बांग दी। किनारे पर एक आवाज़ गूंजी। नावों में जाने का समय हो गया था। उसने ज़िद की कि पलानी नहाने के बाद ही जाए। उसने फिर से उसे नहाने में मदद की।
पलानी को नावों तक पहुंचने में सामान्य से अधिक देरी हो गई थी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। उस दिन बाकी नाविकों को उसका इंतजार करना पड़ा। वेलायुधन ने मजाक में कहा, 'ऐसा ही होता है! शादी के बाद उठना बहुत मुश्किल हो जाता है!'
एक हानिरहित मज़ाक! और वास्तव में सच भी। लेकिन पलानी को यह पसंद नहीं आया।
'ओह चुप रहो, वेलायुद्ध चेता!'
वेलायुधन ने पलटकर जवाब दिया, 'अरे लड़के! तुम मुझ पर क्यों गुर्रा रहे हो?' पलानी को चिंता थी कि वेलायुधन कहीं और की बातें न उठा दे। अगर उसने करुथम्मा का जिक्र कर दिया तो क्या होगा? यह विचार उसे लगातार परेशान कर रहा था।

नाव समुद्र में उतरी और पश्चिम की ओर चल पड़ी। पलानी नाव के पिछले हिस्से पर बैठा था। मछली का कोई नामोनिशान नहीं था। नावें इधर-उधर भाग रही थीं, लेकिन जाल नहीं डाल पा रही थीं। फिर भी पलानी पूरी ताकत से नाव को पश्चिम की ओर ले जा रहा था। मानो उसका कोई निश्चित उद्देश्य ही न हो। उसकी लोहे जैसी मांसपेशियां फड़क रही थीं। लेकिन यह काफी नहीं था, समुद्र इतना बड़ा नहीं था। चप्पू हल्का था। जब वह उछला, तो नाव का पिछला हिस्सा भी उसके साथ उछल पड़ा। मानो क्षितिज को चीरकर उससे भी आगे निकल जाना चाहता हो। उसकी सारी शक्ति जागृत हो उठी थी।
नाव गहरे समुद्र में थी। दूर-दूर तक ज़मीन नज़र नहीं आ रही थी। आंदी ने पूछा, 'नाव कहाँ ले जा रहे हो?'
उन सभी ने अपने चप्पू समेट लिए। लेकिन नाव उछलती-कूदती और आगे बढ़ती रही। पलानी एक राक्षस में बदल गया था। क्षितिज ही उसका लक्ष्य था।
कुमारू भय से कांप उठा। ‘तू कमीना! सिर्फ इसलिए कि तेरा कोई नहीं है…’ कुमारू ने पलानी पर चिल्लाते हुए कहा। ‘जाकर खुद को मार डाल! तेरी पत्नी एक कुतिया है! तू समुद्र में डूब जाएगा। यही तेरा भाग्य है। लेकिन हमारे बच्चे और परिवार हैं!’
वेलायुधन ने पलानी से चप्पू छीन लिया। उसने पलानी को घसीटकर आंदी की ओर ले जाकर वहाँ बैठाया और नाव को वापस मोड़ दिया।
पलानी चुप था, मानो उस लंबे कष्ट से थक चुका हो। काफी देर बाद उसने चप्पू चलाना शुरू किया। उन्होंने अपने जाल उस पानी में डाले जहाँ दूसरी नावें थीं।
उन्हें कुछ भी नहीं मिला। किसी को भी कुछ नहीं मिला। पलानी की नाव में कुछ छोटी मछलियाँ फँसीं। उनमें से प्रत्येक को डेढ़ रुपया मिला।
जब वे नहा रहे थे, तब वेलायुधन ने पूछा, 'पलानी, तुम्हें क्या हुआ?'
उन सभी को यही जानने की उत्सुकता थी। वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा था। पलानी पहले नाव को बड़े जोश और साहस से चलाता था। लेकिन वह कभी भी इस तरह के क्रोध से प्रेरित नहीं होता था।
पलानी ने कहा, 'मुझे नहीं पता। मेरे साथ कुछ हुआ है!'
आंदी ने कहा, 'बेटा, हम सबके पास पत्नियां और बच्चे हैं!'
कुमारू ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि पलानी को अब जहाज के पिछले हिस्से की जिम्मेदारी संभालनी चाहिए। वह हम सबको समुद्र के बीचोंबीच डुबो देगा।'

□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□!

तेरह

शादी के चौथे दिन दूल्हा-दुल्हन को उनके घर पर आमंत्रित करने की प्रथा थी। लेकिन यहाँ उन्हें आमंत्रित करने के लिए कोई नहीं था।
शादी के दिन चक्की बीमार पड़ गई। तब से वह बिस्तर से उठी ही नहीं थी। उसका भला पड़ोसी नल्लापेन्नू कभी-कभार आकर उसकी देखभाल करता था। पंचमी घर की देखरेख करती थी। चक्की की बिगड़ती हालत को लेकर चेम्बनकुंजू को कोई खास चिंता नहीं थी। नल्लापेन्नू बार-बार कहता था कि डॉक्टर को बुलाना पड़ेगा, लेकिन चक्की कोई जवाब तक नहीं देता था।
शादी के बाद के दिनों में वह हर काम में व्यस्त था। वह चक्की के कमरे के दरवाजे पर जाकर झाँकता रहता था। एक बार जब वह वहाँ खड़ा हुआ, तो चक्की ने कहा कि किसी को त्रिकुन्नपुझा जाकर करुथम्मा और पलानी को घर बुलाना चाहिए।
चेम्बनकुंजु क्रोध में आपा खो बैठा और चिल्लाते हुए बोला, 'मैं नहीं जा रहा! और मुझे वह अपने घर में भी नहीं चाहिए!'
व्याकुल चक्की बेहोश हो गई। उसी दिन चेम्बनकुंजू एक डॉक्टर को घर ले आया। शादी के बाद उस लड़की को उसके घर नहीं बुलाया गया था। हर कोई जानना चाहता था कि ऐसा क्यों हुआ। उसने गुस्से में उन पर चिल्लाया। लेकिन वे भी नहीं माने। और इस तरह चेम्बनकुंजू का सबसे झगड़ा हो गया।
चेम्बांकुंजु घर से बहुत कम ही दूर जाता था। दोनों नावें हर दिन समुद्र में जाती थीं। लेकिन मछली पकड़ने का काम अच्छा नहीं होता था। ऐसा लगता था कि नाव में काम करने वाले मजदूरों से भी उसके संबंध अच्छे नहीं थे।

त्रिकुन्नपुझा में सभी लोग इस बात पर अटकलें और कानाफूसी कर रहे थे कि करुथम्मा को उसके घर क्यों नहीं बुलाया गया। रिवाज़ के मुताबिक किसी को तो उन्हें घर ले जाना चाहिए था। सबको पता था कि वह एक परिवार वाली लड़की है। इसका मतलब था कि उसे घर से निकाल दिया गया था। यहाँ तक कि गरीब से गरीब लोग भी शादी के बाद अपनी बेटी को घर बुलाते हैं। करुथम्मा भी निमंत्रण का इंतज़ार कर रही थी। उसने अपने पिता से इस तरह छोड़े जाने की उम्मीद नहीं की थी। वह अपनी माँ को लेकर भी चिंतित थी। लेकिन वह अपने पति से इस बारे में

बात करने से डर रही थी। वह इस पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे? फिर भी, उसने इस बारे में बात करने का मन बना लिया।
एक दिन दोपहर के भोजन के बाद उसे लगा कि उसे एक आदर्श समय मिल गया है। उसने मन ही मन कहा, 'पता नहीं मेरी माँ जीवित है या नहीं?'
उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने ध्यान से उसका चेहरा देखा। वह उसे देखती रही और हिचकिचाते हुए बोली, 'क्या हम पार चलें?'
‘इसके बारे में सोचना भी मत!’ यह जवाब किसी थप्पड़ की तरह चुभ गया।
उसे उम्मीद नहीं थी कि वह इतना सख्त होगा। सच तो यह था कि उसके चेहरे के भावों में आए बदलाव ने उसे डरा दिया था। ऐसा लग रहा था जैसे ताज़े कटे चावल में कंकड़ चुभ गए हों।
करुथम्मा मुस्कुराई। 'आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?'
उसने उसे धमकी भरे स्वर में पूछा, 'हम्म... क्या कहा?'
‘हमारी अपनी बेटियाँ होंगी। और जब उनके मछुआरे पति होंगे, तो हमें इन सब का भुगतान करना पड़ेगा!’
पलानी ने इसका भी करारा जवाब दिया। 'जब ऐसा होगा, तब मैं इसे सह लूंगा!'
और क्या कहा जा सकता था? इसलिए उसने इस बारे में कुछ नहीं कहा। जब अगली बार मौका मिला, तो उसने पूछा, 'क्या मैं अपनी माँ से मिलने जा सकती हूँ?' उन्होंने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई। लेकिन उन्होंने एक बात कही, 'अगर आप जाना चाहते हैं तो जा सकते हैं, लेकिन वापस आने की जहमत मत उठाना!' करुथम्मा के हृदय में क्रोध का एक छोटा सा टुकड़ा उमड़ पड़ा। उसने स्वयं को इस रूप में प्रकट किया, 'हे भगवान, पुरुषों के हृदय किस प्रकार के होते हैं?'
और फिर उसने मुस्कुराने का नाटक किया।
इस तरह दिन बीतते चले गए, नीरकुन्नथ स्थित चक्की और त्रिकुन्नपुझा स्थित करुथम्मा, दोनों की भावनाओं का कोई लिहाज़ नहीं किया गया। दोनों की आत्माएं रोती रहीं। जब करुथम्मा अकेली होतीं, तो वह भी रोतीं। चक्की का दिल जलता रहा। लेकिन किसी को इसके बारे में पता नहीं चला।
चक्की की तबीयत बिगड़ने की खबर सुनकर परीकुट्टी एक दिन वहां गया। चेम्बनकुंजू वहां नहीं था। वह किनारे पर नहीं, बल्कि कहीं और था। चक्की ने परीकुट्टी को देखते ही फूट-फूटकर रोना शुरू कर दिया। उसे इस तरह रोते देख परीकुट्टी बहुत दुखी हुआ।

परीकुट्टी पूरी तरह बदल चुका था। वह अब पहले जैसा खुशमिजाज और जीवंत परीकुट्टी नहीं रहा था। रोते-रोते चक्की ने कहा, 'मैं... मैं... मैं मर रही हूँ, बॉस।'
परीकुट्टी देख सकता था कि चक्की बहुत कमजोर हो गई थी। फिर भी, उसने कहा, 'क्या कह रहे हो चक्की? तुम इतने भी बीमार नहीं हो!'
उसने उसे पलंग के पास बैठने का इशारा किया। वह बैठ गया। चक्की उसे देखती हुई लगातार रोती रही। परीकुट्टी को समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या कहे। फिर जब वे दोनों बैठे थे, चक्की ने कहा, 'मुझे आपको बहुत कुछ बताना है, छोटे मालिक!'
परीकुट्टी ने उससे अपने दिल की बात कहने को कहा।
सबसे पहले वह पैसों के बारे में बात करना चाहती थी। परीकुट्टी ने उससे कहा कि अब वह इस बारे में चिंता न करे। चक्की ने अपने पति को कोसते हुए कहा कि वह लालची और दुष्ट आदमी है।
‘मुझ जैसे बेबस व्यक्ति का क्या करूँ? वह तुम्हें पैसे वापस नहीं देगा!’ ‘उस बारे में चिंता मत करो!’
‘बात ये नहीं है, छोटे बॉस!’
उसके लिए आगे बढ़ना मुश्किल था।
थोड़ी देर बाद चक्की ने आगे कहा, 'मैंने अपनी बच्ची को अच्छे घर में नहीं भेजा। एक भी पल ऐसा नहीं बीतता जब वह पीड़ा में न हो!'
चूंकि यह मामला करुथम्मा से संबंधित था, इसलिए परीकुट्टी ने इस पर कोई राय नहीं दी।
चक्की बोलती रही, 'मैं यहां अपनी मृत्यु शैया पर लेटी हूं और मेरे बच्चे को अभी तक यहां लाया तक नहीं गया है।'
एक माँ की चिंता उभर आई। और क्या उसके पास चिंता करने के लिए बहुत सी बातें नहीं थीं? उसकी बेटी की एक प्रेम कहानी थी। लेकिन उसकी शादी किसी और से हो गई। उसे कैसे पता चलता कि वह प्रेम कहानी उसके नए जीवन पर कोई बुरा असर नहीं डालेगी? एक नया अध्याय शुरू हो रहा था। लेकिन वह कैसे यकीन कर सकती थी कि अतीत का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा? इन सबसे ऊपर, उसे एक ऐसे आदमी के साथ भेज दिया गया था जिसके पास अपना कुछ भी नहीं था और न ही कोई अपना था। वह कैसे यकीन कर सकती थी कि पलानी उससे प्यार करेगा?

चक्की ने कहा, 'मैंने अपनी बेटी को नारियल के पत्ते पर बिठाकर समुद्र में फेंक दिया।'
परीकुट्टी ने चक्की को दिलासा देते हुए कहा, 'ऐसा मत सोचो। पलानी एक अच्छा काम करने वाला है। वह उसका ख्याल रखेगा।'
उसने सहमति में सिर हिलाया। चक्की ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, 'तुम दोनों इस किनारे पर खूब खेले और मस्ती की।'
परीकुट्टी के दिल में एक कोमल भावना जाग उठी। पुरानी यादें ताजा हो गईं। चक्की ने यह देखा। आखिर वह भी उस प्यार को जानती थी। शायद वह यह भी जानती थी कि वह प्यार कितना गहरा था, कैसे उसने उन दोनों के जीवन को गहराई से छुआ था।
बीमार होने के बावजूद, चक्की नाम की माँ ने कहा, 'मेरे गर्भ में कभी बेटा पैदा नहीं हुआ।' गहरे दुख के साथ चक्की ने आगे कहा, 'मेरा एक बेटा है।' परीकुट्टी ने उत्सुकता से उसके चेहरे की ओर देखा; और चक्की ने भी उसे ऐसे घूरा जैसे पूछ रही हो, 'क्या तुम जानना नहीं चाहते?' चक्की ने परीकुट्टी का हाथ कसकर पकड़ लिया और कहा, 'यह मेरा बेटा परीकुट्टी है, तुम परीकुट्टी!' परीकुट्टी के बेहद आहत हृदय में राहत की लहर दौड़ गई। जिसे वह प्यार करता था, वह उससे बिछड़ गई थी। लेकिन किसी न किसी रूप में वह अब भी उसकी थी। वह उसके जीवन का एक हिस्सा था।
चक्की को करुथम्मा की शादी से कोई उम्मीद नहीं थी। उसे परीकुट्टी और करुथम्मा के बचपन के वो दिन याद आ रहे थे जब वे इसी किनारे पर खेलते-कूदते बड़े हुए थे। अब उसने परीकुट्टी को अपना बेटा मान लिया था। और परीकुट्टी की उम्मीदों की राख से नई कोंपलें फूट पड़ीं। क्या करुथम्मा कभी परीकुट्टी की होगी? अगर नहीं भी, तो क्या उसकी माँ ऐसा चाहेगी? एक पल में परीकुट्टी एक ऐसे निष्कर्ष पर पहुँच गया जो न तो सच था और न ही मुमकिन।
उस व्यथित माँ ने परीकुट्टी से कहा, 'मेरे बेटे, तुम्हें अपने लिए एक दुल्हन ढूंढनी होगी, अपना व्यापार अच्छे से करना होगा और समृद्ध होना होगा!'
परीकुट्टी के कानों में वे शब्द हमेशा के लिए गूंज उठे। पिछली रात करुथम्मा ने भी उससे यही कहा था। लेकिन परीकुट्टी चक्की को वैसे जवाब नहीं दे सका जैसे उसने करुथम्मा को दिया था।

‘मेरे बेटे, अब करुथम्मा को और परेशान मत करो। उसका एक मछुआरा है। उसे तंग मत करो।’
परीकुट्टी स्तब्ध रह गया। उसके कानों में ये शब्द ऐसे गूंजे जैसे ऊपर से कोई आवाज़ आ रही हो। नियति का आदेश था, 'तुम्हें उसके जीवन में दखल नहीं देना चाहिए।' या फिर ये महज़ एक विचार था? नहीं, परीकुट्टी ने ये सुना था। 'परीकुट्टी करुथम्मा का भाई है। उसका अपना कोई भाई नहीं है। मेरा बेटा ही उसका भाई होना चाहिए।'
चक्की ने ये शब्द कहे थे। उसे इस बात में कोई संदेह नहीं था। इसके बाद चक्की ने बहुत कुछ कहा। चेम्बनकुंजू ने करुथम्मा को छोड़ दिया था; चक्की मर रहा था; करुथम्मा को एक ऐसे आदमी के साथ भेज दिया गया था जिसका न घर था न परिवार; परीकुट्टी के सिवा उसका सहारा कौन था? और इस तरह चक्की ने उनके रिश्ते को परिभाषित किया। भाई-बहन!
चक्की ने पूछा, 'मेरे बेटे, क्या तुम हमेशा करुथम्मा के भाई ही रहोगे? सिर्फ भाई ही!'
परीकुट्टी की आँखों में आँसू भर आए। चक्की ने देखा कि आँसू बूँद-बूँद बह रहे हैं। चक्की जानती थी कि इसका क्या मतलब है। वह यह भी समझ गई कि आँसू किस वजह से बहे थे।
चक्की ने उस प्रेम कहानी का सार समझाया। ‘मेरे बेटे, तुम करुथम्मा से प्यार करते थे। लेकिन अब तुम्हें उसका भाई बनना होगा। यही उसके प्रति तुम्हारे प्यार का पैमाना है, क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?’
परीकुट्टी के पास कोई जवाब नहीं था। उसका गला आंसुओं से भर गया था। अगर वह उससे प्यार करता था, तो अब उसे उसका भाई होना चाहिए था – उसे यही बताया जा रहा था कि ऐसा ही होना चाहिए।
कुछ पल खामोशी छा गई। चक्की ने पूछा, 'क्या ऐसा ही है, बेटे?'
परीकुट्टी ने यंत्रवत ढंग से उत्तर दिया, 'हाँ।'
‘तो मेरे बच्चों, अब से तुम भाई-बहन बनोगे!’
एक क्षण बाद चक्की ने आगे कहा, 'अगर वह यहां होती, जब मैं यहां मर रही हूं, तो मैं उसे भी यही कहती...'
चक्की और भी व्याकुल हो गई और उससे विनती करने लगी कि वह करुथम्मा का भाई बन जाए। बस उसका भाई! और अगर उसका कोई नहीं रहा, तो वह उसकी देखभाल करेगा! और अगर चक्की की मृत्यु से पहले वह नहीं आई, तो वह किसी को उसे लाने के लिए

भेज देगा! परीकुट्टी मान गया। लेकिन चक्की को लगा कि यह स्वीकृति जताने का सही तरीका नहीं है। इसलिए उसने फिर से विनती की।
उस रात चक्की ने किनारे से परीकुट्टी को गाते हुए सुना।

चेम्बनकुंजू के लिए समय कठिन था। वह समुद्र में नहीं जा पा रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि शायद इसीलिए मछली पकड़ने का काम कम हो रहा था। और एक और नुकसान हो चुका था। उसे खादर बॉस से बेची गई मछलियों के लिए मोटी रकम वसूलनी थी। एक रात खादर अपनी झोपड़ी का सारा माल लेकर भाग गया। यह नुकसान चेम्बनकुंजू के लिए बहुत बड़ा झटका था। उसने फिर से समुद्र में जाने का फैसला किया। वह कब तक किनारे पर बैठकर इंतज़ार कर सकता था?
उस दिन और कुछ और दिनों तक, चेम्बनकुंजू अपनी नाव के पिछले हिस्से पर दिखाई देता रहा। लेकिन वह वहाँ बैठा था, खड़ा नहीं था। नाव की गति अब पहले जैसी नहीं रही थी। वह अब दौड़ नहीं रही थी। नाविक चप्पू चला रहे थे। लेकिन चेम्बनकुंजू अब तेज़ गति से चलती नाव के पिछले हिस्से पर खड़ा नहीं हो पा रहा था। उसके पैर काँप रहे थे। उसके पास अब उस पतले तख्ते पर खड़े होने का साहस नहीं बचा था, जो केवल उसके अंगूठे के सहारे टिका हुआ था। तो वे आगे कैसे बढ़ पाते?
ऐसा हो सकता है कि चेम्बनकुंजू और उसकी नाव फिर कभी दूसरी नावों से मुकाबला न कर पाएं; या सबसे ज़्यादा मछलियाँ पकड़कर किनारे पर न लौट पाएं। यह नाव भी दूसरी नावों की तरह ही तैर रही थी। उस उछलती-कूदती, दौड़ती नाव का नज़ारा शायद उस किनारे के लोग फिर कभी न देख पाएं।
उन्होंने समय से पहले ही नाव को वापस मोड़ दिया। नाविक जानना चाहते थे कि ऐसा क्यों किया गया।
‘चलो वापस चलते हैं; आज के लिए इतना ही काफी है!’
चेम्बनकुंजु कभी भी 'पर्याप्त' सोच ही नहीं पाता था! किनारे लौटते समय, चेम्बनकुंजु चप्पू से टकराकर पानी में गिर गया। चप्पू चलाने वालों ने उसे खींचकर नाव में वापस बिठा लिया। उसके बाद से, चेम्बनकुंजु नाव के पिछले हिस्से पर कभी नहीं बैठा।
उस दिन चेम्बनकुंजू ने मोलभाव तक नहीं किया। उसने अपनी पकड़ी हुई मछली को नगण्य दाम पर बेच दिया। थका-हारा घर लौट आया। उसकी चाल किसी हारे हुए व्यक्ति जैसी थी।

क्या चेम्बनकुंजू की योजनाएँ विफल हो गई थीं? पंचमी अपने पिता का इंतज़ार कर रही थी। उसने चावल पका लिए थे और उनके मनपसंद पकवान बना लिए थे। भीतर से एक कमजोर सी आवाज़ आई, 'बेटी, खाना परोस दो; तुम्हारे पिता के घर आने का समय हो गया है।'
पंचमी चावल और करी लेकर आया। उसने मुंह भर लिया, लेकिन उसे न तो स्वाद आया और न ही आनंद। वह बस 'दोपहर का भोजन' नामक एक औपचारिकता निभा रहा था। जब वह उठा, तो हैरान पंचमी ने कहा, 'अम्माची, पिताजी ने तो कुछ खाया ही नहीं!' चेम्बनकुंजु ने हाथ धोए और चक्की के पास गया। चक्की ने उसे गौर से देखा। दोनों की आँखों में आँसू आ गए। चेम्बनकुंजु के जीवन में यह पहली बार था जब उसकी आँखों में आँसू आए थे। चक्की ने कहा, 'अब क्या किया जाए? यही तो भाग्य है!'
चेम्बनकुंजू ने अपने आँसू पी लिए। उसने एक बूँद भी बहने नहीं दी। उसमें अभी भी इतनी हिम्मत बची थी। उसने पूछा, 'क्या तुम उठ नहीं सकते?'
मैंने कोशिश की। मैं क्या कर सकता हूँ?
वह कुछ देर चुपचाप वहीं खड़ा रहा और फिर पूछा, 'अब मैं क्या करूं?'
क्या उसने उसके बिना जीवन जीने के बारे में सोचना शुरू कर दिया था? एक ऐसा जीवन जहाँ उसका कोई उपयोग न हो? ऐसा जीवन अधूरा होगा और उसका कोई भविष्य नहीं होगा। चक्की क्या कह सकती थी?
वह चक्की के बगल में पलंग पर बैठ गया। चक्की को ऐसा लगा जैसे उसके पति की सारी ऊर्जा और शक्ति क्षीण हो गई हो। चेम्बनकुंजू ने समुद्र में हुई दुर्घटना का वर्णन किया। 'मेरे पैर जवाब दे गए!'
चक्की अपने पति के साथ समुद्र में दुर्घटना होने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। उसने कभी ऐसा सोचा भी नहीं था। अब वह भी हो गया था। और शायद फिर से हो सकता है।
‘चक्की, मैं क्या करूँ?’ असहाय चेम्बनकुंजु ने पूछा। भला वह यह सवाल किससे पूछता? इस सवाल का जवाब देने का अधिकार भला किसे था? अनुशासन से भरे जीवन के लिए सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी तो चक्की की ही थी। लेकिन अब वह बीमार पड़ी थी। और इसी के साथ सारे नियम-कानून और अनुशासन धराशायी हो गए। इतना ही नहीं, रोशनी भी गायब हो गई! बिस्तर पर दुबका हुआ वह आदमी हारा हुआ सा लग रहा था।

चक्की ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया, उसे अपने सीने से लगाया और पूछा, 'जब मैं चली जाऊंगी, तो तुम क्या करोगे?'
चेम्बांकुंजू रोने लगी। 'ऐसा मत कहो। मैं क्या करूंगी?'
उसके हाथ पर उसकी पकड़ और कस गई। जैसे ही उसकी छाती ऊपर-नीचे होने लगी, उसका हाथ झटक कर छूट गया। और जैसे ही उसकी निगाहें उस पर टिकीं, एक आवाज़ सुनाई दी, 'तुम्हें दोबारा शादी करनी होगी!'
उसने ऐसा कहा था! चक्की का शरीर कांप उठा। उसके दिल की धड़कन धीमी हो गई। चक्की वहीं लेटी रही और उसे देखती रही। चेम्बनकुंजू ने पूछा, 'तुमने क्या कहा? किसी दूसरी औरत से शादी करोगे?'
कोई जवाब नहीं मिला।
वह जानती थी कि जीवनसाथी का होना कितना ज़रूरी है। वह उसे यही रास्ता दिखा रही थी। चेम्बनकुंजू ने कभी इस बारे में सोचा भी नहीं था।
‘कुछ बोलो, चक्की।’
चक्की की आँखों में धुंधलापन छा गया था। चेम्बनकुंजू डर गया। उसने उसे जगाया। 'चक्की!'
सब कुछ शांत था।
'क्या आपका जाना हो चुका है?'
चेम्बनकुंजू चक्की की गोद में गिर पड़ा। चक्की ने उसका हाथ अभी भी उतने ही जोश से और मजबूती से पकड़ रखा था।

चौदह

नल्लापेन्नु ने पंचमी को सांत्वना दी, जो विलाप करते हुए बोली, 'अब तो मेरा कोई नहीं!' चक्की ने पंचमी को नल्लापेन्नु के हवाले किया था। नल्लापेन्नु ने उसे बताया कि अब उसके चार बच्चों की जगह पाँच बच्चे हैं। लेकिन क्या इतना शोक संतप्त महिला को दिलासा देने के लिए काफी था?
अचकुंजु और अन्य लोगों ने चेम्बनकुंजु को चक्की के शव से अलग किया। बहुत कुछ करना बाकी था। तटरक्षक को मृत्यु की सूचना दी गई। वे आ गए। करुथम्मा को सूचित करने की बात पर चर्चा हुई। किसी ने पूछा, 'क्या किसी को उस लड़की को बचाने नहीं जाना चाहिए?'
शोकग्रस्त चेम्बांकुंजू के कानों में यह सवाल गूंज उठा।
‘नहीं!’ एक ज़ोरदार आवाज़।
चेम्बनकुंजू ने दावा किया कि करुथम्मा ने ही चक्की की हत्या की थी।
वहाँ जमा सभी लोग कुछ देर के लिए चुप हो गए। शायद वे सब सोच रहे थे कि वह फैसला सही था या गलत। या शायद वे शोर मास्टर के किसी निर्णय का इंतजार कर रहे थे।
शोर मास्टर ने अपनी राय व्यक्त की।
‘अपनी माँ को गिरी हुई पेड़ की तरह पड़े देखकर भी वह चली गई। खैर, वह इस सब में शामिल नहीं होना चाहती थी, इसलिए चली गई। उसे वहीं रहने दो!’
वहां मौजूद सभी लोगों को शादी के दिन हुई घटना याद आ गई। उसने जो किया था वह निर्मम था।
केवल पंचमी ने ही अपनी चेची को बुलाया। उसकी बहन के अलावा उसका और कोई सहारा कौन था? लेकिन उसकी बात पर किसने ध्यान दिया?
अंतिम संस्कार की तैयारियां पूरी हो चुकी थीं।
परीकुट्टी, दूसरे धर्म के व्यक्ति होने के नाते, एक कोने में दुबका हुआ था। शायद वह करुथम्मा के लिए शोक मना रहा था, जिसके बिना अंतिम संस्कार हो रहा था। लेकिन भला वह उनके निजी मामले में दखल कैसे दे सकता था?
उसका दिल टूट जाएगा! अगर वे दोबारा मिले तो वह पूछेगी, 'मेरे बॉस, आपने मुझे क्यों नहीं बताया!'
इसके अलावा, क्या वहां मृत पड़ी वह महिला उसे कभी माफ कर पाएगी?

परीकुट्टी को ऐसा लग रहा था मानो इस मामले में उसे बहुत कुछ करना है। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि उसे क्या करना चाहिए। वह करुथम्मा का भाई था; उसने उसे अपनी बहन माना था। अब उसे अपने भाई का फर्ज निभाना ही था।
उस रात उसे नींद नहीं आई। आधी रात को वह जाग उठा। काफी देर बाद, वह बाहर निकला और झोपड़ी में ताला लगा दिया। वह चलने लगा। समुद्र की हवा मानो कोई अजीब कहानी गुनगुना रही हो। लहरें भी कुछ कहना चाहती थीं... तुम कहाँ जा रहे हो? त्रिकुन्नपुझा? क्यों? चक्की की मृत्यु की खबर करुथम्मा को देने? पर उसे ऐसा करने का क्या अधिकार था? और अगर कोई उससे इसके बारे में पूछे, तो उसके पास क्या जवाब होगा?
और जब उसे करुथम्मा मिल जाती, तो वह उससे क्या कहता? ये वो सवाल थे जो परीकुट्टी को रोक देने चाहिए थे। लेकिन वह चलता रहा। उसमें एक खास तरह का साहस था। वह उसका भाई था। उसकी माँ ने उसे उसका भाई माना था। लेकिन क्या वह उसकी बहन बनेगी?
जब परीकुट्टी को करुथम्मा मिली, तो उस मुलाकात का क्या नतीजा निकला? क्या परीकुट्टी ने इस बारे में सोचा था?
भोर होते ही परीकुट्टी त्रिकुन्नपुझा समुद्रत पर पहुँच गया। उसने एक मछुआरे को अपनी नाव में बैठकर जाते देखा। परीकुट्टी ने उससे पलानी का घर पूछा। मछली पकड़ने के बड़े दौर में यह मछुआरा नीरकुन्नथ में था। उसने परीकुट्टी को पहचान लिया।
‘छोटे बॉस, आप पलानी को क्यों ढूंढ रहे हैं?’
इस सवाल ने परीकुट्टी को झकझोर दिया। परीकुट्टी ने जवाब दिया, 'पलानी की पत्नी की मां का निधन हो चुका है।'
कोचुनाथन के लिए एक खबर। वह चेम्बनकुंजू और चक्की को जानता था। कोचुनाथन ने चक्की की प्रशंसा की। फिर उसने एक खतरनाक सवाल पूछा, 'लेकिन छोटे मालिक को ही मृत्यु की खबर लेकर क्यों आना पड़ा? क्या वहाँ कोई मछुआरा नहीं है?' यह एक ऐसा सवाल था जिसकी परीकुट्टी को उम्मीद थी। और उसने खुद को तसल्ली देने के लिए एक जवाब भी ढूंढ लिया था। लेकिन उसे यह उम्मीद नहीं थी कि कोई अजनबी उससे यह सवाल पूछेगा, या उसे इसका जवाब देना पड़ेगा। फिर भी, उसने जवाब दिया, 'उन्होंने फैसला किया है कि वे पलानी और उसकी पत्नी को इस बारे में सूचित नहीं करेंगे।'

परीकुट्टी ने उसे मृत्यु के बाद घटी सारी घटनाएँ सुनाईं। लेकिन कोचुनाथन के सवाल थमने का नाम नहीं ले रहे थे। 'आधी रात को यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी, छोटे मालिक?'
इसके जवाब में उसके पास बस यही एक बात थी कि वह उसे बताए कि उसे भाई कैसे बनाया गया था। लेकिन अगर वह यह बताता, तो उसे इसके पीछे छिपे राज़ को उजागर करना पड़ता। एक मुसलमान आदमी एक मछुआरे की बेटी का भाई कैसे हो सकता है? माँ ने उसे भाई क्यों बनाया था? परीकुट्टी जवाब ढूंढने में हिचकिचाया। आखिर में उसने कहा कि जो कुछ हुआ था उसकी बेरहमी से वह बहुत दुखी हुआ था। कौन जाने कोचुनाथन ने उसकी बात पर विश्वास किया या नहीं? उसने उसे पलानी का घर बताया।
वह करुथम्मा से बात करना कैसे शुरू करता? क्या उसे सीधे ही खबर दे देनी चाहिए? वह कैसे समझेगी?
सभी नावें समुद्र में थीं। परीकुट्टी पलानी के घर के सामने खड़ी थी। वह छोटा सा घर एकदम शांत था।
परीकुट्टी की जीभ सूख गई। उसका गला सूख गया था। कुछ देर तक वह उसी स्थिति में खड़ा रहा। अनजाने में ही उसके गले से एक आवाज़ निकली - करुथम्मा। किसी ने उसकी पुकार का जवाब नहीं दिया। उसने फिर पुकारा।
‘वह कौन है?’ घर के अंदर से एक आवाज आई।
पारीकुट्टी ने करुथम्मा की आवाज पहचान ली।
‘मैं हूं, करुथम्मा!’
‘मैं? मैं कौन हूँ?’
क्या तुम मुझे पहचान नहीं पा रहे हो?
'कौन?'
‘मैं… मैं… परीकुट्टी।’
सन्नाटा! यह फैलता गया। घना।
‘करुथम्मा, मुझे तुम्हें कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात बतानी है!’
घर के भीतर से आती आवाज कांप उठी और वह रोते हुए बोली, 'क्या तुम मुझे मेरे चले जाने के बाद भी शांति से नहीं रहने दोगे?'
एक क्षण बाद, उसने फिर कहा, 'नहीं, नहीं, मैं दरवाजा नहीं खोलने वाली। मैं तुम्हें देखना नहीं चाहती।'
वह रो रही थी।

ये शब्द परीकुट्टी के दिल को छलनी कर गए। यह सच था। वह शरण लेने के लिए चली गई थी। लेकिन उसे यहाँ भी शांति नहीं मिली। उसने सोचा कि क्या उसे बिना कुछ कहे वापस लौट जाना चाहिए। नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा। वह उसे यह खबर ज़रूर बताएगा, भले ही वह घर के अंदर हो। लेकिन वह इतनी अचानक यह बात कैसे कह सकता था? परीकुट्टी ने उससे फिर से दरवाज़ा खोलने की विनती की।
‘क्या तुम मुझे नहीं जानती, करुथम्मा?’
उसने गुस्से से दांत भींचते हुए कहा, 'मैं करती हूँ!'
‘तो फिर तुम बाहर क्यों नहीं निकलते?’
इसका कोई जवाब नहीं मिला। उसने कहा, 'मैं वही पुराना परीकुट्टी हूं। और मुझे पता है कि करुथम्मा की जिंदगी में अब एक मछुआरा है।'
उसने बेबसी से कहा, 'मैं तुम्हें देख नहीं सकती।'
परीकुट्टी को पता नहीं कैसे, लेकिन उसके अंदर हिम्मत उमड़ आई। 'तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए। हमें फिर मिलना होगा! हमें आमने-सामने बात करनी होगी!'
‘नहीं, ओह नहीं, नहीं… वह समुद्र में चला गया है! तूफानी, तेज हवाओं वाले समुद्र में!’
और सन्नाटा!
‘करुथम्मा!’
मानो निराशा ही उसकी नियति हो, उसने उत्तर दिया, 'क्या?'
'मैं तुम्हारा भाई हूँ!'
'भाई?'
उनका वो गहरा बंधन व्यर्थ नहीं गया था। बल्कि, अब वो एक नाम के साथ एक नए रिश्ते में बदल गया था। वह जानती थी कि मरते हुए आदमी को सहारा मिलने पर कितनी राहत मिलती है। परीकुट्टी ने कहा, 'जी बहन, तुम्हारा भाई, अब तुम्हारा एक भाई है!'
'नहीं।'
‘तुम्हारा भाई फोन कर रहा है! तुम्हारी माँ ने कहा कि मुझे तुम्हारी देखभाल बहन की तरह करनी चाहिए।’
'मेरी माँ?'
‘जी हाँ। दरवाजा खोलो। मैं तुम्हें कुछ बताता हूँ…’
करुथम्मा ने दीपक जलाया, दरवाजा खोला और बाहर निकल गई।

वह उसे यह दुखद खबर कैसे सुनाता? आखिरकार, यह खबर अपने सबसे भयावह रूप में सामने आई। 'करुथम्मा, चक्की मर गई!'
करुथम्मा जोर-जोर से रोने लगी। जब तक पड़ोसी आए, परीकुट्टी जा चुका था। पड़ोस की महिलाओं ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की। उन्हें इस खबर पर यकीन नहीं हो रहा था। गहरे दुख के उस क्षण में भी उसने किसी को नहीं बताया कि उसे यह खबर कैसे मिली। उन्होंने कहा कि उसने यह सपना देखा था। जैसे-जैसे उजाला बढ़ता गया और बहुत सारे आँसू बह चुके थे, वह खुद से इस सब की तर्कसंगतता पर सवाल करने लगी। उसे खुद भी इस खबर पर यकीन नहीं हो रहा था। क्या यह किसी प्रेम में डूबे प्रेमी का छल नहीं हो सकता? अगर उसकी माँ मर गई थी, तो क्या कोई उसे सूचित करने नहीं आया था?
उसके पति समुद्र में गए हुए थे। उनके लौटने पर खाना परोसना होगा। पत्नी होने के नाते, उन्होंने घर के काम-काज शुरू कर दिए। हमेशा की तरह, उन्होंने चावल और करी पका ली। और अब किसी के आने और खुशखबरी सुनाने का इंतज़ार करने लगीं।
पलानी सामान्य से पहले ही तट पर पहुँच गई। करुथम्मा विलाप करते हुए बोली, 'मेरी माँ मर गई!'
ऐसा लग रहा था मानो उसने सुना ही न हो। उसने उसके चेहरे पर एक ऐसी गंभीरता देखी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। वह रो पड़ी। 'मैंने अपनी माँ को मार डाला।'
बिना किसी सहानुभूति के, उसने पूछा, 'आपको यह बताने के लिए यहां कौन आया था?'
वह हिचकिचाई, जवाब देने में असमर्थ। उसने उसे ध्यान से देखा। 'वो छोटी बॉस।'
और अब वह कहाँ है?
उन्होंने जो कहना था कह दिया और चले गए। उसके बाद से मैंने उन्हें नहीं देखा है।
वह इतना उदास क्यों था? क्या इसका कारण परीकुट्टी का आना था? या फिर, क्या इसका कारण मृत्यु की घोषणा सही तरीके से न होना था?
पलानी ने पूछा, 'क्या तुम्हारे पिता ने उस मुस्लिम व्यक्ति को भेजा था?' करुथम्मा के पास कोई जवाब नहीं था। पलानी ने पूछा, 'क्या उनके पास भेजने के लिए कोई मछुआरे लड़के नहीं हैं?'

वह क्या कह सकती थी? सिर्फ इतना ही नहीं। क्या यह नियमों और पाबंदियों की बात करने का समय था? पलानी के मन में कुछ चल रहा था। लेकिन वह नहीं जानती थी कि क्या। उसके पास कहने के लिए बस एक ही बात थी, 'चलो चलते हैं।'
'कहाँ?'
‘नीरकुन्नथ को।’
उसने अपने होंठों को एक व्यंग्यात्मक मुस्कान में बदल दिया। इसका मतलब था कि उसका जाने का कोई इरादा नहीं था।
मेरी मां की मृत्यु हो गई है।
इससे पलानी पर भी कोई असर नहीं पड़ा। करुथम्मा ने कहा, 'वह तुम्हें अपने बेटे की तरह प्यार करती थी।' उसकी माँ निर्दोष थी। गलती उसकी माँ की थी। और यह इसलिए हुआ क्योंकि उसकी माँ ने ज़िद की थी कि वह उसके साथ चले। उसने कहा, 'समुद्र की माँ की कसम, जब मैं हिचकिचाई, तो मेरी अम्माची ने कहा कि मुझे जाना चाहिए। चलो चलें!'
उसने उसके पैर गले लगाए और रोने लगी। वह वहाँ मूर्ति की तरह खड़ा रहा। चक्की ही थी जिसने पलानी को माँ का असली रूप दिखाया था। वही तो मरी थी। क्या उस मृत्यु का पलानी पर कोई असर नहीं हुआ होगा? शायद हुआ हो। अपने भीतर से उसने कहा, 'उन्होंने मुझे वापस किनारे पर धकेल दिया।'
करुथम्मा ने पूछा, 'ताकि हम नीरकुन्नथ जा सकें?'
उन्होंने यही कहा था। लेकिन बात वो नहीं है।
'तब?'
एक क्षण बाद पलानी ने कहा, 'कोचुनाथन चेट्टन ने उसे यहाँ आते देखा। वह पप्पू पूरे समुद्र तट पर बुरी अफवाहें फैला रहा है। तो... तो...'
उसकी आवाज भर्रा गई। उसने निगलते हुए कहा, 'उनके बच्चे हैं। इसीलिए उन्होंने मुझे वापस भेज दिया।'
करुथम्मा समझ गई। तो यह भी हो गया। उसे उससे बस एक ही बात पूछनी थी। उसने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें मुझ पर शक है?'
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।
'खबर लेकर यहां आने के बाद वह मुसलमान कहां जाकर खुद को फांसी लगाने चला गया?'
मैंने उसे नहीं देखा।
‘वह यहाँ क्यों आया?’

'क्या मछुआरे मुसलमानों को मौत की खबर देने भेजते हैं? और वह भोर होते ही क्यों आया?'
चारों ओर संदेह का माहौल था। सभी लोग पलानी के प्रति सहानुभूति रखते थे। पलानी के घर में अनिश्चितता का माहौल बना रहा। करुथम्मा ने विनती की कि वे उसकी माँ के शव को देखने जाएँ; ताकि वह अंतिम बार पश्चाताप कर सके। वह एक पत्नी के अधिकार से नहीं, बल्कि एक शोक संतप्त महिला के गहरे दुःख से बोल रही थी।
वह कुछ नहीं बोलता था।
उसने पूछा, 'क्या तुम मुझ पर भरोसा करते हो?'
उसने कहा, 'हाँ, लड़की!'
लेकिन वह बहुत कुछ जानना चाहता था। उसके उस पर अटूट विश्वास से यह स्पष्ट था। वह उसे सब कुछ बताने को तैयार थी। वह कुछ भी नहीं छिपाएगी। लेकिन उसके पास शब्दों को बोलने की न तो शक्ति थी और न ही कौशल। करुथम्मा के लिए यह एक बड़ा क्षण था। लेकिन पलानी यह नहीं समझ पाएगी कि यह कितना महत्वपूर्ण था। यह सिर्फ उसकी माँ की मृत्यु नहीं थी, पलानी किसी भी माँ की मृत्यु के महत्व को समझ नहीं पाएगी।
करुथम्मा बेबस होकर रोने लगी। उसके मन में एक विचार आया। कि उसे अकेले जाने की अनुमति दी जाए; वह उसी दिन लौट आएगी। इसका भी उसे कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिला। अगर वह अपने पति की बात न मानकर चली गई तो क्या होगा? लेकिन इसका मतलब यह होगा कि वह कभी वापस नहीं लौट पाएगी।
नहीं, वह इसके लिए तैयार नहीं थी। वह जन्म से ही मछुआरा थी और मछुआरे के रूप में ही मरेगी। यही उसकी दिवंगत मां की इच्छा थी।
वह उसके पैरों से लिपटकर वहीं मर जाएगी। यह सोचने का कोई कारण नहीं था कि उसका पिता, जिसमें उसकी माँ की मृत्यु की सूचना देने के लिए किसी को भेजने की भी दया नहीं थी, उसे अपने घर में ले जाएगा। न ही उसे इस बात का कोई अधिकार था। उसने अपने पिता की अवज्ञा की थी और हमेशा के लिए अपना घर छोड़कर एक आदमी के साथ चली गई थी। उसे अपना पूरा जीवन इसी छोटी सी झोपड़ी में गुजारना होगा।
करुथम्मा पंचमी के बारे में सोच रही थी। उसे मानो पंचमी की दर्द भरी चीख 'एचेची एचेची' सुनाई दे रही थी। जब वे खारे पानी से भीगी रेत में गड्ढा

खोदकर उसकी माँ को उसमें लिटाएंगे, तब पंचमी अकेली और हताश होकर रो रही होगी। अब उसे उस घर में अकेले ही रहना होगा।
उस किनारे पर और भी परीकुट्टी होंगे। पलानी, जो चुपचाप दूर तक देखता बैठा था, मानो उसका भी मन शांत नहीं रहा था। वह ऐसा व्यक्ति था जिसने कभी भी अराजकता का सामना नहीं किया था। तब तक धरती पर हर जगह उसके लिए स्वर्ग समान थी।
करुथम्मा उसके पास गई और पूछा, 'क्या तुम खाना नहीं खाना चाहते?'
'मुझे भूख नहीं है।'
'ऐसा क्यों?'
उसने पूछा, 'वह मुसलमान क्यों आया?'
करुथम्मा ने सच्चाई बताई। 'अगर मुझसे पूछो तो, उनका मकसद मुझे बर्बाद करना है, और क्या हो सकता है?'
वह अपनी परेशानियों का डटकर सामना करने को तैयार थी। करुथम्मा में इसके लिए पर्याप्त धैर्य था। पलानी भी दृढ़ निश्चयी था। उसने पूछा, 'करुथम्मा, वह तुम्हारा कौन है?'
वह उसकी बात को पूरी तरह समझ गई और उसने उसे सब कुछ बताने का फैसला किया। उसे बस यही दुविधा थी कि वह उसे यह कहानी कैसे सुनाए। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह शुरुआत कैसे करे। जब उसने सब कुछ बताने का फैसला कर ही लिया था, तो फिर शुरुआत कैसे की जाए, इससे क्या फर्क पड़ता था?
‘बचपन से ही हम समुद्र किनारे खेलते थे…’ और फिर उसने कहानी सुनाना शुरू कर दिया।
पलानी ने बिना क्रोध या किसी भावना को दिखाए उसकी बात सुनी। क्या वह उसकी कहानी की गंभीरता से प्रभावित नहीं हुआ? जबकि वह उसके व्यवहार से भयभीत हो गई थी।
जब वह काफी देर तक बोल चुकी थी, तब उसने पूछा, 'क्या आप मेरी कही बातों पर विश्वास करते हैं?'
पलानी ने कहा कि उसने ऐसा किया था। एक महिला अपने पति को अपनी प्रेम कहानी सुना रही थी। उस पर अविश्वास करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। क्या वह खुद पर गंदगी नहीं मल रही थी?
लेकिन वह उस अंदाज में अपनी कहानी सुनाना जारी नहीं रख सकी। कहानी में प्रवाह नहीं था।

उसकी कहानी में करुथम्मा अब अठारह साल की है। लेकिन उसने पैसों के बारे में बात नहीं की। उसने उसे गाने के बारे में नहीं बताया। और उसने उसे उस आखिरी विदाई के बारे में भी नहीं बताया। उसने बाकी सब बातों के बारे में बात की। क्या पलानी को शक था कि उसने कई बातें छुपाई थीं? कौन जानता है? उसने कहा, 'मेरा कोई भाई नहीं है। वही मेरा भाई है।'
उसे नहीं लगता था कि यह कारगर हुआ।
जब पलानी ने सब कुछ सुन लिया, तो उसने पूछा, 'तो यह सच है जो सब कहते हैं - आपको नीरकुन्नथ से दूर भेज दिया गया था - क्या ऐसा नहीं है?'
पत्नी के पास इसका केवल एक ही जवाब था: वह हमेशा इस तट के अनुरूप एक सच्ची मछुआरे की पत्नी बनी रहेगी।

पंद्रह

करुथम्मा ने उसे जो कुछ भी बताया था, वह सब सच था, जैसा कि वह जानती थी। हालाँकि उसने उसकी बात पर विश्वास कर लिया था, लेकिन उसके प्रति उसका उत्साह कम हो गया था। पलानी सोच में डूबा हुआ था। उसका उत्साह फीका पड़ गया था। वह पप्पू का आमना-सामना कैसे कर सकता था?
वह पवित्र थी; और उसे उस पर भरोसा था। लेकिन अगर पप्पू ने कहा कि वह तट के लिए उपयुक्त नहीं है, तो वह उसकी बात कैसे नकार सकता था? वह उसे उसके पिता के घर से जबरदस्ती खींचकर लाया था। कर्तव्य की भावना, मछुआरा होने के कारण बनी उसकी मान्यताएँ उसे उसे छोड़ने नहीं देतीं। अगर वह उसे त्याग देता, तो वह कहाँ जाती?
उसने उसके सामने अपना दिल खोल दिया था। उसने अपने कबूलनामे पर भरोसा किया। उसने हर दिन आँसुओं के साथ स्वीकार किया कि उससे गलती हुई थी। अतीत को भुला देना था। यह निश्चित था कि अब से वह सदाचारी बनेगी। पलानी को इस बात में कोई संदेह नहीं था।
अब वह उसे चूमने के प्रलोभन को रोक नहीं पा रहा था। उसका आलिंगन अब उसे कसकर नहीं जकड़ रहा था। आँखों में आँसू लिए, और पहले से दुगने जोश के साथ, वह कुछ बुदबुदा रही थी। वह उसे वापस अपनी ओर खींचने की कोशिश करती रही। यह जानते हुए कि वह उससे दूर जा चुका है और उसे वापस लाने का तरीका न जानते हुए, उसने उसे कसकर पकड़ लिया। लेकिन हर बार उसे लगा कि वह उससे दूर जा रहा है। वह उससे बस यही पूछ सकी कि क्या वह उस पर भरोसा करता है। वह उससे यह पूछने की हिम्मत नहीं कर पाई कि क्या वह उससे प्यार करता है। उसे लगा कि उसने उससे यह पूछने का अधिकार खो दिया है।
पलानी, जो कभी झगड़ा नहीं करता था, अब लड़ाइयों में पड़ने लगा। एक दिन पप्पू ने व्यंग्य भरी नज़रों से उसकी आँखों में देखते हुए कुछ बातें कहीं। पलानी ने ये सब बातें करुथम्मा से सुनी थीं। लेकिन जब एक दूसरे आदमी ने ये सब बातें उसके मुँह पर कह दीं, तो वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था?
वे एक-दूसरे को धक्का-मुक्की कर रहे थे। पलानी ने पप्पू को मारा।
लेकिन झगड़ा यहीं खत्म नहीं हुआ। पप्पू उस तट पर बसे एक बड़े परिवार से था।
उसके कई रिश्तेदार थे। इसे महज़ एक मामूली अपमान नहीं माना गया। बल्कि,

इसे अहंकार का कार्य समझा गया – क्या पलानी में इतनी हिम्मत थी कि वह थेंगुमकोट्टाथिल परिवार के मछुआरे को पीट सके?
इस प्रकार, करुथम्मा की घर बसाने की योजना धरी की धरी रह गई। उन दिनों समुद्र भी सुनसान पड़ा था। पलानी को काम पर जाने की कोई इच्छा नहीं थी। करुथम्मा में भी इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उससे दिनभर की कमाई का हिस्सा पूछ सके।
क्या वह उसे सजा-संवारकर मन्नारशाला नहीं ले जाना चाहता था? क्या उस झोपड़ी को एक कमरे और रसोई वाले घर में नहीं बदल देना चाहिए था? वहाँ चक्की का पत्थर था। लेकिन अभी तो और भी बहुत सी चीजें हासिल करनी थीं! नाव और जाल की बात छोड़ो; वह तो एक लंबी योजना थी। वह हो भी सकती थी और नहीं भी। रोज़मर्रा के काम संभालना ही मुश्किल होता जा रहा था। सब कुछ बिखर रहा था। उसे एक कपड़ा और ब्लाउज चाहिए था। पलानी के पास तो सिर्फ एक लुंगी थी।
एक दिन करुथम्मा ने पूछा, 'क्या मैं कल से मछली बेचने के लिए पूर्व की ओर जाना शुरू कर दूं?'
पलानी ने तुरंत जवाब नहीं दिया। क्या उसे इस बारे में सोचना ज़रूरी था? फिर भी, वह चुप रहा। उसने उसे इसके फ़ायदे बताए। और यह भी कि वह तभी जाएगी जब वह इसकी अनुमति देगा।
उन्होंने कहा, 'तो फिर जाओ!'
दो दिन में उसने एक टोकरी खरीदी। अगले कुछ दिनों में, जब नावें किनारे के करीब आने लगीं, तो करुथम्मा पूर्व में मछली बेचने जाने की तैयारी में वहाँ पहुँच गई।
वह अभी नई दुल्हन थी और किनारे पर पहुँच चुकी थी। कोचुपेन्नू ने पूछा, 'तुम ऐसा क्यों कर रही हो?'
मैं भी इसी तट की एक मछुआरा हूं।
उस दिन यह चर्चा का विषय बन गया। इस बारे में भी लोगों की राय बंटी हुई थी। करुथम्मा इस काम से बिल्कुल अनजान थी। क्या उसने कभी सोचा था कि उसे भी यह काम करना पड़ सकता है? कौन जाने? उसकी माँ ने तो यह किया था। क्या चक्की ने कभी सोचा था कि उसकी बेटी को मछली से भरी एक भारी, टूटी-फूटी टोकरी ढोनी पड़ेगी? क्या करुथम्मा ने भी कुछ पैसे बचाने की उम्मीद की थी?

हालांकि उसने उससे पूछा नहीं, फिर भी उसने उसे अपने दिन भर के कारोबार के बारे में बताया। उस दिन उसे नुकसान हुआ था, लेकिन उसने अगले दिन के लिए सारी तैयारी कर ली थी। वह एक और बात पर उसकी अनुमति चाहती थी। वह कंबवाला बनाने में हाथ आजमाना चाहती थी। वह चाहती थी कि वह उसे किसी ऐसे व्यक्ति से मिलवाए जो इस काम में माहिर हो।
उन्होंने कहा, 'भूल जाओ। मैं नहीं कर सकता।'
अगले दिन मैकेरल मछली पकड़ी गई। करुथम्मा ने अपने पास मौजूद पैसों से जितनी हो सके उतनी मछलियाँ खरीदीं। पिछले दिन की तरह, वह बाकी सभी महिलाओं से पीछे रह गई। जिन लोगों से उसने पहले से बात तय की थी, उनमें से कई उसका इंतज़ार कर रहे थे। बाकी महिलाओं ने एक आना में दो मछलियाँ बेची थीं। करुथम्मा ने दो आना में पाँच मछलियाँ बेचीं। हालाँकि मुनाफा कम था, लेकिन उसे फिर से कई घरों से नियमित ग्राहक मिलने का भरोसा हो गया। उन्होंने उसे अगले दिन फिर आने के लिए कहा। वह नई मछुआरा वाकई अच्छी है।
कुछ दिनों बाद तट पर भयंकर झगड़ा हो गया। पूरब में मछली बेचने वाली सभी मछुआरिनें करुथम्मा के खिलाफ एकजुट हो गईं और उसे बुरा-भला कहने लगीं। करुथम्मा की जुबान इतनी लंबी नहीं थी कि वह उनमें से एक का भी सामना कर सके। भला वह पाँच-छह महिलाओं का सामना कैसे करती? वह वहीं खड़ी रोने लगी। एक महिला गुस्से से आग बबूला होकर बोली, 'यह वेश्या कहीं किसी मुसलमान के साथ सोई थी। यह हम सबको बर्बाद करने यहाँ आई है!'
फिर बाकी लोगों ने कहा, 'उसे खूब काम मिलेगा। उन घरों के मर्द सिर्फ उसे ही चाहते हैं... वो बेशर्म औरत है, बस यही है वो!'
ये सब बातें करुथम्मा के सामने ही कही गईं। इन बातों से उसके कान दुखने लगे। वह रोते-रोते घर लौट गई। इस दुनिया में कोई भी उसके लिए खड़ा होने वाला नहीं था। कोई भी उसकी सच्चाई नहीं जानता था। इसलिए, ऐसा लगता था कि उसे दूसरी मछुआरों की तरह जीविका कमाने का अधिकार नहीं था।
समुद्र से लौटे पलानी ने उससे यह नहीं पूछा कि वह उस दिन मछली बेचने क्यों नहीं गई। उसने बस उसे गौर से देखा। यह पहली बार नहीं था जब उसने उसका आँसुओं से भीगा चेहरा देखा था। वैसे भी वह उसे अक्सर इसी हालत में देखता था। लेकिन उस दिन वह और भी ज्यादा उदास थी। उसने उससे कारण पूछा। कुछ नहीं, उसने जवाब दिया। क्योंकि वह उसे बस इतना ही बता सकती थी। वह उसे कैसे बताती कि क्या हुआ था?

क्या त्रिकुन्नपुझा की किसी भी महिला ने कभी कोई गलती नहीं की थी? नीरकुन्नथ में जब लोग झगड़ते थे, तो वे अतीत की कहानियों से एक-दूसरे पर झूठे आरोप लगाते थे। हर किसी की अपनी कहानी होती थी। यही चलन था। लेकिन वह यहाँ किसी के बारे में कुछ नहीं जानती थी। अगर जानती तो उनके बारे में कहानियां सुनाती। क्यों न सुनाती? करुथम्मा ने ऐसा कौन सा गंभीर अपराध किया था?
क्या लड़के-लड़कियां इस किनारे पर एक साथ नहीं खेलते? क्या उसने उन्हें सीपियाँ चुनते, रेत की सुरंगें बनाते और छोटी मछलियाँ पकड़ते नहीं देखा था?
ये औरतें कभी इसी किनारे पर बच्चियां हुआ करती थीं। एक पल के लिए करुथम्मा ने सोचा कि वह इनके बारे में कहानियां कैसे इकट्ठा कर सकती है। क्या इस किनारे की हवा में कोई पुरानी प्रेम कहानी समाई हुई थी? क्या चांदनी रातों में किसी मछुआरे की पापी आत्मा इस किनारे पर भटकती थी? ऐसा गीत पहले कभी किसी ने नहीं सुना था।
करुथम्मा ने मछली बेचने के लिए पूरब जाना बंद कर दिया। लेकिन उसने दूसरा काम शुरू कर दिया। वह किनारे से मछली खरीदती, उसे नमक लगाकर सुखाती और उसका स्टॉक जमा करती। जब ताज़ी मछली नहीं मिलती, तो वह उसे अच्छे दाम पर बेच लेती। या फिर, वह उसे झोपड़ी मालिकों को बेच देती।
इस प्रकार करुथम्मा ने अपना जीवन नए सिरे से संवारा। लेकिन सच तो यह है कि क्या हमेशा से ऐसा ही नहीं था? एक ऐसा आंतरिक जीवन जिसके बारे में वह किसी से बात नहीं कर सकती थी। वह वहाँ अकेली रहती थी। वहाँ भी उसने कोई दोस्त नहीं बनाया। कई दिन ऐसे भी थे जब वह किसी से बात नहीं करती थी।
पलानी की भी यही हालत थी। वह हर दिन काम पर जाता था। उसकी ऊर्जा और उत्साह खत्म हो चुका था। कभी उसके दोस्त हुआ करते थे। ऐसा लगता था मानो उसने उन सबको ही त्याग दिया हो।
करुथम्मा और पलानी का जीवन नीरस हो गया। शुरुआती दिनों का जोश गायब हो गया था। यह स्वाभाविक था कि चीजें थोड़ी स्थिर हो जाएं। अगर उनका जीवन स्वाभाविक रूप से एक स्तर पर स्थिर हो जाता, तो जोश भी एक समतल सतह पर आ जाता। लेकिन ऐसा नहीं था। एक धधकती लौ पल भर में बुझ गई। उनके जीवन भर के सपने और योजनाएं अचानक चकनाचूर हो गईं। और अगर आप अब भी पूछें कि वे पति-

पत्नी के रूप में बिना किसी जुनून के कैसे रह रहे थे, तो क्या इस दुनिया में ऐसे ठंडे विवाह नहीं होते?
क्या करुथम्मा संतुष्ट थी? शायद। पलानी? शायद वह भी संतुष्ट था। जब करुथम्मा तट पर चर्चा का विषय बनी, तो पलानी भी चर्चा का विषय बन गया। जब वह चलता, तो लोग उसके बारे में पीठ पीछे कानाफूसी करते। और भले ही ऐसा न होता हो, उसे शक था कि ऐसा हो रहा है।
कुछ महीने पहले जब वह इस तट पर रहता था और समुदाय से उसके संबंध अभी भी बहुत कमज़ोर थे, तो जो भी उससे मिलता, वह मुस्कुराते हुए कुछ देर गपशप करता। उसे एक नेक इंसान माना जाता था। लेकिन अब जब वह यहाँ से गुज़रता, तो लोग उसके बारे में दबी ज़बान में बातें करते। कितना बड़ा बदलाव! पलानी ने किसी के खिलाफ कोई गुनाह नहीं किया था। जिस दिन उसने पागलों की तरह नाव को गहरे समुद्र में चलाया था, उस कुशल नाविक को कभी भी पतवार नहीं सौंपी गई थी। सब डरे हुए थे। न सिर्फ उसकी नाव में सवार लोग, बल्कि हर कोई। शायद उन्हें लगता था कि उस पर किसी बुरी आत्मा का साया है; या फिर करुथम्मा एक पतित स्त्री थी, इसलिए उसके साथ एक ही नाव में होना किसी आपदा को न्योता देना था – एक ऐसा डर जिससे मछुआरिनें अपने पुरुषों को डराती थीं। आख़िरकार, यह एक सदियों पुरानी मान्यता थी।
उस जगह पर एक भी प्राणी ऐसा नहीं था जो बेचारी करुथम्मा के लिए आवाज़ उठा सके। और यही हाल बेसहारा पलानी का भी था। कोई भी उन पर झूठे आरोप लगा सकता था। विरोध करने वाला कोई नहीं था।
पलानी की नाव कुंजन वलक्करन की थी। वह एक ऐसे परिवार से थे जिनके पास हमेशा से नावें और जाल हुआ करते थे। लेकिन इन दिनों उनकी इकलौती संपत्ति वही एक नाव और जाल थी। उन्होंने अपनी ज़मीन और घर तक गिरवी रख रखे थे। अगर उनके पास वह एक नाव और जाल न होते, तो वे भूखे मर जाते। न ही उनकी सामाजिक स्थिति उन्हें किसी और की नाव में काम करने की इजाज़त देती थी। इतना ही नहीं, वे एक बुजुर्ग व्यक्ति भी थे।
करुथम्मा के बारे में अफवाहें उसके कानों तक पहुँच रही थीं। कितनी बुरी बात है! एक गिरी हुई औरत का पति अपनी नाव में समुद्र में जा रहा है। नाव के हर दिन किनारे लौटने तक उसे एक पल भी चैन नहीं मिलता था। चूंकि पलानी नाव में था, इसलिए यह पूरी तरह संभव था कि नाव पलट जाए और टुकड़े-टुकड़े हो

जाए। नाव तेज लहरों में फंसकर गहरे समुद्र में बह सकती थी। किसी भी तरह का हादसा हो सकता था! वह सब कुछ खो सकता था।
कुंजन वलक्करन ने पलानी को छोड़कर सभी नाविकों के साथ एक गुप्त बैठक बुलाई। उन सभी को एक ही डर सता रहा था। और दिन-प्रतिदिन उनकी स्त्रियाँ उस डर को और बढ़ा रही थीं। हर दिन स्त्रियाँ समुद्र की माता से प्रार्थना करती थीं। इसलिए जब कुंजन वलक्करन ने चर्चा के लिए बुलाया, तो उन्हें राहत मिली।
कुमारू ने कहा, 'वलक्करन को अपनी नाव खोने का डर है। हमारे लिए तो जान जोखिम में है। हे भगवान, बारह परिवार बेघर हो जाएंगे।'
यह एक ऐसा विचार था जिसका वेलायुधन ने भी विरोध नहीं किया। वह भी मन ही मन भयभीत था।
कुंजन वलक्करन ने कहा, 'जी हां, आप सही कह रहे हैं। समुद्र से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।'
उनमें से किसी को भी इस बात पर कोई संदेह नहीं था। भले ही समय बदल गया हो, समुद्र के नियम नहीं बदले। न ही तट पर मछुआरों को नियंत्रित करने वाले नियम बदले। डर से कांपते हुए कुमारू ने कहा, 'जब हम समुद्र में होते हैं, तो अगर वह मुसलमान यहाँ आ जाए तो क्या होगा... क्या आप उस दुर्दशा की कल्पना कर सकते हैं?'
कुंजन वलक्करन भय से कांप उठा। 'हां, हां, हमारा क्या होगा?'
आंदिकुन्जू ने हताशा से कहा, 'सब कहते हैं कि मुसलमान अब भी इस तट पर आते हैं...'
कुंजन वलक्करन ने पूछा, 'सच में? अगर हम उसे खत्म कर दें तो क्या होगा?' वेलायुधन, 'यह तो इससे भी कहीं ज्यादा गड़बड़ होगी...'
घरों में महिलाएं व्याकुल थीं। नावों के समुद्र में रवाना होते ही वे रोने लगीं। नावों के तट के करीब आने पर ही उन्हें कुछ शांति मिली।
आंडीकुंजु ने आगे कहा, 'अगर ये औरतें सही हैं, तो क्या समुद्र की माता हमारी देखभाल करती? अगर पुराने नियम लागू होते, तो हममें से कोई भी जीवित नहीं होता। हम सब समुद्र की गहराई में डूबे होते।'
वेलुथाकुंजु ने बताया कि पप्पू ने दावा किया कि उसने हाल ही में चांदनी रात में परीकुट्टी को उस तट पर देखा था। वह रेत पर चलते हुए गाना गा रहा था! लगता है वह हर रात ऐसा ही करता था!

कुंजन वलक्करन यह बात जानता था। लेकिन वह यह भी जानता था कि नौकरी से निकाले गए कर्मचारी को इसका कारण ज़रूर पता होगा। जब वह पलानी को देखेगा, तो उसका सामना कैसे करेगा? यही बात कुंजन वलक्करन को परेशान कर रही थी। लेकिन यही एकमात्र रास्ता था। नाविकों ने यही फैसला किया और चले गए। कुंजन वलक्करन ने पलानी की जगह एक और आदमी को भेजने का इंतजाम किया।
पलानी हमेशा की तरह भोर होते ही जाग उठा और किनारे पर चला गया। लेकिन तब तक नाव जा चुकी थी। पलानी ज़ोर से चिल्लाया। उसकी आवाज़ दहाड़ में बदल गई। किनारे पर ऐसी आवाज़ पहले कभी नहीं गूंजी थी। उसे एहसास हुआ कि वह फंस गया है, और इस एहसास ने समुद्र के उस बच्चे के अंदर के इंसान को जगा दिया। उसके बाद जो सन्नाटा छाया, उसमें मांसपेशियां अकड़ गईं। समुद्र का वह बच्चा अपने वातावरण से बाहर निकल रहा था। उसका शरीर हवा और तूफ़ानों से लड़ने के लिए बना था। सालों से वह प्रकृति की शक्तियों से जूझता रहा था। लेकिन आज से उसे यह मौका नहीं मिल रहा था। इसी इनकार में उसकी ताकत जागृत हो उठी। पश्चिमी हवा उस दहाड़ को घरों के बीच की गलियों में ले गई। अगर नाविकों ने उसे सुना होता, तो क्या वे किनारे पर वापस आते? लेकिन शायद वे नहीं आए। जिस नाव से उसे इतना प्यार था, वह पश्चिम की ओर बहुत दूर निकल गई - मानो यह घोषणा कर रही हो कि उसे उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।
जागृत हो चुकी शक्तियों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता था। वह समझ गया था कि क्या हुआ है। पलानी समुद्र में कूद पड़ा। नाव तक पहुँचने के लिए; अपना अधिकार फिर से स्थापित करने के लिए। ऊदबिलाव की तरह, डॉल्फ़िन की तरह, वह पश्चिम की ओर दौड़ा। मछुआरे के रूप में, समुद्र के पुत्र के रूप में अपना जीवन जीना उसकी ज़रूरत थी। एक विशाल लहर, ऐसी लहर जो उस दिन तक इतनी ऊँची कभी नहीं उठी थी, उसके सिर के ऊपर से गुज़र गई। अगले ही पल, उसकी सारी शक्ति छीनकर, समुद्र ने उसे वापस किनारे पर पटक दिया।
पलानी हार गया; वह पराजित हो गया। वह उठा और कुंजन वलक्करन के घर भागा। उसे एक सवाल पूछना था, 'क्या मैं समुद्र में जाने के अयोग्य हूँ?'
कुंजन वलक्करन बेचैनी से इधर-उधर हिलने लगा, उसे कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। 'वह...'
‘यह झूठ है! सरासर झूठ। वह पतित स्त्री नहीं है। मुझे पता है!’
लेकिन यही तो सब लोग कह रहे हैं।
गुस्से से भड़कते हुए पलानी ने कहा, 'हां, वे यही कह रहे हैं!'

वह मुड़ा और वापस चलने लगा।

सोलह

जब पलानी घर लौटा तो करुथम्मा आश्चर्यचकित रह गई। उसे कारण समझ नहीं आया। उसने उससे पूछा कि क्या हुआ था। उसने कहा, 'तुम पतित स्त्री हो। इसलिए उन्होंने मुझे समुद्र में जाने के अयोग्य घोषित कर दिया है।'
करुथम्मा स्तब्ध रह गई। इतने सारे लोगों ने उसे कुटिल कहा था, लेकिन उसके पति ने उस पर कभी आरोप नहीं लगाया था। यह पहली बार था। वास्तव में, वह उस पर आरोप नहीं लगा रहा था, बल्कि सुनी-सुनाई बातों को दोहरा रहा था। और इस तरह, उसकी वजह से एक कुशल मछुआरा समुद्र से विमुख हो गया।
पलानी ने उससे पूछा, 'क्या तुम्हें नहीं पता था कि तुम एक मछुआरे की लड़की हो? तो फिर बचपन में तुम उस मुस्लिम लड़के के साथ क्यों खेलती-कूदती थी?' यह सच था। उससे पहले किसी ने ऐसा सवाल नहीं पूछा था। यहाँ तक कि जब उसकी माँ ने उसे डाँटा था, तब भी उसे कभी इतने गंभीर या स्पष्ट सवाल का जवाब नहीं देना पड़ा था। करुथम्मा असमंजस में थी। वह उस सवाल के सभी निहितार्थों को समझती थी। उसे जवाब देना ही था। लेकिन वह क्या कहती? इसलिए करुथम्मा ने इसे अपनी गलती मान लिया। आँसुओं के साथ उसने कहा, 'हो गया। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए!'
उसका गुस्सा उस पर निर्देशित नहीं था। उसने कहा, 'मैं तुम्हें क्यों दोष दूं? इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।'
करुथम्मा को राहत महसूस हुई। उसने उसे माफ कर दिया था। उसने उसकी सारी बातों पर विश्वास किया था। वह इसके लिए उसकी लापरवाह परवरिश को दोषी ठहरा रहा था। यह उसके लिए बहुत बड़ी राहत थी।
पलानी ने आगे कहा, 'उन्होंने अपनी बेटी को उस मुस्लिम लड़के के साथ मौज-मस्ती करने दी, और अब इसका खामियाजा उनकी बेटी को भुगतना पड़ रहा है। क्या बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी माता-पिता की नहीं होनी चाहिए?'
लेकिन पलानी का गुस्सा यहीं नहीं रुका। उसने उसके चेहरे को घूरते हुए पूछा, 'मुझे लगता है कि तुम्हारे पिता ने उस मुस्लिम लड़के को बहला-फुसलाकर धोखा देने के लिए तुम्हें चारा बनाकर नाव और जाल हासिल किए होंगे। वाकई कमाल की बात है!'

पलानी का शक जायज़ था। यह एक ऐसा रहस्य था जो उसने उसे नहीं बताया था। करुथम्मा सोचती थी कि उसे बता देना चाहिए था। एक दिन वह उसे इसके बारे में भी बता देगी।
पलानी ने अपनी पत्नी को निर्देश दिया, “देखो, जैसे तुम्हारे माता-पिता ने किया, तुम्हें भी अपने गर्भ में पल रहे उस जीव का पालन-पोषण करना है। यदि वह लड़की हो, तो तुम्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि वह किनारे पर किसी मछुआरे लड़के को नुकसान पहुंचाए। क्या तुम मुझे सुन रही हो?”
‘नहीं,’ करुथम्मा ने कहा। वह उसके व्यंग्य को समझ गई थी। वह अपने गर्भ में पल रहे बच्चे को कभी भी वह सब नहीं सहने देगी जो उसने सहा था; उसने बहुत कुछ सहा था, बहुत कुछ सीखा था। भले ही यह उसके जीवन का सबसे कठिन दौर था, करुथम्मा को राहत मिली थी। यह पहली बार था जब उसने उसके गर्भ में पल रहे बच्चे का ज़िक्र किया था। और पहली बार उसने खुलकर उसके दुराचार के बारे में बात की थी। पलानी उन अफवाहों पर विश्वास नहीं करता था जो हर जगह फैली हुई थीं। उफ़, यह अपने आप में एक राहत थी!
हालांकि वे कुछ समय तक एक ही घर में साथ रहे थे, लेकिन उसने इसका फायदा उठाने की हिम्मत नहीं की। इसके बजाय, एक असहाय प्राणी की तरह, जो सांत्वना की तलाश में हो, वह उसके पास जाकर बैठ गई। उसने उसे दूर नहीं हटाया। यह बहुत बड़ी बात थी। सचमुच यह एक उल्लेखनीय बात थी।
उसने पूछा, 'हम कैसे जिएंगे?'
पलानी ने इस बात पर विचार नहीं किया था।
उसने सबको कोसते हुए कहा, 'कमीने धोखेबाज़! ये मुझे किसी भी बस्ती में मछली बेचने तक नहीं जाने देते! और तुम्हें भी समुद्र में नहीं जाने देते!' पलानी सीधा खड़ा हो गया। उसने दृढ़ता से कहा, 'मैं एक मछुआरा हूँ, लड़की। मैं मछुआरे के रूप में ही जिऊँगा और मछुआरे के रूप में ही मरूँगा!'
उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो मर्दाना जोश से भरा हुआ था। मेहनत से मजबूत हुई उसकी मांसपेशियां लहरदार दिख रही थीं। वह एक दृढ़ निश्चयी मछुआरे की सुरक्षा में थी। पलानी ने दांत भींचते हुए कहा, 'मुझे समुद्र में जाने के अयोग्य घोषित करने का अधिकार किसे है? मैं समुद्र में काम करने के लिए ही पैदा हुआ हूं। समुद्र में सब कुछ मेरा है। मुझे इससे वंचित करने का अधिकार किसे है?'

पलानी का शरीर धार्मिक आक्रोश से कांप उठा। वह अपार धन-संपत्ति का स्वामी था!
‘एक मछुआरा ज़मीन जोतने या खोदने नहीं जाता। पलानी भी ऐसा नहीं करेगा। यह तो पक्का है।’ और फिर पलानी ने अपनी पत्नी को दिलासा देते हुए कहा, ‘चिंता मत करो। पलानी समुद्र से मिलने वाली चीज़ों से अपना जीवन यापन कर लेगा।’ यह वह समय था जब जाल समेटे जा रहे थे। वह पाँच साल की उम्र से ही समुद्र पर रहता आया था। यह पहली बार था जब वह बिना किसी काम के घर पर बैठा था। पश्चिम की ओर देखने पर पलानी को समुद्र के बीच में नावें दिखाई दीं। आज मैकेरल और कुरुची मछलियों का खूब शिकार हो रहा था! पलानी बेचैन हो गया। वह क्या कर सकता था? क्रोध से व्याकुल होकर वह वहीं बैठा बड़बड़ा रहा था, मानो उसकी दबी हुई मर्दानगी विद्रोह कर रही हो।
करुथम्मा के मन में कुछ हलचल सी हुई। अगर वह मछुआरा था, तो वह भी एक मछुआरिन थी। उसे भी समुद्र की संपदा से ही अपना जीवन यापन करना था। कोई भी मछुआरिन नारियल छीलकर या रस्सी कातकर अपना जीवन यापन नहीं करती थी। यह उसके लिए नहीं बना था। उसने पूछा, 'क्या मैं मछली बेचने के लिए पूरब की ओर जाऊं?'
पलानी ने इनकार करते हुए कहा, 'नहीं, तुम घर पर ही रहो। तुम्हें उस भारी टोकरी को ढोते हुए अपने पेट को इधर-उधर ले जाने की कोई जरूरत नहीं है।'
मैं ठीक हूँ, मैं अभी तक कमजोर या थका हुआ नहीं हूँ।
पलानी ने दृढ़ता से कहा, 'मैं तुम्हें यहाँ इसलिए लाया था क्योंकि मुझे पता था कि मैं तुम्हारी देखभाल कर सकता हूँ। मुझमें इसके लिए पर्याप्त शक्ति है। तुम्हें कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है।'
करुथम्मा ने उस सुझाव को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया। लेकिन उसे इससे हिम्मत मिली। एक दोषी महिला होने के नाते, वह अपने भविष्य को लेकर चिंतित थी। लेकिन यह कहकर कि उसे काम करने की ज़रूरत नहीं है, उसने यह जताने की कोशिश की कि वह उसका ख्याल रखेगा।
यह उसके जीवन का एक यादगार दिन था। क्या यही वह दिन नहीं था जब वह सचमुच एक पत्नी बनी? उसे और क्या चाहिए था? क्या इस दुनिया में उसके जैसा योग्य पति कहीं और मिल सकता था? उस दिन पति-पत्नी के बंधन के हर पहलू को परखा गया। बस एक ही बात बाकी थी। बस एक पहलू।

पलानी ने कहा, 'करुथम्मा, एक बात याद रखना... तुम्हें कभी भी भटकना नहीं चाहिए... फिर कोई भी तुम्हें इस तट पर मछुआरे के रूप में जगह देने से इनकार नहीं कर सकता।'
पलानी ने अपने मन की बात कह दी। तब तक वह हमेशा उसके पैरों से लिपटकर या अपना चेहरा उसकी छाती पर रखकर अपनी बेगुनाही का दावा करती रही थी। उसने कभी उससे ऐसी प्रतिज्ञा नहीं मांगी थी। वास्तव में, हर पति का यह अधिकार होता है कि वह अपनी पत्नी से ऐसी प्रतिज्ञा मांगे। इसके बिना पत्नी को अपनेपन का एहसास कभी नहीं होता। ऐसी प्रतिज्ञा विवाह के रीति-रिवाज में निहित होती है: तुम्हें कभी भी भटकना नहीं चाहिए। और यह पति के अपनी पत्नी के प्रति प्रेम का एक प्रमुख कारक होता है।
एक कृतज्ञ पत्नी पूर्ण संतुष्टि से उनके चौड़े सीने पर गिर पड़ी। उनकी आँखों में उमड़ते आँसू छलक पड़े। उन्होंने मानो उनके हृदय से कहा, 'आप ऐसा क्यों कहते हैं? मुझे पता है कि मेरी गलती है। क्या मैं कभी भटक जाऊँगी?' पलानी उसकी पीठ सहलाता रहा। उसने उसे दिलासा देते हुए कहा, 'रो मत। तुम्हें रोना नहीं चाहिए।'
बुझ चुका जोश फिर से भड़क उठा। उसकी मजबूत, मांसल भुजाओं ने उसे अपने आलिंगन की शक्ति से लगभग दम घोंट दिया। कामुक आनंद फिर से जागृत हो गया। अनाथ पलानी के पास अब किसी का सहारा था। और वह, अपने सगे-संबंधियों से बिछड़ी हुई असहाय स्त्री, अब पलानी पर निर्भर थी। वह उसके लिए, और वह उसके लिए। वे हाथ थामकर आगे बढ़ेंगे।
नावें किनारे के करीब आ गईं। पलानी व्यापार की चहल-पहल देख सकता था। पलानी ने कहा कि उसके दोस्त सोच रहे होंगे कि अब वह कैसे गुजारा करेगा। लेकिन वे उसे हरा नहीं पाएंगे। उन्हें कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। पलानी हार मानने वालों में से नहीं था।
करुथम्मा के मन में भी एक सवाल था। 'क्या उनकी पत्नियों में से किसी ने कभी कोई गलती नहीं की?'
‘बिल्कुल! झूठे हैं ये सब इस बारे में चुप हैं, इसे अपने तक ही सीमित रखे हुए हैं…’
वह इसके बारे में सब कुछ जानना चाहती थी। वह उन सभी के अतीत के बारे में जानना चाहती थी ताकि वह उसे उन्हीं के मुंह पर उछाल सके। उसकी जुबान इसके लिए काफी तेज थी।

उसने कहा, 'अगर अभी नहीं तो बाद में मैं उनमें से हर एक से पूछूंगी।'
सभी निर्णय ले लिए गए थे। और वे एक ही थे। लेकिन अब वे क्या करते? वे कैसे जीवित रहते?
हम क्या करें? आप इस बारे में क्यों नहीं बताते?
वह इसके बारे में सोचे बिना नहीं रह सका। यह एक गंभीर मुद्दा था। करुथम्मा ने आगे कहा, 'मेरे पास बारह रुपये हैं।'
इससे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। एक जाल की कीमत लगभग तीस रुपये होगी। करुथम्मा को एक विचार आया। 'क्यों न हम एक मछली पकड़ने वाली छड़ी खरीद लें?'
लेकिन अगर हम मछली पकड़ने की छड़ी खरीदते हैं तो क्या हमें डोंगी की जरूरत नहीं होगी?
‘और एक और व्यक्ति को डोंगी में जाना है। लेकिन कौन आएगा?’
पलानी ने इसे हल्के में खारिज कर दिया। 'इसकी चिंता मत करो। अगर कोई डोंगी होती, तो मैं अकेले ही चला जाता और हम सबके लिए हर दिन के लिए पर्याप्त कमा लेता।'
उस किनारे पर कुछ डोंगी थीं जो मछली पकड़ने के लिए बिल्कुल उपयुक्त थीं। करुथम्मा सोच रही थी कि क्या वे उनमें से एक डोंगी किराए पर ले सकते हैं। 'कोई हमें यह नाव नहीं देगा। अगर कोई दुर्घटना हो गई तो नाव खो जाएगी।'
तो इससे बाहर निकलने का रास्ता क्या है?
पलानी ने कुछ देर सोचा और फिर कहा, 'मुझे पैसे दे दो। मैं एक मछली पकड़ने का कांटा खरीद लूंगा।'
करुथम्मा ने पैसे गिने और उसे दे दिए। पलानी छड़ी खरीदने चला गया।
जीवन को अपने हाथ में लेने का निश्चय कर चुके एक व्यक्ति की पत्नी भाग्यशाली थी। एक बार फिर घर, घर का सामान, नाव, जाल और ऐसी ही अन्य चीजें क्षितिज पर दिखाई देने लगीं। गुमनाम मन्नारशाला अयिल्यम का निधन हो गया था। लेकिन अभी और भी बहुत कुछ होना बाकी था।
उसने प्रार्थना की कि उसके गर्भ में पल रही बच्ची न हो। लड़की होने के कारण उसने बहुत कष्ट सहे थे। और अगर बच्ची हुई, तो क्या इतिहास खुद को दोहराएगा? नहीं, वह ऐसा होने नहीं देगी। वह उस बच्ची को किसी लड़के के साथ खेलने या बड़े होने नहीं देगी। वह उसे किसी प्रेम प्रसंग में उलझने नहीं देगी।

और अगर लड़का होता? तो वह उसे किसी भी लड़की के लिए परेशानी का कारण नहीं बनने देती।
वह रसोई में चावल और करी पका रही थी। उसने सोचा कि वे एक बार फिर एक ही थाली में खाना खाएंगे। वह चावल का गोला बनाकर उसके मुंह में रखेगी। छोटा गोला नहीं, बल्कि बड़ा सा। करुथम्मा ने ऐसे कई सपने देखे।
चाहे वे भूखे ही क्यों न मर रहे हों, वह सब कुछ सह लेती। उसका पति उससे प्यार करता था। उसने उसके गुनाहों को माफ कर दिया था। उसे और क्या चाहिए था? उसके ईश्वर ने उसकी रक्षा की थी।
पलानी सूर्यास्त के बाद मछली पकड़ने की छड़ें लेकर घर लौटा। बड़ी और छोटी, सभी छड़ें! उसने उन्हें घुमाया और उन पर डोरियाँ कसने लगा। इस तरह सारी तैयारी पूरी हो गई।
जब तट पर सन्नाटा छा जाता, तो पलानी मछली पकड़ने की छड़ें लेकर समुद्र में उतर जाती। वह उसे तभी जाने देती जब वह अपना इरादा बता देता। वह किसी से बिना अनुमति के एक डोंगी उधार लेता और चुपके से समुद्र में चला जाता। तट के जागने से पहले ही वह मछली पकड़कर लौट आता। 'मुझे भी तो समुद्र से ही अपना जीवन यापन करना है।'
करुथम्मा डरी हुई थी। रात में अकेले समुद्र में जाना? कुछ भी हो सकता था। उसने कहा, ‘लेकिन। लेकिन…’
'क्यों नहीं?'
लेकिन अकेले!
मैं समुद्र का पुत्र हूँ!
जब वह चल रहा था तो उसने कहा, 'तुम्हें गहरे समुद्र में मछलियों का पीछा नहीं करना चाहिए!'
उन्होंने यह नहीं कहा कि वे ऐसा नहीं करेंगे।
करुथम्मा को नींद नहीं आ रही थी। वह अपनी झोपड़ी के पश्चिम में एक नारियल के पेड़ के नीचे बैठी थी। दक्षिण की ओर उसने एक डोंगी को समुद्र में जाते देखा।
करुथम्मा की हार्दिक प्रार्थनाओं ने उनके लिए ताबीज का काम किया होगा।
किसी के जागने से पहले ही पलानी लौट आया। वह कुछ मछलियाँ लेकर आया था।
सुबह-सुबह पलानी कार्तिकपल्ली के बाजार पहुँचा। उसने आठ रुपये में मछली खरीदी।

एक डोंगी की ज़रूरत थी। अगर वे इसके लिए पैसे बचाते, तो बहुत समय लग जाता। अगर उनके पास डेढ़ सौ रुपये होते, तो वे एक पुरानी डोंगी खरीद सकते थे। एक रास्ता था। उसके पास सोना था। लेकिन पलानी डोंगी खरीदने के लिए वह सोना बेचना नहीं चाहती थी।
‘यह तुम्हारे लालची पिता से आया है।’
उसने पलटकर जवाब दिया, 'नहीं, यह मेरा है! मेरी माँ ने इसे मेरे लिए बनाया था।'
फिर भी, मैं ऐसा नहीं कर सकता... मैं किसी लड़की की दौलत का इस्तेमाल नहीं कर सकता।
‘तो क्या मैं तुम्हारा नहीं हूँ?’
उसने कोई जवाब नहीं दिया। अपनी मछुआरिनों के गहने बेचकर नाव खरीदना उसकी योजनाओं में शामिल नहीं था।
फिर भी उसने उससे सोना ले लिया और उसे बेच दिया। इसके बाद उसने एक छोटी नाव खरीदी। भले ही वह उसकी मनचाही नाव न हो, लेकिन उस कीमत में उसे यही सबसे अच्छी नाव मिल सकती थी।
पलानी द्वारा नाव खरीदने की खबर से पूरा मोहल्ला उत्साहित था। शायद इस बारे में भी काफी अटकलें लगाई जा रही थीं। आखिर क्यों न लोग यह कहें कि नाव के लिए पैसा भी उसी मुसलमान से आया था?
पलानी का नया व्यवसाय ठीक-ठाक शुरू हुआ। कुछ दिन उसे पाँच-दस रुपये मिलते थे, और कुछ दिन कुछ नहीं। उसकी ऊर्जा और सुगठित मांसपेशियां संतुष्ट नहीं हो रही थीं। नाव बहुत छोटी थी। उसे ऐसा महसूस नहीं होता था जैसे उसने कोई काम किया हो; उसकी ऊर्जा को कोई गति नहीं मिल रही थी; वह पर्याप्त थकता नहीं था। इसके अलावा, नाव और चप्पू उसके लिए पर्याप्त बड़े नहीं थे। उसे अपने लिए एक बड़ी नाव चाहिए थी। और वह चाहता था कि नाव के पतवार पर एक विशाल चप्पू लेकर खड़ा हो और जालों के घेरे से बड़ी मछलियों का शिकार करे। करुथम्मा ने उससे पूछा, 'अगर तुम्हारे पास एक बड़ी नाव हो तो क्या तुम अकेले जाओगे? तुम्हारे साथ कोई नहीं जाएगा!'
अगर मेरे पास नाव होगी, तो वे गली के कुत्तों की तरह सूंघते हुए आएंगे! लेकिन इसी बीच पलानी ने एक बात पक्की कर ली। 'मैं किसी दूसरे आदमी की नाव में समुद्र में नहीं जाऊंगा!'

करुथम्मा को गर्भावस्था के कारण थकान महसूस होती थी। उसका पेट भी फूलता जा रहा था। जब वह समुद्र में जाता, तो उसके मन में घर की यादें ताजा हो जाती थीं। वह समुद्र में ज्यादा समय नहीं बिता सकता था।
एक दिन जब वह समुद्र से घर लौटा, तो वहाँ कुछ महिलाएँ जमा थीं। उन्होंने उसे देखकर मुस्कुराते हुए कहा, 'यह एक लड़की है!'
सुपारी के पेड़ की छाल से बने एक कुंड में एक नवजात शिशु को नहलाया जा रहा था। शिशु ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था। दाई ने नहाए हुए शिशु को पलानी को सौंप दिया। उसे शिशु को गोद में लेने का तरीका नहीं सूझ रहा था। उसने पहले कभी किसी शिशु को गोद में नहीं लिया था।
जब पति-पत्नी अकेले थे, तो उसने उससे पूछा, 'तुम इतनी सुस्त क्यों हो?'
वह सुस्त थी।
क्या इसका कारण यह है कि बच्ची है?
उसने कहा, 'अगर लड़का होता तो...'
उसने आगे कहा, 'क्या पिता को भी ऐसा ही महसूस नहीं होता?'
'ओह, मुझे ऐसा नहीं लगता।'
‘तुम बस यूं ही कह रहे हो!’
'नहीं, इससे क्या फर्क पड़ता है कि वह लड़का है या लड़की?'
उसने एक ही वाक्य में अपना फैसला उसे बता दिया। 'मैं इस लड़की को दूसरी करुथम्मा बनने के लिए नहीं लाऊंगी!'
पलानी मुस्कुराये. 'और न ही पलानी चेम्बंकुंजु होंगे!'
उस नन्हे बच्चे के आने से उनके जीवन में एक नया अर्थ, एक नई गहराई आ गई। वे दोनों एक और जीव के लिए भी जी रहे थे। एक और जीवन उन पर निर्भर था। पलानी के लिए, वह बच्चा केवल आनंद का स्रोत था। जब वह मछली पकड़ने के लिए अपनी छड़ी का इंतज़ार करता, तो उस नन्ही परी जैसी आँखों के बारे में ही सोचता। और फिर उसे घर लौटने की तीव्र इच्छा होती। करुथम्मा ने पलानी को बच्चे को गोद में लेना सिखाया। वह उसे डांटती, 'अगर तुम बच्चे को ऐसे ही गोद में लिए रहोगे, तो वह बिगड़ जाएगी!' डरकर पलानी उसे नीचे रख देता।
करुथम्मा के लिए, इस बच्चे ने दुख के कई कारण पैदा कर दिए थे। उसकी माँ उसे देखने के लिए वहाँ नहीं थी। जब वह बच्चे का चेहरा देखती, तो उसे पंचमी की याद आ जाती। पंचमी, जो बचपन में खुशी से उछल-कूद करती थी, कभी उसकी जिंदगी थी। पंचमी ने कोई गलती नहीं की थी। लेकिन उससे भी रिश्ता टूट चुका था। वह

कैसे इस दुख से उबर रही होगी? करुथम्मा सोचती। यह चिंता उसके मन में धधक रही थी।
एक दिन पलानी एक खबर लेकर आई। चेम्बंकुंजू चेरथला या उसके आस-पास कहीं से एक स्त्री को घर ले आया था। नीरकुन्नथ के किसी व्यक्ति ने इसका जिक्र किया था और इसी तरह यह बात पलानी तक पहुँची। और इस तरह उस घर में जहाँ करुथम्मा का जन्म और पालन-पोषण हुआ था, जिस घर पर उसकी माँ का राज था, एक अजनबी स्त्री ने रानी और रखवाली करने वाली बनकर पदभार संभाल लिया था। उसकी माँ ने वह घर बनाया था; सब कुछ उसकी माँ का था। वह अजनबी स्त्री पंचमी के साथ कैसा व्यवहार करेगी? जब पलानी बच्चे को गोद में लेकर घूमती, तो वह सोचती कि एक समय उसके पिता ने भी उसे इसी तरह गोद में लिया होगा। उसके पिता ने भी कभी उससे प्रेम किया था।
जैसे ही उसे लगा कि वह पलानी के साथ खुलकर बातें कर सकती है, यहाँ तक कि उसकी कमियाँ भी निकाल सकती है, उसने अपने घर के मामलों को उठाने का मौका चुना। 'मेरे पिता चाहते थे कि शादी के बाद तुम मेरे घर में ही रुक जाओ।' उन्होंने पूछा, 'क्या आपको लगता है कि कोई सक्षम मछुआरा अपनी पत्नी के घर में इस तरह रहना पसंद करेगा?'
एक बार जब वह बच्ची को गोद में लिए हुए था, तब उसने कहा, 'जब मैं उसका चेहरा देखती हूं तो मुझे अपनी पंचमी का बचपन का चेहरा याद आ जाता है। मैं उसे कभी नीचे नहीं रखूंगी।'
आँखों में आँसू लिए करुथम्मा ने आगे कहा, 'बेचारी बच्ची! सौतेली माँ जो भी करेगी, उसे सहना ही पड़ेगा।'
पलानी ने पूछा, 'ऐसा क्यों है?'
‘सौतेली मांएं ऐसी ही होती हैं!’
'क्या किया जा सकता है?'
उसने संशयपूर्वक कहा, 'मैं उसे देखना चाहूंगी।'
पलानी ने कोई जवाब नहीं दिया।
एक बार फिर खेल-खेल में हँसी-मज़ाक के दौरान, करुथम्मा ने पूछा, 'क्या मैं एक बार नीरकुन्नथ जाऊँ? अपनी पंचमी के दर्शन करने के लिए?'
उन्हें यह बात पसंद नहीं आई। मनमोहक मुस्कान के साथ उसने कहा, 'सुनो, हमारी एक बेटी है। वह अपने पिता से मिलने नहीं आएगी!'

उसने कठोर स्वर में पूछा, 'तुम क्या चाहते हो? उस मुसलमान को देखना चाहते हो? क्या तुम पंचमी को बहाना बनाकर वहाँ जा रहे हो?'
करुथम्मा स्तब्ध रह गई। कुछ भी नहीं बदला था। उस दरिंदे का स्वभाव वही था। क्या 'उस मुसलमान' के नाम से जानी जाने वाली वह काली छाया अभी तक गायब नहीं हुई थी? क्या वह कभी मिटेगी नहीं?
करुथम्मा को लगा कि उसने गलत कदम उठा लिया है। उसने कहा, 'नहीं, मैं कभी नीरकुन्नथ नहीं जाऊंगी। और न ही मैं कभी वहां जाने की इच्छा जताऊंगी।' लेकिन कोई सांत्वना नहीं मिली। यह सोचकर कि कहीं उसका जीवन फिर से अंधकारमय न हो जाए, उसने आँखों में आँसू लिए पूछा, 'क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?'
एक काली परछाई जो जीवन की गहराई तक फैली हुई थी। वह इससे कैसे बच सकती थी? कुछ नहीं, वह कुछ नहीं कर सकती थी। उसे एक बार फिर प्रायश्चित करना होगा ताकि जीवन पहले जैसा हो सके।

सत्रह

ऐसा कहा जाता है कि जब किसी पत्नी की मृत्यु हो जाती है, तो उसकी आत्मा रात में उसके पति के बिस्तर के पास आती है। वह उसके आसपास की हवा में विलीन हो जाती है। यही एक मृत पत्नी का परलोक जीवन है।
‘किसी दूसरी स्त्री से विवाह करो!’ चक्की ने ऐसा क्यों कहा था? शायद उसने परिस्थितियों को देखते हुए इसे सबसे समझदारी भरा सुझाव समझा होगा। या शायद उसे किसी दूसरी स्त्री के साथ की ज़रूरत थी। और उसने अपने पति की कामुक संतुष्टि की आवश्यकता को जानते हुए ही उसके कान में ये बात फुसफुसाई होगी।
जैसे ही चक्की की पलकें बंद हुईं, चेम्बनकुंजू ने उसके कान में कई बार फुसफुसाया, 'मैं क्या करूँ?' उसने उसकी बंद पलकें खोलीं और पूछा, 'क्या तुम नहीं चाहती कि हम साथ रहें, चक्की? साथ में आनंद लें?'
सब कहते थे कि चेम्बनकुंजु ने अपना दाहिना हाथ खो दिया है। यह सचमुच सच था। उसके जीवन की सारी समृद्धि और सुख चक्की की वजह से ही था। चक्की जैसी काबिल मछुआरी और कोई नहीं थी। अब चेम्बनकुंजु क्या करता? क्या एक जवान लड़की घर संभाल सकती थी? करुथम्मा नहीं आती। न ही वह उसे बुलाता। आखिर उसने क्या कहा था? जो टहनी जलने से इनकार कर दे, उसे फेंक देना चाहिए!
‘किसी दूसरी स्त्री से विवाह करो!’ ये आखिरी शब्द चेम्बनकुंजू के कानों में गूंजते रहे। उसने अचाकुंजू से सलाह मांगी। ‘एक नई स्त्री को लाने के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?’
अचाकुंजु ने कहा, 'आपको ऐसा करना ही होगा! उस लड़की को माँ की ज़रूरत है, है ना?'
लेकिन मुझे चक्की जैसी दूसरी कोई नहीं मिलेगी!
‘ऐसा कभी नहीं होगा, चाहे आप किसी को भी ढूंढ लें!’
उन्होंने पंचमी को नल्लापेन्नू के साथ छोड़ दिया और चेम्बनकुंजू के लिए दुल्हन की तलाश में निकल पड़े।
अचाकुंजु ने शादी की बात करने के बहाने चेम्बनकुंजु को कई सलाहें दीं।
चेम्बनकुंजु को याद रखना चाहिए कि वह अब पहले जैसा चेम्बनकुंजु नहीं रहा।
वह अब धनवान और प्रतिष्ठित व्यक्ति बन चुका था। इसलिए उसे ऐसी स्त्री की तलाश करनी चाहिए जो धन और प्रतिष्ठा में उसके बराबर हो।

चेम्बनकुंजु को यह विचार पसंद आया। इतना ही नहीं, वह तन-मन से थक चुका था।
वह पहले की तरह काम करने में असमर्थ था। अब उसके लिए आराम करने और सुकून पाने का समय था। जीवन का भरपूर आनंद लेने की उसकी इच्छा फिर से जाग उठी। अफसोस! चक्की ने भी उसके साथ कड़ी मेहनत की थी, लेकिन उसे कभी सुख का एक पल भी नहीं मिला था।
और इस तरह, चेम्बनकुंजु और अचकुंजु जब दुल्हन की तलाश में निकले, तो उन्हें एक संभावित उम्मीदवार के बारे में पता चला। पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन वलक्करन की पत्नी। कंदनकोरन वलक्करन का देहांत हो चुका था। पपिकुनजु की आर्थिक स्थिति अब उतनी अच्छी नहीं रही थी।
बिना ज्यादा सोचे-समझे चेम्बांकुंजू मान गया। सुख और आराम की उसकी अवधारणा पापीकुंजू के घर में ही जन्मी थी।
वह भी मान गई। उसने कहा कि तटरक्षक अधिकारी को सूचित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चेम्बनकुंजू नदी पार गया और उसे घर ले आया। उसके साथ उसका लगभग वयस्क बेटा भी था।
कंदनकोरन की मृत्यु के बाद पापीकुंजू कुछ हद तक दुखी थी, फिर भी वह एक आकर्षक स्त्री थी; एक तेजस्वी स्त्री। लेकिन पंचमी को उस स्त्री का अपने घर में आना पसंद नहीं आया। वह नल्लापेन्नू के पास दौड़ी और गुस्से से उससे कुछ बुदबुदाई।
नल्लापेन्नु ने उसे सलाह दी, 'मेरी बच्ची, तुम्हें कुछ नहीं कहना चाहिए।' 'क्यों नहीं?'
‘तुम्हारे पिता क्रोधित होंगे!’
पंचमी रोने लगी। वह क्यों रो रही थी?
पहली बार चेम्बनकुंजु को अपने घर पर शर्म आई। एक बदसूरत सी झोपड़ी। और यहीं वह पापीकुंजु को लेकर आया था। शर्मिंदा मुस्कान के साथ उसने कहा, 'यह तब बनाया गया था जब मेरे पास न तो नाव थी और न ही जाल। मेरी चक्की को इन चीजों की ज्यादा परवाह नहीं थी। इसलिए हमने कभी दूसरा घर नहीं बनाया।'
वह पापीकुंजू के बड़े घर गया था। भले ही अब वह किसी और का घर हो, लेकिन एक समय वह वहाँ रहती थी। चेम्बनकुंजू ने फैसला किया कि वह ज़मीन का एक टुकड़ा खरीदेगा और वहाँ घर बनाएगा। और उसने उसे यह बात बताई।

उसकी प्रिय चक्की ने उसे दूसरी स्त्री से विवाह करने की सलाह दी थी। क्या वह उसके इस चुनाव से प्रसन्न होगी? उसने चारों ओर देखा। उसकी चक्की कहीं न कहीं तो होगी ही!
चेम्बनकुंजु ने रोती हुई पंचमी को बुलाया। क्या वह अपनी नई माँ से मिलना नहीं चाहती थी?
नल्लापेंनु ने पंचमी से कहा, 'जाओ बच्चे!'
आंखों में आंसू लिए पंचमी ने कहा, 'नहीं, मैं नहीं जा रही!'
मैं तुम्हारे साथ आऊंगा!
नल्लापेन्नू ने अपनी साड़ी के किनारे से पंचमी का चेहरा पोंछा। उसे रोने से मना किया गया था। नल्लापेन्नू ने उसका हाथ पकड़कर उसे पार ले गई। पापीकुंजु ने उसे ध्यान से देखा और पूछा, 'तुम क्यों रो रही हो, बच्ची?' चेम्बनकुंजु ने कहा, 'वह बच्ची है; अपनी माँ के लिए रो रही होगी!'
अपनी बेटी को गले लगाते हुए चेम्बनकुंजु ने कहा, 'वह एक अच्छी सौतेली माँ है; रो मत, मेरी प्यारी!'
उसे दिलासा देने के लिए वह बहुत कुछ कह सकता था। जैसे कि उसकी माँ के कहने पर ही वह सौतेली माँ को घर लाया था; यह उसके लिए भी था, इत्यादि। क्या उसे यह भी नहीं कहना चाहिए था कि अब वह अपनी सौतेली माँ को ही अपनी असली माँ माने?
पापीकुंजू का बेटा गंगादत्तन उस घर में कुत्ते पर चिपके कांटे की तरह रहता था। वह न तो अपने सौतेले पिता से और न ही पंचमी से तालमेल बिठा पा रहा था। गंगादत्तन एक नौजवान था। वह पापीकुंजू पर बोझ था। जिस तरह पंचमी को वहाँ उसकी मौजूदगी पर हैरानी होती थी, उसी तरह लगता था कि वह भी खुद से पूछता था कि वह वहाँ क्या कर रहा है। मानो उसे लगता था कि उसकी माँ का किसी दूसरे पुरुष की शरण लेना गलत था। शायद उसने ऐसा उसे अपने ऊपर से बोझ हटाने के लिए किया था। उसने यह सिर्फ अपनी जिंदगी बचाने के लिए नहीं किया था। पल्लीकुन्नथ में चेम्बनकुंजू जब अपनी नाव खरीदने गया था, तब वहाँ के खाने का स्वाद अभी भी उसकी ज़बान पर था। जीवन में सुख की उसकी अवधारणा उसी भोजन से जन्मी थी। उसने सोचा था कि अब वह दिन में तीन बार वैसा ही खाना खाएगा। लेकिन करी का स्वाद पल्लीकुन्नथ में खाए गए खाने जैसा नहीं था; वह बिल्कुल अलग लग रहा था। उसके भोजन से उसे न तो आनंद मिलता था और न ही तृप्ति।

चक्की अपने खरीदे हुए पलंग पर लेट भी नहीं पाई थी। गद्दा भी तैयार नहीं था। उसकी नज़र में इसके लिए समय ही नहीं था। सही समय आने से पहले कई काम निपटाने थे। न तो वह अपनी त्वचा से टैन हटा पाई थी और न ही अपना वज़न बढ़ा पाई थी।
चेम्बनकुंजु ने एक गद्दा बनवाया। उस पर वही कपड़ा लगाया गया था जो पल्लिकुन्नथ के गद्दे पर लगा था। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसे पापीकुंजु की सुंदरता फीकी पड़ रही हो। क्या इस समुद्र की ठंडी हवा में गोरे लोगों की भी रंगत फीकी पड़ जाएगी? ऐसा लग रहा था मानो पापीकुंजु की आभा मिट गई हो। उसने मन ही मन उस दृश्य को दोहराया जो उसने चक्की को कुछ शर्मिंदगी के साथ सुनाया था। यही वह दृश्य था जिसने हमेशा उसके आनंद की अवधारणा को आकार और रंग दिया था। जब पापीकुंजू कमरे में दाखिल हुई, तो वह भी उसके पीछे-पीछे अंदर चला गया।
लेकिन उस चुंबन में कोई गर्माहट नहीं थी। न ही कोई ऊँचाई, न ही कोई गहराई। उनके हाथ एक दूसरे को उतनी मजबूती से नहीं पकड़ पाए। न ही वह चुंबन ज़्यादा देर तक चला। उस क्षण जब उसे संतुष्टि मिली, उसके मुँह से बस यही शब्द निकले, 'मेरी चक...'। और उसने भी एक और नाम बुदबुदाया। शायद वही नाम जिससे वह कंदनकोरन वलाक्करन को पुकारती थी।
उनका एक होना संभव ही नहीं लग रहा था। उनके बीच दो लोग थे। चक्की और कंदनकोरन वलक्करन। चक्की और कंदनकोरन का व्यवहार अलग-अलग था। शायद अगर चेम्बनकुंजू और पापीकुंजू जवानी में साथ रहे होते, तो हालात कुछ और होते। घर में हंसी-खुशी और उल्लास का माहौल बनाने की कोशिश की गई। चेहरे पर मुस्कान थी, एक बनावटी मुस्कान जिसमें कोई वास्तविक आनंद नहीं था। और मौज-मस्ती का दिखावा किया जा रहा था।
इस नए जीवन का एक स्वरूप था। लेकिन इसके साथ ही चेम्बनकुंजू के भीतर एक सुलगती हुई बेचैनी भी थी। एक अज्ञात, अनिश्चित चिंता उसके भीतर उमड़ रही थी। वह निष्क्रिय नहीं रह सकता था। उसे निष्क्रिय रहने की आदत नहीं थी। मलमल का मुंडू पहने और कंधे पर पतली किनारी वाला एक बढ़िया कपड़ा ओढ़े, वह नावों के लौटते ही किनारे पर चला जाता था। वह पकड़ी गई मछलियों का व्यापार करता था। कंदनकोरन वलक्करन का यही हाल था। लेकिन क्या यह वही पुराना चेम्बनकुंजू था?

चक्की के चले जाने के बाद, जीवन में आगे बढ़ने की उसकी इच्छा भी समाप्त हो गई थी। अब वह पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन में परिवर्तित हो रहा था।
हालांकि उसके पास करने के लिए ज्यादा कुछ नहीं था, फिर भी चेम्बनकुंजू के रूप-रंग में कोई सुधार नहीं हुआ। उसके चेहरे का रंग थोड़ा फीका पड़ गया। लेकिन यह पीलापन में मामूली बदलाव था।
एक दिन चेम्बनकुंजु ने पापीकुंजु से कहा, 'इन दिनों आमदनी बहुत कम है।' पापीकुंजू ने इस बारे में कुछ नहीं कहा। शायद उसने कभी ऐसे मामलों पर बात नहीं की थी। उसे इसकी आदत नहीं थी। उसने आगे कहा, 'यह उस तरह की कमाई नहीं है जो मैं पहले लाता था। मेरी कमाई नाव, जाल और पतवार पर आधारित थी... और हमेशा किसी भी दूसरी नाव से दोगुनी होती थी!'
एक तथ्य बताने के बावजूद, चेम्बनकुंजू के चेहरे पर शर्मिंदगी की झलक दिखाई दी। उन्होंने आगे कहा, 'और जब मैंने इसे अपनी चक्की को सौंपा, तो वह इसे खींचती और बढ़ाती ही चली जाती...'
उसने चक्की द्वारा उनके लिए पैसे कमाने के लिए किए गए सभी कामों का वर्णन किया। मछली बेचने के लिए पूरब जाना, कंबवाला बनाने में मदद करना और मछली सुखाना - उसने उसे इन सब के बारे में बताया। बोलते-बोलते उसने पापीकुंजू की ओर देखा। उसने उसके चेहरे पर उदासी देखी।
अचानक उसने कहा, 'मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम ऐसा कुछ करो! चक्की को तो बचपन से ही इसकी आदत थी। लेकिन तुम वैसी नहीं हो।'
लेकिन चेम्बनकुंजु को एहसास हुआ कि पापीकुंजु दुखी थी क्योंकि वह चक्की की तरह कुछ भी नहीं कर सकती थी। वहाँ सब कुछ, यहाँ तक कि जिस पलंग पर वे सोते थे, चक्की के प्रयासों का ही परिणाम था।
और फिर गंगादत्तन था जो दिन भर अपनी माँ को परेशान करता रहता था। माँ ने उसे जीवन बनाने में मदद करने का वादा किया था। लेकिन अभी तक कुछ भी नहीं हुआ था। उसे जल्द से जल्द भेजना ज़रूरी था। उसने कहा, 'मैं उस लड़की की घूरती नज़रों से डरता हूँ। वह बहुत जल्द कुछ बुरा कह देगी। मुझे उससे पहले ही यहाँ से निकलना होगा!'
वह गंगादत्तन को भेजने के लिए पैसे का इंतजाम कैसे करती? पापीकुंजू जानती थी कि पैसे नहीं हैं। और वह चेम्बनकुंजू से पूछना भी नहीं चाहती थी।

पंचमी ने एक नई योजना बनाई। वह हर समय अपने पिता के पास ही रहती थी। ऐसा लगता था कि वह पापीकुंजु को चेम्बनकुंजु के करीब आने का मौका ही नहीं देगी। और न ही पापीकुंजु ने उसे दूर धकेलने की कोशिश की।
उसका जीवन सुखमय था। अब सब कुछ बर्बाद हो गया था। जब कुछ भी नहीं बचा, तो चेम्बांकुंजू ही उसके भविष्य का सहारा बन गया था। और इसी तरह पापीकुंजू वहाँ पहुँचा था।
नए पति को स्वीकार करने का कारण कामुक सुख की चाहत नहीं थी। अगर कोई और रास्ता होता तो वह पत्नी होने का यह ढोंग नहीं करती। वह सिर्फ पत्नी होने का नाटक कर रही थी। फिर भी पापीकुंजू अपने रक्षक के प्रति वफादार थी। उसने न तो अपने अधिकारों को स्थापित करने की कोशिश की और न ही उनकी मांग की। वह उसके आदेशों का पालन करती थी।
चक्की ने चेम्बनकुंजू के लिए पैसे कमाने में मदद की थी। और शायद पापीकुंजू को इस बात का दुख था कि वह अपने पति की इस तरह मदद नहीं कर पाई। चेम्बनकुंजू ने उससे ऐसी उम्मीद नहीं की होगी, लेकिन क्या उसे ऐसी आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए थी? क्या चक्की ने चेम्बनकुंजू को अपने जैसी स्त्री से विवाह करने की अनुमति दी थी? बिलकुल नहीं! चक्की ने ऐसी पत्नी की कामना की होगी जो उसके जैसी पत्नी बन सके। एक ऐसी स्त्री जो एक बड़े परिवार की नींव रखना जानती हो। और एक ऐसी स्त्री जो अपने पति की हर छोटी-बड़ी सुख-सुविधा का ख्याल रखती हो।
पंचमी एक जिद्दी लड़की थी। उसे अपनी सौतेली माँ की ज़रा भी परवाह नहीं थी। वह गंगादत्तन को चिढ़ाती रहती थी। उसके हर काम से यही ज़ाहिर होता था कि वह क्या सोचती है: उनका वहाँ कोई काम नहीं था।
एक दिन जब पापीकुंजु चल रही थी, पंचमी उसका मज़ाक उड़ाते हुए उसके पीछे- पीछे चल रही थी। जब पापीकुंजु अचानक मुड़ी, तो उसने देखा कि पंचमी उसका उपहास कर रही है। नल्लापेन्नु उसके घर के पास खड़ी हंस रही थी। पापीकुंजु रोने लगी।
जब चेम्बनकुंजु घर लौटी, तो पापीकुंजु ने कहा, 'तुम्हें इस लड़की की परवरिश ठीक से करनी होगी।'
चेम्बनकुंजू जानना चाहती थी कि मामला क्या है। वह टालमटोल करती रही। 'उसे एक दिन किसी और घर में रहना ही पड़ेगा। उसके लिए हमारे दिल में जो प्यार

है, उसे हमें अपने दिलों में ही समेटे रखना चाहिए। वह एक राक्षस बनती जा रही है!'
चेम्बनकुंजू को यह जानने की ज़िद थी कि मामला क्या है। पापीकुंजू को डर था कि कहीं उसकी बेटी में कमी निकालने पर चेम्बनकुंजू को बुरा न लगे। इसलिए उसने बड़ी हिचकिचाहट से बोलना शुरू किया। चेम्बनकुंजू अपनी माँ के बिना पल रही बच्ची को लेकर चिंतित था। इसलिए पापीकुंजू ने बड़ी सावधानी से कहा, 'वह मुझसे तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करती है। यह सब पड़ोसी की करतूत है!' चेम्बनकुंजु ने पंचमी को पुकारा। वह घर के उत्तरी भाग की ओर खड़ी थी। उसकी पुकार सुनकर वह डर गई। कुछ बार चिल्लाने के बाद वह आई। पापीकुंजु ने चेम्बनकुंजु से विनती की कि वह उसे दंडित न करे। फिर भी, क्रोध में आकर उसने पंचमी को दो थप्पड़ मारे। उसने पंचमी पर गुस्सा नहीं दिखाया, बल्कि पड़ोसियों के प्रति अपनी घृणा प्रकट की।
पंचमी अपनी माँ को पुकारते हुए रोने लगी। यह देखकर सबका दिल टूट गया। नल्लापेन्नू दौड़कर आई और उसे गले लगा लिया। उसने पापीकुंजू से पूछा, 'क्या बात है, स्त्री? क्या तुम इस माँविहीन बच्ची को मार डालना चाहती हो?' पापिकुंजू ने पलटवार करते हुए कहा, 'मैं उसे बिगड़ने नहीं देना चाहता!' उसमें पड़ोसियों के प्रति उसकी दबी हुई नाराजगी थी। नल्लापेन्नू ने पूछा, 'तुम्हारा मतलब क्या है कि वह बिगड़ी हुई है?'
नल्लापेन्नू ने चेम्बांकुंजू की ओर मुड़कर कहा, 'तुम्हें उसकी बात नहीं सुननी चाहिए और अपनी बेटी को चोट नहीं पहुंचानी चाहिए!'
पापिकुंजू ने नल्लापेन्नू से पूछा, 'इससे तुम्हारा क्या लेना-देना है?' 'चक्की, जिसने यह सब बनाया, उसने मरते समय इस बच्चे को मेरे हवाले किया था!' पापीकुंजु भले ही शर्मीली रही हो, लेकिन वह भी एक मछुआरा थी। उसके भीतर की मछुआरे की पत्नी जागृत हो उठी। उसने कहा, 'चुप रहो! यह पापीकुंजु है, वही स्त्री जो कभी पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन के साथ रहती थी!'
नल्लापेन्नू का जवाब उसके मुंह पर एक तमाचा था। 'अब तुम चेम्बनकुंजू की पत्नी हो; और जो खा रही हो वो चक्की ने बनाया है। तो दूर रहो, क्या तुम?' चेम्बनकुंजु असहाय खड़ी थी। पापीकुंजु गुस्से में खुद को भूल गई। 'तुम्हें इससे क्या लेना-देना है? चेम्बनकुंजु तुम्हारे लिए कौन है?' ‘तुम… कमीनी औरत… तुम,’ नल्लापेन्नू गुस्से से अवाक रह गई। फिर उसने अपना हक जताया। चेम्बनकुंजू की दूसरी औरत के तौर पर नहीं, बल्कि अपने पति के

दोस्त की पत्नी के तौर पर। दोनों ने साथ मिलकर समुद्र में जीवन की शुरुआत की थी और चेम्बनकुंजू की वजह से ही उसके बच्चों को खाने को मिलता था। वह अपने मछुआरे से प्यार करती थी। यही उसका चेम्बनकुंजू पर हक था।
जिस दिन चक्की इस घर में आई, उसी दिन से वे दोस्त बन गईं; वे एक हो गईं। भले ही उनमें झगड़े हुए हों, लेकिन वे एक-दूसरे से प्यार करती थीं। यही उसका दावा था। नल्लापेन्नू ने दोहराया कि चक्की ने अपनी मृत्युशय्या पर उससे पंचमी की ज़िम्मेदारी लेने को कहा था। फिर उसने करुथम्मा और पंचमी के साथ अपने प्रेम बंधन के बारे में बताया, जो उनके जन्म से ही था। 'मेरे गर्भ में उनके लिए जगह नहीं थी, लेकिन वे मेरे बच्चों की तरह पली-बढ़ीं। यह मेरा अधिकार है!'
नल्लापेन्नु ने चेम्बनकुंजु की ओर देखकर पूछा, 'चेम्बनकुंजु अच्छा, आपको इस दोहरे चेहरे वाली स्त्री से छुटकारा पाना होगा... मैं पंचमी को लेकर आऊंगा!'
उसने आगे कहा, “तुम इसके हकदार हो! तुमने अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण उस भली महिला को मार डाला। तुम एक लालची आदमी हो। तुमने अपने बड़े बच्चे को एक पथभ्रष्ट रास्ते पर भेज दिया। और अब यह बच्चा है। अंत में... मैं और कुछ नहीं कहूंगी!”
नल्लापेन्नू का गुस्सा शांत नहीं हुआ। उसका क्रोध पापीकुंजू पर उतर आया। 'इस तट पर, जब हमारे मछुआरे मर जाते हैं, तो हम किसी दूसरे आदमी के साथ नहीं जाते। यही हमारा स्वभाव है!'
पापीकुंजू नल्लापेन्नू की तीखी जुबान को रोक नहीं पाई। चेम्बनकुंजू भी नहीं रोक पाई। कुछ देर बाद गुस्सा शांत हुआ, लेकिन वह पंचमी पर अपना अधिकार छोड़ने को तैयार नहीं थी। उसने पूछा, 'क्या तुम मेरे साथ आ रही हो, बेटी?' चेम्बनकुंजू स्तब्ध खड़ा था। नल्लापेन्नु अपनी बेटी को बुला रहा था। पंचमी ने उसका पीछा किया।
पापीकुंजू को अपने जीवन में इतना अपमान कभी नहीं सहना पड़ा था। उसे इतनी गालियां सुननी पड़ीं; अब कहने को क्या बचा था? अपने दुख और गुस्से को सहन न कर पाने के कारण उसने पूछा, 'मैं एक शांत और गरिमापूर्ण जीवन जी रही थी।
क्या आप मुझे यहाँ इसी के लिए लाए हैं?'

चेम्बनकुंजु असहाय होकर वहीं खड़ी रही, कुछ बोल नहीं पा रही थी। पापीकुंजु ने आगे कहा, 'पोन्नानी के तट प्रमुख के परिवार में जन्मी होने के बावजूद, मछुआरों ने मुझसे कभी इस तरह बात नहीं की।'
उसे सांत्वना देने के लिए चेम्बनकुंजू ने कहा, 'ये जीव ऐसे ही होते हैं!' लेकिन फिर भी तुम चुप रहे!
मैं क्या कर सकता था?
दांत पीसते हुए पापीकुंजु ने बुदबुदाते हुए कहा, 'अब आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'
उसने आगे कहा, 'मैं एक समय एक अच्छे आदमी के साथ रहती थी... अब यही मेरा भाग्य है...'
नल्लापेन्नु द्वारा किए गए दुर्व्यवहार का खामियाजा चेम्बनकुंजु को भुगतना पड़ा। उसका गुस्सा पंचमी पर निकला। 'तुम्हारी प्यारी बेटी नल्लापेन्नु के कहने पर उसके साथ चली गई।'
चेम्बनकुंजू ने कहा, 'दोनों लड़कियों का पालन-पोषण उसी ने किया था।'
‘तो!’ अपने गुस्से को काबू में न कर पाने के कारण पापीकुंजू ने शाप देते हुए कहा, ‘यह भी अपनी बड़ी बहन की तरह बदचलन निकलेगी।’
चेम्बनकुंजु बुरी तरह हिल गया। यह एक भयंकर अभिशाप था। उसकी बड़ी बेटी अब उसकी संतान नहीं रही। उसके पास केवल पंचमी ही बची थी। क्या वह भी उसकी नहीं रहेगी?
पापीकुंजू रुकने वाली नहीं थी। चाहे उसकी जिंदगी बिखर जाए, वह अपने मन की बात कहे बिना नहीं रुकेगी। 'यह भी वैसी ही निकलेगी। अपनी बड़ी बहन की तरह, यह भी किसी मुस्लिम लड़के को बहला-फुसलाकर इन किनारों पर मौज-मस्ती करेगी!'
चेम्बांकुंजू के दिमाग में अचानक एक विचार कौंध गया। अब कुछ भी पूछने या कहने की जरूरत नहीं थी।
क्या आपने किसी मुस्लिम लड़के को बहकाया?
अब कहानी साफ हो गई। परीकुट्टी का पैसा लौटाने की उत्सुकता। पल भर में सब कुछ समझ में आ गया। वह... क्या चक्की भी इसमें शामिल थी? बस यही जानना उसके लिए काफी था।
चेम्बनकुंजु को लगा जैसे उसका होश उड़ गया हो। वह नल्लापेन्नु के घर की ओर भागा। उसने पंचमी को नल्लापेन्नु की गोद से खींचकर उतारा, एक लाठी ली और

उसे बुरी तरह पीटा। वह उससे बार-बार पूछता रहा कि क्या वह भी किसी मुस्लिम लड़के को बहकाएगी। नल्लापेन्नु अवाक खड़ी रही। पंचमी अपनी माँ को पुकारती रही। मार खाते हुए वह चिल्लाया, 'बताओ तुम किसी मुस्लिम लड़के को बहकाओगी नहीं, बताओ...!'
जब ऐसा लगा कि वह नहीं रुकेगा, तो उसने कहा, 'मैं एक मुस्लिम लड़के को बहकावे में नहीं लाऊंगी, अच्छा।'
बेचारी लड़की! उसे तो पता ही नहीं था कि वह क्या कह रही है। या शायद उसे पता था। क्या उसने भी यह सब नहीं देखा था?
वह उसका पीछा करते हुए वापस अपने घर में चला गया।
उस दिन चेम्बनकुंजु चक्की की कब्र खोदते हुए देखा गया था। कौन जाने वह क्या सोच रहा था? शायद वह उससे खुद पूछताछ करना चाहता था।

अठारह

चेम्बनकुंजू का पागलपन कुछ ही दिनों में शांत हो गया। लेकिन वह मानो बिखर गया था। वह चुप हो गया। वह हारा हुआ, सारी उम्मीदों से खाली लग रहा था। ज़रा उसके नज़रिए से देखिए। आखिर वह कैसा होता? पैसा कम होने लगा। अब यह बर्दाश्त किया जा सकता था। तब तक जमा की गई सारी भौतिक संपत्ति भी गायब हो गई। अगर उसकी सुध-बुध वापस चली गई होती, तो उसकी हालत का अंदाज़ा लगाइए? वह दुनिया का सामना कैसे कर पाता?
चेम्बनकुंजू की दोनों नावों को मरम्मत की ज़रूरत थी। वे समुद्र में उतारने लायक नहीं थीं। जालों में भी कई छेद थे; उनकी समय पर मरम्मत नहीं हुई थी। एक मैकेरल जाल को सूअर ने बुरी तरह फाड़ दिया था। उसे तुरंत बड़ी रकम की ज़रूरत थी। परिवार के कई खर्चे थे। और वह अब पहले की तरह समुद्र तट पर नहीं जाता था।
अब पापीकुंजू पर कई चीजों की जिम्मेदारी आ गई थी। उसने चेम्बांकुंजू से नावों की मरम्मत और जालों को ठीक करने के बारे में बात की। पैसे उधार लेने के अलावा कोई चारा नहीं था। चेम्बांकुंजू कर्ज लेने के लिए राजी हो गई। लेकिन वो पैसा किससे उधार लेता? उस किनारे पर ओसेप के सिवा कोई नहीं था। जब पंचमी की माँ जीवित थी, तब उसने मछली बेचकर कुछ पैसे कमाए थे। उसने अपने बचाए हुए बीस रुपये निकाले और अपने पिता को दे दिए। चेम्बनकुंजू ने उन्हें हाथ में लिया और फूट-फूटकर रोने लगा। पंचमी ने कहा, “अगर मैं हर दिन मछली के छोटे बच्चे चुन पाती, तो मेरे पास और भी पैसे होते…” उसने आगे कहा, “या फिर अगर अम्माची जीवित होती…”
चेम्बांकुंजू कुछ नहीं बोला। तीव्र भावनाएं अब उसके हृदय को नहीं झकझोरती थीं।
गंगादत्तन ज़िद करने लगा कि उसे कहीं और भेज दिया जाए। लेकिन पापीकुंजू अभी तक चेम्बनकुंजू के सामने उसकी बात नहीं रख पाई थी। चेम्बनकुंजू को सिर्फ़ ज़िंदा रहने और गंगादत्तन की देखभाल करने के लिए बहुत कुछ सहना पड़ रहा था। पंचमी का अत्याचार कम नहीं हुआ था। पापीकुंजू को तो यह भी लगता था कि गंगादत्तन को उस घर में खाने का भी हक़ नहीं है। सबसे बड़ी बात यह थी कि चेम्बनकुंजू की मानसिक स्थिति बहुत खराब हो चुकी थी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि हालात ऐसे हो जाएँगे।

पापीकुंजू ने सोचा भी नहीं था कि चेम्बांकुंजू इतना टूट जाएगा। उसका इरादा उसे तबाह करने का नहीं था। आख़िरकार, वह उसका रक्षक था।
शायद वह इस बात से दुखी थी कि चक्की की तरह वह पैसे नहीं कमा पा रही थी। अगर वह पूरब जाकर मछली बेच पाती या कंबवाला बनाना जानती, तो शायद उसकी ज़िंदगी बेहतर होती। इसलिए स्वाभाविक ही था कि वह इस तरह सोचने लगी।
पापीकुंजू ने अपने पति की देखभाल की थी। वह यह जानती थी कि कैसे करना है। वह चेम्बनकुंजू से भी प्यार करती थी। उससे प्यार न करना नामुमकिन था। लेकिन चेम्बनकुंजू को उस जगह में अपना स्थान बनाना था जहाँ कभी कोई दूसरा पुरुष रहता था। ठीक वैसे ही जैसे उसे उस घर में अपना स्थान खोजना था जो कभी किसी दूसरी स्त्री से भरा हुआ था। जैसे चेम्बनकुंजू संकट के क्षणों में चक्की के बारे में सोचता था, वैसे ही सलाह की ज़रूरत पड़ने पर वह कंदनकोरन वलक्करन के बारे में सोचती थी। शायद वह उससे क्षमा माँग रही थी। पापीकुंजु को कभी चैन नहीं मिला। सब कुछ बिखर रहा था। और कभी-कभी उसे इस बात का अपराधबोध सताता था कि शायद उसी ने यह सब किया है। चक्की के रहते चेम्बनकुंजु समृद्ध था, और पापीकुंजु के आने से सब कुछ बर्बाद हो गया। चक्की एक मछुआरे की पत्नी थी, और पापीकुंजु एक जालसाज़ की पत्नी।
नावें किनारे पर फंसी हुई थीं। पापीकुंजू को अंजाम का डर सता रहा था। उसने ओसेप को बुलवाने का फैसला किया। रात के खाने के बाद, जब चेम्बांकुंजू सोच में डूबा बैठा था, तो पापीकुंजू उसके पास गई और पूछा, 'तुम ऐसे ही क्यों बैठे हो? क्या हमें नावों की मरम्मत नहीं करनी चाहिए?'
उसने ऊपर उसकी ओर देखा। वह कुछ नहीं बोला। उसने फिर पूछा। 'हाँ,' उसने उत्तर दिया और चुप हो गया। आदर्श रूप से, इसके बाद बातचीत होनी चाहिए थी।
उसने पूछा, 'क्या मैं ओसेप को बुलवाऊं?'
‘उसे बुलाओ।’ जवाब तुरंत आया। क्या उसे खुद भी एहसास था कि वह क्या कह रहा है? चेम्बांकुंजू उस किनारे पर मौजूद किसी भी व्यक्ति से ज़्यादा जानता था कि ओसेप जैसे धूर्त से पैसे उधार लेने का क्या मतलब होता है। तो क्या इसका मतलब यह नहीं था कि उसने बिना सोचे-समझे ही बोल दिया था? अगर उसने इस बारे में सोच-विचार किया होता तो क्या वह ऐसा कहता? किनारे पर बेकार पड़ी अपनी नावों के बारे में वह ज़्यादा चिंतित नहीं लग रहा था।
उस घर में पहले भी खाने के बाद ऐसे ही दृश्य देखने को मिलते थे। भविष्य की मज़बूत नींव रखने के बारे में चर्चाएँ होती थीं। उन दिनों उन चर्चाओं की

गवाह एक टूटे हुए मिट्टी के तेल के दीपक की बत्ती हुआ करती थी। उन दिनों चेम्बनकुंजू बहुत तेज़ और जोशीला होता था, और उसके साथ उसकी चक्की होती थी, जो बाल विवाह के समय उससे आई थी। वे भविष्य के बारे में गहराई से सोचते थे। झोपड़ी में उनके दोनों बच्चे मीठे सपनों में खोए सो रहे थे। अब पंचमी एक भयानक बुरे सपने के चंगुल में फँस कर छटपटा रही थी।
पापिकुंजू ने पूछा, 'मुझे क्या करना चाहिए?'
वह कुछ नहीं बोला। उसने आगे कहा, 'मैं बोझ हूँ। मैं चीजों को संभाल नहीं सकती। आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? मुझे तो आदमी जो लाता है उसी से पेट भरने की आदत हो गई है!'
चेम्बनकुंजू चुपचाप उसकी बातें सुनती रही। पापीकुंजू रोने लगी। 'मैंने कितने लोगों को बर्बाद किया है? जिस पल मैंने यहाँ कदम रखा, सब कुछ बर्बाद हो गया।'
चेम्बांकुंजू का मुंह खुला रह गया। 'तो अब इसके बारे में क्या?'
'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'
कुछ करो!
गंगादत्तन पाँच सौ रुपये माँगने लगा। पापीकुंजू उसे इस जीवन में घसीटकर लाई थी। इसलिए उसे उसकी माँग पूरी करनी ही पड़ी। पापीकुंजू ने कैसे किया, इससे गंगादत्तन को कोई लेना-देना नहीं था। चेम्बनकुंजू को पैसे देने ही पड़े। उसने पापीकुंजू का स्नेह खरीद लिया था। गंगादत्तन की माँ ने खुद को किसी दूसरे आदमी को बेच दिया था। गंगादत्तन के भीतर कंदनकोरन वलाक्करन था। कभी-कभी पापीकुंजू को लगता था कि कंदनकोरन ही वहाँ खड़ा है और उससे पैसे और भी बहुत कुछ माँग रहा है।
पापीकुंजू ने ओसेप को बुलाने के लिए एक आदमी भेजा। उसने उसे सारी बात बताई। ओसेप उन्हें पैसे उधार देने के लिए तैयार हो गया। लेकिन शर्त यह थी कि दो नावें और जाल गिरवी रखे जाएं। अगर मूलधन और ब्याज समय पर वापस नहीं किया गया, तो नावें और जाल उसके हो जाएंगे।
चेमबंकुंजू कुछ नहीं बोले। ओसेप ने पूछा, 'चेमबंकुंजू, तुम कुछ क्यों नहीं बोलते?'
चेम्बनकुंजू ने कहा, 'मैं क्या कहूँ? मुझे पैसों की ज़रूरत तो वैसे भी है।' अगले दिन ओसेप एक समझौता पत्र लेकर आया। चेम्बनकुंजू ने उसे पढ़ने की ज़हमत तक नहीं उठाई। उसने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। ओसेप ने सात सौ पचानवे

रुपये गिनकर दिए। उसने कहा कि बचे हुए पाँच रुपये में से कुछ खर्चे चुका दिए गए हैं। चेम्बनकुंजू ने पैसे एक बक्से में बंद कर दिए।
ऐसा लगा जैसे उसके भीतर की चुप्पी टूटने लगी हो। उसने थोड़ी-बहुत बातें शुरू कीं: नावों की मरम्मत के बारे में। और यह कि तय समय के भीतर पैसा वापस करना होगा, वरना बड़ी मुसीबत हो जाएगी। ओसेप एक निर्दयी आदमी था। पापीकुंजू ने अपनी पूरी कोशिश करने का वादा किया।
शायद गंगादत्तन को पैसों की आहट महसूस हो गई थी। या शायद नहीं। लेकिन वह पापीकुंजू को पहले से कहीं ज़्यादा परेशान करने लगा। उसे वहाँ से भेजना पड़ा। वह वहाँ आधे घंटे भी नहीं रुक सकता था। पापीकुंजू ने उससे विनती की। नावों की मरम्मत करवाकर उन्हें समुद्र में उतारने दो। वह उसे ज़रूरी पैसे दिलवा देगी।
वह अपनी बात पर अड़ा हुआ था। 'मैं इतना लंबा इंतजार नहीं कर सकता!' पापिकुन्जू क्रोधित हो गया। 'अगर तुम नहीं कर सकते, तो यह तुम्हारी मर्जी है। मुझसे और क्या उम्मीद करते हो?'
'ऐसे में तो आप यह भूल सकते हैं कि मैं आपका बेटा हूं।'
पापीकुंजू के पास इसका कोई जवाब नहीं था। वह उसकी माँ थी; वह स्त्री जिसने उसे जन्म दिया था। उसने उसके पिता की यादों को कुचलकर चेम्बांकुंजू के पास आई थी।
उसने बेबसी से पूछा, 'मैं उस आदमी से कैसे पूछ सकती हूँ?'
‘अम्मा, आपको मुझे विदा करने का कोई तरीका ढूंढना होगा।’
वह उसकी हर बात नहीं सुनता था। उसका इशारा यह था कि अगर वह उसे भेज दे तभी वह चेम्बनकुंजू की अकेली रह पाएगी।
‘बेटे, मैं तुम्हारे भले के लिए भी यहाँ आया हूँ!’
'ऐसा हो सकता है। लेकिन आपको मुझे जाने देना होगा।'
पापीकुंजू में चेम्बांकुंजू से इस असहज विषय पर बात करने का साहस नहीं था। लेकिन मामला इतना बढ़ चुका था कि इसे अब गुप्त रखना संभव नहीं था। पापीकुंजू परेशान थी। चेम्बनकुंजू का व्यवहार ऐसा था मानो उसकी सारी संपत्ति अब उसकी नहीं रही हो। दूसरी ओर गंगादत्तन का दबाव था। उसे किसी और पुरुष के साथ संबंध नहीं बनाना चाहिए था। लेकिन फिर वह कैसे जीती? उसे कैसे पता चलता कि इतनी परेशानियाँ आएंगी... काश उसने ये सब शुरू ही न किया होता। न तो उसे गंगादत्तन की मांगों को सहना पड़ता और न ही चेम्बनकुंजू की

नाराज़गी। उसने अपनी ज़िंदगी एक मुश्किल मोड़ पर शुरू की थी। अगर वह एक साधारण मछुआरा होती, तो सिर पर टोकरी रखकर पूरब की ओर मछली बेचने जा सकती थी। वह इस तरह अपना जीवन गुजार सकती थी। सब कुछ गलत हो गया था। उसने सोचा था कि वह एक समृद्ध नाव मालिक से जुड़ रही है। भविष्य कैसा होगा?
अपने भीतर चल रहे उस भयंकर संघर्ष में, माँ की ही जीत हुई। केवल माँ ही विजयी हो सकती थी। सबसे बुरी स्थिति में, उसे भूखा रहना पड़ता, भीख माँगनी पड़ती... और पापीकुंजू में वह सब सहने का साहस था। इस घर से उसका क्या रिश्ता था? अगर वह इस बारे में सोचती, तो कुछ भी नहीं। अगर चेम्बनकुंजू बर्बाद हो जाता, तो वह भूखी मर जाती। लेकिन अगर गंगादत्तन को कुछ पैसे देकर विदा किया जाता और वह तरक्की करता, तो वह भी करती। और अगर वह करती, तो चेम्बनकुंजू भी ज़रूर करता। और इस तरह उसके भीतर की माँ ने उस लड़ाई में जीत हासिल की।
एक दिन जब चेम्बनकुंजु वहाँ नहीं था, तो पापीकुंजु ने अपना बक्सा खोला। पंचमी भी वहाँ नहीं थी। उसने उस बंडल में से सौ-सौ रुपये के दो नोट निकाले जो ओसेप ने उन्हें दिए थे। उसने बक्से को ताला लगाकर फिर से सुरक्षित कर दिया।
उस रात पंचमी ने माँ और बेटे को झोपड़ी के पश्चिम में दुबके फुसफुसाते देखा। वह एक नारियल के पेड़ के पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने लगी। पंचमी को कुछ-कुछ समझ में आया कि वे क्या कह रहे थे। पापीकुंजू उससे कह रहा था कि फिलहाल दो सौ रुपये से संतुष्ट हो जाओ। बाकी पैसे बाद में मिल जाएँगे। बेटा अपनी माँ का आशीर्वाद लेकर चला गया। माँ अपने बेटे को देखती रही। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने अपना चेहरा पोंछा और अंदर आ गई।
पंचमी को एक नया हथियार मिल गया था। उसने इसका इस्तेमाल करने का फैसला किया। सौतेली माँ ने उसके बेटे को कुछ पैसे दिए थे। उसे पता नहीं था कि ये वही पैसे थे जो चेम्बंकुंजू ने बचाकर रखे थे। लेकिन उसे इस बात में कोई शक नहीं था कि ये पैसे कहाँ से आए थे। ये उनके घर से ही आए थे। वह ये राज़ अपने पिता को धीरे से बताएगी। जहाँ उसके पिता को पैसे न होने के कारण अपनी नावें और जाल गिरवी रखने पड़े थे, वहीं सौतेली माँ के पास खुद के पैसे थे। और वही पैसे उसने अपने बेटे को दिए थे।
अगली सुबह जब चेम्बनकुंजु समुद्र तट पर गया, तो पंचमी भी उसके साथ गई।

थोड़ी देर बाद वह पागलों की तरह अंदर घुस आया। चेम्बनकुंजू ने बक्सा खोला और अंदर झाँका। उसमें सिर्फ पाँच सौ रुपये थे। अगले ही पल ज़ोर से आवाज़ आई, 'क्या तुमने यहाँ से पैसे लिए?'
पापीकुंजू ने कबूल कर लिया; उसने सब कुछ कबूल कर लिया। अपना गुस्सा काबू न कर पाने के कारण वह कांप उठा। उसका फरमान एक और दहाड़ के रूप में निकला, 'मेरे घर से निकल जाओ!'
पापीकुंजू चुपचाप बाहर निकल गया। पंचमी इससे प्रसन्न हुई।
'किनारे पर जाओ!'
पापिकुन्जू किनारे की ओर चला गया। उसने दरवाजा बंद कर दिया। 'फिर कभी इस घर में प्रवेश करने की हिम्मत मत करना!'
पापिकुंजू ने इसका भी जवाब नहीं दिया।
उस विशाल तट पर एक असहाय, निर्धन स्त्री भटक रही थी। कभी कंदनकोरन की पत्नी, अब चेम्बनकुंजू की पत्नी।
एक बार फिर, चेम्बनकुंजू में कहीं से आक्रामकता और जीवंतता का संचार हुआ। वह जोश और ऊर्जा जो कुछ समय से मंद पड़ गई थी, फिर से जागृत हो उठी। चेम्बनकुंजु द्वारा पापीकुंजु को घर से निकाल दिए जाने की खबर पूरे तट पर आग की तरह फैल गई। पापीकुंजु समुद्र तट पर एक नारियल के पेड़ के नीचे बैठी थी। वह कहाँ जाती? इस धरती पर उसके लिए कोई जगह नहीं थी। ऐसा भी नहीं लग रहा था कि चेम्बनकुंजु का दिल कभी पिघलेगा। लेकिन वहाँ मौजूद सभी लोगों का कहना था कि इस मामले को यूँ ही सुलझने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। एक बेसहारा औरत उस तट पर भटक रही है!
समुदाय के बुजुर्ग सब इकट्ठा हुए और तट प्रमुख के पास गए। शुरू से ही तट प्रमुख को चेम्बंकुंजू के साथ जीवन बिताने के उसके फैसले से आपत्ति थी। यह महिला पोन्नानी तट प्रमुख के परिवार से थी और पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन की पत्नी थी। यह बात सभी तट प्रमुखों के लिए अपमानजनक थी। इसीलिए उन्होंने दृढ़ता से कहा कि वे उस महिला के बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहते थे जो परंपराओं का सम्मान नहीं करती। तट प्रमुख क्रोधित हो गए। लेकिन बुजुर्ग भी टस से मस नहीं हुए। यह एक गंभीर मुद्दा था। रात में सोने के लिए कोई जगह न होने के कारण एक महिला तट पर थी। क्या यह उचित था?
तट रक्षक ने कहा, 'जो चाहो करो! उसे पीट-पीटकर मार डालो और समुद्र में फेंक दो!'

अयांकुंजु ने विनम्रतापूर्वक पूछा, 'यह कैसे संभव है, महोदय?'
‘आप मुझसे और क्या सुनना चाहते हैं?’
आपको चेम्बांकुंजु को बुलाकर उनसे बात करनी होगी।
‘मैं नहीं कर सकता। मैं उसे क्या बताऊं?’
‘तो फिर हम क्या करें? ऐसे मामलों को सुलझाने का जिम्मा और कौन लेगा?’ समुदाय के बुजुर्गों के उस प्रश्न का सामना करते हुए, तट के स्वामी और रक्षक को झुकना पड़ा। कुछ तो करना ही था।
एक तटरक्षक के परिवार की एक महिला इस तट पर आवारागर्दी कर रही थी। तटरक्षक ने कहा, 'यह परंपराओं और मूल्यों को भूलने का परिणाम है। अगर वह तटरक्षक के परिवार में होती तो क्या उसके साथ भी ऐसा ही होता?'
उन सभी ने उसकी बात से सहमति जताई।
सौतेली माँ, जिसने माँ का स्थान हथिया लिया था, को घर से निकाल दिया गया।
सब कुछ फिर से साफ हो गया। पंचमी अपने पिता से लिपट गई। उसे कुछ करना था।
वह इस विषय पर बात करने के अवसर की तलाश में थी।
मामला मामूली था। घर पर कोई नहीं था। क्यों न वे उसकी बड़ी बहन को वापस बुला लें? अगर ऐसा हो जाए, तो घर फिर से वैसा ही घर बन जाएगा जैसा पहले था।
अम्माची का न होना ही इसकी एकमात्र कमी थी। लेकिन अगर करुथम्मा होतीं, तो पंचमी इसे भी सहन कर लेतीं। पर उन्हें यह बात कहने का सही समय नहीं मिल पा रहा था।
चेम्बनकुंजु एक पल भी निष्क्रिय नहीं रहता था। वह हर समय गंभीर रहता था। नई ऊर्जा और शक्ति से वह बिल्कुल बदल गया था। उसने फिर से वही चेम्बनकुंजु बनने का निश्चय कर लिया था जो वह कभी हुआ करता था। वह हर किसी में कमियां निकालता रहता था। पापीकुंजु विनाश का अपशगुन थी; जिस क्षण उसकी छाया इस घर पर पड़ी, उसी क्षण से विनाश शुरू हो गया। जिस क्षण उसने उससे विवाह करने का निर्णय लिया, उसी क्षण से वह शापित हो गया था।
‘मुझे लगता है उस समय मेरा दिमाग खराब हो गया था! मैं उसकी त्वचा, उसके बालों और उसके सुडौल शरीर पर मोहित हो गया था!’ उसने यही दावा किया। उसने करुथम्मा के बारे में भी बात की। उसने एक मुसलमान को बहकाया और फिर जब एक मछुआरा आया, तो वह उसके पीछे चली गई। वह उसकी बेटी नहीं थी। उसके लिए उसका कोई अस्तित्व नहीं था।
कभी-कभी वह पंचमी से पूछता था, 'तुम आगे चलकर क्या बनोगी?'

उसे भी उस पर भरोसा नहीं था।
वह एक नई जिंदगी शुरू करने जा रहा था। अगर बीच में कुछ मूर्खतापूर्ण काम भी हो गए तो क्या हुआ?
नल्लापेन्नु पापीकुंजु को अपने घर ले गई। पंचमी यह देखकर दुखी हुई कि विनाश का वह धूमकेतु दूर ब्रह्मांड में भेजने की बजाय पास ही ठहर गया है। अगर कोई और होता तो वह शायद यह सहन कर लेती। जब उसकी माँ मर रही थी, तब पंचमी को नल्लापेन्नु के हवाले किया गया था। तो फिर उसकी पालक माँ अब विश्वासघात क्यों कर रही थी?
चेम्बनकुंजु भी इससे बहुत आहत हुआ। लेकिन उसने इसका भी एक कारण ढूंढ लिया। अचकुंजु हमेशा से उससे ईर्ष्या करता था।
पंचमी को लगा कि एक दिन समझौता हो जाएगा। लेकिन उससे पहले चेची को घर लाना ज़रूरी था। और आखिरकार लंबे समय तक इंतज़ार करने के बाद उसने कहा, 'अच्छे, तुम चेची को घर क्यों नहीं बुला लेते? वह सीधी-सादी लड़की है। उसके बारे में जो कुछ भी कहा जाता है, सब झूठ है!'
चेम्बांकुंजू गुस्से से कांप उठा। 'तुम यहाँ किसे बुलवाना चाहते हो, बदमाश?'
पंचमी डर गई।
‘उस मुसलमान की झोपड़ी भले ही टूट-फूट गई हो, लेकिन वह अब भी इसी किनारे पर रहता है। मैं उस जैसी बदचलन औरत को अपने घर में नहीं घुसने दूँगा।’
पंचमी कुछ नहीं बोली। चेम्बनकुंजू ने पूछा, 'क्या तुम भी वही करना चाहती हो जो उसने किया? अगर ऐसा है तो तुम अभी यहाँ से निकल सकती हो!'
चेम्बनकुंजू का गुस्सा पल-पल बढ़ता जा रहा था। वह अपना आपा खो बैठा, जगह और खुद को भूलकर चिल्लाया, 'निकल जाओ! निकल जाओ!' ऐसा लग रहा था मानो वह उसे भी अपने घर से बाहर निकाल देगा।
चेम्बनकुंजु करुथम्मा के बारे में बड़बड़ाने लगा। फिर पंचमी के बारे में। उसका कहना था कि पंचमी भी करुथम्मा जैसी ही बनेगी! उसने पापीकुंजु को अकेला छोड़ दिया। उसने पंचमी के बारे में बात करना बंद कर दिया था। अब करुथम्मा और पंचमी उसके गुस्से का निशाना बन गईं।
इसी बीच, तट प्रमुख स्थिति का जायजा लेने के लिए वहाँ पहुँचे। समुदाय के बुजुर्गों, चेम्बनकुंजू और पापीकुंजू को बुलाया गया। यह एक महत्वपूर्ण

घटना थी। वहाँ बहुत से लोग एकत्रित हुए। केवल एक ही व्यक्ति पूरी श्रद्धा से प्रार्थना कर रहा था कि कोई समझौता न हो: पंचमी।
‘मेरी सागर माता, मेरी दिवंगत अम्माची, ऐसा न हो!’ यही उनकी मौन प्रार्थना थी।
शोर मास्टर ने चेम्बांकुंजू को बुलाया और पूछा, 'यह सब क्या है, चेम्बांकुंजू? तुम ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हो जैसे तुम्हें नियमों और कायदों की कोई परवाह ही नहीं है?'
तटरक्षक बल के अधिकारी पर कई गंभीर आरोप थे। उन्होंने बिना उनकी अनुमति के दोबारा शादी कर ली थी। इसके लिए उनका क्या स्पष्टीकरण था?
यह एक बहुत गंभीर अपराध था। चेम्बनकुंजू को पापीकुंजू को घर लाने से पहले तट स्वामी को पान के पत्ते और तंबाकू चढ़ाकर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए था। सभी लोग यह देखने के लिए उत्सुक थे कि चेम्बांकुंजू क्या प्रतिक्रिया देंगे। अन्य लोगों के साथ-साथ अचाकुंजू भी इस मामले में शामिल थे। उन्हें भी इस आरोप का जवाब देना था। उनमें से कुछ धीरे-धीरे वहां से हटने लगे।
तट रक्षक ने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए पूछा, 'मुझे बताओ, चेम्बांकुंजू, क्यों?'
चेम्बनकुंजू सीधा खड़ा था। ऐसा लग रहा था मानो वह पहले से लंबा और चौड़ा हो गया हो। उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी, उसके चेहरे पर गंभीर भाव थे। किसी ने भी पहले कभी चेम्बनकुंजू को उस तरह खड़े नहीं देखा था!
शोर मास्टर ने अपना सवाल दोहराया। जवाब गोली की तरह निकला। 'मैंने उससे शादी नहीं की।'
उसे ऐसी खबर सुनने की उम्मीद नहीं थी। सभी लोग सदमे में थे। तट रक्षक घबराकर बैठ गया। संभलकर उसने कहा, 'तो फिर इस महिला की उपस्थिति का क्या कारण है?'
मैंने एक महिला को अपने यहाँ काम करने के लिए लाया। इसमें गलत क्या है? शोर मास्टर हार गया। उसका पहला आरोप पूरी तरह से झूठा साबित हो गया।
अन्य सभी आरोप भी निराधार साबित हुए।
पापीकुंजू को बुलाया गया। तट रक्षक ने रीति-रिवाजों और नियमों को ताक पर रखकर उस महिला की सिर से पैर तक जांच की। उसने उससे पूछा, 'क्या यह सच है, महिला?'

सभी को उम्मीद थी कि वह चेम्बनकुंजू के दावों को नकार देगी। चेम्बनकुंजू तब भी ज्यादा चिंतित नहीं लग रहा था। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह जवाब में कहे कि उसने जो कुछ भी कहा है वह झूठ है। ऐसा लग रहा था मानो उसने सब कुछ नजरअंदाज करने और अनादर करने का फैसला कर लिया हो। वह किसी भी बात के आगे झुकने वाला नहीं था।
शोर मास्टर ने पापीकुंजू से अपना सवाल दोहराया। एक छोटा सा शब्द जो सबको चौंका गया, उसके मुंह से निकल गया। 'हां।'
‘तो चेम्बनकुंजू ने तुमसे शादी नहीं की?’
'नहीं।'
तो क्या तुम यहाँ नौकरानी का काम करती थी?
'हाँ।'
माननीय तटरक्षक कुछ देर तक बोल नहीं पाए। चेम्बनकुंजू ने स्वयं भी ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी। तटरक्षक ने पापीकुंजू की ओर देखा, जिसने अभी-अभी अपने सम्मान को दफना दिया था, और उस घृणा भरी निगाहों से देखा जो किसी ऐसे व्यक्ति को दी जाती है जिसने अपने परिवार को कलंकित किया हो, और कहा, 'तुम इन सब की हकदार हो! तुम जो कभी एक भले आदमी के साथ रहती थी...' उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। लेकिन वह वहाँ बिल्कुल बेपरवाह खड़ी चेम्बनकुंजू को भी बरी नहीं करने वाला था। उसने चेम्बनकुंजू से पूछा, 'भले ही वह नौकरानी हो, आप किसी औरत को घर से बाहर नहीं निकाल सकते।'
इसका तुरंत जवाब मिला। 'वह चोर है!'
शोर मास्टर एक बार फिर अवाक रह गया।
भले ही सब कुछ सही लग रहा हो, लेकिन सच्चाई यह नहीं थी। यह बात सब जानते थे। चेम्बनकुंजु ने पापीकुंजु को एक फली भेंट की थी और उसे घर ले आया था।
तट के स्वामी ने एक नई तरकीब सोची। उसने चेम्बांकुंजू को डराने का फैसला किया। 'तुम्हारा अहंकार कुछ ज़्यादा ही है। सिर्फ़ अभी नहीं, बल्कि हमेशा से। क्या तुम जानते हो कि इसका परिणाम क्या होता है?'
अपने होठों को व्यंग्यपूर्ण ढंग से घुमाते हुए चेम्बनकुंजु ने पूछा, 'क्या जानना है? अब तुम मुझे कौन सी नई बात बताओगे? चेम्बनकुंजु को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वह जानता है कि उसके सामने समुद्र है और उसके ऊपर आकाश है!'

उन्होंने आगे कहा, ‘मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है। सब कुछ खत्म हो चुका है। मैं किसी की बात नहीं सुनने वाला, इसलिए कृपया मुझे गलत न समझें। मेरा किसी की बात मानने का कोई इरादा नहीं है। मुझे बताइए... मैं क्यों मानूँ? केवल धन के बोझ से दबे व्यक्ति को ही अपने हर कदम से डरने की जरूरत होती है!’
शोर मास्टर ने उसे धमकी दी, 'हमसे पंगा मत लो!'
शोर मास्टर के बोलने से पहले ही, चेम्बनकुंजू गुस्से से कांपते हुए बोला, 'चुप रहो! अगर तुम अपनी इज्जत बचाना चाहते हो, तो चुप रहो...'
किसी ने भी पहले कभी शोर मास्टर से इस तरह बात नहीं की थी। और वह भी पूरे मछुआरे समुदाय की मौजूदगी में। वह सिर्फ एक व्यक्ति का अपमान नहीं कर रहा था; वह पूरे समुदाय का अपमान कर रहा था।
चेम्बनकुंजु क्या सोच रहा था? क्या वह पागल हो गया था? क्या वह आने वाले समय के बारे में नहीं सोच रहा था? किसी को कुछ समझ नहीं आया। चेम्बांकुंजू बिना कुछ कहे वहां से चली गई।
तटरक्षक का अपमान हुआ। बाकी लोग एक-दूसरे के चेहरे देखते हुए वहीं खड़े रहे। पापीकुंजू, चेम्बांकुंजू के पीछे-पीछे चला गया।
पंचमी की सारी आशाएँ चकनाचूर हो गईं। वह खड़ी-खड़ी देखती रही कि पापीकुंजू, चेम्बनकुंजू के पीछे-पीछे जा रहा है।
चेम्बांकुंजु ने पापीकुंजु को चले जाने के लिए नहीं कहा।

######

##? ######## ## ###### ## ####### ###### ##### ##### ##### ## ##### ## ### ### ## ### ########## ### ### ## ### ### ##### ###

#####? ########## ## ### ###### ### ###### ######## ## ### ### ##### ### ## ### ## ###### ## ### ###### ## ###### ## ##### ### ###### ##### ####### ### ##

######? ### ####### ## ## ###### ### ### ### ###### #####? ### ###### ##### ## ##### ### ## ###### ###### ###### ##### ## ## ######## ## ##### ########## ##### #####? ##### ### ####### ### ### ## ##### ##

###, ## ##### ##### ## ##### ## ###, ## ## ## ## ## ## ##### ##### ### ### ## ### ##### ###### ### ########## ##### ##, ### ## ##### ##### ########## ## ########## #####

##########! ########## ## ### ## ######, ##########, #######, ########## ###, ## ### ## ############ ## ## ## ## ## ## ####### ### ###-### ## ### ## ##### ### ## ###### ### ##### ### ## ### ##### ## ### ## ### ## ## ### ### ## ## ### ## ### ##### ## ### ## ##### ##### ### ##### ##### ### ### ## ##### ##### ### ##### ####### ## ## ###### ## ### ##### ## ## ##### ### ## ### ### ###### ######? ########## ## ### ##### ### ##### ### ##### ### ## ## ##### ## ### ###### ## ####### ##### ##### ### ### ## ##### ## ##### ###

########## ## ####### ## ### ## ###-### ## ### ## ####### ## ## ## ########## ###; ## ### ## ##### ### ## ##### ## ##### ##### ## ########## ## ###### ### ### ##### ##### ### ###### ## ### ####### ## ##### ##### ##### ##### ### ##### ## ### ### ## ### ##### ##? ##### ######

संध्याकाल में, वह उदास चेहरे के साथ उस किनारे पर चलता हुआ दिखाई देता था। मानो वह रेत के कणों के बीच कुछ खोया हुआ खोज रहा हो। क्या यह सच नहीं था? एक जीवन रेत में खो गया था। उसे खोजना और पाना ही था।
एक-दो बार उसका ज़िक्र चर्चा में आया था। हर बार उसके बारे में अफवाहें उड़ती थीं कि उसने करुथम्मा को बहला-फुसलाकर अपने जाल में फंसा लिया है! लेकिन ये बातें भी जल्दी ही शांत हो जाती थीं। कई झोपड़ी मालिकों ने कई महिलाओं को बहला-फुसलाकर अपने जाल में फंसाया था; और फिर ये किनारे छोड़कर चले गए, यहाँ तक कि गपशप भी बेमानी हो गई। किसी ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। कोई भी उस रिश्ते की गहराई को नहीं जानता था। क्या एक मुस्लिम झोपड़ी मालिक एक मछुआरे की लड़की से प्यार कर सकता है? किसी ने ये नहीं कहा कि प्यार नहीं हो सकता। लेकिन ऐसा पहले कभी हुआ नहीं था। यही सच्चाई है। इसलिए उस प्रेम के टूटने के बारे में किसी को पता नहीं चला था।
आज भी जब नावें किनारे पर आती थीं, तो परीकुट्टी वहाँ जाते थे। वे व्यापार देखते थे। वे कुछ सौदों में दलाली करके अपना गुजारा करते थे। यही उनका जीवनयापन था।
वह चेम्बनकुंजू की किनारे पर खड़ी नावों के पास जाकर खड़ा हो जाता और उन्हें निहारता रहता। शायद वह ऐसा तब करता था जब उसके मन में पुरानी यादें ताज़ा हो जाती थीं। शायद वह उन नावों के इतिहास को याद कर रहा होता था। एक बार, जब वह वहाँ खड़ा था, चेम्बनकुंजू अचानक वहाँ आ गया। उसने चेम्बनकुंजू को आते हुए नहीं देखा।
परीकुट्टी की मुलाकात चेम्बनकुंजू से लंबे समय से नहीं हुई थी। जब भी वह दूर से चेम्बनकुंजू को देखता, तो रास्ता बदल लेता। उसका अपराध क्या था? जी हाँ, परीकुट्टी ने वास्तव में चेम्बनकुंजू के विरुद्ध अपराध किया था!
जब चेम्बनकुंजु अचानक उसके करीब आया, तो परीकुट्टी घबरा गया। उसके सामने खड़ा व्यक्ति न तो बीते दिनों वाला चेम्बनकुंजु था और न ही उसका भूत। एक ही नज़र में वह समझ गया कि चेम्बनकुंजु के साथ कुछ गड़बड़ है। और क्या चेम्बनकुंजु को भी वही परीकुट्टी दिखाई दे रहा था जिसे वह कभी जानता था? एक पल के लिए दोनों ने एक-दूसरे को परखने में समय बिताया।
चेम्बनकुंजु ने परीकुट्टी से एक सवाल पूछा, 'मुझे आपको कितना पैसा देना है?'

परीकुट्टी ने कभी हिसाब-किताब रखने की जहमत नहीं उठाई। उसे पता ही नहीं था। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था।
चेम्बनकुंजू ने पूछा, 'कितना?'
परीकुट्टी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे। उसे कुछ भी नहीं लेना था; न ही चेम्बनकुंजू पर उसका कोई कर्ज था। कहने को बहुत कुछ था, लेकिन वह कहने से डर रहा था। वह कर्जदार की तरह चुप हो गया था। उसके अंदर का कर्जदार खामोश हो गया था।
उस लेन-देन का असली स्वरूप क्या था? परीकुट्टी करुथम्मा से प्रेम करता था और करुथम्मा भी उससे प्रेम करती थी। यही सच्चाई थी। और वह प्रेम बेदाग था। चेम्बनकुंजू और चक्की के साथ सौदा उसी समय हुआ था जब उनका प्रेम परवान चढ़ रहा था। तब भी, जब उसने पैसे उधार दिए थे, उसने कहा था कि उसे पैसे वापस नहीं चाहिए! तो क्या उसका इरादा करुथम्मा के माता-पिता को अपने वश में करके उनके प्रेम को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने का था? उन्हें पैसों का लालच देकर लड़की को पाना था? लेकिन ऐसा नहीं हो सकता था। परीकुट्टी ने कभी करुथम्मा को बहकाने या फुसलाने की कोशिश नहीं की; उसने तो कभी ऐसा करने का प्रयास भी नहीं किया। तो क्या उसे पैसे वापस नहीं मांगने चाहिए थे जब किसी दूसरे आदमी ने उसे अपना बना लिया और अपने साथ ले गया? जब कोई काम पूरा नहीं हो पाता, तो क्या रिश्वत वापस नहीं ले ली जाती? क्या उसने करुथम्मा के कहने पर पैसे दिए थे? अगर ऐसा है, तो यह गुप्त रूप से नहीं दिया गया था।
पैसों की कमी के कारण वह बर्बाद हो गया था। बर्बाद ही नहीं, बल्कि पूरी तरह कंगाल हो गया था, उसके पास बस वही कपड़े थे जो उसने पहन रखे थे। उसका घर और ज़मीन अब उसकी नहीं रही। परीकुट्टी के जीवन में कुछ भी नहीं बचा था। न कोई उद्देश्य था, न कोई लक्ष्य। क्या वह छोटी सी झोपड़ी भी नहीं बना सकता था? क्या वह अपने जीवन को फिर से संवार सकता था? कम से कम इतना तो कर ही सकता था कि मरने तक उसका पेट भरा रहे। करुथम्मा कभी उसकी नहीं होगी। उसे अपने जीवन के उस अध्याय को भूल जाना चाहिए। जीवन में कठिन अनुभवों और बाधाओं का सामना करने से इंसान बदल जाता है, अलग बन जाता है। लेकिन आज भी वह वही बेचारा आशिक है।
चेम्बनकुंजु ने अपनी कमर से एक थैली खोली। उसने फिर पूछा, 'यह कितने का है, लड़के?'

कोई जवाब नहीं मिला। परीकुट्टी अपराधबोध से ग्रस्त होकर वहीं खड़ी रही। चेम्बनकुंजू ने आगे कहा, 'मैंने सोचा था कि तुम अच्छे इंसान हो। लेकिन तुम... तुम नहीं हो।'
लेकिन परीकुट्टी ने आखिर कौन सा पाप किया था? क्या उसने करुथम्मा को धोखा दिया था? क्या उसने उसकी शादी रोकने के लिए बाधाएँ खड़ी की थीं? क्या उसने उसके वैवाहिक जीवन में दखल देकर वहाँ परेशानी खड़ी की थी? उसने आखिर किया क्या था?
उसे प्यार हो गया था। उसने जानबूझकर ऐसा नहीं किया था। न तो उसके परिवार को और न ही उसे कोई परेशानी देने के लिए। वह जन्म से पुरुष था, इसलिए उसे एक स्त्री से प्यार हो गया। और तब भी वह उसके जीवन से दूर चला गया था। लेकिन वह अभी भी वहाँ ऐसे खड़ा था मानो उसने कोई पाप कर दिया हो। चेम्बनकुंजू ने कहा, 'आपने मुझे तब पैसे सिर्फ मेरी बेटी की वजह से दिए थे, क्या यह सही नहीं है?'
‘नहीं,’ जवाब उसके गले से निकला। पर यह बोला नहीं गया। क्या परीकुट्टी को चेम्बनकुंजू के आरोप का खंडन ‘नहीं’ कहकर नहीं करना चाहिए था? उसने ऐसा नहीं किया। चेम्बनकुंजू ने कहा, ‘जैसे ही मैंने मांगा, तुमने सब कुछ समेटकर मुझे दे दिया। बिना किसी झिझक के। मुझे लगा कि तुमने ऐसा भोलेपन के कारण किया। लेकिन ऐसा नहीं था। तुम्हारा कोई छिपा हुआ मकसद था।’
चेम्बांकुंजू ने थैली खोली और पैसे गिनने लगा। अचानक उसने पूछा, 'क्या तुम्हें अपने अपराध के परिणाम पता हैं?'
परीकुट्टी मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा था। भावहीन, विचारहीन। चेम्बनकुंजू की आँखें नम थीं। 'तुम नहीं जानते; तुम सचमुच नहीं जानते... लेकिन तुम कैसे जानोगे? तुम तो एक राक्षस हो।'
परीकुट्टी ने कुछ नहीं कहा।
‘तुमने एक परिवार को तबाह कर दिया। उसे बर्बाद कर दिया। मेरी जिंदगी को तहस-नहस कर दिया। क्या तुम्हें पता है तुमने कितनी जिंदगियां बर्बाद की हैं?’
अब उस परिवार के इतिहास पर एक नज़र डालने का समय है। उस समय से जब चक्की नाव और जाल खरीदने की तलाश में मछली से भरी टोकरी लेकर पूर्व की ओर गया था, से लेकर आज तक की कहानी। अगर हम उस पूरे इतिहास को देखें, तो क्या वह आरोप कुछ हद तक प्रासंगिक नहीं लगता?

बोलते समय चेम्बनकुंजु की आवाज कांप रही थी, “मेरी करुथम्मा, जो चक्की की तरह इस तट पर खेलती-कूदती थी... तुमने उसे बर्बाद कर दिया। यह सब तभी से शुरू हुआ... क्या यही सब कुछ नहीं है?”
यह बात बिल्कुल सच थी। अगर परीकुट्टी करुथम्मा से प्यार न करता, तो इनमें से कुछ भी न होता। सामान्य तौर पर, किसी उद्देश्य से काम करने वाला मछुआरा परिवार उस तट पर कुछ तरक्की जरूर करता। लेकिन चेम्बनकुंजू की उम्मीदों पर खरा उतरना महज़ एक सपना ही रह जाता। चेम्बनकुंजू एक बलवान मछुआरा था जो प्रकृति की शक्तियों से लगातार जूझता रहता था और जिसका जीवन उस समुदाय के रीति-रिवाजों के अनुसार चलता था। अब चेम्बनकुंजू के पास क्या था? न पत्नी, न बच्चे; और जिन नावों के लिए उसने अथक परिश्रम किया था, वे सब गायब हो गईं। न जाल, न कुछ बचा... यहां तक कि उसका खास रिश्ता भी टूट गया। जब सब कुछ गिना गया, तो सिर्फ पांच सौ पचानवे रुपये बचे। चक्की और उसकी जीवन भर की मेहनत के बाद बस इतना ही बचा था। और एक पुराना कर्ज भी बाकी था।
परीकुट्टी एक दुष्ट कीड़े की तरह उस परिवार के इतिहास में रेंगता हुआ घुस गया था। मानो आग की लपटें उसे अपने रास्ते में ही सिकोड़ने के लिए जलाई गई हों। तो क्या चेम्बनकुंजू का उससे सवाल करना सही नहीं था? अगर परीकुट्टी में थोड़ी भी इंसानियत होती, तो उसे उस दिन को कोसना चाहिए था जब वह अपने पिता का हाथ थामे एक छोटे बच्चे के रूप में पहली बार इस तट पर आया था। उस दिन चेम्बनकुंजू का परिवार भी शनि के बुरे प्रभाव में आ गया था... लेकिन उस दिन नावों से गिरी छोटी मछलियों को उठाने आई लड़की ने बिना पलक झपकाए उसकी ओर देखा था। उसने उससे एक छोटा गुलाबी शंख मांगा था जो उसने उठाया था। 'क्या तुम मुझे यह दोगी?'
उसने उसे शंख दिया। लेकिन क्या उसने शंख के साथ अपना दिल भी नहीं दे दिया? लेकिन इन सब के लिए वह ज़िम्मेदार नहीं था। परीकुट्टी ने जानबूझकर परिवार में घुसपैठ नहीं की थी। वह अनजाने में ही उस परिवार के आंतरिक ताने-बाने में शामिल हो गया था। उस पर कई आरोप लग सकते थे। और परीकुट्टी एक आरोपी के तौर पर बिल्कुल सही साबित हो सकता था। लेकिन उसकी सच्चाई कौन जानता? और वह किसी को कैसे बता सकता था? सिर्फ़ एक ही व्यक्ति जानता था - करुथम्मा। लेकिन क्या वह भी इसे स्वीकार करती थी? जब वह उसे देखती, उसके बारे में सोचती, तो क्या वह चिंता से नहीं घिर जाती? वह उसके लिए डर का पात्र बन गया था। परीकुट्टी। वही था वह।

चेम्बनकुंजू ने कहा, 'मेरी अब सिर्फ एक ही देनदारी बची है। तुम्हारा कर्ज। जो पैसा तुमने मेरी बेटी को बहकाने और मुझे बर्बाद करने के लिए दिया था... ये लो!'
उसने पैसे को सोच-समझकर खर्च किया।
परीकुट्टी वहीं जम गया। चेम्बनकुंजू ने फिर कहा, 'लो... लो इसे!'
‘हम्म,’ एक हल्की सी आवाज़।
यह एक गंभीर आदेश था। परीकुट्टी ने यंत्रवत अपना हाथ बढ़ाया। चेम्बनकुंजू ने उसके हाथ में पैसे रख दिए।
बस इतना ही है। मुझे नहीं पता कि मैं आपका कितना ऋणी हूँ। यह तो सिर्फ मेरी चक्की ही जानती थी। अगर इससे कम है, तो मैं कुछ नहीं कर सकता।
चेम्बांकुंजू चलने लगा।
परीकुट्टी काफी देर तक वहीं खड़ा रहा, पैसों को पकड़े हुए। वह स्तब्ध और भ्रमित था।
उसे पैसों की क्या ज़रूरत थी? जो व्यक्ति रोज़ाना अपनी कमाई से गुज़ारा करता था, उसे पैसों की क्या ज़रूरत थी? उसने कितना पैसा खोया था? सिर्फ़ पैसा? उसने तो अपना जीवन ही खो दिया था। उसके पास दिन भर के खाने के लिए पैसे थे। तो जब आगे का जीवन फैला हुआ था, तो क्या यह बड़ी रकम उसके लिए बहुत मायने नहीं रखती थी? एक पुराना कर्ज़ चुकाया जा रहा था।
परीकुट्टी ने अपने हाथ की ओर देखा। वह पैसों को कसकर पकड़े हुए था। नोटों के सिरे हवा में लहरा रहे थे। उसे पैसों की क्या ज़रूरत थी? क्या उसने कभी सोचा था कि ये पैसे उसके होंगे? तो फिर ये उसके कैसे हो सकते हैं? तो फिर ये किसके हैं?
ज़ोरदार हंसी सुनकर परीकुट्टी कांप उठा और मुड़ा। थोड़ी दूर पर, चेम्बनकुंजू द्वारा कंदनकोरन से खरीदी गई नाव को रेत पर रखे दो लट्ठों पर टिका दिया गया था। वह कई दिनों से वहीं पड़ी थी। कई दिनों से उसका पिछला हिस्सा ऊपर की ओर झुका हुआ था। मानो पिछला हिस्सा समुद्र को, क्षितिज के पार किसी चीज़ को घूर रहा हो। कोई उसे वहाँ से बुला रहा था। समुद्र और उससे परे का सागर उसके पुराने दोस्त थे। इतना ही नहीं, क्या वह भी सागर का हिस्सा नहीं थी? क्या उसे सागर में नहीं रहना चाहिए था? वह सागर के लिए ही बनी थी। कई दिनों से वह सागर में दौड़ने के लिए तरस रही थी। बस एक स्पर्श की ज़रूरत थी, और वह लहरों पर सवार होकर पानी को चीरती हुई आगे बढ़ जाती।

धाराओं और नालों के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए गहरे सागर में पहुँच जाती।
मैं कब तक इस किनारे पर बैठा रहूँ? मुझे देखो, सूरज की चुभती किरणों ने मेरे शरीर को चीर-फाड़ दिया है। क्या तुम मुझे उस खारे पानी की आनंददायक गहराई में नहीं जाने दोगे? ऐसा लग रहा था मानो वह कह रहा हो।
पानी से उठने वाली हवा शायद इसे थोड़ा ठंडा कर दे। यह पल्लिकुन्नथ कंदनकोरन की नाव थी। यह चेम्बनकुंजू की नाव थी। सबसे बड़ी मछलियों से भरी नाव; एक सुंदर नाव; एक ऐसी नाव जो पक्षी की तरह उड़ती थी।
उसका दूसरा सिरा तिरछा होकर ढेर की तरह पड़ा था, मानो यह कह रहा हो कि वह जा रहा है।
नाव के उसी तरफ से वो तीखी हंसी गूंजी थी। वो एक ठंडी, भावहीन हंसी थी।
चेम्बनकुंजू हंस रहा था।
दोनों बहनें एक-दूसरे से लिपट गईं। उन्हें पता ही नहीं चला कि वे कितनी देर तक वहाँ खड़ी रहीं। दोनों रो रही थीं। करुथम्मा अपने पिता की बात न मानकर घर से निकल गई थी और अपनी माँ को मृत्युशय्या पर जाते हुए देख चुकी थी।
उसकी छोटी बहन की दर्द भरी 'ए-चे-ची!' की आवाज़ उसके कानों में दूर-दूर तक गूंजती रही थी। तब से बहुत कुछ घट चुका था। अम्मा का देहांत हो गया। एक सौतेली माँ आ गई... और आखिरकार अब दोनों बहनें मिलीं।
पंचमी, जिसकी योजनाएँ विफल हो गई थीं, सीधे त्रिकुन्नपुझा की ओर चल पड़ी। भला वह कहाँ जाती? पंचमी का आगमन अप्रत्याशित था। पलानी गले लगी हुई रोती हुई बहनों को देखता रहा। उसकी गोद में बच्चा गुटरगू कर रहा था और हँस रहा था। वह बड़बड़ा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो बच्चा भी इस दृश्य का आनंद ले रहा हो।
पलानी ने पूछा, 'यह कौन है? पंचमी? तुम यहाँ कैसे आई?'
पंचमी के कुछ कहने से पहले ही करुथम्मा ने बच्चे को गोद में उठा लिया। बच्चा पंचमी की बाहों से उछलकर उनकी बाहों में आ गिरा। करुथम्मा ने कहा, 'यह मेरे बच्चे की बुआ है!'
पंचमी ने बच्चे को खूब प्यार से चूमा। वह इस सपने को जी भर कर देख रही थी। पलानी ने नीरकुन्नथ के बारे में कुछ नहीं पूछा। उस जगह के बारे में उसके पास पूछने के लिए कुछ नहीं था। उससे उसका क्या रिश्ता था? बिलकुल कुछ नहीं।

करुथम्मा के पास कहने और जानने के लिए बहुत कुछ था। और पंचमी के पास भी कहने के लिए बहुत कुछ था। पलानी को इस बात की परवाह नहीं थी कि करुथम्मा किसके बारे में या किस बात को लेकर उत्सुक है; वास्तव में, उसे यह विचार ही नापसंद था। उसे तो 'नीरकुन्नथ' का नाम भी पसंद नहीं था! शायद वह पंचमी को नापसंद नहीं करता था। एक भोली-भाली बच्ची। वह उसे नापसंद क्यों करेगा? वह निर्दोष थी। लेकिन वह कहाँ से आ रही थी? और वह किसके बारे में खबर लेकर आई थी? पलानी को अनाथ पंचमी नहीं दिख रही थी। उसे तो अपने घर में एक काली परछाई दिखाई दे रही थी जो करुथम्मा के विचारों को उन सभी चीजों की ओर मोड़ देगी जिनसे उसे घृणा होती थी। नीरकुन्नथ से आई पंचमी को देखकर करुथम्मा को क्या याद आएगा? वह क्या पूछेगी? वह किसके बारे में पूछताछ करेगी?
पलानी उत्साहित नहीं थी। एक बार फिर उस घर पर उदासी छा गई। उदासी का माहौल था। बच्चे की हल्की सी आवाज़ ही कभी-कभार उस घर में छाए सन्नाटे को रोशन कर देती थी। वह बच्चा कभी रोता नहीं था; उसे रोने की ज़रूरत ही नहीं थी। लेकिन अब बच्चा रोने लगा। तब पंचमी कहती, 'एचेची, बच्चे को मत रुलाओ!'
वह बच्चे को गोद में उठा लेती और उसे दिलासा देने की कोशिश करती। बच्चा अपनी इस 'छोटी माँ' को बहुत पसंद करता था।
कुछ भी पूछा या बोला नहीं जा सकता था। ऐसा लग रहा था मानो सबने अपनी सांस रोक रखी हो। हर बात पलानी की पहुंच से दूर ही सुननी या कहनी पड़ती थी। और वह पल कभी नहीं मिला।
पलानी शायद यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह क्या पूछेगी। यह संभव था। और अगर ऐसा था, तो पलानी को दोष कैसे दिया जा सकता था? वह एक पति और पिता था। करुथम्मा ने कसम खाई थी और वादे किए थे। फिर भी, उसका दिल कभी किसी और का था। उसे क्या यकीन था कि वह मुसलमान अब भी किसी गुप्त स्थान पर नहीं रहता? अगर ऐसा नहीं भी था, तो यह स्वाभाविक था कि एक पति, कोई भी प्रतिबद्ध पति, अपनी पत्नी पर शक करेगा। करुथम्मा परीकुट्टी के बारे में क्या पूछेगी? पहले से कहीं ज्यादा, करुथम्मा लगभग हर बात पर चिढ़ने लगी थी। पलानी भी चिड़चिड़ी हो गई थी। वे दोनों हमेशा झगड़े के कगार पर रहती थीं।
कोई चीज़ उन दोनों को जकड़ रही थी। एक बेचैनी की जकड़न।
एक बार पंचमी ने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया, 'तुम तो बहुत सख्त हो...'
'आप क्यों कहते हो कि?'
‘आपने अचान के बारे में एक बार भी नहीं पूछा?’

करुथम्मा ने कहा, 'चुप रहो! वह हमें सुन लेगा!'
पलानी ने कहा कि वह उस शाम जल्दी निकल रहा है ताकि मछली पकड़ने के लिए जाल डाल सके। यह राहत की बात थी। उसने जालों में चारा लगाया। उसने जल्दी खाना बना लिया। शाम ढलते ही, माँ और बच्चा उसे नाव में समुद्र की ओर जाते हुए देखने लगे। नन्हे बच्चे ने अपना छोटा हाथ उठाया और हाथ हिलाया। यह एक रिवाज था। नाव में बैठे पिता भी हाथ हिलाकर विदाई देते थे। लेकिन उस शाम ऐसा नहीं हुआ। नाव पश्चिम की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। वह चप्पू चलाते हुए उसे और दूर ले जा रहा था। बच्चा रो रहा था।
दोनों बहनें घर पर अकेली थीं।
पंचमी ने बोलना शुरू किया। उसने अपनी प्यारी माँ की मृत्यु, उसे नल्लापेन्नू की देखरेख में सौंपे जाने, अम्मा द्वारा अचन को दूसरी स्त्री से विवाह करने की अनुमति देने की सारी बातें बताईं।
'और एचेची, एक दिन पारीकुट्टी बॉस अम्माची से मिलने आए।'
करुथम्मा ने विषय बदल दिया। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। पंचमी ने पूछा, 'क्यों? क्या तुम सुनना नहीं चाहती कि क्या हुआ?'
उस सवाल को अनसुना करने का नाटक करते हुए करुथम्मा ने पूछा, 'अम्माची की मृत्यु के बारे में मुझे क्यों नहीं बताया गया?'
सबने कहा कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए।
'सब लोग?'
'हाँ। सब कहते थे कि इचेची बुरी थी! तुम बहुत कठोर हृदय वाली थीं। लेकिन तुम्हें कभी प्यार भी नहीं मिला; तुम एक कठोर महिला हो!'
फिर उसने सौतेली माँ के बारे में बात की। जब यह कहानी सामने आई, तो उसे एक महत्वपूर्ण बात बतानी थी। 'हमारी नाव और जाल सब गायब हो गए! इसे ओसेपाचन के पास गिरवी रखा गया था। और वह पैसा सौतेली माँ ने अपने बेटे को दे दिया।' फिर उसने आगे की सारी घटना बताई। उनकी नावें और जाल खो गए थे! करुथम्मा के मन में अपने पिता की छवि उभर आई, जो नाव के पिछले हिस्से पर खड़े थे और नाव लहरों को चीरते हुए पक्षी की तरह तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। उसके माता-पिता ने पूरी ज़िंदगी इसके लिए मेहनत की थी। उसे भी वह नाव बहुत प्यारी थी। पलानी की नाव से पहले, वह उसी नाव की ओर इशारा करके कहती थी, 'हमारी नाव!' अब वह किसी और की थी। अब उसका उससे कोई लेना-देना नहीं था। करुथम्मा फिर रो पड़ी।

तब करुथम्मा ने पूछा, 'अब अचन का गुजारा कैसे चलेगा?'
'कौन जानता है!'
पंचमी की उदासीनता ने सबसे अधिक पीड़ा पहुँचाई। सबसे बढ़कर, इसी उदासीनता ने करुणाम्मा के दिल को छलनी कर दिया। उनके पिता का जीवन कैसा बीतेगा, यह पंचमी के लिए नगण्य प्रतीत होता था।
करुथम्मा ने अपना आपा खो दिया और कहा, 'तुम कितने कठोर प्राणी हो!'
पंचमी ने इस बात को पकड़ लिया। 'तुम ऐसा क्यों कह रही हो?'
‘तुमने यह जानने का इंतजार नहीं किया कि अचान कैसे काम संभालेगा। तुम बस चले गए। ऐसा नहीं था कि उन्होंने तुम्हें निकाल दिया हो। अब अचान के पास कौन है?’
‘ओह! चलिए इस बारे में बात नहीं करते। आपका क्या? आपने क्या किया?’
यह सच है! पंचमी ने जो कहा वह सही था। अकेले पंचमी को कैसे दोषी ठहराया जा सकता है? लेकिन एक अंतर था। करुथम्मा के पास अपने माता-पिता को छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। पंचमी के साथ ऐसा नहीं था।
पंचमी ने कहा, 'अगर तुम उस दिन घर छोड़कर नहीं जातीं, तो इनमें से कुछ भी नहीं होता। अम्माची की तरह तुम भी हमारे घर की देखभाल कर सकती थीं।' करुथम्मा सोच में डूबी बैठी थी। अगर ऐसा होता, तो क्या सब कुछ ठीक हो जाता? बेचारी बच्ची! उसे कुछ पता ही नहीं था। कितना कुछ हो जाता! फिर तो कोई इचेची नाम की भी नहीं होती। लेकिन उसे इनमें से कुछ भी पता नहीं था। पंचमी, जिसकी ज़बान बहुत तीखी थी, बोलती रही, 'जब एक मछुआरा आया, तो तुम सब कुछ भूलकर उसके पीछे चली गई!'
‘नहीं, ऐसा नहीं है!’ दर्द से भरे दिल से उसके मुंह से ये शब्द निकले। हालांकि, ये कुछ अस्पष्ट शब्द ही थे जो मुंह से निकल गए। क्या उसे ये नहीं कहना चाहिए था कि ऐसा इसलिए था क्योंकि उसका मानना था कि एक मछुआरे की प्यारी पत्नी होने के नाते उसे उसकी आज्ञा माननी चाहिए और उसका फर्ज है कि वह जहां भी कहे, उसके पीछे जाए? वह पलानी के घर में रहती थी, समुद्र में उसकी अथक मेहनत से कमाए गए भोजन को खाती थी। क्या उसे ये नहीं कहना चाहिए था?
बेचारा! वह तो बाहर हो गया था। सच तो यह है कि वह खुद उस जगह से भाग गई थी। ऐसा इसलिए नहीं था कि वह अपने माता-पिता से प्यार करती थी या एक स्नेही और

जिम्मेदार पत्नी थी। और जैसा कि पंचमी ने दावा किया, वह अपने मछुआरे के पीछे भी नहीं भागी थी।
इन सभी खबरों के बीच, चेम्बनकुंजू के पागलपन का भी जिक्र आया। पंचमी ने इसका वर्णन किया। गुस्से को मुश्किल से छिपाते हुए दांत पीसते हुए उसने कहा, 'उस मोटी औरत ने कहा कि तुम उस मुस्लिम के बहकावे में आकर समुद्र तट को बर्बाद कर दिया!'
कुछ दया भाव से उसने आगे कहा, 'बेचारा अचान! वह पागल हो गया...'
करुथम्मा कुछ भी जवाब नहीं दे पा रही थी, वह सुन्न पड़ गई। उसके कान बजने लगे। उसकी आँखें बेजान हो गईं। पंचमी बोलती रही। तो, उस किनारे पर यह सब अभी भी गपशप का विषय था। इस पर अभी भी चर्चा हो रही थी। और उसके स्वाभिमानी पिता को भी इसके बारे में पता चल गया था। क्या उसके पिता उसे कभी माफ़ कर पाएंगे?
पंचमी ने फिर से परीकुट्टी का ज़िक्र किया। उसने उस युवक की दयनीय कहानी सुनाई। उसने कहा, “उसके पास कुछ नहीं है, इचेची। वह कंगाल है। और वह किनारे पर भटकता रहता है। उसे देखकर लगता है जैसे वह पागल हो। यह वाकई बहुत दुखद है!”
करुथम्मा ने पंचमी को जारी रखने या रोकने के बारे में कुछ नहीं कहा। वह इसके बारे में सब कुछ जानने के लिए उत्सुक थी। अगर परिस्थितियाँ अलग होतीं, तो वह खुद परीकुट्टी के बारे में पूछती।
शायद उसके मन में भी वही छोटा लड़का पीली कमीज और पतलून पहने, सिर पर टोपी लगाए, गले में रुमाल बांधे और अपने पिता का हाथ पकड़े हुए दिखाई दे रहा था। वही शंख जो उसने उसे उपहार में दिया था... उस प्रेम कहानी के सारे दृश्य एक-एक करके उसकी आँखों के सामने आ गए।
एक अनमोल जीवन बर्बाद हो गया था। वह बिखर रहा था। नहीं, वह पूरी तरह नष्ट हो गया था। अनजाने में ही उसने पंचमी से पूछा, 'क्या छोटा बॉस अब भी नाव पर बैठकर गाता है?'
पंचमी ने जवाब दिया, 'अरे... कभी-कभी वह गाता भी है!'
क्या पंचमी को पता था कि गाने का मतलब क्या था? यह संभव नहीं था।
करुथम्मा ने पूछा, 'क्या तुम उसे कभी देखती हो?'
'कभी-कभी!'

‘क्या वह कभी तुमसे एचेची के बारे में पूछता है?’ करुथम्मा की आवाज कांप उठी।
पंचमी ने कहा, 'जब वह मुझे देखता है, तो मुस्कुराता है!'
और कभी-कभी वह उसके बारे में पूछता था!
एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जो पहले कभी नहीं सुनी गई थी। पलानी उनके सामने खड़ा था।
पंचमी और करुथम्मा अपने पैरों पर खड़े हो गए।
करुथम्मा का रहस्य सबके सामने आ गया।

बीस

करुथम्मा को एक ऐसा साहस मिला जो उसने पहले कभी नहीं जाना था। एक उद्देश्य। उसके भीतर एक धुंधली लेकिन निश्चित योजना आकार लेने लगी।
जीवन और परिस्थितियाँ उसे यहाँ तक ले आई थीं। तब तक वह एक डरपोक महिला थी।
हर चीज़ और हर किसी से डरी हुई, अपनी कोई इच्छा या ख्वाहिश न रखने वाली। शायद उसके अपने सपने रहे हों, लेकिन उन पर कभी कोई चर्चा नहीं हुई थी।
यह बदलाव अचानक हुआ। शायद पंचमी के आने का इसमें कुछ हाथ था। उसे एक साथी मिल गया था। जब उसके सारे राज़ खुल गए, तो छिपाने के लिए क्या बचा? डरने के लिए क्या बचा? जीवन को सुरक्षित रखना अब कोई मायने नहीं रखता था। लेकिन अपने जीवन की तमाम अनिश्चितताओं के बावजूद, वह अकेली नहीं थी। उसके पास कोई था - पंचमी।
उसने अपने पति से किए वादे दोहराए। उसने अपने दिल की सारी बातें उससे कह दीं। पलानी ने पूछा, 'तुम्हारा साथी होने के अलावा, वह तुम्हारे लिए क्या था?' इसका जवाब यह था कि उसने कभी खुद को किसी और का नहीं बनने दिया था। पलानी यह सुनना नहीं चाहता था। उसने पूछा, 'क्या तुम उससे प्यार करती थी?' उसने अपनी आँखों के सामने वही परीकुट्टी देखा जिसका वर्णन पंचमी ने दया भाव से किया था – एक परीकुट्टी जिसने जीवन में सब कुछ खो दिया था और अब पागलों की तरह किनारे पर भटकता हुआ अपना गीत गा रहा था। ‘मैं यह गीत हमेशा गाऊँगा; मैं यह गीत गाऊँगा ताकि त्रिकुन्नपुझा में भी यह सुनाई दे’ – ये शब्द उसके कानों में गूँज उठे।
जब आपके पास नाव और जाल हों, तो क्या आप हमें अपनी मछलियाँ बेचेंगे?
जब करुथम्मा ने जवाब देने में काफी देर लगाई, तो पलानी ने अपना सवाल दोहराया। उसके मन में कहीं न कहीं तीखे स्वर में यह सवाल उठा, 'छिपाने के लिए अब क्या बचा है? इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। शादी से पहले आप किसी से प्यार करती थीं। इसमें क्या गलत है?'
करुथम्मा ने कहा, 'हां, मैं प्यार में थी!'
कमरे में गहरा सन्नाटा छा गया। भला कौन सी आवाज़ इसे भेद सकती थी? पलानी के सवाल ने उस सन्नाटे को तोड़ दिया। 'क्या तुमने उसे विदाई दी?'
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
एक और सवाल। 'आपने उसे कब बताया कि आप उससे अगली बार कब मिलेंगे?'

मैंने ऐसा कुछ कभी नहीं कहा!
बच्चा जाग उठा और रोने लगा। उसने बच्चे को गोद में उठाया और उसे दूध पिलाया। उस दिन उसने उसका दिल जीतने की कोशिश नहीं की। लेकिन बार-बार उसने अपनी वफादारी की कसमों से उसकी बुद्धि को प्रभावित करने का प्रयास किया। एक पत्नी की कसमें। जो अन्य स्त्रियाँ विवाह की रस्म के मात्र से मौन रूप से निभाती हैं, वह उन्हें शब्दों से पूरा करती है। ऐसा लगता था मानो वह पूछ रही हो कि वह उससे और क्या अपेक्षा करता है।
भोर होते ही पलानी उठे और बिना कुछ बोले चले गए। पंचमी ने पूछा, 'क्या वह नाराज़ हैं?'
करुथम्मा ने कहा, 'हम दोनों का कोई अपना नहीं है।'
पंचमी ने कहा, 'तुम्हारे पास सहारा लेने के लिए कोई है। मेरे पास तो कोई नहीं है!'
नहीं, मेरी छोटी बहन। हम दोनों एक ही स्थिति में हैं। हम साथ रहेंगे! करुथम्मा ने लगभग कटुता से कहा, 'योग्य चेम्बनकुंजु के बच्चे!'
उस दोपहर जब पलानी पहुंचे, तो करुथम्मा उनके पास एक अनुरोध लेकर गईं। 'मैं एक बार नीरकुन्नथ जाना चाहती हूं।'
उन्होंने कुछ नहीं कहा।
उसने उसे चेम्बांकुंजू की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया। 'मेरे पिता का कोई नहीं है।'
उन्होंने इसका भी कोई जवाब नहीं दिया।
रिवाज के मुताबिक, उस दिन भी उसने छड़ों पर चारा लगाया। उसने खाना परोसा। पलानी मछली पकड़ने वाली छड़ें और चप्पू लेकर आगे चल पड़ा और करुथम्मा एक हाथ में खाने का बर्तन और दूसरे हाथ में बच्चे को लिए उसके पीछे-पीछे किनारे तक गई। उस दिन भी बच्चे ने हाथ उठाकर हिलाया। जब पलानी थोड़ा समुद्र में चला गया, तो उसने पीछे मुड़कर देखा। बच्चा अपना हाथ ऊपर उठाए हुए था।
करुथम्मा कुछ देर तक वहीं खड़ी रही। गोधूलि बेला का समय था। पश्चिमी आकाश पिघले हुए सोने की एक घुमावदार आकृति जैसा लग रहा था। कितना गहरा रंग था! जहाँ नीला सागर और रंगों की वह घनी पट्टी मिलती थी, वहाँ एक काली रेखा बन गई थी। उस रेखा के पार एक रहस्यमयी भूमि थी। जहाँ सबसे बड़ा रहस्य छिपा था।

समुद्री सांप उसकी नाव में रेंगते हुए घुस आए। वे नीले सागर में फैले चांदी के ताबीजों पर फिसल रहे थे। नाव के किनारे पर, वे अपनी पूंछों पर खड़े होकर नाचने लगे। और फिर वे वापस पानी में रेंग गए। नाव के अंदर दो सांप एक-दूसरे से लिपट गए।
पश्चिम से, क्षितिज को ढकती हुई एक विशाल लहर उमड़ती हुई आई। उसे उस लहर के बीच से होकर पार जाने की तीव्र इच्छा हुई। लेकिन लहर ने छोटी नाव को अपनी चोटी पर उठाया और फुहारों की सफेद गड़गड़ाहट के साथ उसे पलट दिया। वहाँ कोई लहरें नहीं थीं। एकदम शांत। लेकिन समुद्र काले रंग से रंगा हुआ था। दक्षिण-पश्चिम से, एक लंबी जीभ समुद्र की सतह के नीचे रेंगती हुई प्रतीत हुई। यह शांति पहले जैसी नहीं थी। यह नाव के रास्ते में नहीं आ रही थी। बल्कि इसमें एक खिंचाव था। कहीं कोई भंवर था। धारा में फंसा हुआ, समुद्र तल का कीचड़ भी हिल रहा था।
नहीं, उसे उस खिंचाव से लड़ना ही था। पलानी की नाव उस धारा में बहती जा रही थी। उसने उसके विपरीत चप्पू चलाया। दूर कहीं एक रोशनी फैल रही थी। कोई चीज़ उसमें प्रवेश कर गई।
समुद्री चिड़ियाएं छोटी-छोटी लहरों पर झूल रही थीं। वे सो रही थीं। अचानक वे चीखते हुए उठीं। उन्हें नाव से डर नहीं लगा। उस समुद्र में हलचल सुनाई दे रही थी।
शार्क! एक समुद्री पक्षी को शार्क ने पकड़ लिया था।
पलानी ने अपनी मछली पकड़ने वाली छड़ी निकाली। केवल एक अनुभवी और कुशल मछुआरा ही ऐसा करने का प्रयास करेगा।
दोनों बहनें कुछ देर बातें करती रहीं। वे बीते हुए समय की घटनाओं पर चर्चा नहीं कर रही थीं। उनकी मां या परीकुट्टी के बारे में बात करने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। वे सब अतीत की बातें थीं। चेम्बनकुंजू एक जीती-जागती समस्या था। और उस काबिल चेम्बनकुंजू की अभागी बेटियां भी एक जीती-जागती समस्या थीं। और बातें करते-करते पंचमी अचानक सो गई।
करुथम्मा को नींद नहीं आ रही थी। लगातार हवा चल रही थी। एक ऐसी हवा जिसमें एक ऐसा गीत था जो पहले कभी नहीं सुना गया था। करुथम्मा को ऐसा लगा मानो परीकुट्टी के गीत के अंश उस हवा में घुल गए हों। उसने सुना; उसने ध्यान से सुना। और इस तरह वह अपने जीवन के उस हिस्से में प्रवेश कर गई जिसका नाम परीकुट्टी था।

उसका मछुआरा समुद्र में अकेला था। वह दूर समुद्र में चारा डाल रहा था। और इसलिए उस पहली मछुआरिन की तरह, उसे भी किनारे पर खड़े होकर उसकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए थी। लेकिन इसके बजाय, उसने परीकुट्टी के बारे में सोचा।
यह जानबूझकर नहीं किया गया था। वह न सो रही थी और न ही जाग रही थी। परीकुट्टी एक नेक, प्यारा और स्नेहशील व्यक्ति था। ये सभी बातें निश्चित थीं। वह इस जीवन में परीकुट्टी को कभी नहीं भूल सकती थी। और न ही कभी भूलेगी। परीकुट्टी उसका था; और वह उसकी।
भीतर से उसे कोई रोक नहीं रहा था। उसके दिल में भी कोई धड़कन नहीं थी। उस तल्लीनता में वह बुदबुदाई: वह इंतज़ार कर रही थी। परीकुट्टी आएगा; परीकुट्टी उसे बुलाएगा। वह उसकी पुकार सुनेगी।
इसीलिए वह जाग रही थी।
‘करुथम्मा!’
करुथम्मा जाग उठीं। क्या किसी ने उन्हें बुलाया था?
‘करुथम्मा!’
उसे ऐसा लगा जैसे उसने दूर से कोई आवाज़ सुनी हो। क्या उसने किसी तल्लीनता और जीवन की व्यस्तता के बीच खोकर यह सब कल्पना की थी? या फिर, क्या कोई दरवाज़े से आवाज़ दे रहा था?
एक बार फिर वही पुकार। 'करुथम्मा!'
उस रात सिर्फ एक ही आदमी उसके दरवाजे पर दस्तक देता था। यह एक ऐसी पुकार थी जो हर रात आती थी। पलानी समुद्र से लौटकर आता था और उसे पुकारता था। उसके लौटने का समय लगभग हो चुका था।
‘करुथम्मा!’
क्या यह उसकी आवाज़ थी? और कौन हो सकता था? उसने पुकारा, 'हाँ। क्या?'
उस आवाज ने उसे दरवाजा खोलने के लिए नहीं कहा। आमतौर पर वह उसे दरवाजा खोलने के लिए कहता था। फिर भी वह उठी, दरवाजा खोला और बाहर कदम रखा। बाकी दिनों के विपरीत, आज तेज हवा चल रही थी। एक ऐसी हवा जिसमें एक अलग ही प्रचंडता थी। साफ चांदनी चारों ओर फैल रही थी। आंगन में कोई नहीं था। वह घर के पश्चिम की ओर चली गई। समुद्र तट की ओर। समुद्र को निहारने के लिए। चांदनी में एक आदमी खड़ा था। वह परीकुट्टी था।

करुथम्मा डरी नहीं; वह चीखी भी नहीं। वह ऐसे खड़ी रही मानो उसकी पुकार सुनकर ही बाहर निकली हो। वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। उसने उस आकृति को ध्यान से देखा। यह उसका बॉस नहीं था। वह बहुत दुबला हो गया था।
जब वह करीब आया, तो क्या उसे डर नहीं लगा? क्या वह उसके स्तनों और नितंबों को घूरता नहीं रहेगा? नहीं, उसे ऐसा कोई डर नहीं था... उसके स्तन अब पहले की तरह सुडौल और सुंदर नहीं रहे थे। एक बच्चे के कोमल होंठों ने उन स्तनों को गहराई से चूम लिया था, जिससे वे और भी भरे-भरे और कोमल हो गए थे। फिर भी, जब पलानी समुद्र में था, तो क्या उसे रात में वहाँ खड़े होकर किसी पुरुष से बात करनी चाहिए थी? करुथम्मा को डर नहीं था। क्या वह उससे पहले रात के सन्नाटे में नहीं मिली थी? और वैसे भी, क्या उसे उस टूटे हुए जीवन को एक मुलाकात का सहारा नहीं देना चाहिए था, भले ही वह मुलाकात संक्षिप्त ही क्यों न हो?
वे एक-दूसरे को देखते हुए खड़े थे। उसने अपने सामने खड़े इस आदमी को बर्बाद कर दिया था। अपने दिल की गहराई में करुथम्मा जानती थी कि वह उससे प्यार करता है और हमेशा करता रहेगा। चाहे उसके साथ कुछ भी हो जाए, चाहे कभी भी और कैसे भी हो, वह हमेशा उससे प्यार करेगा। और वह हमेशा उसे माफ करेगा। वह उसे कितना भी नुकसान पहुंचा दे, वह उसके लिए वह दर्द भी सह लेगा।
उस क्षण भर के लिए, करुथम्मा अपने जीवन की सारी निराशाएँ भूल गई। वह पराजित स्त्री नहीं थी। उसके पास अपार धन था। ऐसा धन जो किसी और स्त्री के पास नहीं था! क्योंकि उसने कभी सोचा था कि वह एक योग्य पुरुष की देखरेख में है; क्योंकि उसने कभी सोचा था कि उसका जीवन सुरक्षित है। उसे जीवन पर पूरा भरोसा था। वह कभी भूखी नहीं रहेगी; उसे कभी संसार की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। इन सब बातों ने उसे आत्मविश्वास दिया था। उसका पलानी बलवान था। और उसका प्राण भी प्रखर था। एक पुरुष उससे प्रेम करता था। वह हमेशा उसकी प्रियतमा रहेगी! और वही पुरुष जो उससे इतना प्रेम करता था, उसके सामने खड़ा था।
वह उसकी फैली हुई बाहों में समा गई और उसके सीने से लग गई। उसने अपना चेहरा उसकी ओर उठाया। उसने उसके कानों में फुसफुसाया, 'मेरी करुथम्मा!'
‘क्या, मेरी प्यारी?’
उसके हाथ उन नितंबों पर फिरे, जिन्हें कभी वह, एक मुसलमान होने के नाते, और समुद्र तट के आवारा लोग घूरते थे।

पारीकुट्टी ने पूछा, 'करुथम्मा!'
एक बार फिर सम्मोहन जैसी अवस्था में उसने जवाब दिया, 'क्या?'
‘मैं तुम्हारे लिए कौन हूँ?’
उसने अपने हाथों से उसका चेहरा थाम लिया और आधी बंद पलकों के साथ फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम मेरे लिए कौन हो? तुम तो मेरे लिए सोने का घड़ा हो!' एक बार फिर वे एक हो गए। आनंद से व्याकुल होकर उसने उसके कान में मीठी-मीठी बातें फुसफुसाईं। वह उस आलिंगन को तोड़ या उससे दूर नहीं जा पा रही थी। दूर समुद्र में, एक शार्क ने चारा खा लिया। एक विशाल शार्क! इससे पहले इतनी बड़ी शार्क ने कभी किसी का चारा नहीं खाया था! किसी भी मछुआरे को इससे पहले इतनी बड़ी मछली नहीं मिली थी। जैसे ही मछली ने चारा निगला, उस विशाल मछली ने अपनी बड़ी पूंछ से ज़ोरदार झटका दिया। पानी में हलचल मच गई और पानी की फुहार आसमान तक उठी। फिर मछली आगे की ओर उछली। पलानी ने उसे पानी के ऊपर उठते देखा। उसके मुंह से धागा धीरे-धीरे निकल रहा था।
पलानी ने उस किनारे पर सबसे बड़ी मछली पकड़ी थी। खुशी से झूमते हुए पलानी जोर से चिल्लाया। उसे अभी फैसला करना था। क्या उसे मछली को खींचकर अंदर लाना चाहिए? या उसे तैरने देना चाहिए और तब तक उसका पीछा करना चाहिए जब तक वह हार न मान ले? उसे अभी निर्णय लेना था। अगर कांटा उसके गले में गहराई तक धंस गया था, तो उस विशालकाय जीव का अंत करने के लिए बस एक ज़ोरदार झटका ही काफी था। लेकिन वह छटपटाकर नाव को तोड़ सकती थी। अगर वह उसे भागने के लिए छोड़ देता, तो नाव को उसका पीछा करना पड़ता। लेकिन वह कहाँ और कितनी दूर जाती?
किनारा अब दिखाई नहीं दे रहा था। वास्तव में, उसे यह भी नहीं पता था कि किनारा किस दिशा में है। एक हाथ में मछली पकड़ने की डोर पकड़े और दूसरे हाथ में चप्पू से नाव चलाते हुए, पलानी तारों की ओर देखकर रास्ता ढूंढ रहा था। जिस तारे को वह खोज रहा था, वह वहां नहीं था। आसमान में जगह-जगह बादल छाए हुए थे। लेकिन फिर भी नाव अविश्वसनीय गति से आगे बढ़ रही थी। नाव पानी को चीरती हुई अपना रास्ता बना रही थी। कोई लहरें नहीं थीं। समुद्र शांत था। लेकिन समुद्र गहरा और घना होता जा रहा था और भयावह होता जा रहा था। यदि कोई पानी में ध्यान से देखकर धारा की दिशा का अनुमान लगाता, तो उसके आधार पर किनारे की दिशा का पता लगाया जा सकता था। लेकिन पलानी चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, उसे किनारे का पता नहीं चल पा रहा था।

शार्क नाव को हवा की गति से घसीट रही थी। वह कहाँ जा रही थी? वे कितनी दूर आ गए थे?
दांत भींचते हुए पलानी फिर गुर्राया। ‘बस करो! अभी मुझे समुद्र माता के महल ले जाने का समय नहीं हुआ है!’ उसने रस्सी को कसकर खींचा। अचानक नाव की गति धीमी हो गई। पलानी जोर से हँसा। ‘हा... यही तरीका है, मेरे बच्चे! यहीं रुक जाओ!’
थोड़ी दूर जाकर शार्क दर्द से कराहते हुए अपनी पूंछ पटकने लगी। उत्साहित होकर पलानी ने फिर से रस्सी खींची। शार्क उछली और गिर पड़ी।
नाव भले ही रुक गई थी, लेकिन वह एक धारा में फंस गई और विशाल समुद्र में गोल-गोल घूमने लगी। धारा गोल-गोल घूम रही थी। पलानी ने फिर ध्यान से देखा। क्या वह किसी भंवर में फंस गया था?
फिर वही गोलाकार घुमाव। लेकिन उसने मछली पकड़ने वाली डोर को अभी भी पकड़ रखा था। उसने आकाश की ओर देखा। एक भी तारा दिखाई नहीं दे रहा था। उसके सारे तारे गायब हो गए थे। बादलों ने उन्हें ढक लिया था।
पलानी अपनी नाव से उठ खड़ा हुआ और चारों ओर देखने लगा। अब तक उसने दूर-दूर तक फैले समुद्र को देखा था। चारों ओर पानी ही पानी! लेकिन अब ऐसा नहीं था। वह पहाड़ों की एक श्रृंखला से घिरा हुआ था। वह और उसकी नाव एक गहरी घाटी में थे। नाव का पतवार ऊपर उठा हुआ था। समुद्र माता का महल समुद्र की गहराई में, तल पर स्थित था। समुद्र माता वहीं निवास करती थीं। पलानी ने उस महल के बारे में कई वर्णन सुने थे। वहां तक पहुंचने के लिए एक भंवर से होकर गुजरना पड़ता था। एक ऐसा भंवर जो पूरे समुद्र को मथ देता था और अपना सुरंगनुमा रास्ता बनाकर समुद्र माता के महल के द्वार तक पहुंचता था।
पलानी को ऐसा लगा मानो चारों ओर के पहाड़ पहले से कहीं अधिक मंडरा रहे हों। उसने रस्सी थोड़ी ढीली कर दी। नाव एक बार फिर अविश्वसनीय गति से दौड़ने लगी। क्या पलानी उस भंवर से बच निकला था? क्या वह पहाड़ पार कर चुका था? कहीं से एक भयंकर गर्जना सुनाई दी। उसने पहले कभी ऐसी आवाज नहीं सुनी थी। मानो बवंडर आ गया हो।
पहाड़ जितनी ऊंची लहरें उठ रही थीं। एक-एक करके लहरें तेज होती गईं और करीब आती गईं। उसने पहले कभी ऐसी लहरें नहीं देखी थीं। ये लहरें लंबाई में नहीं आ रही थीं। बल्कि, इनके सिरे आपस में मिल रहे थे और ये उसके चारों ओर एक वृत्त में जमा हो गईं।

पलानी पल भर में समुद्र के इस विचित्र क्रोध को समझ गया। वह लहरों के शिखर पर सवार होना जानता था। उसने बवंडर से लड़ना सीख लिया था। वह घोर अंधेरे में भी नाव चला चुका था।
बिजली चमकी। और गरज की ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई। पलानी ने नाव को ढीला छोड़ दिया। अगर वह रस्सी खींचता और नाव रुक जाती, तो शार्क नाव को टुकड़े-टुकड़े कर देती। समुद्र की शार्क को नाव को अपनी गति से खींचने दो।
जैसे ही नाव लहरों के शिखर पर पहुँचती, पलानी चप्पू का इस्तेमाल उत्तोलक की तरह करते हुए खुद को ऊपर उछालते और नाव का भार कम करते। और जैसे ही नाव शिखर पर पहुँचती, वे खुद को नीचे फेंक देते। उस समय नाव लगभग पलट जाती। और एक और लहर खुले मुँह लिए उनका और उनकी नाव को निगलने के लिए तैयार खड़ी होती।
गर्जना गूंज उठी। समुद्र उस बेचारे मछुआरे पर भयंकर क्रोध से दहाड़ रहा था। बवंडर ने उस गर्जना को और तेज कर दिया। गरज ने एक लय बना दी। यह कैसा शैतानी नृत्य था? वह तो बस एक नश्वर प्राणी था। क्या समुद्र माता को उसे हराने के लिए इतनी शक्तिशाली ताकतों का इस्तेमाल करना पड़ा? वह कितनी आसानी से उसे अपनी गहराइयों में खींच सकती थी!
शायद ये लहरें किनारों पर आ पहुँची होंगी और वहाँ के घरों की छतों को चीरती हुई आगे बढ़ी होंगी। शायद अब किनारे पर ज़हरीले साँप रेंग रहे होंगे। दूर कहीं कुछ ऊँचा दिखाई दे रहा था। क्या यह किसी अजीब लहर का शिखर था? या फिर कोई समुद्री राक्षस अपना सिर ऊपर उठाकर गुफा जैसा मुँह खोल रहा था?
क्या उस मछुआरे की अदम्य शक्ति टूट गई थी? जब एक लहर आई, तो उसने खुद को ऊपर उछाला, लेकिन उठ नहीं सका। उस लहर ने अपने खुले मुँह से उसे और उसकी नाव को बहा दिया। एक ही जोरदार बिजली और गरज के साथ, न केवल बादल बल्कि पूरा आकाश चकनाचूर हो गया।
समुद्र का सारा पानी एक जगह इकट्ठा हो गया। बवंडर गरज रहा था, मानो सब कुछ तबाह कर देना चाहता हो। नाव का पतवार एक लहर के ऊपर दिखाई दे रहा था। जब लहर शांत हुई, तो देखा गया कि नाव पलट गई थी और पलानी उससे चिपका हुआ था। वह अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए उसे कसकर पकड़े हुए था। एक पल के लिए उसने गहरी साँस ली और चिल्लाया, 'करुथम्मा!'
पलानी की पुकार ने बवंडर की गर्जना पर विजय प्राप्त की। वह पुकार हर शोर से ऊपर उठ गई।

वापस नहीं लौटा था। और करुथम्मा, जो उसके साथ सोई थी, वह भी वहाँ नहीं थी।
वह रोती रही और साथ ही बच्चे को दिलासा देने की कोशिश करती रही।
दो दिन बाद, एक दूसरे को आलिंगन करते हुए एक पुरुष और एक महिला के शव रेत पर आ गिरे। करुथम्मा और परीकुट्टी।
चेरियाझिकल में, तट पर एक मृत शार्क मिली, जिससे अभी भी एक रस्सी जुड़ी हुई थी।

***** *****

पी.एस.
अंतर्दृष्टि
साक्षात्कार
और भी बहुत कुछ…

मेरी चेम्मीन की कहानी

अनुवादक का नोट

चेम्मीन जिसने मुझे सौभाग्य और दुख दोनों दिए। के.के. सुरेंद्रन

चेम्मीन को अपनाने पर: मिथक मेलोड्रामा के रूप में
मीना पिल्लई

टी.एस. पिल्लई की रचनाओं की सूची

शब्दकोष

मेरी चेम्मीन की कहानी

थकाज़ी शिवशंकर पिल्लई

मैंने इसे बहुत लंबे समय तक टालता रहा। शायद यही अच्छा हुआ कि ऐसा हुआ। यह विचार मेरे मन में पनप रहा था। आजकल कभी-कभी मुझे यह ख्याल आता है कि अगर मैंने इस विचार को और अधिक समय तक रहने दिया होता, तो यह और भी परिपक्व होकर विकसित हो जाता...
कई दिनों तक मैंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की थी। कई बार, जिस उपन्यास 'चेम्मीन' को मैं लिखने की योजना बना रहा था, वह लगभग एक धमकी जैसा लगता था। मेरे कई मित्रों का मानना था कि यह मछुआरों के जीवन पर आधारित होगा; कि यह मछुआरों के गठबंधन के बारे में होगा, और उनके मन में अशांति और क्रांति की भावना जगाएगा। इनमें मुंडासेरी मास्टर भी शामिल थे, जो मेरे लिए एक आदरणीय बड़े भाई के समान थे। मेरे साहित्यिक विकास को तब तक देखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इस तरह सोचना स्वाभाविक था। ऐसा नहीं था कि मैंने तब तक जो कुछ भी लिखा था, वह केवल श्रमिक संघ और उनकी शक्तियों के एकीकरण से संबंधित था; लेकिन विचारों का यही सूत्र उन सबको आपस में जोड़ता था। मेरे मित्र, चाहे वे मेरे कितने भी करीबी क्यों न हों, न तो मेरी संगति को समझ पाते थे और न ही मेरी मनस्थिति को; मेरा मानना है कि उन्हें उस दुनिया की भौतिक वास्तविकताओं की भी सही समझ नहीं थी जिसमें हम रहते थे।
यह वो दौर था जब प्रगतिशील साहित्य संरचनात्मक पवित्रता बनाए रखने की पेचीदा चुनौती से जूझ रहा था। देव और मैंने चाहे जो भी लिखा हो, हमें लगातार आलोचनाओं और आक्रोश भरी चीखों का सामना करना पड़ा। हम विरोध में दबी आवाज़ में भी नहीं बोल सकते थे। देव पुदुपल्ली स्थित अपने घर में सो भी नहीं पा रहे थे। उन्हें सोने नहीं दिया जाता था। एक गुप्त तरीके से और लगभग उनकी जानकारी के बिना ही, एक भूमि विवाद ने धीरे-धीरे उन्हें कांग्रेस पार्टी का हिस्सा बना दिया था। क्या इसके बाद कभी शांति संभव हो सकती थी? स्वाभाविक रूप से, इससे देव भी भड़क उठे। उनका दावा था कि पुदुपल्ली के लोग उनके भूस्वामी बनने से नाराज़ थे।
थकज़ी में मुझे उस तरह की घोर नफरत का सामना नहीं करना पड़ा, जैसा देव को पुदुपल्ली में झेलना पड़ा था। थकज़ी के लोगों ने अपनी नाराजगी जाहिर करने

के लिए भीड़ नहीं बनाई। न ही कोई शोर-शराबा हुआ और न ही किसी ने घृणा का इजहार किया। मेरे खिलाफ कोई अध्ययन सत्र आयोजित नहीं किए गए। उन दिनों को याद करके हंसी आती है। मैंने जो लिखा था, उसके पक्ष और विपक्ष में जो तर्क दिए गए, उनका अपना ही एक अलग स्वरूप था। और ऐसे कई विरोध समूह भी थे जिन्होंने मेरे प्रति अपनी घृणा व्यक्त की।
वह एक अराजक साहित्यिक वातावरण था। फिर भी मैंने लिखना जारी रखा। मैं लिखे बिना रह ही नहीं सकता था। मुझे के. बालकृष्णन की 'कौमुदी' की एक कहानी याद आती है, 'चेंदकोतु' (ढोल की थाप)। जी हाँ, ढोल की थाप की तरह लिखने का एक उद्देश्य होता है - सबको विचलित करना।
उस समय का थकाझी आज के थकाझी से अलग है।
मेरे घर के सामने से थिरुवल्ला-अंबलपुझा सड़क गुजरती है। यह एक महत्वपूर्ण सड़क है। यहाँ वाहनों का शोर हमेशा बना रहता है। उन दिनों यह सड़क एक संकरी नहर हुआ करती थी। मैं वहाँ घाट पर दो नावें बांधकर रखता था। इन्हीं नावों में मैं अपना घर बनाने के लिए आवश्यक पत्थर, चूना, लकड़ी और बजरी लाता था। जो फाटक आप अब देखते हैं, वही घाट था जहाँ से मैं प्रतिदिन नहाने और तैरने के लिए नहर में जाता था। उन दिनों मेरे घर की सबसे खास और सुविधाजनक बात नहर के पास होना था। जमीन कुल 28 सेंट थी। काथा, हमारे बच्चे और मैं दो कमरों के एक छोटे से घर में रहते थे, जिसमें एक छप्पर भी था। यह घर लेटराइट पत्थर से बना था, जिसमें बांस की कड़ियाँ और नारियल के पत्तों की छत थी। काथा और मैं दिन-रात इसे और मजबूत और सुरक्षित बनाने का सपना देखते थे। हालाँकि मैंने सात से अधिक उपन्यास और कई कहानियाँ लिखी थीं, फिर भी मैं अपने इस सपनों के घर को नहीं बना पाया। इनमें से कुछ उपन्यास सफल भी हुए थे। अचानक, मुझे प्रेरणा के दो स्रोत मिले: एक, मेरे चारों ओर चल रही अटकलों का करारा जवाब देना; दूसरा, अपने घर की छत को लकड़ी और टाइलों से बनाना और उसे एक हल्का और हवादार घर बनाना।
समुद्र से मेरा गहरा जुड़ाव नौ साल की उम्र में शुरू हुआ। मैं समुद्र देवी के सभी रूपों और भावों से परिचित था। मेरा मन समुद्र देवी और चक्र के विचारों से भरा रहता था। एक सुबह, मैंने कुछ कमीज़ें और मुंडू एक थैले में भरे और अंबलपुझा की ओर चल पड़ा। मैं कोट्टायम जा रहा था। उन दिनों, कोट्टायम पहुँचने के लिए अंबलपुझा जाना पड़ता था और फिर वहाँ से नाव पकड़नी पड़ती थी। अगर मैं सुबह थकज़ी से निकलता, तो कनेक्टिंग बस और नाव

पकड़ते-पकड़ते दोपहर के 2 बज जाते। यह वह कोट्टायम नहीं था जिसे हम आज जानते हैं। लेकिन यह एक अलग कहानी है।
आज के निजी बस स्टैंड की जगह पर पहले दो मंजिला इमारत हुआ करती थी जिसमें सात-आठ कमरे थे। एक लॉज। इसका प्रबंधन श्री मथाई करते थे। श्री मथाई पूर्वी सड़क पर एक पूरी तरह शाकाहारी रेस्तरां चलाते थे। वहां का खाना बेहद उच्च मानकों और स्वच्छता के साथ पकाया जाता था। मेरा मकसद किसी का मज़ाक उड़ाना नहीं है, लेकिन कोट्टायम के लोग श्री मथाई को श्री मथाई पोट्टी कहकर बुलाते थे।
श्री मथाई द्वारा संचालित लॉज करापुझा अरक्कल परिवार के स्वामित्व में था। उन दिनों, एस.पी.सी., जो एस.पी.सी. के बिक्री प्रबंधक थे, ने मुझे मथाई की देखरेख में सौंप दिया था।
‘मेरे पिताजी नाव और जाल खरीदने की बात करते हैं…’ मैंने लिखना शुरू किया।
यह समुद्रतटीय बोली थी जिसे मैंने नौ साल की उम्र से सुना था।
हर शाम लॉज में आने वाले कई लोगों में से, जिसे बोट हाउस लॉज भी कहा जाता था, एक व्यक्ति विशेष उल्लेख का पात्र है। सी.जे. थॉमस।
सी.जे. थॉमस के आने का एक खास मकसद होता था। उस दिन मैंने जो लिखा होता था, उसे पढ़ना। वो एक शब्द भी नहीं बोलते थे; पढ़ते और फिर चले जाते। इस तरह सी.जे. थॉमस चेम्मीन पढ़ने वाले पहले व्यक्ति बने। उन दिनों सी.जे. साहित्य प्रवर्तक सहकारणा संगम में कवर डिज़ाइनर थे।
डी.सी. किझाक्केमुरी भी मेरे नियमित आगंतुकों में से एक थे।
और इस तरह आठवें दिन तक चेम्मीन की कहानी सुलझ गई। तभी मथाई पोट्टी ने मुझे थोड़ी बीयर पीने की इजाजत दी।
इसके बाद शंकरमंगलम में अपने घर का नवीनीकरण करना मुश्किल नहीं था।
चेम्मीन बहुत अच्छे दामों पर बिका। हमने लकड़ी के शहतीर बनवाए और उन पर टाइलें लगवाईं। हमने कुछ और कमरे बनवाए। लेकिन 28 सेंट जमीन में हमने कैसे विस्तार किया, यह एक अलग ही कहानी है।
चेम्मीन पहला मलयालम उपन्यास था जिसे तत्कालीन नवघोषित साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह पुरस्कार मैंने जवाहरलाल नेहरू से ग्रहण किया था। राधाकृष्णन उपस्थित थे और उन्होंने तालियाँ बजाईं। उस पैसे से मैंने कोलाथड़ी पदम में 60 पैरा धान के खेत खरीदे।

चेम्मीन का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ। इसका पहला अनुवाद चेक भाषा में हुआ। अनुवादक कामिल ज़ेलाबिल थे। वे तमिल विद्वान थे जिन्होंने बाद में मलयालम का अध्ययन किया। मद्रास आने पर उन्होंने मलयालम उपन्यास चेम्मीन के बारे में सुना। उन्हें लगा कि इसे समझने या अनुवाद करने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। उन्होंने रंद एडंगाज़ी (दो माप) का भी चेक भाषा में अनुवाद किया। बाद में, यूनेस्को के तत्वावधान में, चेम्मीन का सभी यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। चेक अनुवाद के बाद, रूसी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ। एशियाई भाषाओं में, चेम्मीन का अरबी, जापानी, वियतनामी, सिंहली और चीनी भाषाओं में अनुवाद हुआ।
किसने सोचा होगा कि ढोल की थाप इतना कुछ कर दिखाएगी? क्या यह जीत का प्रतीक था? ऐसा कहना मेरे लिए अनुचित होगा। क्योंकि समय ही बताएगा।
31 अक्टूबर 1995

अनुवादक का नोट:

अनीता नायर

पैगी मोहन के उपन्यास 'जहाजिन' में मुझे एक वाक्यांश मिला: अन कूप डे फौद्रे। पागलपन का दौरा।
वह इसे 'उत्तेजित ऊर्जा का एक बेकाबू जमावड़ा जो एक लक्ष्य की तलाश में है' के रूप में वर्णित करती है।
Chemmeen – जिसका अनुवाद यही है – का जन्म इसी तरह के एक अचानक प्रेम प्रसंग से हुआ था।
मैं उपन्यास लेखन के बीच में थी। 'मिस्ट्रेस' के लेखन ने मेरे जीवन को इतना भर दिया था कि उपन्यास पूरा होने पर अचानक मेरे जीवन में एक बहुत बड़ा खालीपन आ गया। अब मैं क्या करती?
फिर एक ख्याल आया: उनाई वारियर की 'नालाचरितम'। 'नालाचरितम' पढ़कर मुझे कथकली से फिर से प्यार हो गया। यकीनन दुनिया के बाकी लोग भी इससे उतना ही आनंद ले पाएंगे जितना मैंने लिया। घोर अंधकार के क्षणों में इससे मिलने वाली शांति को पा सकेंगे। यह मेरे मन में एक स्वप्न परियोजना बन गई, जो तब तक बढ़ती रही जब तक कि एक दिन मैंने हार्परकॉलिन्स में कार्तिका से इस बड़ी सनक का जिक्र नहीं किया।
सभी अच्छे संपादकों और सभी अच्छे दोस्तों की तरह, उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं अनुवाद के क्षेत्र में किसी ऐसे काम से शुरुआत करूं जो उतना महत्वाकांक्षी न हो लेकिन उतना ही शानदार हो।
जैसे क्या? मैंने पूछा।
चेम्मीन? उसने सुझाव दिया।
कहीं से एक गीत की धुन मेरे मन में गूंज उठी। चांदनी रात में समुद्र तट पर उदास परीकुट्टी दिल खोलकर गा रहा था। बेचैन करुथम्मा का सीना कांप रहा था, मानो वह सब कुछ छोड़कर परीकुट्टी के पास भाग जाना चाहती हो। चेमनकुंजू की आंखों में वो चमक जब उसने पहली बार पलानी को देखा। फिल्म 'चेम्मीन' के दृश्य मेरे दिमाग में घूमने लगे।
क्या गपशप किसी गंभीर मुद्दे में बदल रही थी? क्या ऐसा ही हुआ था? क्या इसी तरह मैंने चेम्मीन से मुकाबला किया था? अचानक प्यार हो गया। और क्या?

मुझे मलयालम की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी। लेकिन मुझमें इस भाषा की बारीकियों को समझने और आत्मसात करने की क्षमता थी। मैं पहले से ही इसकी अद्भुत सहज गीतात्मकता से मंत्रमुग्ध था, जहाँ एक तितली के जादुई पंख 'चित्राशलबम' कहलाते हैं और एक घुन को 'निकृष्ठानय पुझु' कहा जाता है। 'मिस्ट्रेस' लिखते समय मैंने कथा में कथकली अट्टाकथाओं के कुछ अनुवाद शामिल किए थे। लेकिन यह काफी नहीं था। अनुवाद के लिए मुझे किसी लेखक के मार्ग पर चलना होगा और उसके नज़रिए से उसके परिदृश्य और पात्रों को देखना होगा। क्या मुझमें यहाँ-वहाँ कुछ विचार बदलने या कोई नया आयाम जोड़ने की इच्छा को नियंत्रित करने की क्षमता होगी? मैं मूल रूप से एक कथाकार हूँ और थकज़ी की 'चेम्मीन' से खुद को अलग रखना मुश्किल होने वाला था। संपादन की आवश्यकता के आगे झुके बिना एक पुस्तक की सुंदरता को सामने लाना। क्षेत्र के व्याकरण को इस तरह बनाए रखना कि वह मुहावरेदार अनुवाद न लगे... इसके विपरीत, लेखक के लिए यह आसान है। अपने दिल की सुनो और बाकी सब कुछ भूल जाओ... और एक और बात थी। मुझे बहुत धैर्य जुटाना पड़ेगा। जब भी कोई शब्द मुझे उलझन में डालता, मुझे मलयालम निगांडू (शब्दकोश) में गोता लगाना पड़ता। (शब्दकोश तो निगांडू के अथाह सागर के मुकाबले बहुत ही सरल और सीमित शब्द है।) मुझे धीरे-धीरे, एक-एक शब्द करके, अपना रास्ता खोजना होगा।
किताब की पहली ही पंक्ति ने मुझे उलझन में डाल दिया। चेम्मीन मछुआरों की बोली में लिखी गई है। यह मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित था और मैंने कलम रख दी। अब मैं क्या करूँ?
कहीं से अनुवाद के देवता की रहस्यमयी आवाज ने मुझसे कहा: बोली - कान - इसे सुनो - और यही इस अनुवाद की कुंजी बन गई।
अगले दो सप्ताहों के दौरान, मैंने अपनी सचिव मिनी कुरुविला, जो एक मलयाली थीं, को पुस्तक पढ़कर सुनाने के लिए राजी किया। मैंने स्वयं पढ़ने के बजाय उपन्यास को सुना। लय से एक निश्चित परिचितता धीरे-धीरे सहजता में बदल गई। मैंने इसे फिर से सुना और फिर एक दिन मैं तैयार हो गया।
थकज़ी ने अपनी रचना 'चेम्मीन' आठ दिनों में लिख डाली थी। मुझे इसे प्रकाशित करने में दो साल और कम से कम चार बार संशोधन करने के बाद ही संतुष्टि मिली। अनुवाद पूरा करने में लगे दो वर्षों के दौरान, निगांडू भाषा में न मौजूद शब्दों और वाक्यांशों को समझना पड़ा। त्रिवेंद्रम में रहने वाले मेरे एक

मित्र, केरल कौमुदी के वी.एस. राजेश ने मेरी मदद की। और फिर यह काम पूरा हुआ।
यह विडंबना ही है कि समकालीन लेखन के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माने जाने वाली अधिकांश पुस्तकें अनुवादित पुस्तकें ही हैं। चाहे मार्केज़ हों या कुंडेरा, ग्रास हों या शिंगजियान, हमें उनकी रचनाओं के अनुवाद ही उपलब्ध हैं। यहाँ एक और उदाहरण है। एक क्लासिक उपन्यास जिसे आप कितनी भी बार पढ़ें, वह आपकी आत्मा को झकझोर देता है।
चेम्मीन एक वर्जित प्रेम की कहानी है। यह एक ऐसे मछुआरे के मन की गहराइयों को उजागर करती है जो समुद्र में जाता है। उसे वापस किनारे पर कौन लाता है? किस वजह से वह रास्ता भटक जाता है? चेम्मीन आशाओं और निराशा भरे प्रेम की कहानी है। यह एक ऐसी कहानी है जो किताब पढ़ने के बाद भी लंबे समय तक जीवित रहती है। और मन में उसी तरह गूंजती रहती है जैसे लहरें बार-बार किनारे से टकराती हैं।

चेम्मीन जिसने मुझे सौभाग्य और दुख दोनों दिए के.के. सुरेंद्रन, केरल कौमुदी

एक बार उस महान गुरु ने कहा था, ‘यह सर्वविदित है कि मलयालम नाम की एक भाषा है और उसकी एक साहित्यिक परंपरा है। लेकिन चेम्मीन के साथ ही मलयालम उपन्यास ने पहली बार दुनिया की कई अन्य भाषाओं के बीच अपना स्थान पाया। वास्तव में, चेम्मीन इस सम्मान का हकदार है। हालांकि, किसी को यह नहीं मानना चाहिए कि इसी वजह से मैं चेम्मीन को मलयालम में लिखा गया सर्वश्रेष्ठ उपन्यास मानता हूं। यह तो नियति का एक विचित्र और सुखद संयोग था! चेम्मीन ने मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार किया। उस जर्जर झोपड़ी की जगह मुझे घर मिल गया। और मुझे कुछ धान के खेत भी मिल गए।’
चेम्मीन – वह उपन्यास जिसने थकज़ी शिवशंकर पिल्लई को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई और उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया – उनके जीवन के उत्तरार्ध में उनके लिए बहुत दुख का कारण भी बना। उस प्रेम कहानी के दुखद अंत की तरह, कुट्टानाड के कथाकार, जो बाद में समुद्र तट के कथाकार बन गए, भी दुःख से ग्रस्त रहे।
मेरे पिताजी नाव और जाल खरीदने की बात करते हैं।
‘करुथम्मा, तुम कितनी भाग्यशाली लड़की हो!’
चेम्मीन की शुरुआत इस प्रकार हुई। परीकुट्टी और अपने प्रेम को त्यागकर, करुथम्मा ने पलानी से विवाह कर लिया। फिर जब पूरी तरह से क्षत-विक्षत परीकुट्टी की व्यथा समुद्र तट पर गूंजी, तो पलानी की पत्नी करुथम्मा परीकुट्टी की खोज में निकल पड़ी। समुद्र तट पर परीकुट्टी और करुथम्मा के शव एक दूसरे को आलिंगन करते हुए पाए गए। एक मछुआरे की गलती ने समुद्र माता के क्रोध को भड़का दिया। समुद्र में मछली पकड़ने गए पति को समुद्र माता अपने साथ ले गईं।
कोट्टायम में डी.सी. किझाक्केमुरी द्वारा आयोजित एक लॉज में, थाकाझी ने सात दिनों में उपन्यास लिखना पूरा कर लिया और दो सप्ताह में ही पहली प्रति बिक गई। 1958 में जब इसे केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला, तो चेम्मीन राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो गया। इसके बाद इसका कई भाषाओं में अनुवाद किया गया, जिनमें अंग्रेजी, स्पेनिश, इतालवी, फ्रेंच, जर्मन, चेक,

स्लाव, डच, पोलिश, हंगेरियन, रूसी, अरबी, वियतनामी, जापानी, सिंहली आदि शामिल हैं।
जब चेम्मीन पर फिल्म बनी, तो थाकाझी और मलयालम को विश्व स्तर पर प्रसिद्धि मिली। कनमणि बाबू ने मुंबई के एक प्रोडक्शन हाउस के माध्यम से चेम्मीन के फिल्म अधिकार खरीदे। थाकाझी ने बताया, 'मुझे ठीक से याद नहीं कि मुझे कितने पैसे मिले थे। शायद 25,000 रुपये! उसी पैसे से मैंने थाकाझी में दस एकड़ नारियल का बाग खरीदा था। बाद में मैंने उसे बेच दिया।'
समय के साथ, चेम्मीन से मिलने वाला आर्थिक लाभ कम होता चला गया। लेकिन उपन्यास की मूल अवधारणा के प्रति विरोध जारी रहा। छात्र जीवन से लेकर अंबलपुझा में वकील के रूप में काम करने तक, थाकाझी ने पुरक्कड़ से थाइकल तक फैले अलापुझा तट के जीवन को भली-भांति समझा था। उस जीवन और उसकी परंपरा के प्रति उनका प्रेम चेम्मीन उपन्यास के रूप में प्रकट हुआ, लेकिन उपन्यास के साथ ही कई विरोध भी सामने आए। मछुआरा समुदाय के कुछ नेताओं ने उन पर उनके जीवन और भाषा को भद्दे ढंग से प्रस्तुत करने का आरोप लगाया। वहीं कुछ प्रगतिवादियों ने इसे अंधविश्वास का घोर प्रचार बताया, विशेष रूप से इस मिथक का कि समुद्र देवी किसी भी मछुआरी महिला के पति को छीन लेंगी जो नियमों का उल्लंघन करती है। उपन्यास के लिखे और प्रकाशित होने के काफी समय बाद भी ये आरोप और थाकाझी के नियमित स्पष्टीकरण जारी रहे।
तीन साल पहले, बेबीकुट्टन ने चेम्मीन को कोल्लम थुलिका के लिए एक नाटक के रूप में रूपांतरित किया था। थाकाझी ने इस प्रयास को आशीर्वाद दिया था। जब नाटक मंच पर पहुंचा, तो प्रदर्शनकारी एक बार फिर सक्रिय हो गए। वृद्धावस्था के कारण अक्षम हो चुकी थाकाझी को फोन पर धमकियों और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।
एक और बात जिसने उन्हें बहुत दुख पहुँचाया, वह थी फिल्म 'चेम्मीन' के सीक्वल का विचार। जब इस विषय पर चर्चा हुई, तो कनमणि बाबू ने विरोध किया और कहा कि सीक्वल नहीं बनना चाहिए। इस खींचतान में फँसे थकज़ी बेबस होकर देखते रहे। थकज़ी ने बाद में बताया कि अभिनेता सुरेश गोपी द्वारा दी गई दक्षिणा के अलावा उन्हें कुछ नहीं मिला।
बाद में थिराकलक्कप्पुरम के नाम से रिलीज़ हुई फिल्म चेम्मीन के मुकाबले कहीं भी नहीं ठहरती थी। दरअसल, चेम्मीन के सीक्वल बनाने की निरर्थकता को चेम्मीन के पटकथा लेखक एस.एल. पुरम सदानंदन ने ही उजागर किया था।

हाल ही में जब मशहूर फिल्म निर्माता जोड़ी मर्चेंट आइवरी के इस्माइल मर्चेंट कोच्चि में थे, तो उन्होंने 'चेम्मीन' को फिल्म में बदलने की इच्छा जताई। यह 'चेम्मीन' से थकज़ी को मिला आखिरी दुख था। अखबारों में इस्माइल मर्चेंट की इच्छा के बारे में पढ़कर थकज़ी शंकरमंगलम में उनके आने का बेसब्री से इंतजार कर रही थीं।
उस बुजुर्ग व्यक्ति की यह प्रबल इच्छा थी कि उनकी कहानी, जिसमें उनके अपने शब्दों में 'दुःख, सुख, चिंता, प्रेम, क्रोध, सब कुछ अपने शुद्धतम रूप में समाहित है', अंतरराष्ट्रीय फिल्म जगत में प्रदर्शित हो। इसलिए वे बड़ी खुशी और उम्मीद के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे।
लेकिन जब कनमणि बाबू ने यह दावा किया कि किसी भी भाषा में फिल्म बनाने का अधिकार केवल उनका है, तो थाकाझी की उम्मीदें एक बार फिर चकनाचूर हो गईं। जिस दिन से मैंने वह पहली पंक्ति लिखी, “मेरे पिता नाव और जाल खरीदने की बात करते हैं,” तब से मुझे बहुत सारी निंदा सहनी पड़ी है। अब भी कुछ नहीं बदला है। निंदा की सारी जिम्मेदारी मुझ पर ही आती है; और पैसों की बात करें, तो वो सब किसी और के लिए हैं।’ कांपती हुई आवाज और नम आँखों ने इस उबाऊ और मनोबल गिराने वाली स्थिति को बयां किया।
फिर उन्होंने करुथम्मा के बारे में बात की. 'अगर मैं नीरकुनाथ, पुरक्कड़ और अंबालापुझा के समुद्र तट पर जाऊं और अपनी करुथम्मा को बुलाऊं, तो वह मेरी पुकार सुनेगी। वे सभी प्रेम और भक्ति बिखेरते हुए उभरेंगे। पारीकुट्टी, पलानी, चेम्बंकुंजु, चक्की, पंचमी - ये सभी।'
ऐसा प्रतीत होता था कि चेम्मीन द्वारा उसके जीवन में लाई गई सभी बातों का विचार यदि उस झुर्रीदार चेहरे को रोशन करता था, तो साथ ही साथ उस पर थोपे गए दुःख के कारण उसकी छाया भी पड़ती थी।
11 अप्रैल 1999

चेम्मीन को अपनाने पर: मिथक को मेलोड्रामा के रूप में

मीना पिल्लई

मलयालम साहित्य में किसी अन्य उपन्यास की तुलना में 'चेम्मीन' उपन्यास फिल्म की पृष्ठभूमि को कहीं अधिक गहराई से प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास उन सांस्कृतिक आयामों को छूता है जो जन मनोरंजन के एक माध्यम के रूप में सिनेमा की नींव हैं। फिल्म की मूल भावना एक लोकप्रिय तमाशे के रूप में मानवीय नाटक की है। फिल्म का दृश्य-दृश्य उपन्यास के काल्पनिक दृश्यों से काफी मिलता-जुलता है, और यह इस तथ्य के संदर्भ में रोचक है कि लगभग आधी सदी के इतिहास में कई मलयाली लोगों ने पहले फिल्म देखी होगी और फिर उपन्यास पढ़ा होगा। इससे सत्यन, शीला, मधु और कोट्टारक्कारा जैसे अभिनेताओं की बाद में अर्जित स्टार वैल्यू के उपन्यास के पात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव और मूल रचना की व्याख्या और आभा पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में दिलचस्प अटकलें लगाई जा सकती हैं।
नए मीडिया या जन प्रसार के दृश्य माध्यमों के व्यापक प्रसार से पहले, चेम्मीन एक सिनेमाई सारगर्भित कथा थी, जो मलयाली संस्कृति के भीतर मौजूद कला-विरोध और कला-विरोध तथा दृश्य कला और मीडिया के प्रति गहरे सांस्कृतिक पूर्वाग्रह और कलंक को कुशलतापूर्वक दर्शाती थी, जो संभवतः लिखित शब्द के अत्यधिक महत्व से भी उपजा था। जिसे अक्सर 'मूलतः अश्लील' फिल्मी छवि कहा जाता है, वह उपन्यास में स्वयं को प्रस्तुत करती है, शाब्दिक और लाक्षणिक दोनों अर्थों में हमारी दृष्टि को आकर्षित करती है। उदाहरण के लिए, उपन्यास में, करुथम्मा कोचुमुथली को फटकारती है और उससे विनती करती है कि वह उसे 'उस' तरह से 'न देखे'। उसकी 'दृष्टि' और उसके बाद उसके स्तनों और एक लंगोटी के प्रति 'शर्मिंदगी भरी अनुभूति' उसे एक ऐसी शारीरिक वास्तविकता में समाहित कर देती है जो सिनेमा के आंतरिक सुखों की विशेषता है। इसके विपरीत, फिल्म में उपन्यास की विषयवस्तु और कथात्मक निरंतरता के साथ-साथ सिनेमाई उपकरणों के कारण भौतिक विविधताओं से उत्पन्न नवीनता भी देखी जा सकती है। फिल्म में करुथम्मा का पहला ही शॉट उसके अर्थ को स्पष्ट कर देता है – उसके शरीर को पुरुष की दृष्टि का वस्तु बना दिया गया है। इस प्रकार,

सिनेमाई तंत्र, जो हमेशा से दृष्टि और यौन भेद की विचारधारा से प्रभावित रहा है, करुथम्मा को छवि, तमाशा और दृष्टि की वस्तु के रूप में ही प्रस्तुत करता है। शीला द्वारा अभिनीत करुथम्मा का सुगठित शरीर एक तटीय समुदाय के नाटक की केंद्रीय महिला पात्र को मलयाली दर्शकों की दृश्य और कामुक इच्छाओं को पूरा करने के लिए बनाई गई एक वस्तुनिष्ठ कामुक आकृति में परिवर्तित कर देता है। फिल्म में स्तन पर मौजूद बड़ा काला तिल भी सक्रिय दृष्टि-प्रेम को उजागर करता है। यह निर्विवाद है कि उपन्यास और फिल्म दोनों ही कामुक प्रवृत्ति से प्रेरित हैं। फिर भी, फिल्म की सफलता और इसकी व्यापक लोकप्रियता का कारण संभवतः यह है कि यह 'चेम्मीन' (समुद्र से पकड़ी गई मछली) की छवि का उपयोग करके इस कामुक संतुष्टि को और अधिक प्रभावी ढंग से भुनाने में सक्षम है, जिसे स्त्री के लिए एक कामुक प्रवृत्ति के रूप में, यानी भूमि से पकड़ी गई 'लकी हुई मछली' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। फिल्म एक ऐसी कथात्मक पहेली रचती है जो उपन्यास में उतनी प्रमुख या स्पष्ट नहीं है। क्या करुथम्मा पलानी से प्रेम करती है या परीकुट्टी से, क्या वह परीकुट्टी को भूलती है या नहीं, ये प्रश्न फिल्म में आदान-प्रदान और समतुल्यता की रणनीति का निर्माण करते हैं। अक्सर मछली या 'पकड़', दृश्य में प्रदर्शन का एक ज़ोरदार प्रभाव पैदा करते हुए, एक प्रकार के वस्तु- प्रवर्तन की प्रक्रिया को दर्शाती है (कोवी 276)। इस प्रतिस्थापन की प्रक्रिया में करुथम्मा ही वस्तु-प्रवर्तन का शिकार बन जाती है। पूरी फिल्म में, करुथम्मा और मछली का संग्रह 'प्रतिस्थापन और आदान-प्रदान के चक्र' में रहते हैं, जहाँ छवि के भीतर दृश्य पर अत्यधिक निवेश या अत्यधिक मूल्य को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है (कोवी 268)। मार्कस बार्टली का कैमरा बार-बार आती हुई मछली पकड़ने वाली नावों को कैद करता है, जिससे वस्तुओं के आदान-प्रदान और विनिमय के अनेक अर्थ निकलते हैं।
थकज़ी के लिए उपन्यास लिखने की प्रेरणा एक तीव्र आर्थिक आवश्यकता थी – अपनी पत्नी और बच्चों के लिए घर बनाने के लिए धन जुटाना। लोकप्रिय धारणाओं में गहराई से समाहित उपभोग की यह क्रिया, चेम्बनकुंजू और पलानी जैसे उनके पात्रों के जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। रूपांतरण को भी एक और बड़े निवेश के रूप में देखा जा सकता है, जो वित्तीय, भावनात्मक और मानसिक रूप से, सिनेमा के प्रतिनिधित्वात्मक रूप में उपभोग की इस क्रिया को समाहित और प्रतिरूपित करता है। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि 'चेम्मीन'

(समुद्र से पकड़ी गई मछली) को उपन्यास के लेखन से लेकर उसकी लोकप्रियता, विभिन्न भाषाओं में उसके अनेक अनुवादों, साथ ही उसके बेहद सफल फिल्म रूपांतरण और उपन्यास और फिल्म दोनों को मिले पुरस्कारों, प्रशंसाओं और लोकप्रिय प्रतिष्ठा तक के सफर को दर्शाने वाली उपभोग की असंख्य क्रियाओं का प्रतीक माना जा सकता है।
उपन्यास का यथार्थवाद दृश्यात्मक रूप से लचीला है, जो फिल्म की जटिल चित्रण शैलियों और मलयाली एवं अखिल भारतीय दर्शकों की सांस्कृतिक अपेक्षाओं के अनुरूप सहजता से ढल जाता है। इस प्रकार, फिल्म के शुरुआती पैन और लॉन्ग शॉट्स स्थान को स्थिर करते हैं और मछुआरों के जीवन को अत्यंत सरल और 'यथार्थवादी' ढंग से प्रस्तुत करते हैं। फिर भी, यह उपन्यास प्रगतिशील लेखक आंदोलन की यथार्थवादी परंपरा के वैचारिक बोझ से मुक्त होने का थाकाझी का प्रयास है। उपन्यास का कुछ हद तक अतिरंजित यथार्थवाद, जो थाकाझी की पूर्व सामाजिक यथार्थवादी लेखन शैली के विपरीत है, फिल्म द्वारा प्राप्त किए जाने वाले प्रतिनिधित्ववादी यथार्थवाद के अनुरूप ढल जाता है। रामू करियात के निर्देशन की प्रतिभा और एस.एल. पुरम सदानंदन की पटकथा की स्पष्टता ही फिल्म में सामाजिक यथार्थवाद और मानवतावाद का वातावरण रचती है। इसलिए यह बात ज़ोर देकर कही जानी चाहिए कि फिल्म और कहानियों के ज़रिए अराया समुदाय के वास्तविक, प्रामाणिक जीवन के रूप में जो कुछ गढ़ा गया है, वह वास्तव में केरल समाज की विचारधाराओं और वैचारिक विरोधाभासों का लेखा-जोखा है, जो वैवाहिक परिवार की अवधारणा को समझने और उस सामाजिक इकाई की विध्वंसक क्षमता को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है। बुर्जुआ परिवार के केंद्र में स्थित चेम्बनकुंजू और पलानी, दोनों सामाजिक और भावनात्मक अलगाव का सामना करते हैं, जो घरेलू एकांत में फंसी मर्दानगी के संकट को दर्शाता है और नए पारिवारिक आदर्श के पुरुष प्रदाताओं के लिए उपयुक्त नए सांस्कृतिक नियमों से जूझ रहा है। यह उल्लेखनीय है कि फिल्म में उत्पादन के सार्वजनिक क्षेत्र और प्रजनन के निजी, घरेलू, भावनात्मक क्षेत्र के बीच का विभाजन कहीं अधिक स्पष्ट है। फिल्म की प्रतीकात्मकता, संपादन और दृश्य शब्दावली इस विभाजन को बहुत सशक्त रूप से उजागर करती है, जिसमें लहरें आंतरिक और बाह्य, निजी और सार्वजनिक, समुद्र और तट के द्वंद्व का रूपक हैं। फिर भी, फिल्म केवल उन्हीं परंपराओं को अपनाती है जो मलयाली दर्शकों को 'यथार्थवादी' लगती

हैं। इसलिए शीला, करुथम्मा के रूप में, शारीरिक बनावट में वास्तविक मछुआरिनों से बेहद भिन्न होते हुए भी (जिसके कारण शीला को उनकी गोरी त्वचा के संदर्भ में 'वेलुथम्मा' कहकर अनगिनत 'शैक्षणिक' आलोचनाएँ की गईं), सिनेमा के सौंदर्य संबंधी मानदंडों के अनुसार एक मेलोड्रामा की नायिका को पर्दे पर कैसे गढ़ा जा सकता है, इस बारे में दर्शकों की आम अपेक्षाओं को पूरा करती है, और इस प्रक्रिया में यथार्थवादी के रूप में लोकप्रिय रूप से स्वीकार की जाती है। जैसा कि कॉलिन क्रिस्प बताते हैं: 'विश्वसनीयता और प्रामाणिकता पर जोर देने से सबसे चरम काल्पनिक रचनाएँ भी यथार्थवादी मानी जा सकती हैं यदि वे प्रतिनिधित्व की मौजूदा सामाजिक परंपराओं और/या प्रतिनिधित्व की प्रचलित शैलीगत परंपराओं के अनुरूप हों' (242)। फिल्म का प्रतिनिधित्व की परंपराओं के अनुरूप होना और दर्शकों की प्रमुख वैचारिक धारणाओं का पुनरुत्पादन ही इसे वास्तव में यथार्थवादी बनाता है, क्योंकि ये एक बार फिर इसके प्रतिनिधित्व की प्रक्रियाओं की भौतिकता को मिटा देते हैं।
फिल्म में वैवाहिक निजी स्थान का निर्माण और इस स्थान पर वैवाहिक सुख को परिभाषित करने का प्रयास उपन्यास से थोड़ा भिन्न है। फिल्म में करुथम्मा घर की 'अवधारणा' में अधिक लीन रहती है और स्वयं को इसी कल्पना के सौंदर्यशास्त्र में ढालती है। हालांकि, यह रोचक है कि उपन्यास इस आत्म-निर्माण की राजनीति की आलोचना करने का प्रयास करता है, क्योंकि कहानी के चरमोत्कर्ष वाले प्रसंगों में यह आधुनिकता के लैंगिक समझौते को दर्शाता है।
एक महत्वपूर्ण बात यह है कि 1950 के दशक में जब केरल में सामाजिक सुधारों और कम्युनिस्ट आंदोलनों के परिणामस्वरूप सार्वजनिक क्षेत्र में उदार, समाजवादी और समतावादी मूल्यों को व्यापक समर्थन मिल रहा था और अधिक महिलाएं वेतनभोगी श्रम बल में शामिल हो रही थीं, तब यह उपन्यास घरेलू आदर्श के माध्यम से महिलाओं को घर वापस लाने का प्रयास करता है। हमें अराया समाज-राजनीतिक कार्यकर्ता वेलुकुट्टी अरायन के उस तीखे लेख को याद रखना होगा जिसमें उन्होंने थाकाझी की कदलम्मा की मिथक की आलोचना करते हुए कहा था कि यह समुदाय की मात्र काव्यात्मक भाषा और लाक्षणिक भाषा को खतरनाक वैचारिक आयाम देती है, विशेष रूप से अराया महिलाओं की स्वतंत्रता से समझौता करती है। यह विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार कथा और

जिसने वर्चस्वशाली पुरुषवादी छवि को आकार दिया, जो इतिहास के बाद के काल में लोकप्रिय मलयालम सिनेमा की पहचान बन गई।
एंग्लो-इंडियन मार्कस बार्टली की छायांकन, बंगाली सलिल चौधरी का संगीत, एक अन्य बंगाली हृषिकेश मुखर्जी का संपादन और मन्ना डे द्वारा गाया गया प्रसिद्ध गीत 'मनसा मैंने वारू' – ये सभी मिलकर फिल्म में अखिल भारतीय कल्पना को आधुनिकता के प्रतीक के रूप में सशक्त बनाते हैं। इस प्रकार, फिल्म निर्माता राष्ट्रीयता की एक नई भावना से क्षेत्रीयता को पुनर्कथनित करते हैं, जहाँ संकीर्ण/जातिगत पहचानों को राष्ट्रीय 'धर्मनिरपेक्ष' स्वरूप के नए साँचे में ढालना पड़ता है। पारंपरिक से आधुनिकता की ओर संक्रमण आधुनिक परिवार की कल्पना और विशेष रूप से महिलाओं के लिए इस आदर्श के दायरे में अनुकरण करने हेतु नई भूमिकाओं और आदर्शों के पुनर्निर्धारण के माध्यम से सर्वोत्तम रूप से संपन्न होता है। इस संदर्भ में यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि उपन्यास और फिल्म दोनों ही शाश्वत पारलौकिक मूल्यों की रक्षक के रूप में महिलाओं के सामाजिक/राष्ट्रीय महत्व को किस प्रकार रेखांकित करते हैं। आधुनिकता के विमर्श के रूप में, उपन्यास और फिल्म दोनों ही नारी प्रश्न पर निरंतर चिंतन करने और इस प्रक्रिया में स्त्री यौनिकता को विनियमित करने की परियोजना के प्रति समर्पित हैं।
यह भी महत्वपूर्ण है कि फिल्म जाति के मुद्दे पर अधिक संयमित है, उपन्यास में करुथम्मा द्वारा परीकुट्टी की मुस्लिम पहचान को लेकर दिखाए गए लंबे समय तक चलने वाले संघर्ष को सहजता से हटा देती है। फिल्म स्पष्ट रूप से धर्मनिरपेक्ष आधुनिकता का एक सुरक्षित परिवेश प्रस्तुत करती है जो जाति से किसी भी महत्वपूर्ण या चिंताजनक रूप से अछूता है। प्रचलित धारणा के अनुरूप, फिल्म जाति की पारंपरिक या आधुनिक मान्यताओं की पुष्टि करने में एक नाजुक रूप से संतुलित अस्पष्टता प्रदर्शित करती है, विवेक धारेश्वर द्वारा 'एक सामाजिक संस्था के रूप में इसे स्थिर' करने, 'सार्वजनिक और राजनीतिक रूप से इसका खंडन' करने (116) के माध्यम से जाति की बेचैनी और शर्मिंदगी को मिटा देती है।
यह उपन्यास एक लोकप्रिय बेस्टसेलर है और फिल्म एक लोकप्रिय क्लासिक है। दोनों ही मेलोड्रामा शैली में आते हैं, जो जनमानस और लोकप्रिय सांस्कृतिक मनोरंजन की विशेषता है। इसमें पारिवारिक नाटक के गहन भावनात्मक क्षणों पर

ध्यान केंद्रित किया जाता है और दर्शकों में भी वैसी ही प्रबल भावनाएँ जगाने का प्रयास किया जाता है। फिल्म में प्रकाश व्यवस्था, रंग और संगीत जैसी मेलोड्रामैटिक तकनीकों का उपयोग करके उपन्यास के मेलोड्रामैटिक कथानक को और भी प्रभावशाली बनाया गया है (यह मलयालम की शुरुआती रंगीन फिल्मों में से एक थी)। इससे फिल्म के दृश्य को एक अद्भुत प्रभाव मिला और बॉक्स ऑफिस पर इसकी सफलता में योगदान दिया। गहन भावनात्मकता और दर्शकों को लोकप्रिय भावनात्मक और नैतिक मूल्यों के विषय के रूप में प्रस्तुत करना - जो कि प्रभुत्वशाली मूल्यों को दोहराता है और इस प्रकार दर्शकों को मुख्य पात्रों की भौतिक और नैतिक दुविधाओं में नाटकीय ढंग से शामिल करता है - फिल्म को इसकी बेहद सफल मेलोड्रामैटिक संवेदनशीलता प्रदान करता है। पहले के सामाजिक यथार्थवादी शैली से हटकर, 'चेम्मीन' मलयालम सिनेमा में नाटकीयता की ओर एक बदलाव का प्रतीक है, जो परिवार को एक सूक्ष्म जगत के रूप में प्रस्तुत करने की विशेषता को मजबूत करता है, जो व्यापक सामाजिक संकटों, नारीत्व के आदर्श को लेकर चिंताओं और आधुनिकता के अंतहीन विलंब, विशेष रूप से लिंग के संदर्भ में, को प्रतिबिंबित करता है। जैसा कि करेन गैब्रियल ने कहा है, 'इस बात पर जोर देना आवश्यक है कि सामाजिक आख्यानों का नाटकीय विस्थापन केवल पारिवारिक और घरेलू तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से लिंग और कामुकता के अधिक अस्पष्ट क्षेत्रों में है' (70)। हालांकि, यह सराहनीय है कि 'चेम्मीन' और क्लासिक भारतीय मेलोड्रामा के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि यह 'बलिदान करने वाली माँ' की रूढ़ि को पूरी तरह से ध्वस्त कर देता है, और एक ऐसा क्षण प्रस्तुत करता है जब करुथम्मा की कामुकता और इच्छा उसकी मातृत्व पर विजय प्राप्त करती है। फिर भी, अंत में इस विषय को प्रमुख विचारधारा के साथ मिला दिया जाता है, जिससे उसकी इच्छा को उल्लंघनकारी और आघातपूर्ण के रूप में चिह्नित किया जाता है।
मलयाली दर्शकों और पाठकों की भावुक संवेदनशीलता को सामाजिक यथार्थवाद के 'माहौल' में ढालना केरल में इसके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की दिलचस्प झलक पेश करता है। इस प्रकार, थाकज़ाही की फिल्म 'चेम्मीन' लेखक के सामाजिक यथार्थवादी लेखन पर दावा करते हुए भी, नायकों की नैतिक, सामाजिक और यौन चिंताओं के आध्यात्मिक आयामों और इस संघर्ष से उत्पन्न होने वाले तीव्र भावनात्मक 'प्रभाव' के पक्ष में इसे कमज़ोर करती है, जबकि फिल्म इन सभी को

एक भव्य दृश्य में पिरो देती है। उपन्यास की तुलना में फिल्म, विवाह के प्रति भावुक शैली की विशिष्ट अस्पष्टता को अधिक अपनाती है, और साथ ही इसे मुक्तिदायक और दमनकारी दोनों रूप में प्रस्तुत करती है।

फिल्म की लोकप्रियता का एक बड़ा श्रेय इसके गीतों को जाता है, जिन्होंने इसके विज्ञापन और मार्केटिंग में भी अहम भूमिका निभाई। भारत के लोकप्रिय सिनेमाघरों में गीत और नृत्य, हॉलीवुड के संगीत फिल्मों के विपरीत, जहाँ गीत और नृत्य एक ऐसा स्थान बनाते थे जहाँ पात्र और दर्शक दोनों कल्पनाओं में खो सकते थे, 'दैनिक जीवन की गतिशीलता से उत्पन्न स्थितियों और भावनाओं की स्वाभाविक और तार्किक अभिव्यक्ति' के रूप में उपयोग किए जाते थे और आज भी किए जाते हैं (डिसनायके 209)। चेम्मीन में गीतों का दृश्य स्पष्ट और स्वाभाविक प्रतीत होता है, जो कहानी में भावनात्मक अभिव्यक्तियों को विराम देता है और लगभग उसी निरंतर कथात्मक स्थान में समाहित हो जाता है। इस प्रकार, गीतों के अंतराल न तो कल्पनाओं को दर्शाते हैं और न ही स्मृतियों को, न ही वे किसी आंतरिक मनोदशा तक पहुँचने का दिखावा करते हैं और न ही समय या स्थान का अंतराल पैदा करते हैं। वे जो सबसे शक्तिशाली रूप से करते हैं, दृश्य और शाब्दिक दोनों रूप से, वह है समुद्र और समुद्र पर की जाने वाली खोजों/यात्राओं को उस तरह से कामुक बनाना जैसा भारतीय लोकप्रिय कथा भाषा में पहले कभी नहीं हुआ और न ही बाद में हुआ। समुद्र यात्रा की अस्पष्टता और लाक्षणिक अर्थों को केरल में 1970 के दशक के 'गल्फ बूम' में सबसे अच्छी तरह से दर्शाया गया है। यह वही क्षण है जिसकी कल्पना गीत 'कडालिनक्करे पोनोरे काना पोन्निनु पोनोरे, पोयी वरुम्बोल एन्थु कोंडुवरुम' (हे समुद्र पार यात्रा करने वाले, वापसी में क्या लाओगे?) में की गई है। गीतों में 'कल्पित' समुद्र उन असंख्य यात्राओं का प्रतीक बन जाता है जो आने वाले वर्षों में केरल के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास को चिह्नित करेंगी। इस प्रकार, गीतों में बार-बार चित्रित समुद्र की यात्रा, मलयाली कल्पना के एक मूलभूत पहलू को दर्शाती है और एक लोकप्रिय प्रतीक के रूप में कार्य करती है जो मलयाली लोगों को राज्य के भीतर और बाहर, साथ ही राष्ट्र से परे, प्रवास के अनुभव को उसके व्यक्तिगत और सामूहिक महत्व के साथ समझने में सक्षम बनाती है। समुद्र ही मलयाली पहचान का मानचित्रण करता है और राष्ट्रीय एवं वैश्विक विमर्शों में इस पहचान को

चित्रित करने के सभी आधुनिक प्रयासों में एक केंद्रीय रूपक बन जाता है। फिल्म की रिलीज के बाद के दशकों में भी इन गीतों की अपार लोकप्रियता का एक कारण मलयाली प्रवासन के प्रतीक के रूप में समुद्र की यह लोकप्रिय व्याख्या भी है।
हमें कनापोन्नू (छिपा हुआ सोना), पोनवाला (सुनहरे जाल) और चक्रा जैसे परस्पर संबंधित प्रतीकों पर भी विचार करना चाहिए, जो प्रवासी द्वारा घर लाए जाने वाले दुर्लभतम शिकार और खजानों के आदर्श प्रस्तुत करते हैं। ये प्रतीक वास्तविक और भावी प्रवासी मलयालियों को इच्छा और घर की अवधारणाओं के विषय के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, गीतों की कथा समुद्र के साथ पूर्व-आधुनिक आदिम जुड़ावों और आध्यात्मिक संबंधों को दर्शाते हुए, इसे श्रम, अस्तित्व और जीविका के लिए समकालीन संघर्षों की एक आधुनिक महाकाव्य कल्पना के रूप में भी प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। ये गीत मलयालियों के 'प्रवासन वृत्तांतों' के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो महिलाओं की पवित्रता के दावों को बल देते हैं, क्योंकि पुरुष परिवार के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने के लिए दूर-दराज के तटों पर चले जाते हैं। तीन सामूहिक गीत नावों के लगातार समुद्र में जाने और आने की प्रक्रिया को दर्शाते हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से केरल को मानव संसाधनों के वैश्विक व्यापार की वस्तु श्रृंखलाओं से जोड़ते हैं, जो इसकी अर्थव्यवस्था की पहचान बन गई।
फिल्म के सभी गीत कथावाचक हैं, जो सीधे समुद्र का आह्वान करते हैं और इसकी पौराणिक कथाओं की शक्ति को बढ़ाते हैं। यह रोचक है कि उपन्यास में गीतों का बार-बार उल्लेख किया गया है, पारेकुट्टी द्वारा अपने प्रेम का मधुर गायन और नीरकुन्नम के तटों पर गाए जाने वाले लोकगीत, जिन्हें हम वास्तव में केवल फिल्म में ही सुन पाते हैं। मलयाली कथा परंपराओं से संगीत के अविभाज्य संबंध की उपन्यास की समझ और इस परंपरा में संगीत के सांकेतिक कार्य की स्पष्ट अवधारणा पर आधारित होने से फिल्म में संगीत का एक अभिन्न कथात्मक तत्व के रूप में उपयोग करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है, जो न केवल इसके भाव या भावना के निर्माण में, बल्कि इसकी पौराणिक कथाओं के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपन्यास का फिल्म दर्शकों के पौराणिक अवचेतन को पूर्वाभास करना और उसमें निवेश करना भारत में लोकप्रिय लोक कथाओं के आधार और मौखिक परंपराओं के विशाल भंडार के बारे में

बहुत कुछ बताता है, जिससे उपन्यास और फिल्म दोनों को प्रेरणा मिलती है। संगीत को ‘भाषण के समान अभिव्यंजक’ (वासुदेवन 9) माना जाता है, इसलिए भारतीय दर्शकों को वह ‘कृत्रिम विराम’ महसूस नहीं होता जो पश्चिमी दर्शकों को किसी अभिनेता के अचानक गाना गाने पर महसूस हो सकता है (बीमैन 83)। लोक परंपरा से प्रेरणा लेते हुए यह देखना रोचक है कि किस प्रकार गायन को मछुआरा समुदाय के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाया गया है, जहाँ मुख्य पात्रों के बजाय साधारण, हाशिए पर पड़े पात्र प्रमुखता से गाते हैं, और गीतों की ‘साथ मिलकर गाने’ की प्रकृति एक समुदाय का निर्माण करती है और फिल्म को उसका लोक भाव प्रदान करती है। मलयालम के सर्वथा लोकप्रिय गीतकार और कवि वायलर रामावर्मा के गीतों का मोहक आकर्षण एक ऐसे पौराणिक लोक की कल्पना पर आधारित है, जहाँ चांदनी रात में निसगंधी खिलती है और जलपरियाँ दूध के सागर (पालाझी) की लहरों पर क्रीड़ा करती हैं। यह एक ऐसा लोक है जहाँ मोती जैसी सुंदर आँखों वाली खूबसूरत स्त्रियाँ (करीमीन कन्नल) अपने पुरुषों को तूफानी समुद्र से सुरक्षित वापस लाने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत लेती हैं। सलिल चौधरी के संगीत ने इस लोक शैली को अखिल भारतीय लोक धुनों में पिरोकर, इन गीतों को स्वर, विषय और शैली के लिहाज से व्यापक श्रोताओं के लिए सुलभ बना दिया है। समुदाय के गीतों से अलग हटकर केवल एक गीत है, 'मनसा मैंने वरु', लेकिन इसमें भी पौराणिक समुद्री परिदृश्य की व्यापक आभा देखी जा सकती है, जहाँ निरंतर उठती लहरें मानव हृदय की असीम इच्छाओं का प्रतीक बन जाती हैं।
लेकिन फिल्म और उपन्यास 'चेम्मीन' की सदाबहार लोकप्रियता और आकर्षण केरल की एक पौराणिक कथा के निर्माण में निहित है। यह पौराणिक कथा राज्य के तटीय क्षेत्र के स्वदेशी प्रतीकों का उपयोग करके एक ऐसी 'मलयाली पहचान' की कल्पना करती है जो मलयाली पाठकों/दर्शकों के दिलों में गूंजती है। सुनहरे समुद्र तट, लहराते हरे ताड़ के पेड़ और पृष्ठभूमि में रहस्यमयी सागर की समृद्ध और मार्मिक सुंदरता, तट पर बसे रोमांटिक दिलों के दर्द और आनंद को प्रतीकात्मक रूप से एक हरे-भरे परिदृश्य में समेट देती है। एक ऐसी भूमि में, जिसके बारे में लोकप्रिय मिथक कहता है कि वह समुद्र से उत्पन्न हुई है, समुद्र को भी 'कदलम्मा' के रूप में पौराणिक कथाओं में शामिल किया गया है। कदलम्मा न केवल एक दयालु देवी हैं, बल्कि एक भयानक माँ भी हैं जो प्रतीकात्मक रूप से मछुआरों को निगल जाने की धमकी देती हैं यदि घर में

हालांकि, करुथम्मा पूरी तरह से निष्क्रिय नहीं है और उपन्यास में वह इस्लाम धर्म अपनाने तक का साहस दिखाती है (इस संदर्भ में पहनावे पर चर्चा अत्यंत महत्वपूर्ण है), चुपचाप पवित्रता के मिथक की आलोचना करती है और स्त्री इच्छा को समय और स्थान दोनों में सामान्य और सर्वव्यापी के रूप में मान्यता देने का प्रयास करती है। वह चक्की को चेम्बनकुंजू से चोरी करने के लिए उकसाती है, और माँ और बेटी परीकुट्टी का कर्ज आंशिक रूप से और गुप्त रूप से चुकाने की कोशिश करती हैं। ये स्त्री-प्रधान दृश्य फिल्म में पूरी तरह से अनुपस्थित हैं, जो उसे अधिक पृथक रूप में दर्शाती है, पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों के प्रति उसकी आत्म-जागरूक दुविधा को शीला ने अपने उत्कृष्ट अभिनय से मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया है। व्यवस्था के प्रति उसका पूर्ण तिरस्कार उस घोर अवमानना में प्रकट होता है जिसके साथ वह अंततः पलानी के सामने परीकुट्टी के लिए अपने प्यार को स्वीकार करती है। यह फिल्म के बाकी हिस्सों में उनकी प्रतिक्रियाओं और शारीरिक भाषा से इतना विपरीत है कि एक नारीवादी व्याख्याकार (कारियात की रचनाओं में नारीत्व के वस्तुकरण को देखते हुए) इसे एक अति-प्रारंभिक आवेग, भारतीय प्रदर्शन परंपराओं के अनुसार अभिनेता का मनोदर्म, कल्पना की एक स्वतंत्र उड़ान, जो उन्हें निर्देशक के सौंदर्यवादी और वैचारिक दृष्टिकोण पर 'महिला' के रूप में विजय प्राप्त करने में मदद करती है, मानने से खुद को रोक नहीं पाएगी। हालांकि, उपन्यास में भूतकाल के बजाय वर्तमान काल में उनका उत्तर (कि वह परीकुट्टी से प्यार करती हैं), उनके प्रेम की साहसिक निरंतरता को दर्शाता है, और इसके प्रकाशन के बाद और इसके रूपांतरण से पहले के नौ वर्षों में उपन्यास की अधिक लैंगिक और संशोधनवादी व्याख्याओं को चरम पर पहुंचाता है। इस प्रकार, जहाँ उपन्यास और फिल्म दोनों ही समय और मन के अंतर्संबंधों में विसंगतियों से चिह्नित 'असामंजस्य' को प्रदर्शित करते हैं, जहाँ पौराणिक और तर्कसंगत तथा पूर्व-आधुनिक और आधुनिक एक साथ मौजूद हो सकते हैं, वहीं फिल्म के अंत में यह और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है, जहाँ करुथम्मा अचानक अपनी पौराणिक कुंवारी अवस्था से एक 'आधुनिक', 'व्यक्तिवादी', 'नारीवादी' संवेदनशीलता की ओर जागृत होती है। पलानी के अपनी पत्नी पर प्रहार करने के लिए उठे हाथ नीचे हो जाते हैं क्योंकि उसकी दृष्टि अपने बच्चे पर केंद्रित हो जाती है, लेकिन प्रश्न एक अन्य रूप में दोहराया जाता है, 'क्या यह बच्चा उसका है?' पितृत्व को लेकर यह चिंता पलानी की वैध वंश परंपरा की

उदय को भी दर्शाता है, जो लोकतांत्रिक समाजवाद के पुराने आदर्शों, जैसे कि 'केंद्रीय' योजना, एकजुटता अर्थव्यवस्था और सामाजिक सामंजस्य, के विपरीत हैं। इस प्रकार, परीकुट्टी, करुथम्मा, चेम्बनकुंजू और पलानी की निजी कामुक गतिशीलता 'राष्ट्रीय रूपक के रूप में एक राजनीतिक आयाम प्रस्तुत कर सकती है', जहाँ 'निजी व्यक्ति के भाग्य की कहानी हमेशा सार्वजनिक तृतीय-विश्व संस्कृति और समाज की संघर्षपूर्ण स्थिति का रूपक होती है' (जेम्सन 69)। इस प्रकार की व्याख्या चेम्मीन के अनुवादों के संदर्भ में भी अनेक प्रश्न खड़े करती है, जो 'राष्ट्रीय' की सहज पहुँच की धारणा की आलोचना करती है, जो हमेशा जाति, लिंग और वर्ग के साथ-साथ उनके क्षेत्रीय प्रभावों से जटिल होती है। इसलिए, राष्ट्रीय और ऐतिहासिक संदर्भों, क्षेत्रीय भाषाई संरचना और उप-राष्ट्रीय पहचान की कल्पना करने की आवश्यकताओं, केरल के नवजात राज्य को लेकर चिंताओं, राष्ट्र के आधुनिकीकरण परियोजना के सामने कृषि और स्वदेशी आजीविका के तरीकों के संकट, उत्तर-औपनिवेशिक इतिहास में सामंती और नव-औपनिवेशिक शक्तियों की निरंतरता, साथ ही निजी और सार्वजनिक के द्वंद्व और राष्ट्र के लैंगिकरण की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखे बिना किसी भी उपन्यास या उसके रूपांतरण को नहीं पढ़ा जा सकता है, ये सभी अत्यधिक मनोवैज्ञानिक व्याख्याओं के बजाय अधिक सूक्ष्म राजनीतिक व्याख्याओं की मांग करते हैं।

उपन्यास और फिल्म दोनों में ही लोकप्रिय इतिहास को लोकलुभावन मिथक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। फिर भी, उपन्यास के अन्य सभी तत्वों में से, मिथक और इस मिथक-निर्माण के माध्यम से महिलाओं का रहस्यीकरण ही फिल्म रूपांतरण का मूल है, जो लोकप्रिय, पौराणिक और संगीतमय तत्वों को मिलाकर एक ऐसा दृश्य और कथात्मक आनंद प्रदान करता है जो गहरे सांकेतिक और दमित भावनाओं से ओतप्रोत है, और अंततः इन्हें बाजार और जन संस्कृति के साथ जोड़ता है। मलयालम उपन्यास के लिए पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार और मलयालम सिनेमा के लिए पहला राष्ट्रीय पुरस्कार केरल की कई करुथम्माओं को लैंगिक वस्तुकरण वाली विनिमय प्रणालियों में समझौतावादी प्रतीकों के रूप में पुनः प्रस्तुत करने की कीमत पर प्राप्त हुआ, जो अक्सर लोकप्रिय 'मानक' साहित्य और लोकप्रिय सिनेमा बन जाते हैं, यह हमें लोकप्रिय साहित्य को समझने के लिए महत्वपूर्ण संकेत देता है।

उद्धृत कार्य
अरायण, वेलुकुट्टी वी.वी., थकाझियुडे चेम्मेन: ओरु निरुपनम। तिरुवनंतपुरम: कालाकेरलम प्रकाशन, 1956।
बीमैन, विलियम ओ., 'लोकप्रिय फिल्म में संगीत का उपयोग: पूर्व और पश्चिम', इंडिया इंटरनेशनल सेंटर क्वार्टरली में, विशेष अंक 'भारतीय लोकप्रिय सिनेमा: मिथक, अर्थ और रूपक', प्रदीप कृष्ण (संपादक) 8 (1), 1981।
कोवी, एलिजाबेथ, रिप्रेजेंटिंग द वुमन: सिनेमा एंड साइकोएनालिसिस, लंदन: मैकमिलियन, 1997।
क्रिसप, कॉलिन, द क्लासिक फ्रेंच सिनेमा, 1930-1960, ब्लूमिंगटन: इंडियाना यू.पी., 1997।
धारेश्वर, विवेक, ‘जाति और धर्मनिरपेक्ष स्व’, जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड आइडियाज 25/26 (1993): पृ. 115-126.
दिसानयके, विमल, 'भारतीय लोकप्रिय सिनेमा पर पुनर्विचार: समझ के नए ढाँचे की ओर', एंथोनी गुनेरत्ने और विमल दिसानयके (संपादक), रीथिंकिंग थर्ड सिनेमा, न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2003, पृ. 202-225।
ईपेन, मृदुल और प्रवीणा कोडोथ, 'पारिवारिक संरचना, महिलाओं की शिक्षा और कार्य: केरल में महिलाओं की उच्च स्थिति का पुन: परीक्षण', स्वप्ना मुखोपाध्याय और रत्ना सुदर्शन (संपादक), आर्थिक सुधारों के तहत लैंगिक समानता पर नज़र रखना, नई दिल्ली: काली फॉर विमेन, 2003।
गैब्रियल, करेन, मेलोड्रामा और राष्ट्र: बॉम्बे सिनेमा की यौन अर्थव्यवस्थाएँ, 1970-2000, नई दिल्ली: वीमेन अनलिमिटेड, 2010।
जेमसन, फ्रेडरिक, 'बहुराष्ट्रीय पूंजीवाद के युग में तीसरी दुनिया का साहित्य', सोशल टेक्स्ट नंबर 15 (शरद ऋतु 1986), पृ. 65-88।
कोडोथ, प्रवीणा, ‘केरल में संपत्ति कानून: लैंगिक पहलू और नीतिगत चुनौतियाँ’, ईसोशलसाइंसेज, 31 अगस्त 2005, 20 जुलाई 2011, <http://www.eSocialSciences.com/data/articles/Document13182005150.493 252.doc>
मुखोपाध्याय, स्वप्ना, 'केरल में महिलाओं की स्थिति की पहेली को समझना: क्या उच्च साक्षरता अनिवार्य रूप से उच्च स्थिति में तब्दील होती है', स्वप्ना मुखोपाध्याय (संपादक) द्वारा संपादित, केरल की महिलाओं की पहेली: साक्षरता का एक असफल वादा, नई दिल्ली: सोशल साइंसेज प्रेस, 2007।

वासुदेवन, रवि, भारतीय सिनेमा में अर्थ निर्माण, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000।

□□.□□. □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□□□

□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□	1934
□□□□□ □□□□□	1935
□□□□□□□□	1938
Vilpanakari	1941
Paramardhangal	1945
□□□□□□□	1947
Tottiyude Makan	1947
□□□□□□□□□□□□□□□	1949
□□□□□ □□□□□	1950
□□□□□ □□□□□□□□□□	1955
□□□□□□□□	1956
□□□□□□□ □□□	1956
□□□□□□□□□□ □□□□□□	1959
□□□□ □□□□□□□	1961
□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□	1961
□□□□□□□□□□□□□	1964
□□□□□□□□□□□? □□□□□: □□□□□□□	1965
□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□	1965
Mamsathinte Villi	1966
□□□□□□	1967
□□□□□□□□□ □□□□□□□	1967
□□□□□□□	1967
□□□ □□□□□□□□□	1969
□□□□□□	1969
□□□□ □□ □□□□□□□	1969
Nurayum Pathayum	1970
□□□□□□□□□ □□□□□□□	1970
□□□□ □□□□ □□□□□□□	1972

□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□? 1973
Akathalam 1974
□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ 1975
Adhikalanovelukal 1977
Azhiyakurukku 1977
□□□□□ 1978
□□□□□ □□□□□□□□□□□ 1978
Baloonukal 1982
Oru Manusyante Mugham 1983
Oru Premathinte Baki 1988
□□□ □□□□□□□□□□ 1990

□□□ □□□□□

□□□□□□□ 1935
Khoshayatra 1941
□□□□□□ 1944
□□□□□□□□□□□□ 1945
□□□□□□□□ □□□□ 1945
□□□□□□□ □□□□□□□ 1946
Pathivrada 1946
□□□□□□□□□ 1947
□□□□□□□□□□ 1947
□□□□□□□□□□ 1947
Charitrasathyangal 1950
Inquilab 1951
□□□□ □□□□ □□□□□ 1955
Allinganam 1958
□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ 1958
□□□□□□□□□ 1958
□□□□□□□ □□□□□□□ 1962
□□□□□□□□□□ □□□□ 1965
Changathimar 1969

Ekanthapadhikan	1969
□□□ □□□□□□□□ □□	1992
Jeevithathinte Oru Edu	1993
□□□	2000
□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□	2003
□□□□□□□□ □□□□□ □□□□	2004
□□□□□□□/□□□□□□□	
Ente Vakkeel Jeevitham	1961
□□ □□□□ □□□ □□□□	1967
□□□ □□□□□□□□□ □□□□	1980
□□□□□□□□ □□□□□□□□□	1985
□□□□ □□□□□□	
□□□□□□ (□□□□)	1946
Kaalpadukal	–
Indulekha	1962
□□□□□□□ □□□□□□□□	1966
□□□□ □□□□□□ □□□	2000

शब्दकोष

Accha, Achan: Father
अम्माची, अम्मा: माँ
आर्यन: मछुआरों की एक जाति
चकरा: बड़ी मछली पकड़ने का अवसर; मानसून के दौरान केरल तट के कुछ स्थानों पर थोड़े समय के लिए कीचड़ के टीलों का बनना और प्रचुर मात्रा में मछलियों का दिखना।
चेदाथी: बहन, लेकिन इसका प्रयोग किसी बड़ी उम्र की महिला के प्रति सम्मान दर्शाने के लिए किया जाता है।
चेट्टन/चेट्टा: भाई, लेकिन इसका प्रयोग किसी बड़े व्यक्ति (पुरुष) के प्रति सम्मान दर्शाने के लिए किया जाता है।
इचेची, चेची: बड़ी बहन
Kambavala: strong net
कासवु/जरी: कढ़ाई में इस्तेमाल होने वाले सोने या चांदी के महीन धागे कुरुची: एक प्रकार की समुद्री मछली
मन्नारशाला अयिल्यम: यह अलाप्पुझा जिले के मन्नारशाला में स्थित मन्नारशाला श्री नागराज मंदिर का मुख्य त्योहार है। यह त्योहार मलयालम महीने कन्या (सितंबर/अक्टूबर) में आने वाले अयिल्यम नक्षत्र के दिन मनाया जाता है। त्योहार के दिनों में हजारों लोग मंदिर में नाग देवताओं की पूजा और आराधना करने के लिए एकत्रित होते हैं।
मरक्कन: मछुआरों की एक जाति
मुहूर्त: शुभ समय
मुक्कावन: मछुआरों की एक जाति
मुंडू/ मुल मुल मुंडू: सफेद सूती कपड़े से बनी एक सारोंग
नेरियथु: महीन (पतली) बनावट वाला कपड़ा
पारा: धान मापने का एक बड़ा पैमाना (केरल में प्रचलित प्राचीन मापन पैमाने के अनुसार, 4 उझक्कू 1 नाझी के बराबर, 4 नाझी 1 इतांगझी के बराबर और 10 इतांगझी 1 पारा के बराबर होते थे)। धान की जोतों का आकार इस बात पर आधारित होता था कि उन खेतों में इतने माप के बीज बोए जा सकते हैं।
पोडावा: शादी का कपड़ा या साड़ी

पोट्टी: एक ब्राह्मण जाति का नाम
पोट्टू: माथे पर लगाया जाने वाला सजावटी चिह्न
थीयाल: इमली के साथ नारियल आधारित एक प्रकार की सब्जी करी। उरुली: घंटी के आकार की धातु से बना उथला बर्तन
वलक्करन: मछुआरों की एक जाति
वापा: पिता (मालाबार के मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त शब्द)

लेखक और अनुवादक के बारे में

थकज़ी शिवशंकर पिल्लई (1912-1999) एक मलयाली उपन्यासकार और लघु कथाकार थे, जिनका लेखन शोषित वर्गों पर केंद्रित था। उन्होंने कई उपन्यास और 600 से अधिक लघु कथाएँ लिखीं। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में 'कयार' और 'चेम्मीन' शामिल हैं। उन्हें 1958 में केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1984 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अनीता नायर बेस्टसेलर लेखिका हैं, जिनकी किताबें हैं: द बेटर मैन, लेडीज़ कूपे, मिस्ट्रेस और लेसन्स इन फॉरगेटिंग। उनकी किताबें तीस से अधिक भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। यह उनका पहला अनुवादित कार्य है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2011 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] © [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] © [illegible] [illegible] 2011

ISBN: 9789350290866

[illegible] © [illegible] 2012 ISBN: 9789350292723

2 4 6 8 10 9 7 5 3 1

[illegible].[illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]